Sch. V.

Rāmāyaṇa. — Sundarakāṇḍa.

रामायण बालमीकीय भाषा

رامائن بالمیکی

सुन्दरकाण्ड



जिसको

सकल हरिभक्त व महात्माओं के रामचरित्र श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशाला के तृतीयाध्यापक
श्री पण्डित महेशदत्त जी से संस्कृत बाल्मीकीय रामायण से
भाषा में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापी गई
जूलाई सन १८८३ ई०

Bok. V.

Rāmāyaṇa. – Sundarakāṇḍa.

रामायण वाल्मीकीय भाषा

رامائن بالمیکی

सुन्दरकाण्ड



जिसको

सकल हरिभक्त व महात्माओं के रामचरित्र श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशाला के तृतीयाध्यापक
श्री पण्डित महेशदत्त जी से संस्कृत वाल्मीकीय रामायण से
भाषा में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई
जूलाई सन् १८८३ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८३ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अलेह-	रामायण रासबिलास	रामायण गीतावलीस-
महा भारत	दा भी हैं	रामायण तुलसीकृत	विनयपत्रिका बा॰मो॰
१- पहिले हिस्सा में-	१-आदि पर्व्व	रामायण सटीक मय मान	विनय पत्रिका बा॰शि॰
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२-सभा पर्व्व	सदीपिका कोष आदि	विष्णु पुराण भाषा
बन पर्व्व	३-बन पर्व्व	रामायण तु॰टी॰सुखदेव क॰	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४-विराट् पर्व्व	तथा जिल्द बँधी	ब्रह्मोत्तरखण्ड
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	बाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसीकृत सा-	शुक्रनीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८- कर्ण पर्व्व	तों काण्ड	रसराजशिवरसचंद्रोदय
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	९- शल्य पर्व्व व गदा	१- बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
योशिक पर्व्व विशोक प॰	पर्व्व सौप्तिक मय योशि-	२- अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
र्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	क व विशोक व स्त्री पर्व्व	३- आरण्य काण्ड	श्री अनुरागरस
में राज धर्म्म आपद ध॰	१०-शान्ति पर्व्व में राज	४- किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
र्म्म मोक्षधर्म्म	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दान	५- सुन्दर काण्ड	रासलीला
४- चौथे हिस्सा में	धर्म्म	६- लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	११-अश्वमेध आश्र-	७- उत्तर काण्ड	**नाटक**
अश्वमेध आश्रम बा॰	म बासिक मुशल पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचन्द्रोदय
सिक पर्व्व व मौशल पर्व्व	महा प्रस्थान स्वर्गा	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
व महा प्रस्थान स्वर्गारो-	रोहण	रामायण मानसदीपिका	आनंद रघुनंदन
हण पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२- हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	भ्रमजाल

श्रीरामोविजयतितराम् ॥

रामायणवाल्मीकीय भाषा ॥

सुन्दरकाण्ड ॥

दोहा ॥

सीतान्वेषण निरतगत मान बीरहनुमान ॥
चरणकमलअशरण शरण शरणाहोंहिंजनजान १
शिरधरि राम सँदेशतरि नदिनदेश मिथिलेश ॥
सुता सँदेश बहोरि कह कोशलेश पहँ वेश २ ॥
साकपिपति शुभमतिकरहिं हरहिं विपतिकेजाल ॥
मोरि बिनति नतिलेहिं अरु देहिं भक्तिनिजहाल ३

जाम्बवान् के वचनों से प्रोत्साहित हो शत्रुओं के खींचनेवाले हनुमानजीने रावणकी हरी सीताजी के रहने का स्थानढूंढ़ने केलिये सिद्ध चारणसेवित आकाश मार्गमें जानेकी इच्छाकी १ उस समय अन्यलोगोंसे न होसकनेवाले बिघ्नरहित कर्म्मकरनेकी इच्छाकिये शिर व गल ऊपरको उठाये हनुमान जी बड़ेभारी वृषभके समान शोभित हुये २ व वैदूर्य्यमणि के समान हरितरंग के पर्व्वतकी घासपर जो कि समुद्र के जलके आकार राशिरूपथी सुखपूर्व्वक ३ पक्षियों को डरवाते छातीसे वृक्ष तोड़ते मृगोंको नाशते बड़ेभारी सिंहके समान विचरनेलगे ४ नील अरुण मंजीठी रंग कमलवर्ण श्वेत श्याममणियोंसे व पर्व्वत पर अपने आप उत्पन्न बिमल धातुओंसे अलंकृत ५ व अनेक तरहके भूषण वस्त्र धारणकिये यथेच्छरूप धारण करनेवाले देवसमान यक्षकिन्नर गन्धर्व्व नागोंसे सेवित ६ तिस पर्व्वतश्रेष्ठके नानाप्रकार के हाथियोंसे सेवित तलपेटिक वानरश्रेष्ठ हनुमानजी बड़ेभारी कुण्डमेंहाथीके समान शोभित हुये ७ सूर्य्य इन्द्र व अपनी उत्पत्ति के कारण पवनके व ब्रह्माजी के व

पृथ्वी वायु आकाश जल अग्निके हाथजोर तिन हनुमान्जीने चलनेका बिचार किया ८ व सबकार्य्य करनेमें कुशल हनुमान्जी अपनीउत्पत्ति के स्थान पवनके पूर्व्वकी मुखकर फिर हाथजोर दक्षिणदिशाको जाने केलिये बाढ़े ६ जब समुद्र तड़कने में बनाय निश्चय किया तो सबजाम्बवान् आदि बानरश्रेष्ठों ने देखा व रामचन्द्रजी के कार्य्यकी वृद्धि के लिये पूर्णमासी के समुद्रके समान हनुमान्जी बाढ़े १० व समुद्रके नांघनेकी इच्छाकिये हनुमान्जीका शरीर अप्रमाणबढ़ा व उन्होंने अपनी बाहों व चरणोंसे पब्बतको बड़ेज़ोरसे पीड़ित किया ११ तिनकपिश्रेष्ठ के पीड़ित करनेसे दोघड़ीतक वह पर्व्वत चलायमान रहा जिससे सब फूलेफले वृक्षोंके फूलफल झरपरे १२ तिनवृक्षोंसे गिरेफूलोंके सुगन्धित ढेरसे वह पर्व्वत सब ओर से ढँक ऐसा शोभित हुआ मानों पुष्पोंकाही पर्व्वतहै १३ उत्तम वीर्य्यवाले तिन हनुमान्जीसे पीड़ितहोनेसे उसपर्व्वत से जलबहनेलगा जैसे मदान्ध हाथीके अंगोंसे मदबहताहै १४ व तिन महाबली हनुमान्जीसे पीडितहो वहमहेंद्र पर्व्वत सुवर्ण अंजन व चांदी की रेखा अपनेमें प्रकाशित करनेलगा १५ व मैनशिल सहित बड़ीबड़ी शिला वहपर्व्वत छोड़नेलगा जैसे मध्यभागमें ज्वालासंयुक्त अग्नि धुआं की पंक्तिछोड़ता है १६ हनुमान्से पीडितपर्व्वतसे पीड़ित गुहानिवासी जन्तु बड़ेबिकृतस्वरोंसे चिघरनेलगे १७ पर्व्वतकी पीडासे उत्पन्न सब जन्तुओं का शब्दपृथिवी सबदिशा व उपवनों में भरहुआ १८ काली रेखायुक्त बड़ेबड़े शिरोंसे घोरअग्नि उगिलते सर्प्पदांतोंसे शिलाओंको काटनेलगे १९ तबतिन कोपकिये सर्प्पों से काटी महा शिला अग्निके संयोगहोने से बरउठीं व फूटफूट हजारोंटुकड़े होगईं २० उसपर्व्वतपर जितनी औषधें उत्पन्नथीं उनमें जिनके सूंघनेसे विषभी मिटजाताथा वे भी उन महाविषधर सर्प्पोंका विष न मिटायसकीं २१ व उसपरके रहनेवाले तपस्वियों ने व बिद्याधरोंने जाना कि यह पर्व्वतभूतोंसे फूटजाया चाहताहै इससे मारेभयके ब्याकुलहो वे लोग अपनी अपनी स्त्रियों को संगले उसपरसे कूदपरे २२ मदिरापीने के सुवर्णके पात्र मद्यपानकरनेहीके स्थानमें छोड़दिये इनके सिवाय अन्यजो सोनेचांदी आदिकेपात्र भोजनादि करनेके बड़ेबड़े मोलकेथे व सुवर्णकेजितने करवा थे सबछोड़

दिये २३ नानाप्रकारकी चटनी शर्व्वतलपसीआदि पदार्थ व नानाप्रकारके पूरी लड्डू पेड़ा बरफी आदिखानेकेपदार्थ व विविधप्रकारकेमांस व बैलोंके चमड़ोंसे बँधे अन्यमृगचर्म्मादि व सुवर्णके कबुजेलगेखड्ग २४ इनसब पदार्थोंको छोड़ मतवाले मालापहिरे चन्दनादि लगाये अरुण अयनवाले व कमलवनसंयुक्त विद्याधरलोग उच्चस्वरसे गान करतेहीसे आकाश को चलेगये २५ वहां पहुंच हारनूपुर बहूटा आदिभूषण धारण किये मन्दमन्द मुसुकाती व विस्मितचित्त विद्याधरोंकी स्त्रियां अपने २ पतियोंके संग आकाशमें खड़ीहो निहारनेलगीं २६ व सब विद्याधर व महर्षिलोगभी अपनी महाविद्या देखातेहुये एकसंग मिलेहुये आकाशमें खड़े उसपर्व्वतको देखनेलगे २७ व विमल आकाशमें टिकेमहात्माऋषियों चारणों व सिद्धोंके शब्द सुनने लगे २८ देखोपवनके पुत्रपर्व्वताकार महावेग ये हनुमानूजी यह महासागर उतरा चाहतेहैं २९ यह अति दुष्करकर्म्म ये श्रीरामचन्द्र के लिये व सुग्रीवादि वानरोंके अर्थ किया चाहतेहैं जो बड़ेदुःखसे पारजानेकेयोग्य समुद्रकेपार जायाचाहतेहैं ३० विद्याधरों ने तपस्वियोंके ऐसे वचनसुन तिनअप्रमाण वल वानरश्रेष्ठ हनुमानूजीको पर्व्वतपरदेखा ३१ उसीबीचमें हनुमानूजी ने अपनेरोम कँपाये व अग्निसमान आप भी काँप व बड़ाभारी नाद भी किया जैसे बड़ाभारी बादर गर्ज्जताहै ३२ जब पर्व्वतपर से उछलनेलगे तो उन्होंने चढ़ाउतार गोल रोमसहित अपनी पूंछउठाय हिलाई जैसे गरुड़जी सर्प्पकोपकड़ हिलातेहैं ३३ जब अतिवेग से वे चले तो उनकीपूंछ पीछेसे ऐसी हिलती देखाईदेती थी जैसे किसी भारी सर्प्पकोपकड़ गरुड़जी चलते तो वह देखाईदेताहै ३४ उछलनेके समय उन्होंने अपने महापरिघाकार हाथ दृढ़किये व कटिहावँ के लग बनाय सिँकुरगये चरणभी बनाय सिँकोरलिये ३५ व भुज भी सिँकोरलिये शिर व ओष्ठ भी तिसीतरह सिँकोरलिये तेजसत्व व वीर्य्यमेंभी महावीर्य्यवान् हनुमानजी प्रविष्ट होगये ३६ व दूरसे मार्ग्ग निहारा ऊपर की ओर नेत्र लगायदिये आकाशको निहारते २ प्राणोंकोरोंका ३७ पावँ अच्छीतरह से जमाय कानखड़ेकर वानरोंमें हाथीरूप हनुमान् उछरने के समय ऐसेहुये ३८ व वानरोंमेंश्रेष्ठ हनुमान् वानरोंसे यहबोले कि जैसे राम-

चन्द्रजीका वाण पवनसम विक्रमहो ३९ चलताहै उसीतरह एकसड़ाके के साथ हम रावण पालित लङ्का को जायँगे व जो लङ्का में जानकी जीको न देखेंगे ४० तो इसी वेग से इन्द्रादि देवताओं के लोक को चलेजायँगे जो इतनाभी श्रमकरने पर सीताजीको देवलोक में भी न देखेंगे ४१तो राक्षसों के राजारावण को बांध यहां ले आवेंगे बात यह कि हमसबतरहसे कार्य्यकरही कर लौटेंगे जानकीजीको जरूर लावेंगे ४२ वा सहित रावण लङ्कापुरीही उखाड़ लावेंगे वानरों में उत्तम हनुमानजी इसतरह वानरोंसे कह ४३ बड़ेवेग से उछलेवेगवान् तो थेही कुछबिचार नहींकिया कि कहांजाय गिरेंगे उससमय उनकपिकुञ्जरने अपनाकोगरुड़हीके समानमाना ४४ तब वेगयुक्त हनुमान् मारवेग के जब उछले तो उस पर्व्वत पर जितने वृक्ष थे अपनी शाखासहित चारों ओरसे ऊपर को उछल गये ४५ उस समय मतवाले कोकिल सहित व पुष्पित वृक्ष अपनी जाँघोंके वेगसे उखाड़ते बिमल आकाश को चले गये४६ हनुमानजी की जाँघोंकेवेगसे उखड़े वृक्ष उनकेपीछे२ एकमुहूर्त्त तकउड़ेचलगये जैसे बड़ीदूरजानेवाले विदेशी अपनेबन्धुके पीछे२उसके बान्धव कुछदूरतक चलेजातेहैं ४७ व जाँघोंकेवेगसे उन्मथित साँखू व अन्यउत्तम२ वृक्ष हनुमानजी के पीछे२चले जैसे राजाके पीछे२ सिपाही लोग चलतेहैं ४८ फूलेफरे बहुतसे वृक्षोंसेयुक्त पर्व्वताकार हनुमानजी अतिअद्भुतदर्शनहुये ४९ उनमें जो गरूवृक्षथ वे समुद्रमेंकुछदूर हनुमान् के सङ्ग उड़गिरपरे व डूबगये जैसे इन्द्रकी डरसे पर्व्वतलोग समुद्रमें गिर डूबे थे ५० कलीसहित व विकसित नानाप्रकार के पुष्पों से युक्त मेघाकार हनुमानजी ऐसे शोभित हुये जैसे जुगुनुओं से पर्व्वत शोभित होताहै ५१ जब हनुमानजीके वेगसे वे वृक्षछूटगय तो अपनेपुष्पछोड़ जलमेंगिरपरे जैसे अपने सुहृदकोपठै सुहृदलोग एक ठिकाने उदासीन होबैठजातेहैं ५२ हनुमानजी के व.युसे प्रेरितपुष्प हलुकेहोनेसे समुद्रमें जहाँतहाँगिरपरे ५३ उननानावर्णोंकेसुगन्धितपुष्पसमूहोंसे हनुमानजी बिजुलीको चमकसे विभूषितमेघकेसमान शोभितहुये ५४ तिन हनुमानजीके वेगसे उत्पन्न पुष्पोंसे अतिमनोहर नक्षत्रउदित आकाशके समान जलशोभितहुआ ५५ तिन हनुमानजीके आकाशमें प्राप्त फैलायेबाहु पर्व्वत

से निकले दोपँचमुहें सर्पोंकेसमान शोभितहोतेथे ५६ उससमय महा वानर हनुमान् सहितलहरी समुद्रको जानों पीतेहींसे शोभितहोतेथे व जानों आकाशको पीहीलेनाचाहतेथे ५७ वायुमार्गके अनुसार चलनेवाले तिनके विजुलीकी दीप्तिके समान प्रकाशित नत्र प्रर्व्वतमें टिके अग्निके समान प्रकाशित होतेथे ५८ व पीलेनेत्रवालोंमेंमुख्य तिनके पीले बड़े व गोलनेत्र चन्द्रमा व सूर्य्यकेसमान प्रकाशितहोते थ ५६ तिनकी लाल नाशिकासे लालमुख सन्ध्यासमय के सूर्य्यमण्डलके समान शोभितहोता ६० तिन पवनतनय की पूंछ तड़कनेके समय आकाशमेंऊँचे इन्द्रध्वजके समान शोभितहुई ६१ चक्राकार पूंछहोने से श्वेत दाँतयुक्त हनुमान् जी मण्डलसहित सूर्य्यकेसमान शोभितहुये ६२ अतिलालचूतरों से महा कपि हनुमान्जी बहुत गेरू बहते हुये पर्व्वतके समान शोभितहुये ६३ तिन वानर सिंह के सागर नाँघने के समय जो काँखके बीचमें परने से पवनका शब्दहोता वह मानों वर्षाकालके मेघका गर्ज्जना था ६४ जैसे उत्तरदिशा से पूंछके आकार निकलती उल्का आकाशमें शोभित होती तैसेही ऊपरको पूंछउठाये वे कपि कुञ्जर हनुमान्जी शोभितहोते ६५ बहुत बड़े व चलते सूर्य्यकेसमान प्रकाशित हनुमान्जी हाथीकी करि-हावँ में बाँधनेवाली रस्सीसे बँधे महागज के समान शोभित हुये ६६ ऊपर २ शरीर चलने से व जलमें पछाहीं नीचे २ चलने से बढ़वान् लगीनौका के समान महाकपि हनुमान् विराजमान होतेथे ६७ समुद्र के जिस २ स्थानपर महावानर व जातेथे वह २ स्थान तिनकेअङ्ग के वेगसे खलभलाय विक्षिप्तसा होता दीखताथा ६८ पर्व्वताकार समुद्र की लहरोंके समूहोंको अपनी चौड़ीछाती से तोड़ते महावेगवान् हनु-मानूजी समुद्र उतरनेलगे ६९ अतिबलवान् हनुमान् का पवन व म-ण्डलका पवन इनदोनों ने समुद्रको कँपादिया ७० क्षारसमुद्रमें बड़ी२ लहरोंके समूह खींचतेहुये कपिशार्दूल आकाश को खींचतेही से तड़के जाते ७१ समुद्रमेंमेरु व मन्दराचलके समान उठतरङ्गोंको नांघतेजानों उनको गिनतेही से चलेजातेथे ७२ तिन हनुमानूजी के वेगसे उछला जल आकाशमें टिकेबादरमें लगजाने से शरदऋतु के बादर के समान शोभितहुआ ७३ तिमि नाक बड़े २ मच्छर कछुये जलसे उफलाय २

दिखाईदेते जैसे वस्त्रउतार डालनेसे प्राणियोंके शरीर दिखाईदेतेहैं ७४ सागरके भीतर रहनेवाले सर्प्पोंने इनको ऊपर २ बड़े वेगसे जातेदेख जाना कि गरुड़हैं उड़ेजातेहैं ७५ बड़ेवेगसे चलते हनुमानजीकी छाया दशयोजनकी मोटी व तीशयोजनकी लम्बी अतिमनोहर थी ७६ वायुतनयके पीछे चलतीहुई छाया क्षारसमुद्रमें जो परतीजाती थी वहउजले घनेबादरकी पाँतिकेसमान शोभितहोती थी ७७ महातेजस्वी महाकाय महावानर हनुमान् निरालम्ब वायुमार्ग्गमें पक्षसहित पर्व्वतके समान शोभितहोते ७८ जिस मार्ग्गहोकर वे कपिकुञ्जर जातेथे जानों उसी मार्ग्गको पनारा बनाये समुद्रभी चलाजाताथा ७६ पक्षियोंके समूहके मार्ग्गमें गरुड़के समान हनुमानजी मेघजालोंको अपनेसाथ खींचतेहुये पवनके समान शोभितहुये ८० उससमय महाकपि के खींचने से श्वेत अरुण व नील मँजीरङ्गके बड़े २ सबबादर प्रकाशितहोतेथे ८१ व उस समय अतिवेग से चलनेके कारण कभी तो बादरों के बीच में परजाते कभी फिरनिकलआते इससे कभी बादरोंसछिप व कभी खुलेचन्द्रमाके समान शोभितहोते ८२ बड़ीशीघ्रताकेसाथ समुद्रकेऊपर २ हनुमानजी को जातेदेख देवता गन्धर्व्व व दानवलोग फूलोंकोवर्षा करनेलगे ८३ रामचन्द्रजी के कार्य्यकेलिये जाते हनुमानजीके ऊपर सूर्य्यनेघामनहीं किया व पवन बराबर सेवाकरता चलाजाता ८४ व आकाशमें इनको जातेदेख ऋषिलोग पीछे२ स्तुतिकरतेजाते व देवता गन्धर्व्वलोग बड़ाईकरते पीछे२ चलेजाते ८५ व विनाक्लेशकेकपिको बड़ेवेगसे जातेदेख नाग यक्ष राक्षसादि विविधप्रकार के लोग देख स्तुतिकरते थे कि भाई यहवानरधन्यहै जो ऐसाकामकरताहै ८६ तिन वानरशार्दूल हनुमानजी के समुद्र तड़कने के समय इक्ष्वाकुवंशी राजा सगरजीके लड़के पोतोंसे अपना जन्मजान समुद्र शोचनेलगा ८७ कि इससमय जो हनुमानकी सहायता हम न करेंगे तो जहाँकहीं कृतघ्नोंकीगिनतीहोगीवहाँसबलोग हमकोभीगिनेंगे ८८ देखोहम इक्ष्वाकुनाथसागरसे बढ़ायेगयेहैं तिससे इक्ष्वाकुशिरोमणि श्रीरामचन्द्रजीका यहदूत श्रमपानेके योग्यनहींहै ८६ अबहमको वैसाकरनाचाहिये जिसमें ये हनुमान् कुछदेरखड़ेहो सुस्तालें फिर जितनाअबबाकीहै पीछे तहदिलहो सुखसे चलेजायँगे ६० समुद्र

अपनेमनमें यहविचार हिरण्यनाभ पर्व्वतश्रेष्ठ अपनेजलमें गुप्त मैनाक सेबोला ९१ कि हेमैनाक तुमको इन्द्रने पातालनिवासी दैत्योंकाद्वाररोंकनेकेलिये परिघरूपबनाय यहांस्थापितकियाहै ९२ इसीसेमहापराक्रमी व फिरपाताल से ऊपरनिकलनेकी इच्छाकिये इन दैत्योंके आनेका जो अप्रमाण मार्गहै उसकोमूंदे तुम स्थिररहतेहो ९३ हे पर्व्वतश्रेष्ठ तुम्हार तिरछा ऊंचे नीचे सबओरको बढ़नेकीशक्तिहै इसीसेहमतुमसे कहतेहैं कि उठो ९४ व जलसे कुछेकऊँचेतकबढ़ो जिसमें श्रीरामचन्द्रजीके कार्य्यके लिये ऊपर उड़ते महादुष्कर कर्म्मकरते ये महापराक्रमी व भयानक कर्म्मकारी हनुमान् तुम्हारे ऊपर कुछ देरखड़ेहो सुस्तालें ९५ तुम इनवानरेन्द्रका श्रमदेख जरूरउठो समुद्रके वचनसुन बड़े२ वृक्ष व लताओंसेसंयुक्त मैनाकक्षार समुद्रसे ऊपरको निकला ९६ समुद्रका जल फोड़ मैनाक बड़ाऊँचाहोगया जैसे मेघोंकोविदार सूर्य्यनारायण निकल आतेहैं ९७ समुद्रकी आज्ञा से उसमहात्मा पर्व्वत ने जलकेऊपर अपने शृङ्ग मुहूर्त्तही भरमें दिखाया ९८ उसकेसब सुवर्णमय शृङ्गोंपर किन्नर व बड़े २ सर्प्प बैठेथे उससमय उदयकालके सूर्य्यकेसमान आकाश को छूताहीसा वह शोभितहुआ ९९ तिसपर्व्वतके सुवर्णमयशृङ्गोंसे सुवर्णसम प्रकाशितहोनेसे आकाश शस्त्रोंकेसमान शोभितहुआ १०० महाप्रभायुक्त अति देदीप्यमान सुवर्णमय शृङ्गों से वह पर्व्वतोत्तम सैकरों सूर्य्यों के समान शोभितहुआ १०१ तिसको आगेउठ स्थितदेख हनुमानजीनेजाना कि यह क्षारसमुद्र मेंसे हमको रोंकनेकेलिये कोई विघ्न खड़ाहोगया है यह बनाय निश्चयकिया १०२ तिसको बहुत ऊँचादेख महावेग से जाते महाकपिने अपनी छातीका धक्का जोरसेदे नीचेको बैठादिया जैसे पवन बादर को धक्कादे अलग करदेता है १०३ वह पर्व्वतोत्तम जब महापराक्रमी उन महाकपिसे ताड़ितहुआ तो तिनका वेग जान बहुत हर्षितहुआ व नादकरनेलगा १०४ तिन बीर हनुमान को आकाश में प्राप्तदेख आकाशहीमें टिका वह पर्व्वत प्रसन्नहो तिनसे बोला १०५ बोलनेकेसमय उसने मनुष्यका रूप धारणकरलियाथा व अपनेही एक शृङ्गपर खड़ाहो बोलाथा कि हेवानरोत्तम तुमनेबड़ा दुष्कर कर्म्मकिया १०६ इससे अब हमारे शृंगोंपर आय सुखपूर्व्वक कुछदेरतक विश्राम

कर फिर चलेजाव क्योंकि देखो रामचन्द्रजीके कुलमें उत्पन्न लोगों से यह समुद्र बढ़ाहै १०७ इसीसे यह सागर तुमको रामचन्द्रजीके हितमें युक्तजान तुम्हारीपूजा करताहै क्योंकि जो कोई किसीके सङ्ग उपकार करताहै तो उसेभी चाहिये कि समयपर उसका प्रत्युपकार करै यह सनातन धर्म्महै १०८ सो यह समुद्र रामचन्द्रजीका प्रत्युपकार किया चाहताहै इससे तुमकोचाहिये कि इसका सम्मान करो क्योंकि तुम्हारे निमित्त इसने हमको बड़ेमानसे बार बार कहाहै १०९ इससे हे कपिशार्दूल हमारे ऊपर टिकजाव विश्रामकर फिरचलेजाना आपको सौ योजन आकाशमार्गमेंहोकर जानाठहरा इसस ११० अब जो बाकीरहा है वह हमारे शृंगोंपर विश्राम कर फिर चलेजाना तिससे अबये सुगन्धित व स्वादिष्ठ बहुत कन्द मूल फलादि १११ यथेष्ठ भोजनकर हे कपिश्रेष्ठ पीछेजाना हेकपिमुख्य जिससे कि तुम अपने स्वामीकी सेवा के अनुकूल कामकरतेहो इससे तीनोंलोकों में विख्यात हो भलाजानों तुम्हारेसाथ इतना हमाराभी सम्बन्ध होजायगा ११२ हे पवनतनय जितने वेगवान् बानर कूदते तड़कतेहैं तिनमें हम तुमको मुख्यमानतेहैं ११३ चाहे प्राकृतीभी अतिथिहो जिसको न जानते न सुनते वहभीपूजनीयहोताहै फिर जोधर्म्मजाननेकी इच्छारखताहै व आपऐसे अतिथि को पायजाय तो क्याकहनाहै तोतो अवश्यही पूजा करनीचाहिये ११४ तुम देवताओंमें श्रेष्ठमहात्मापवनके पुत्रहो व इसीसे वेगमें उन्हींके समानहो ११५ इससे जब तुम्हारीपूजा होतीहै तो पवनदेवउस पूजा को प्राप्तहोतेहैं तिससेतुमहमारेअवश्यपूजनीयहो इसविषयमें कुछ और भी कारणहैवहभीसुनो ११६ हतात आगेसत्ययुगमेंयेसबपर्व्वतपक्षधारीथे इससेवेभीगरुड़केसमान सबदिशाओंमें उड़जातेथे ११७ तबतिनकेइसतरहउड़नेपर सबदेवता ऋषि व औरभी सबप्राणी तिनके गिरनेकी शङ्कासेबहुतडरे ११८ तब इन्द्रने बड़ाकोपकरसैकरों व हजारों पर्व्वतोंकेपक्ष वज्रसे काटडाले ११९ तिसकेपीछे बड़ाक्रोधकर वज्रउठाय इन्द्रहमारे भी पक्षकाटने के लिये निकटआय तब हमको महात्मा पवन ने उड़ाय अतिवेग से १२० इस क्षारसमुद्र में फेंकदिया इसीसे हमारे पक्षों की रक्षा तुम्हारेपिता पवनजीने करली १२१ तिसीसे हे पवनकुमार तुम

हमारे माननीयहो व हम इससे और भी तुमको मानते हैं हे कपिमुख्य तुम्हारा हमारा यह सम्बन्ध बड़ा गुणदायकहै १२२ हे महामतिवाले तिससे ऐसाकरनेसे समुद्र व हमदोनों की बड़ी प्रीतिहोगी इससेप्रसन्न मनहो हमदोनोंकी प्रीति आपकरनेके योग्यहैं १२३ अब श्रम मिटाओ व पूजाभी ग्रहणकरो व हमारीप्रीति भी अङ्गीकारकरो क्योंकि हमारे मान्यहो व हमतो तुम्हारे दर्शनमात्रही से प्रसन्न हैं १२४ जब मैनाक ने ऐसाकहा तो बानरश्रेष्ठ हनुमान्जी बोले कि हमआपसे बहुतप्रसन्न हुये तुमनेहमारी आतिथ्यक्रिया की अब जो हमने तुमको छातीसेदबाय दियाहै वहक्रोध क्षमाकरो १२५ हमको बड़ीजल्दीहै इससे ठहर नहीं सके व अब दिनभी थोड़ारहगयाहै व हमनेप्रतिज्ञाभीकीथी कि बीचमें कहींथँभैंगेनहीं सीधे उसपार को चलेजायँगे १२६ यहकह अपनेहाथ पर्व्वतकोछू आकाशमार्ग्गहो हँसते महावीर्य्यवान् हनुमान्जी चलेगये १२७ पर्व्वत व समुद्रदोनों ने अच्छीतरह बार २ उनको निहारा व पूजाभीकी चलनेके समय आशीर्व्वादभी दिया १२८ पर्वत व समुद्रको छोड़ वहांसेबड़ीदूर ऊँचेकूद अपनेपितापवनकेमार्ग्गमें हो विमलआका शमें पवनतनय चलगये १२९ जितनी ऊँचाईपर पहिले जातेथेअबउससे भी बड़ीदूरऊँचेचलेगये वहींसे नराकारसमुद्र व नराकारहीअपने शृङ्ग पैखड़े मैनाकको देखते निरालम्बहो हनुमान्जी चलेगये १३० हनुमान् जीका यह दूसरादुष्कर कर्म्म देख सबदेवता सिद्ध व परमर्षिलोग प्रशं- सा करनेलगे १३१ व जोकि मैनाक हनुमान्जीको विश्रामदेता था इस कर्म्मसे जोदेवतालोग व इन्द्रजी हनुमान्का तड़कनादेखनेको वहांआये थे सबहर्षितहुये १३२ व महाबुद्धिमान इन्द्राणीकेपति इन्द्रजी गद्गदवाणी से सुवर्णकी नाभिवाले मैनाकपर्व्वतसेबोले १३३ हे हिरण्यनाभ पर्व्वते- न्द्र हमतुम्हारेऊपर बहुतहीप्रसन्नहुये इससे अबहमने तुमकोअभयदान किया जहाँचाहो अपनेमनसे सुखपूर्व्वक चलाकरो अब हमतुम्हारे पक्ष न काटेंगे १३४ क्योंकि सुग्रीवको छोड़ और सबसे निर्भय व सबबा- नरोंकेऊपर सुग्रीवका भय आनेपर सौयोजन का समुद्र नांघनेमें तत्पर कुछभीथकेनहीं तथापि तुमने विश्रामकरनेकोकहा हनुमान्कीबड़ीसहा- यता की १३५ देखो ये हनुमान् महाराजाधिराज दशरथजीके पुत्र श्री

रामचन्द्रजी के हितकेलियेजातेहैं व तुमने अपनीशक्तिभर उनकीसत्क्रि-
या की इससे तुमनेहमको बहुतसन्तुष्टकिया १३६ उससमय देवताओं
केप्रति इंद्रजी को सन्तुष्टदेख पर्वतोंमें उत्तममैनाक बहुतहर्षितहुआ १३७
व इंद्रने अभयदानतो देहीदिया इससेमैनाक वहींटिकारहा व एकमुहू-
र्त्तभरमें हनुमान्जी समुद्रकोउतरगये १३८ जैसे थोड़ीदूरपारहोनेको
बाकीरहा कि सबदेवता गन्धर्व सिद्ध व परमर्षिलोग सूर्य्यसमप्रकाशित
सर्प्पोंकीमाता सुरसासेबोले १३९ कि ये पवनकेपुत्र हनुमान् समुद्रके
ऊपर२ तड़केचलजातेहैं तिनकातुम एकमुहूर्त्तभरविघ्नकरो १४० व वि-
घ्नकरनेका उपाययहहै कि तुमअपनाअतिघोर पर्वताकार बड़े२ कराल
दाँतयुक्त पेरी२ आँखें कर आकाश पर्य्यन्तऊँचा राक्षसोंका सारूप बना
लो १४१ क्योंकि हम इनपवनतनयका बल व पराक्रम जाननाचाहतेहैं
देखेंतुमकोउपायसे जीतलेंगे वा विषादकोप्राप्तहोंगे १४२ जब देवता-
दिकोंने ऐसाकहा तो उससुरसा ने समुद्रकेबीचमें अतिभयानक राक्षस
कारूप धारणकिया १४३ वह उसकारूप बड़ाविकराल व बड़ाविरूप
व सबको भय पहुँचानेवाला था उसतरहके रूपसे समुद्रके ऊपर ऊपर
जाते हनुमान्जीको आगेसे घेर वह बोली १४४ कि सब ब्रह्मादि देवों
ने बानरों में श्रेष्ठ तुमहमारे भोजन करनेकेलिये यहां भेजेगयेहो इससे
हम तुमको भक्षण करलेंगी हमारे मुखमें पैठो १४५ क्योंकि ब्रह्माजीने
हमको यही बरदानहीं देरक्खाहै यह कह पवनकुमारके आगे मुहँबाय
खड़ीहोगई १४६ इसतरह जबसुरसाने कहा तो बहुत हँसकर हनुमा-
न्जी बोले कि महाराज दशरथजीके पुत्र श्रीरामचन्द्रजी दण्डकारण्य
को आये १४७ उनकेसाथ उनकेभाई लक्ष्मण व उनकी भार्य्या सीताजी
भी आईं १४८ पर उन रामचन्द्रजीको बनमें कुछ देवतादिकोंका कार्य्य
तो करनाहीनहीं रहा इससे उनसे राक्षसोंसेही बैर बँधगया इससे
तिनकी परमयशस्विनी भार्य्या रावण हरलेगया १४९ हमउन्हीं राम
चन्द्रजी के दूतहैं व उन्हीं की आज्ञा से सीताजी के निकट को जाते हैं
तुमभी तो महाराज रामचन्द्रही के राज्य में बसती हो इससे हमारी
सहायता करो हमको भक्षण न करो १५० जो तुमको खानेहीकी बड़ी
आवश्यक्ताहो तो हम जानकी को देख रामचन्द्र जी से सन्देश कह

आवें तो तुम्हारे मुखमें आय पैठेंगे तुमसे सत्यही कहते हैं १५१ हनुमान्‌जी ने जब ऐसा कहा तो कामरूपिणी सुरसा बोली कि हमको तो ब्रह्मा ने यही वरदियाहै कि तुम्हारे आगे कोई जीता जायही न सकेगा इससे हमजरूर तुमको खायलेंगी १५२ तिनके जातेदेखहनुमान् जीका बल जाननेकी इच्छासे नागोंकी माता सुरसा ने यों कहा १५३ कि हे वानर! तुम हमकोब्रह्माने यहीवरदियाहै कि जोकोईआवेगा तुम्हारे मुखहीहोकर जायगा इससे तुमभीहमारे मुखहीमें पैठकरजाव योंतोन जानेदेंगी १५४ यहकह पवनतनयकेआगे मुहँबाय खड़ीहोगई जबसुरसाने ऐसाकहा तो वानरश्रेष्ठ हनुमान्‌जी बड़ेक्रुद्धहो १५५ बोले कि अच्छाउतना बड़ामुहँकर जिसमें हमअँबायँ इतनाकह दशयोजनमुख फैलाये सुरसापर बड़ेक्रुद्धहुये १५६ व आपभी दशयोजनके लम्बेचौड़ेहो गये तिनकोमेघाकार दशयोजनका लम्बाचौड़ादेख १५७ सुरसाने बीश योजनका चौड़ामुखबनाया तब हनुमान्‌जी क्रुद्धहो तीशयोजनकेहोगये १५८ तबसुरसाने चालीशयोजनका ऊँचामुखकरलिया तब हनुमान्वीर पचाशयोजनके ऊँचेहोगये १५६ तब सुरसाने साठयोजनका अपनामुख किया तैसेही हनुमान्वीर सत्तरयोजनके उँचेहोगये १६० तब सुरसाने अशीयोजनकाऊँचा मुखकरलिया तब अग्निसमान तेजस्वी हनुमान् जी नब्बेयोजनकेहोगये १६१ तबसुरसाने सौयोजनकाचौड़ा मुखकरलिया तब उससमयमें मेघाकार हनुमान्‌जी ने अपनाशरीर बहुतहीछोटा करलिया यहांतक कि अँगूठाप्रमाणहोगये १६२ व उसकेमुखमेंपैठ कानेकी राह उसपारनिकल अन्तरिक्षमें खड़ेहोबोले कि १६३ हे दाक्षयणिहम तुम्हारेमुखमेंपैठ इसपारनिकलआये अबजहाँ जानकीजी हैं वहाँजाते हैं तुम्हारे नमस्कारकरतेहैं देखोतुम्हारा बरदानभी पूर्णहोगया १६४ राहुकेमुखसेछूटे चन्द्रमाके समान तिनको अपनेमुखसे छूटेदेख अपनेप्रथम केरूपसे सुरसादेवीबोली १६५ हे वानरश्रेष्ठ सुखपूर्बक चलेजाव कार्य्यसिद्धि होजायगा जाव जानकीजी को लाय रामचन्द्रजी से मिलावो १६६ यहतीसरा हनुमान्‌जीका दुष्करकर्म्मदेख सबप्राणियोंनेअच्छा२ कह बड़ीबड़ाईकी १६७ वहाँ से हनुमान् जी और ऊँचेको उछलगये व आकाशमार्ग्गहो महादुस्तर समुद्रउतरनेलगे १६८ वह आकाशमार्ग्ग

जलधाराओंसे सेवित व पक्षियोंसे निषेवित गाननृत्य विद्याजाननेवाले गन्धर्व्वकिन्नरादिकोंके चलनेकास्थान व ऐरावत गजसेसेवित १६६ व सिंहहाथी व्याघ्र पतङ्ग सर्प्पआदि वाहनोंकेचलने से व विमानोंके आने जानेस अलंकृत १७० वज्र व अशनिसम स्पर्शवाले अग्नियोंके समान देदीप्यमान पुण्यात्मा महात्मालोगों स भरा इससेशोभित १७१ व घी-रलिये अग्निसे सेवित व ग्रह नक्षत्र चन्द्र सूर्य्यादिकोंसे सेवित १७२ व महर्षि गण गन्धर्व्व सर्प्प यक्षादिकोंसेपूर्ण एकान्तविमल व विशाल व विश्वावसुनिषेवित १७३ व देवराजके हाथीसेगोंजा चन्द्रमा व सूर्य्यका कल्याणरूपमार्ग जीवलोकके रहनेकास्थान विमल व ब्रह्मासेनिर्म्मित १७४ बहुतसे वीरोंसे सेवित विद्याधरोंके गणोंसेपूर्ण ऐसे वायुमार्गमें गरुड़केसमान वेगसे पवनतनयगये १७५ हनुमान्‌जी चलनेमें पवनके समान मेघोंकोखींचे चलेजातेथे इससे सबबादरका लागरु केव लाल पीतवर्णकेहोगये १७६ बानरश्रेष्ठ हनुमान्‌जीके खींचनेसे सब बादरोंके समूहशोभितहुये व हनुमान्‌जी कभी बादरोंकेबीचमें पैठजाते व फिरफिर निकलआते १७७ इससेबादरोंमेंपैठतेनिकलतेवर्षाकालकेचन्द्रमाकेसमान शोभितहोतेथे व सबकहीं देखाईदेते पवनतनय हनुमान्‌जी १७८ निरा-लम्बहो पक्षयुक्तपर्व्वतकेसमान आकाशमेंबिराजमानहोते चलेजातेथे इन को इसतरह सरसराहटके साथ जातेदेख सिंहिकानाम एकराक्षसी १७६ अपने मनसे बिचारनेलगी कि मैं बहुतदिनोंसे भूंखीथी परआज अघाय जाऊँगी १८० क्योंकि यह बड़ाभारीजीव बहुतदिनोंके पीछे मेरे बशमें आयाहै यह मनसे चिन्तवनकर हनुमान्‌जीकी छायापकड़ उसनेखींचा जब छायाखींचीगई तैसेही पवनतनय चिन्तना करनेलगे १८१ कि हम को तो किसीने खींचकर पराक्रमही पँगुला करदिया अब आगे चलनेही नहींपाते जैसे सम्मुखका पवन समुद्रमें नौकाको आगेनहीं जानेदेता १८२ यह शोच उन महाकपि ने तिरछा ऊंचे नीचे सब ओर निहारा देखा तो उसी क्षारसमुद्रमें एकबड़ाभारीजीव उफलाता देखपरा १८३ तिस विकरालमुखी को देख हनुमान्‌जी चिन्तना करनेलगे १८४ कि जैसा बानरराज सुग्रीवजीने कहाथा कि दक्षिणसमुद्रमें एक बड़ाअद्भुत जीव रहताहै वह छायाहीपकड़ खींचलेता है सो महावीर्यवान् यही है

इसमें कुछ सन्देह नहीं १८५ ऐसा शोचते शोचते हनुमानजीने बड़े विचारसे जाना कि यह सिंहिका नाम राक्षसी है इससे व परममतिमान हनुमान् बहुत बड़ेहोगये जैसे वर्षाकालमें बादर बहुत बड़ाहोता है १८६ तिन महाकपि का बढ़ाहुआ बड़ाभारी शरीरदेख उसने अपना एक ओठ पातालमें लगाय दूसरा आकाशमें लगादिया ऐसा मुहँ फैलाया १८७ व बादरके समान गज्जंती पवनकुमारको दौरी तिनने उसका महाविकराल बड़ाभारी मुखदेख १८८ जाना कि इसनें हमारा सब शरीर चलाजायगा व सब मर्मस्थान भी इसीके भीतर आजायँगे इससे तिंस राक्षसी के उस बड़भारी मुखमें वज्रसम पुष्टाङ्ग पवनसुत १८९ अपना शरीर बहुत छोटाकर उसके मुखमें पैठगये तिसके मुखमें डूबते डूबते हनुमानजीको सिद्धों व चारणों ने देखा कि जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमाको कभी कभी राहुलीललेता है वैसेही इनको इस राक्षसीने लीललिया १९० यहां तो सिद्धचारणादि यहविचारतेथ वहांहनुमानजी मुखके भीतरजाय अपने तीक्ष्णनखोंसे सबउसके भीतरके सुकुमार स्थान नोंचफोंच बड़वेग व बड़े विक्रमसे उसके मुखसे फिर उछलआये १९१ तिसको इसतरह बड़ेभाग्य व धारणा व चतुरतासे मार महाकपि हनुमान् फिर बढ़े १९२ इसतरह जब हनुमानजीने उसका हृद नोचखोंच प्राण निकाललिया तो वह क्षारसमुद्रमें गिरपरी भाई इसदुष्टाके मारने के लिये ब्रह्माजीने हनुमानजीही को बनाया नहीं तो और कौन मार सक्ता १९३ तिससिंहिकाको बड़ी शीघ्रताकेसाथ पवनतनय से मारी समुद्रमें गिरीदेख सब आकाशगामी ऋषि सिद्ध देव गन्धर्वादि लोग वानरोत्तम हनुमानजीसे बोले १९४ कि तुमने बड़ा भयङ्कर कर्म्म आज किया जो इतना बड़ाभारी जन्तु मारडारा इससे अब अपना अभीष्टकर्म्म सिद्धिकरो कोई विघ्न तुमको कुछ न करसकेगा १९५ क्योंकि हे वानरेन्द्र जिसतुम्हारे धारणा दृष्टिबुद्धि व चतुरता ये चारपदार्त्थ इसतरहके हैं सो तुमकिसी कर्म्म में न कष्टपावोगे तुमको सब साध्यही हैं १९६ परमपूज्य हनुमानजी तिनलोगों से इसतरह पूजितहो अपना मनोरथ सिद्धकर आकाश मार्ग्गहो गरुड़केसमान चले १९७ जाते २ सबओर निहारते सौयोजन के समुद्रके उसपार पहुँचे वहां समुद्र के दक्षिण के

किनारेपर एक बड़ीभारी वनकी पाँति देखपरी १९८ व कहीं विविध प्रकारके वृक्षोंसेपूर्ण एकद्वीपदेखा व मलयाचल पर्व्वतके उपवन १९९ सागर व सागरका काछा व सागरके काछमें उत्पन्नवृक्ष व सागर की पत्नी नदियोंके सङ्गम ये सब पदार्त्थदेखे २०० वहांजाय महा बुद्धिमान् हनुमानजी महा मेघाकार अपना बड़ाभारी शरीर देख जोकि मानों आकाशको रूंधहीलेता था अति मतिमान् तो थेही उन्होंने यहविचारा कि २०१ हमारा इतनाबड़ा शरीर व इतनाबड़ा वेगदेख राक्षस लोग हमको एकखेल बनालेंगे सबबड़ी शौकसे देखनेदौड़ेंगे फिर हम जिस कार्य्यकेलिये आयेहैं वहकैसे करपावेंगे यह उन्होंनेमाना २०२ इससे वह पर्व्वताकार शरीर उन्होंने छोटा जैसा सदारहताथा करलिया जैसे योगीलोग अपने शरीर को छोड़ नित्यानन्द स्वभाव अति सूक्ष्मरूप धारण करलेतेहैं २०३ वह बड़ाभारी शरीर हनुमानजी छोटाकर अपने साधारण रूप को प्राप्तहोगये जैसे भगवान् वामनजी तीनोंलोक नाप वलिका अहङ्कार तोड़नेकेलिये पहिले बड़ारूप धारणकर पीछे अपना स्वाभाविक रूपहोगये २०४ व तिसकेपीछे अति मनोहर नानाप्रकार का रूपधारण करनेवाले हनुमानजी औरोंके उतरनेके अयोग्य समुद्रके उस किनारे पहुँच सीताजीके ढूंढ़नेका यत्न अच्छीतरह जान व अपने मनमें निश्चयकर कि अबहम जरूर जानकीजीको ढूंढ़लेंगे २०५ इस-लिये व मेघ समूहाकार महात्मा हनुमानजी केतकी कचनार नारियल आदि वृक्षलगे लम्बनाम पर्वतके अति चित्रविचित्र व सबवस्तु सम्पन्न शृङ्गपर ऊपरसेकूदे २०६ फिर उस लम्बनाम पर्व्वतपरसे लङ्कापुरीको अच्छीतरह देख जोकि समुद्र के किनारे एक गिरिवर्य्य नाम पर्वत के ऊपरबसीथी अपनारूप सूक्ष्मकर उस गिरिवर्य्य पर्वतपर के मृगों व पक्षियोंको व्यथित कराते उसीपर कूदे २०७ ॥

कुण्डलिका ॥

लहरी मालसहित अहि दानवादि युत नीक ।
सागरबलसों उतरि कपिकरत मनहिं सबठीक ॥
करत मनहिं सबठीक उतरि जलनिधिके तीरा ।
लषन लग्यो सब ओर तहां मारुत सुत बीरा ॥

अमरावती समान लख्यो पुनि लङ्का नगरी ।
शोभित सकलविमान यथा जलनिधि युतलहरी ११२०८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेप्रथमस्सर्गः १ ॥

महा बलवान् हनुमान्जीने महाभयानक समुद्र अपने बलसे उतर तीन शृङ्गयुक्त गिरिवर्य्यनाम पर्वतकेनिकट स्थिरहो बनाय स्वस्थचित्त कर लङ्कापुरी देखी १ उस तीन शृङ्गवाले गिरिश्रेष्ठ पर्वत के किनारे जिसे त्रिकूटभी कहते हैं हनुमान्जी वृक्षोंसे गिरे फूलों की वर्षा होनेसे मानों पुष्पमयहो शोभितहुये २ उत्तम विक्रम हनुमान्जी सौ योजनका समुद्र उतरभी आये परन्तु न तो उनकी कड़ीसांसें आईं व न कुछ थकाहीलगा ३ क्योंकि वे अपने मनमें यही विचारते चलेआयेकि हमतो सौयोजनके समूह हजारों लाखों योजन नाँघसक्ते हैं तो इस सौयोजन मर्य्यादा बँधेहुये समुद्रके नांघजानेमें क्याहै ४ इससे वीर्य्यवानोंमें श्रेष्ठ व तड़कने कूदनेवालोंमें उत्तम हनुमान्जी बड़ेवेगसेसमुद्रकोनांघ लङ्कापुरीकोगये ५ जाने के समय दूर्वादिहरी घासों व नीलरङ्ग की मधु युक्त व सुगन्धित व पर्व्वत सहितवनों के बीचमें होकर जो मार्ग गया था उसीकोगये ६ पर्व्वतोंपर नानाप्रकार के वृक्षलगेथे वन सबओरसे फूलरहेथे तिनके बीचमेंहो महातेजस्वी वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्जी विचरतेथे ७ उसी त्रिकूट के निकट टिके हनुमान्जीने वन व उपवन बहुत देखे व उसी त्रिकूटही के ऊपर बसी लङ्कापुरी भी देखी ८ इसी तरह साखू कर्णिकार खजूर चिरौंजी खिन्नी मुचुकुन्द कुरैया केतकी ६ प्रियङ्गु गन्धयुक्त कदम्ब शतावरी असना कोविदार कँदैल आदि पुष्पित वृक्ष १० इनमें कोई २ वृक्ष तो बनाय फूलेथे किसी २ के फूल अभी कलीहीमेंथे पर सबपर पक्षीबैठेथे व सबपवन से कम्पित होरहेथे ११ व कमलके पुष्पोंसे शोभित नानाप्रकारके पक्षियों से नादित बावलियां देखीं व विविधप्रकार के क्रीड़ा करनेके छोटे २ पर्व्वत व विविधप्रकार के जलाशय १२ व नानाप्रकार के सब ऋतुओं में फुलानेवाले वृक्षोंसे शोभित अति रमणीय फुलवाड़ियां तिन कपिकुञ्जरने देखीं १३ इसतरह देखते २ रावणकीपाली लङ्कापुरी के निकट पहुँचे जिसके चारों-

ओर पनियांसोते खावाँथा जिसमें नाना प्रकार के कमललगे थे इससे वहपुरी ओर शोभित होतीथी १४ जिससे कि सीताजीको रावणहरले गयाथा इससे ओर बड़ी चौकसीथी सबओर से अच्छीतरह रक्षाहोरहीथी नानाप्रकारके अस्त्रशस्त्रलिये राक्षसलोग सबओरसे घूमरहेथे १५ सुवर्णकी अतिरमणीय सबओर शहरपनाह थी शरदऋतुके बादरोंके समान उजले पब्बताकार गृहबने थे १६ अमृत व चन्दन मिश्रित जलके छिरकावके कारण सब सड़कें उजली होरहीथीं लाखों अँटारियोंसे पुरी पूर्णहोरहीथी मन्दिरोंपर ध्वजा पताका फहराती थीं १७ सुवर्णके पत्रों के बन्दनवार द्वार २ पे व शहरपनाहके किनारे २ भी लगेथे ऐसी लङ्कापुरी इंद्रपुरीके समान हनुमानजीने देखी १८ यहपुरी पर्व्वतके ऊपर बसीथी जितनेमन्दिर इसमेंथे सब उजलेहीथे इस पुरीको हनुमान्जीने देखा मानों आकाशहीको प्राप्तथी १९ व राक्षसेन्द्र रावण तो इसकी पालना करताथा व बिश्वकर्म्माने बनायाथा इससेमानों आकाशको उड़ीही जातीथी ऐसीपुरी पवनतनयने देखी २० वहपुरी खावाँ व शहरपनाह को तो जानों अपनी मोटीठासें बनायेथी व चारोंओरसे बहुत जल व बन था वही वस्त्रधारण कियेथी तोप शूलादि शस्त्रही उसके केशथे अँटारियां मानों कर्णभूषणथीं २१ मानों बिश्वकर्म्माने अपनामन अच्छीतरह लगाय बनायाथा ऐसीलङ्काके उत्तरके फाटकपर पहुँच हनुमानजी चिन्तनाकरने लगे २२ कि देखा इसका यह फाटक कैलासपर्व्वतके समान तो ऊँचा व उजलाहै इसीसे जानोंआकाशको चाटलिया चाहता है व ऊँचेऊँचे उत्तम उत्तम मन्दिरोंके बननेसे मानों आकाशहीमें धराहै २३ व इसपुरीमें सब कहीं राक्षसही भरेपरे हैं जैसे गुहा बिषधर सर्प्पोंसे भरीहो व तिसकी बड़ीभारी रक्षा व चारोंओर समुद्रभी देख व महाघोर बैरी रावणकोदेख हनुमान्जी चिन्तना करनेलगे कि २४ वानरलोग जो यहांतक किसी तरह चलेभी आते तोभी निरर्थकही होते क्योंकि यहलङ्का युद्धमें देवताओंके भी जीतनेके योग्यनहीं फिरबानरोंकी कौनगिनती २५ व इस राक्षसरक्षित अतिदुर्ग्ग रावण पालितलङ्कामेंआय महाबाहु रामचन्द्रही क्याकरेंगे २६ इन राक्षसोंके निकट न तो साम चलसक्ता न दान कुछ करसक्ता न भेदहीका अवकाशहै व न युद्धहीका कोईउपाय दिखाईदेता

२७ व इतने बानरहैं उनमें यहां आय थोड़ा बहुत कुछ करनेकराने की गति चारही बानरोंमेंहै एकतो अङ्गदमें व नीलमें व बानरराज सुग्रीवमें व हममें भी २८ खैर जो होगा देखाजायगा अभी कुछ चिन्तनाकरनेका कामनहीं पहिले ढूंढ़कर देखें तो जानकी जीतीहैं व नहीं जो जीतीमिलेंगी तो उन्हींकेसमीपबैठ इसबातकी चिन्तनाकरेंगे २९ इसतरह रामचन्द्र जीकी अभ्युदयमें रत बानरोंमें हाथीरूप हनुमान् उस पर्व्वतके शृङ्गपर बैठबैठे मुहूर्त्तभरतक चिन्तना करतेरहे ३० चिन्तना करतेकरते यहबात मनमेंआई कि इसरूपसे महाबलवान् व क्रूरस्वभाव राक्षसोंसे रक्षित इसपुरीमें हमनहीं पैठसक्ते ३१ इससे जानकीजीके ढूंढ़नेकीइच्छा किये हमको चाहिये कि इन महापराक्रमी व महाबीर्य्यवान् राक्षसोंको छलमें डारें ३२ क्योंकि समयआयगया व हमको काम बड़ाभारी करना है इससे ऐसारूप धारण करें जिसमें कोई देख न पावै व हम सबकुछ देखतेरहैं सो ऐसारूप धारणकर भी रात्रिहीको लङ्कामेंपैठें ३३ सुर वा असुरोंसे बड़ेकष्टसे प्राप्तहोनेकेयोग्य वहपुरी देख बारबार ऊधीसांसें ले हनुमान्जी चिन्तना करतेथे ३४ कि हमजनककुमारी श्रीजानकीजीको किसउपायसे देखें कि जिसमें राक्षसोंकाराजा दुष्टात्मा रावण हमको न देखपावै ३५ व परमविज्ञानी श्रीरामचन्द्रजीका कार्य्य कौनयत्न करें कि नाश नहो व एकान्तमें हमअकेलेही जाय जानकीजीको देखलें ३६ राजाओंके कार्य्य दूतोंकेही अधीनहोतेहैं इससेहमको सावधानताके साथ काम करनाचाहिये क्योंकि जबदूत डरपोंकहुआ तो देशकालके विरोधसे सिद्ध भी कार्य्य नष्टहोजातेहैं जैसे रात्रिमें सबतरहसे सिद्ध अन्धकार सर्व्वत्र फैलारहता पर सूर्य्योदय होतेही नष्टहोजाताहै ३७ व जहां अविवेकी दूतहोते जो अपनाकोही पण्डित मानतेहैं वहां स्वामीका कार्य्य नष्टहोजाताहै इससे कार्य्यके कर्त्तव्य व अकर्त्तव्यके विषयमें निश्चितार्थ जाननेवाली भी बुद्धिनहीं शोभितहोती क्योंकि कार्य्य उलटे सीधे हुआ करतेहैं ३८ अबकौन यत्न कियाजाय जिससेकार्य्य न नष्टहो व हमको व्याकुली भी नहो व इससमुद्रका नांघना भी कैसे वृथा न हो ३९ जो हमको राक्षसोंने देखलिया तो महाविज्ञानी व रावणका अनर्थ चाहनेवाले श्रीरामचन्द्रजीका यहकार्य्य नष्टहोजायगा ४० व ऐसा कहींस्थान

नहीं जहांहम टिकेरहैं व हमको राक्षस न जानपावें सो जो हम राक्षस का भी रूप धारणकरें तोभी राक्षस जानलेंगे फिर और रूप धारण करनेसे क्या वहतो प्रकटही होजायगा ४१ क्योंकि हम जानतेहैं कि इसलङ्कामें पवनभी बिनाजाने गुप्तनहीं चलसक्ता यहांके भयङ्कर कर्म्म-कारी राक्षसऐसेहीहैं कि इनको कुछअज्ञात नहींरहता ये सबकुछ जानते हैं ४२ कदाचित् हमयहां अपनेबानरहीके रूपसे टिकतेहैं तो हमारातो मरणही होजायगा व स्वामीका कार्य्यभी नष्टहोजायगा ४३ तिससेहम रामचन्द्रजीका कार्य्य सिद्धहोनेकेलिये इसी अपनेरूपको बहुतही छोटा कर रात्रिको लङ्कामें पैठेंगे ४४ इस दुरासद रावणकी पुरीमें रात्रिकोपैठ फिर प्रति मन्दिर ढूंढ़ जानकी जी को देखेंगे ४५ हनुमान् जी ने अपने मनमें यह निश्चयकर सूर्य्यास्त समयमें जानकीजी के दर्शनकी इच्छा की ४६ जब बनाय सूर्य्य अस्त होगये रात्रि आयगई तो पवनतनय अपना शरीर बहुत छोटाकर बिलार के बराबर हो अति अद्भुत दर्शन होगये ४७ व उसी प्रदोषसमयमें महावीर्य्यवान् हनुमान्जी बड़ीजल्दी केसाथ उछले व बड़ीबड़ी सड़कोंवाली उस रमणीय पुरी में पैठे ४८ जिसमें कि बड़ेबड़े भारी राजमन्दिर बनेथे व सबखम्भे सुवर्णहीकेलगे थे झरोखे भी सब सुवर्णमय थे इससे गन्धर्ब्बोंके नगरके समानथी ४९ स्फटिकमणि व सुवर्ण से बिभूषित सतमहला व अठमहलों पर चढ़चढ़ वहपुरी हनुमान् जी ने देखी ५० जो स्फटिकमणि व सुवर्णके स्थलबनेथे उन्हींसे राक्षसोंके मन्दिर शोभितहोतेथे व जो राक्षसों के मन्दिरोंमें सु-वर्णके वन्दनवार लटकते थे वेही सब ओरसे अलंकृत लङ्काको प्रकाशित करतेथे ५१ अचिन्त्यनीय हर्षितहुये व अद्भुताकार लङ्कादेख हनुमान्जी बहुतवैदेहीजीके दर्शनकी इच्छालगीथी इससेफिर उदासीनहोगये५२ ॥

चौ० श्वेतविमानमालिनीलङ्का।जातरूपमयतोरणअङ्का॥रावणभुजपालितबहुभाँती।भीमनिशाचरलालितपाँती १।५३ निजचंद्रिकाभवनअवरोपी। ह्वैअनंकमूरतितमलोपी॥ तारागणकेमध्यबिराजत। बिधु जनुतासु सचिव समभ्राजत २।५४ शंखमृडालक्षीरद्युतिधारी। उद्यतभासप्रकाशितभारी सरमहँहंससरिस बिधुकाहीं। उछलतलख्योपवनसुतताहीं ३।५५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्वितीयस्सर्ग्गः॥ २ ॥

लम्बनाम पर्व्वतकेमेघ सदृशश्वेत व लम्बेशिखर पर प्रवेशहोनेकेयोग्य पराक्रमकोप्राप्तहो महाबुद्धिमान् व महावीर्य्यवान् पवनतनय १ रात्रि में लङ्कापुरीमेंपैठे जो लङ्कारमणीय बन व जलसेयुक्त व रावण से पालित २ व शरदऋतुके बादरोंके मेघोंकेसमान श्वेतमन्दिरों से शोभित व समुद्र के समान गर्ज्जनेवाले राक्षसोंके शब्दसे पूर्ण व सागरमें लगकर आये शीतलपवनसे सेवित ३ व अतिपुष्ट सेनासे दृढ़ अलकापुरी के समान व बाहरकेद्वारोंपर मतवालेहाथियोंसेपूर्ण व सुधासंस्कारहोनेसे श्वेतवर्णके बाहर भीतरकेद्वारों से संयुक्त ४ व सब ओरसे सर्प्पों से रक्षित इसीसे भोगवती नाम सर्प्पों की पुरीके समान शोभित व राक्षसों की सीमासे बने बिजुली सहित बादरोंसे घिरी व नक्षत्रगणों से सेवित ५ व प्रचण्डपवन के शब्दसे शब्दायमान जैसे कि इन्द्रपुरी शोभित होती व सब ओर से बड़ी भारी सुवर्ण की शहरपनाह से घिरी ६ व किङ्किणियोंके समूहोंसे शब्दायमान पताकाओं से विभूषित ऐसी लङ्कापुरी की शहरपनाहपर हर्षित हो हनुमान् जी चढ़गये ७ उस परसे जो सब ओर पुरी देखा तो पवनतनय बड़ेही विस्मित हुये क्योंकि उस पुरी में सबसुवर्णमय द्वार लगेथे व वैदूर्य्यमणि की चौकठेंधरीथीं ८ व मणिस्फटिकमणि व मोतियों से द्वारोंके निकट की दीवारों की चुनाईहुई थी इसीसे अति भूषित होते थे व उन द्वारोंपर तपाये सुवर्ण के बने मतवाले हाथी धरे थे व उनका ऊपरका भाग चाँदीसे बनाथा ९ द्वारोंमें जानेके लिये वैदूर्य्य मणिओंको सिड़्ढियाँ बनीथीं व भीतर सब स्फटिक मणियोंसे बना था व उनके ऊपर सुन्दर सभामन्दिर बनेथे मानों आकाश को उड़ेजाते थे १० व द्वारोंके ऊपर क्रौंच मयूर बोलरहेथे व राजहंसों से विभूषित थे नगारे व गहनोंका शब्द होरहाथा इससे वह पुरी सबओरसे शब्दायमानहीथी ११ इसीसे कुबेरको अलकानाम पुरीकेतुल्यथी मानोंआकाशही कोउड़ीजाती लङ्कापुरीको देख हनुमानूजी बहुत हर्षितहुये १२ व उस राक्षसाधिपति रावणकी अत्युत्तम व ऋद्धिमतीपुरी देख महावीर्य्यवान् हनुमानूजी चिन्तना करनेलगे १३ कि बड़े२ आयुधलिये रावणकेसैन्यओंसे रक्षित यह पुरी जबरदस्ती औरोंके आनेके योग्य नहीं है १४ हां कुमुद व अङ्गद वा महाकपि सुषेण वा मैन्द व द्विविदइन्हींलोगोंके जाने

केयोग्य यह प्रसिद्धलङ्काहै १५ वा सुग्रीव व कुशपर्व्वा व ऋक्ष व वानरोंमें मुख्य जाम्ववान् व हमारी बस इन्हींलोगोंकी गति यहांहै और किसीकी नहीं १६ यह बिचारतेहीथे कि महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके पराक्रम की सुधि आई तैसेही प्रसन्नहोगये कि कौनबात है सबकुछ होजायगा १७ रत्नमयजो भवनलङ्का में बनेथे वही मानों बसनथे तिनको धारणकिये गोंठ व बड़े २ गृहोंको कर्ण भूषण बनाये व प्राकारके ऊपर जो सरदरआदि बनेथे उन्हींको स्तनबनाये इसतरह सब वस्तुओंसे भूषित मानों सबभूषण पहिरे नईस्त्रीहीके समानथी १८ व नानाप्रकार के मणियोंसे प्रकाशित भवनोंमें जो दीपबर रहेथे उससे कहीं अँधियारीका नामनहीं देखाई देता था इसतरह की रावण की नगरी महाकपि ने देखी १९ जब इसतरह हनुमान्जी नगरीमें पैठगये तो इनवानरशार्दूल को लंकापुरीनेभी अपनी अधिष्ठात्री देवताके रूपसे पैठतेदेखा २० ईन वानरश्रेष्ठकोदेख रावणीकी पाली व महाबिकरालमुखी लंका अपने आप उठ खड़ीहुई २१ व तिन बायुपुत्र के आगे घेर खड़ी होगई व बड़ा घोरशब्द करती उन पवनतनय से बोली २२ हे वनके रहनेवाले तुमकौनहो व किस कार्य्यकेलिये यहांआये हो इसबिषयमें जो निश्चयहो जबतक जीतेहो इसीबीचमें बताओ २३ हे वानर रावणकी सेनासे रक्षित व अपने आपभी रक्षित यह लंकापुरी तुम्हारे पैठनेके योग्यनहीं है २४ यहसुन हनुमान्जी तिससे बोले कि जो तुम पूंछतीहोतो जो इसबिषय में हमारा बिचारहै तुमसे कहेंगे २५ पर पहिले तुम तो बताओ कि बिकरालनयना तुमकौन हो जो इसपुरी के दरवाजेपर खड़ीहो व मारेक्रोधके हमकोक्यों डरवातीहोबतावो तो २६ हनुमान्जीके बचनसुन कामरूपिणीलंका बड़ेकड़े बचन पवनतनय से बोली२७ कि हम राक्षसराज रावणकी आज्ञा सदापरखतीहैं व बड़ेदुःख से कोई हमारेसामने आयसक्ताहै व इसपुरीकी रक्षाकिया करतीहैं २८ इससे हमारा निरादरकर कोई इसपुरीमें पैठनहींसक्ता इसीसे तुम भी हमसे मारेहुये प्राणरहित हो आजयहां शयनकरोगे २९ हेवानर हम आपलङ्का नगरीहैं व अपनी रक्षा अपनेहीबूते करतीहैं इसीसे तुमसे कहती हैं ३० पवनतनय हनूमान्जी लङ्का के बचनसुन वे वानरश्रेष्ठ

यत्नवान् तो बड़ेहीहैं पर्ब्बताकार हो आगे खड़ेहोगये ३१ व उसको स्त्रीका बिकरालरूप धारण कियेदेख महाबुद्धिमान् वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् समयानुसार बचन बोले ३२ कि हम शहरपनाह अँटारी आदि युक्त यह नगरीदेखेंगे क्योंकि इसके देखनेकी हमकोबड़ी अभिलाषाहै इसीसे यहां आयेहैं ३३ इसलङ्का के बन व उपबन व बड़े २ बन व बड़े २ गृहसब ओरसे घूम २ देखा चाहते हैं इसीलिये हमारा यहां आगमनहुआहै ३४ तिनके ऐसेबचन सुन कामरूपिणी लङ्का फिरभी कठोरहीबचन पवनतनयसेबोली ३५ हे दुर्ब्बुद्धि वानराधमहमकोबिना जीते रावणपालित यहलङ्का तुमनहींदेखसक्ते ३६ इसकेपीछे बानर-शार्दूल हनुमान्‌जी फिर उसराक्षसीसेबोले कि हे कल्याणिहमकेवल इस पुरीकोदेखलेयँफिरजैसेआयेहैं वसेहीचलेजायँगेकुछयहांसेलेनहींजायँगे ३७इतनासुनतेउसदुष्टालङ्काने बड़ाभारीनादकर बड़ीजल्दीकेसाथएक लात वानरश्रेष्ठकेमारा ३८ जब लङ्कानेबड़ेजोरसेमारा तो बानरशार्दूल हनुमान्‌जी बड़ेजोरसेगर्ज्जे ३९ व बायेंहाथकी सबअँगुलियाँ सिकोरमुट्ठाबाँध मारेक्रोधकेमूर्च्छित् हनुमान्‌जीने उसकेएकमूकामारा ४० परंतु अपनेमनमें स्त्रीविचार बड़ाक्रोध व ज़ोरनहींकिया परंतु वहराक्षसी उसीमूकाके लगनेसे विह्वलहोगई ४१ व महाविकराल व विकृतमुखकर भूमिमेंभहरापरी ४२ तब महातेजस्वी हनुमान्‌जी ने उसकोगिरीदेख स्त्रीजान बड़ीकृपाकी ४३ इससे उसको कुछहोशहोआया पर ब्याकुल तो होहीगईथी इससे बहुत लरवरीबोली से हनुमान्‌जी से बोली ४४ हे महाबाहु प्रसन्नहूजिये व हमारी रक्षाकीजिये हेसौम्य महावीर्य्यवान् व महाबलवान् लोग प्रार्त्थना करनेपर अनुग्रह करतेहैं ४५ हे वीर वानर हमलङ्का नगरीहैं पर विक्रमसे तुमने हमको जीतलिया ४६ हे वानरेश्वर जिसतरह ब्रह्माजीने हमको बरदानदिया था वहसत्य सत्य बतातीहैं सुनो ४७ वहयहहै कि ब्रह्माजीने पूर्ब्बकालमें हमसेकहा कि जबकोई वानर अपने विक्रमसे तुमको बशकर ले तब तुम जानना कि राक्षसोंके ऊपर बड़ी विपत्ति आयगई ४८ तिससे अबहमारा वहीसमय आयगया तुम्हारे दर्शन से हम कृतार्त्थहुईं ब्रह्मा के बचन सत्यहीहोते झूठकभी नहीं होसक्ते ४९ हमने जानलिया कि सीताके निमित्त इस

दुष्टात्मा रावणका व सब राक्षसोंका विनाश आगया ५० तिससे हेवा-नर श्रेष्ठ रावणपालित इसपुरीमें पैठ जो २ काम करना चाहतेहो सब निश्शङ्क हो करो ५१ ॥

कुण्डलिया ॥

कपिपति तुम निशिचर अधिप पालित शापित लङ्क ।
पैठहु सब विधि मुद सहित तनिक नहीं कछु शङ्क ॥
तनिक नहीं कछु शंक जनकतनया कहँ नीके ।
खोजहु जाय बनाय सती शिर भूषण ठीके ॥
कतहुँ नहीं कछु रोंक नहीं है काहुहि यह गति ।
जो तुमकहँ कहुँजात कोइरोंकै सुनु कपिपति १,।५२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेतृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

तिस कामरूपिणी श्रेष्ठ लंकापुरीको अपने विक्रमसे जीत महाकपि हनुमान्जी १ जहांद्वारथा उस मार्गको छोड़ कूद प्राकार पर चढ़गये महावीर्य्य कपिकुञ्जर इसतरह रात्रिकोजाय लंकापुरीमें पैठ २ कपि-राज सुग्रीवके हितकारी हनुमानजीने पैठनेकेसमय पहिले दहिनापावँ आगेधरा फिर बावाँजानो शत्रुके शिरहीपैधरा क्योंकि यात्रा समय में जो दहिनापावँ पहिले उठावो तो जानोंआगेही शत्रुओंका विध्वंसहोगा ३ महा पराक्रमी हनुमान्जी इसतरह पैठे आगे बड़ीभारी फूलबिछाई सड़क मिली उसीकी चले ४ इधर उधर रमणीय लंकापुरी देखते चले जाते कहीं २ लोगोंके हँसनेका शब्द होरहा था कहीं २ नगारे बाजते थे ५ हीरामोती आदि मणियोंसे विभूषित व मेघोंकेसमान उजलेगृहों से रमणीयपुरी बादरों से भरे आकाश के समान शोभित होरहीथी ६ पद्मस्वस्तिक आदि श्वेतबादर के सदृश राक्षसोंके मन्दिरोंसे लंकापुरी शोभित होरहीथी ७ व सब ओरसे सर्वतोभद्र बर्द्धमान नन्द्यावर्त्त स्व-स्तिकआदि गृहोंसे शोभितहोती थी जिसमें चारभीतर लगेहों व चारों ओरको द्वारलगेहों उसे सर्व्वतोभद्र कहते व इसीमें पश्चिमओर वाला द्वार न होतो नन्द्यावर्त्तकहाता व जिसमें दक्षिणकाद्वार न हो तो वर्द्धमान कहाने लगता व जो पूर्व्ववाला द्वार न हो तो स्वस्तिक कहाता ये सब

शुभदायक भवनवहां थे व सबोंमें नानाप्रकार के चित्र विचित्रमाला व
भूषणधरे थे इनसे भूषित पुरी सुग्रीव के प्रियकारी हनुमान् जी देखते
चलेजाते ८ श्रीरामचन्द्रजीके कार्य्यकेलिये श्रीहनुमान्जी जातेथे इससे
देख २ आनन्दित होतेथे इसमन्दिरसे कूद उसपर जाते जब उसमेंदेख
लेते तो उससेकूद दूसरेकोजाते९ जहांजातेथे एक नयेप्रकारका मन्दिर
देखतेथे सबकहीं गानविद्याका प्रचार स्वर तालसहित सुनते जाते१०
स्वर्गकी अप्सराओंके रागकेसमान कामिनी स्त्रियोंकेशब्द सुनते व उन
लोगोंकी क्षुद्रघण्टिका व नूपुरादि भूषणोंकेशब्द सुनतेजाते ११ व उन
बड़ेबड़े भवनोंमें सिड्ढियोंपर चढ़तीहुई स्त्रियोंके भूषणोंकेशब्द सुनाईदेते
व बिहारकेअर्थ जो अपने अपने पतियोंका हाथ स्त्रियां पकड़ती थीं वा
पुरुष स्त्रियोंकाहाथ एकान्तमें पकड़तेथे उस झकाझोरीकाशब्द सुनते थे
व औरहास्यकी बातोंके कहकहे सुनतेथे १२ व राक्षसोंके भवनोंमें जो
मंत्रोंका जापहोता उसेभी सुना व बहुत ठिकाने राक्षसों को वेदाध्ययन
करते देखा १३ कहींकहीं रावणकी स्तुति कर गर्ज्जते राक्षस देखे व
राजमार्ग्गको घेरेतो बहुत राक्षसोंके झुंडकझुंडदेखे१४ जातेजाते बीचकी
पाउठमें पहुंचे वहां बहुतसे दूत बैठेदेखे व योगी जटिल मुंड़मुण्डे गोच-
र्म्म मृगचर्म्मादि धारणकिये व वस्त्र धारणकिये अनेक राक्षस देखे १५
बहुतोंको देखा कि उनके कुशोंकी मूठीही हथियार है बाजोंके अग्निका
कुण्डही आयुधहै कोईकोई मिथ्याबोलनेहीको मुद्गरसमझरहेथे कोईकोई
दण्डकमण्डलुकोही आयुध मानेथे १६ किसीके एकही नेत्रथा किसीके
अनेक नेत्र किसीके अनेक कान किसीका एकही स्तन चलायमान हो-
रहाथा कोई करालरूप किसीका मुखही टूटा कोई बड़े बिकट कोई बहु-
तही छोटे १७ कोई धनुष धारणकिये कोई तलवार लिये कोई साँग
गँड़ासी लिये कोई मुसर धारणकिये कोई हाथोंमें परिघ लिये कोई बि-
चित्र कँवच धारणकिये १८ कोई न बहुतमोटे कोई न बहुत दुबले कोई
न बहुतलम्बे कोई न बहुत छोटे कोई न बहुत गोरे कोई न बहुत काले
कोई न बहुत कुबड़े कोई न बहुत बामने १९ बहुत बिरूप बहुत बहुत
रूपवाले बहुत सुरूप बहुत तेजस्वी बहुत पताकावाले बहुत ध्वजावाले
इसतरह विविधप्रकारके आयुधलिये राक्षसोंको हनुमान्जीने देखा२०

बहुतोंकोशक्ति वृक्ष आयुध बनायेदेखा बहुतोंको पटा बज्रलिये बहुतोंको धनुबासीचकांशीलिये महाकपिनेदेखा २१ बहुतोंकोमालापहिरे व चंदन दिये व बहुतोंको श्रेष्ठ भूषण धारणकिये बहुतोंको और अपने मनमाने भूषण बस्त्र धारणकिये देखा २२ बहुतलोग तीक्ष्ण शूलधारी थे बहुत महाबल बज्रधारी व लाष राक्षस २३ रावणकी आज्ञासे जनानेकी रक्षा करतेहुये हनुमान्जीने देखे तिसकेपीछे सुवर्णका बना तिसका मन्दिर देखा २४ जो बीचपर्ब्बतके शिरपै बनाथा व अतिप्रसिद्धथा जिसके चारों ओर पनिआंसोते खावांथा जिसमें नानातरहके कमल फुलारहेथे २५ इसके किनारेकिनारे एक बड़ीभारी ऊँची चौड़ीदीवार उठीथी दिव्यशब्द उसके भीतरसे सुनाईदेताथा ऐसा बिदितहोताथा मानों दूसरा स्वर्ग- लोकथा २६ इसके द्वारपर घोड़े हिनहिना रहेथे व अद्भुतअद्भुत घोड़े बँधेथे रथ यान बिमान घोड़े हाथी जुतेलगेथे २७ व योंहीं सजसजाये घोड़े हाथी द्वारपै ठहराये जातेथे बहुधा सब हाथी चौदँते थे व उजले मेघोंके समान बड़े व श्वेतथे व नानाप्रकारके सुन्दर पक्षी द्वारपर बैठे शब्दकररहेथे २८ हजारों लाषोंराक्षस रक्षाकररहेथे इसतरहके रक्षित रावणकेगृहमें हनुमान्जी पैठे. २९ ॥

कुण्डलिका ॥

जाम्बूनद प्राकार युत मुक्तामणि बहु मोल ।
तासों भूषित मध्यकर भागसकल अनमोल ॥
भागसकल अनमोलबहुरि बहुमोलअगुरुअरु ।
चन्दनबिबिध प्रकारलिप्त तहँशुभ्र सकलघरु ॥
रावणकेर महान मानयुत भवन सहित मद ।
पैठ्योतहँ कपिराजरचित उत्तम जाम्बूनद १ । ३०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचतुर्थस्सर्ग्गः ॥ ४ ॥

इसतरह जब अन्तःपुर में परम बुद्धिमान हनुमान् जी पैठगये तो उन्हों ने ताराओं के बीचमें प्राप्त सूर्य्य के समान बारबार चन्द्रिका का वितान उगिलते सहित किरणको चन्द्रमाको गोठमें घूमते मतवाले बैल केसमान देखा १ ॥

चौ० ॥ लोक पापगण काहिं नशावत । अरु जलनिधिकहँ बहुत बढ़ावत ॥ सकल भूतकहँ दीप्तिकरावत । पवनतनय देख्यहु बिधु आवत ॥ १ । २ जो लक्ष्मी मन्दरगिरिराजत । अरु प्रदोषमहँ जलनिधि भ्राजत अरु जिमि जलमहँ कमल बिराजत । सो तहँ तिमि बिधुमहँ अति गाजत २ । ३ जिमि राजत पञ्जरहि मराला । मन्दर कन्दर गत हरि बाला ॥ गर्व्वित करि गतबीरन माला । तिमि अम्बरगत शशी बिशाला ३ । ४ तीक्ष्ण शृंग वृषभस समाला । श्वेतशृङ्ग गिरि उच्च प्रमाना ॥ स्वर्णजटित रद दन्ति महाना । शृङ्ग सहित तिमि शशि अनुमाना ४ । ५ शीतोदक तुषार अपहर्त्ता । महाग्रहांश बिनाशन कर्त्ता ॥ अति प्रकाश्य नहिं लाञ्छन धर्त्ता । शोभित शशी दीप्तिगण भर्त्ता ५ । ६ शिलापाय जिमि सिंह बिराजत । जिमि रण पाय महागज भ्राजत राज्य पाय जिमि भूपति गाजत । तिमि प्रकाश युत बिधु सुख साजत ६ । ७ उदित चन्द्रसों नष्ट सकल तम । राक्षस करत न रुधिर पानकम युवति रमणहित पुरुष चित्त भ्रम । सहित प्रदोष प्रकाशित बिधुसम ॥ ७ । ८ श्रुति सुखप्रद बीणा बहु बाजत । सोवत पति सँग तिय नहिं लाजत ॥ निश्चरगण बिहरण हित गाजत । यह अद्भुत तहँ लखत बिराजत ८ । ९ मत्त प्रमत्त समाकुल सारे । स्वर्ण पीठ बैठे यकतारे नृप शोभर शोभित गुणभारे । कपिवर लख्यहु भवन रतनारे ९ । १० मत्त रजनिचर बाद बढ़ावत । पीन भुजा निजनिज लपकावत ॥ मत्तालाप करत अरु गावत । मत्त एक यकसों अरझावत १० । ११ निज वक्षस्थल सकल बजावत । निजनिज अंग युवति छपटावत ॥ चित्रित बहुबिधि रूप बनावत । लख्यहु पवनसुत चाप चढ़ावत ११ । १२ युवतिन लख्यहु सुगन्ध लगावत । अपर शयनकरि प्रतिन स्ववावत ॥ निजमुख लखि कोइ हँसत हँसावत । क्रोधबिवश कोइ श्वास बढ़ावत ॥ १२ । १३ नादित महागजनसों नीके । पूज्य सज्जननसों तिमिठीके ॥ श्वासलेत बीरन सोंहीके । श्वसित उरगयुत हृद इवदी के १३ । १४ बुद्धि प्रधान रु सुरचिर नामा । श्रद्धायुत प्रधानजग सामा ॥ बहु बिधान युत वचनारामा । लख्यो तहाँ कपि निश्चर ग्रामा १४ । १५ तिन लखि रूपवान कपि हर्षे । नाना गुणयुत नाना तर्षे ॥ दीप्तिमान

सुन्दर उत्कर्षे। कोइ बिरूप सबकहँ कपि पर्षे १५ । १६ बर भूषण युत शुद्ध स्वभावा। तासु युवतिगण महानुभावा॥ पान रु पतिन मँ भाव लगावा। तारासम तिन लखि सुख पावा १६ । १७ श्रीसों शोभित लज्जा भूषित। निशामाहिं निजपतिसँग सूखित॥ यासों प्रमुदित ल-स्यो अदूषित। विहग विहगि सँग जिमि अति जूषित १७ । १८ औरन लख्यो हर्म्म्यपर सोवत। निज निज पति अंकन सुख वोवत॥ पतिप्रिय परसुधर्म्म परहोवत। लख्योपचनसुत मदनभिगोवत १८ । १९ बिनपति पटबिहीन कृशगाता। कोइ युवति देख्यो सुतवाता॥ कोइसु-वर्णवर्ण रुचिरत्राता। लख्यो कोइ विधु पूर्ण सुहाता १९ । २० मनोऽ भिरामपाय पतिआपन। प्रीतियुक्त अतिशोभित दापन॥ अतिसुन्दरी भवननिज थापन। लख्यो त्रियन कपि तहँ गततापन २० । २१ चन्द्र सरिस मुखपुञ्जनिहारी। कुटिल भ्रुकुटियुत नयनकरारी॥ भूषणराशि विलोक्यहु झारी। शतह्रद निकर सरिश कपि भारी २१ । २२ परपर मात्म रचित वैदेही। शोभन कुलमहँ जन्म विदेही॥ अति ऐश्वर्य्यवती शुभनेही। लख्यो न लता फुलित समतेही २२ । २३ पातिब्रत सुधर्म्म रतनीके। रामदृष्टि मदनाहत ठीके॥ पतिमन बसीआज सबफीके। उमा रमादि नारिगण टीके २३ । २४ राम बियोग दुखित नित रोवत। आगेजो बर भूषण जोवत॥ भ्रुकुटिकण्ठ शुभआनल जोवत। बनमयूरि समस्वर मधुचोवत २४ । २५ अप्रकट रेखा विधु इवदीना। धूलिस-हित जाम्बूनदखीना॥ व्रणयुत वर्णन चिन्हमलीना। बायुभग्न घनइव अति क्षीना २५ । २६ वादि श्रेष्ठ रघुनन्दन जाया। सीतहि लख्यो न बहु दुख पाया॥ पवनतनय सब भवन मझाया। बिन त्यहिलषे बहुत विकलाया २६ । २७॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चमस्सर्गः ॥ ५ ॥

इसतरह रावण के मुख्यम न्दिरके निकटवाले मन्दिरोंको यथेष्टरूप धारणकिये हनुमानजी बड़ेबड़ेसतखण्डे अठखंडोंपर बड़ीशीघ्रताकेसाथ लङ्कामेंबिचरे १ जातेजातेसूर्य्यसम प्रकाशित प्राकारसेघिरेहुये रावणके खासमंदिरमें पहुँचे २ उसमन्दिरको चारोंओरसे राक्षस रखारहेथे जैसे

सिंहबनको रखातेहैं इस भवनकोदेख हनुमान्‌जी बहुत प्रसन्नहुये ३ क्योंकि सबचित्र चाँदी व सुवर्णहीकेबने वहाँधरेथे व बन्दनवार भीस्वर्णमयहीथे व बिचित्रहाते व द्वारोंसेसंयुक्तथा ४ हाथियोंपरचढ़े हथिवाल व शूरवीरोंसे घिराथा घोड़ेजुते हज़ारोंरथ ठौरठौर खड़ेथे ५ व सिंह ब्याघ्रादिकोंके चर्म्मोंको धारणकिये व हाथीदाँत सोने चाँदीकी प्रतिमाहाथों में लिये लोगशब्दायमान रथोंपरचढ़ेखड़ेथेसबउसकेकिनारेकिनारेघूमतेथे ६ बहुत रत्नोंसे बना बड़ेबड़े मोलके आसनोंसे भूषित बड़ेबड़े रथोंके झुण्डके झुण्डोंसे समाकुल व बड़े बड़े रथोंपरभी बड़े बड़े आसनधरे इनसबसे भूषित ७ देखने के योग्य मृग पक्षी ठौर ठौर बने सो अनेकों सैकरों हजारों जिनसे सब स्थान पूर्ण ८ व सुशिक्षित राक्षसों से रक्षित व सुन्दरी सुन्दरी स्त्रियोंसे पूर्ण ९ रावणके मन्दिरमें जितनी स्त्रियांथीं सब आनन्दित व सबओरसे समुद्रके शब्दके समान भूषणोंका शब्दहोरहाथा १० जैसे राजाओंके गुण चाहिये सब उस मन्दिरमें विद्यमान थे ठौर ठौर चन्दनादि सुगन्धित पदार्थ धरेथे व बड़े बड़े लोग उत्तम वस्त्र भूषण धारणकिये बैठे जैसे महाबनों में सिंह बैठेरहतेहैं ११नगारे तुड़ही मृदङ्ग बाजरहेथे ठौरठौर शङ्खध्वनि होरहीथी नित्यनित्य राक्षस लोग अपने पूज्योंकी पूजाकररहेथे १२ समुद्रहीके समान गम्भीर व समुद्रहीसमान शब्दित इसतरह का रत्नसामग्री सहित महात्मारावण का भवनथा १३ जहांदेखो महारत्नही भरेपरे थे ठौर ठौर हाथियों व रथोंके समूह विद्यमान ऐसा मन्दिर महाकपिने देखा १४ हनुमान्‌जी ने माना कि बस लङ्का का भूषणरूप यही मन्दिर है इससे जहांरावण सोताथा वहां कपिराजगये १५ फिर वहांसे और घरपरगये इसीतरह सब फुलवाड़ीआदि देखते चले गये बीचमें राक्षसों के धवरहर व नाना प्रकारके मन्दिर निर्भय देखते जाते १६ जातेजातेकूदजाय प्रहस्तनाम राक्षसके गृहपैगये फिर महावीर्यवान् हनुमान् महापार्श्व के स्थान को गये १७ उसपरसे कूद मेघाकार कुम्भकर्ण के मन्दिरपर चढ़े उसपरसे कूदे बिभीषणके भवनपर होरहे १८ वहांसे महोदरके मन्दिरपर फिर विरूपाक्ष के गृहपै फिर विद्युज्जिह्व व विद्युन्माली के घरपर गये १९ फिर महाकपि वज्रदंष्ट्रके स्थानपर गये इसीतरह शुकके फिर महात्मा

सारणके पर २० फिर मेघनाद के भवनपर गये वहां से जम्बुमालि व सुमालिके मन्दिरपर २१ फिर रश्मिकेतु के भवनपर फिर सूर्य्यशत्रुके पर फिर वज्रकायके मन्दिरपर २२ फिर धूम्राक्ष व सम्पातिके पर फिर विद्युद्रूप भीम घन विघन के पर २३ फिर शुकनाभ चक्रशठ कपटह्रस्व कर्णदंष्ट्र लोमश इनके मन्दिरोंपर २४ फिर युद्धोन्मत्त मत्त ध्वजग्रीव सादी विद्युज्जिह्व द्विजिह्व हस्तिमुख २५ कराल विशाल शोणिताक्ष इनसबोंके मन्दिरोंपर क्रमसे मारुतनन्दन हनुमानजी कूदकूदगये २६ इनसब मन्दिरोंमें तिनलोगों की ऋद्धियां महा यशस्वी हनुमानजीने देखी २७ इनसबोंके भवनोंपर घूमघूम देख महाकपिजी फिर रावणके मन्दिरपर आये २८ देखा तो रावणके निकट महाबिकराल लाखों राक्षसियां सोयरहींथी २९ इनकेसिवाय शूलमुद्गरादिलियेबहुत राक्षसियों के समूह रावण के गृहके भीतर घूमतेथे ३० व नानाप्रकार के आयुध लिये बड़ेबड़े डीलके राक्षसोंको रावणकेभवनमें देखा श्वेत व लालघोड़े बड़ी जल्दी चलनेवाले बँधेदेखे ३१ व बड़े कुलीन रूपसम्पन्न औरों के हाथियोंके मर्दन करनेवाले गजशिक्षामें बड़े शिक्षित संग्राम में ऐरावत के समान हाथी बँधेदेखे ३२ जो हाथीशत्रुकी सेनाको देखतेही मारडालनेवाले व मेघों के तुल्य मदचूते व पर्व्वतोंके समान झरना से झरतेथे ३३ शब्द उनका मेघों के गर्ज्जनेके समान समरमें शत्रुओं से अवध्य व सुवर्णकी सब सामग्री से सम्पन्न हजारों सेना उसीघर के भीतर परी देखी ३४ वे सेना सुवर्णके जालोंसेढकींथी इसीसे प्रातःकाल के सूर्य्य के समान चमाचम राक्षसेन्द्र के भवन में देखी ३५ व विविध प्रकार की शिविका व विचित्रलता गृह व विचित्र शालागृह पवनतनयने देखे ३६ व बहुतसे क्रीड़ा करनेके गृह व काठे के पर्व्वत क्रीड़ाकरने के लिये व मैथुन करने के गृह व दिनको बिहार करनेके गृह ३७ राक्षसेन्द्र के भवन में देखे व मन्दराचल के चट्टानके समान मोरोंके पालनेका स्थान ३८ इनसबों पर ध्वजापताका टँगीथीं इससे और उत्तमथे व अनन्त रत्नोंके ढेरभरे खजानेके स्थानदेखे जिनमें बड़ेधीर खजाञ्ची अपना अपना काम कररहेथे मानों ब्रह्माजीके स्थान थे ३९ रत्नोंकीदीप्ति से व रावण के तेजसे वहगृह सहित किरणसूर्य्य के समान प्रकाशितहोता था ४०

शयनकरने आदिके जितने पलँग कुरसीआदि आसनथे सब सुवर्णहीके थे व जितने भोजन करनेके पात्रथे सब चांदीकेथे इनसबको हनुमानजी ने देखा ४१ ॥

चौ० ॥ मधुअरु मदिरा रससों ओड़ा । मणिभाजन बुध कपतबिनोदा ॥ अतिबिशाल रमणीयसुहावा । मनहुँ कुबेरभवन चलिआवा १ । ४२ नूपुररव शब्दित सुखदायक । कांचीशब्द पूर्ण मनभायक ॥ अरु मृदंग तल घोष विराजत । गायक शब्द पूर्ण सुख साजत २ । ४३ नाना बिधि धवरहर अनूपा ॥ नारी रत्न सहस शुभ रूपा । अति बिशाल कक्षा ज्यहिमाहीं । पैठकीशवर भवन तहांहीं ३ । ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेषष्ठस्सर्ग्गः ॥ ६ ॥

वैदूर्य मणियों व सुवर्णके समूहसे बना भवन समूह हनुमानजी ने देखा वह बिजुलीयुक्त वर्षाकालके मेघोंके समान बीच बीच में सुवर्ण के पक्षियों के बैठने से शोभित होताथा १ उस बड़ेभारी मन्दिरके भीतर बिबिधप्रकार के तो रहने बैठने उठने के दालान बनेथे व बहुत शङ्ख धनुष अस्त्र शस्त्रादि धरने व प्रधान मंत्रियोंके बैठने उठनेकेलिये व बहुत बिशाल पर्व्वतसदृश बिना छतिके गृह बनेथे जिनपर चन्द्रकिरण सदा परसकरते २ व उसीके भीतर नानाप्रकारकी द्रव्योंसे शोभित देवता व असुरोंसेभी अच्छीतरह पूजित व सब दोषोंसे रहित भवन हनुमानजीने अपनी बाहोंके बलसे एकत्र देखे ३ वे सबमन्दिर मानों मयनाम दैत्यने एकाग्रचित्तहो अपने आप बनाये थे किसी औरको नहीं बनानेमें लगायाथा इसीसे भूतलमें सब उत्तम गुणयुक्त थे ऐसे रावणके गृह पवनतनयने देखे ४ तिसके पीछे ऊंच मेघके रूप मनोहर सुवर्णसे बना रावणके बलके अनुरूप व अद्वितीय सर्व्वोत्तम गृहदेखा ५ जोकि मानों महीतलमें सुवर्ण बोयकर बनाया गयाथा व बीचबीच हीरा पन्नामाणिक आदि रत्नोंसे जटितथा इससे अतिचमकता व उसके भीतर नानाप्रकार के वृक्षोंके फूल बिथराये थे व बीचबीच फूलोंकी धूलि पड़ीथी इससे पर्व्वततलके समान शोभित होता था ६ व नारी श्रेष्ठोंसे दीप्यमान होनेके कारण बिजुलीयुक्त मेघकेसमान शोभित

होता जैसे हंस श्रेष्ठोंसे उठाया आकाशमें शोभायुक्त पुण्यात्मा लोगोंका बिमान शोभित होताहै ७ ऐसा मन्दिर बहुत धातुओंसे चित्र बिचित्र पर्ब्बत श्रेष्ठके समान व चन्द्रयुक्त आकाशके तुल्य व बहुतरत्नोंसे चित्र विचित्र बिमानसदृश युक्ति पूर्ब्बक मनोहर मेघकेचित्रकेसमान हनुमान् जीने देखा ८ सो उस बिमानाकार मन्दिरमें जो बैठनेउठनेकेलिये भूमि थी उसे कृत्रिम पर्ब्बतोंकी पंक्तियोंसे पूर्णकरदिया व उन पर्ब्बतों को वृक्षसमूहोंसे पूर्णकिया व उन वृक्षोंको पुष्पसहमूहोंसे व पुष्पोंको पुष्प रससे पूर्णकिया ९ व जो बहुत उजलेगृह बनाये गयेथे उनमें पुष्पयुक्त छोटीछोटी तलैयां बनाईं व जो कमल बनायेथे उनको पुष्परसयुक्तकिया व जो बन बनायेथे उनमें चित्रबिचित्र सरोबर बनाये१० व अति विराजमान पुष्पकबिमान सदृश रत्नोंकी दीप्तिसे शोभित इधर उधर घूमता देवबिमानोंसेभी अधिक ऊँचा महाबिमानाकार मन्दिर महाकपिनेदेखा ११ तिस बिमानाकार मन्दिरमें वैदूर्य्यमणि के व चांदी मूंगा के पक्षी बनाये थे व नानाप्रकारके द्रव्योंसे चित्रबिचित्र सर्प्प व जातिके अनुरूप सुन्दरअंगोंके घोड़े १२ व वहांके प्रत्येक दालानमें मूंगा व सुवर्णके फूल सहित लीलापूर्ब्बक टेढ़े पङ्खवाले सुन्दर पक्ष व सुन्दर मुखवाले पक्षी मानों कामियोंके पक्षाश्रयीस बनायेगयेथे १३ कमलयुक्त उस बिमानसरमें कमल शूड़मेंलिये इसीसे पुष्परस सहितहाथीबनेथे व सुंदरहाथ वालीकमल हाथमेंलिये प्रकाशित लक्ष्मीभी बनीहुई थी १४ इसतरह विस्मययुक्तहो सुंदरकन्दरासहित पर्ब्बतकेतुल्य अतिसुंदर जिसकेमंदिरमेंपैठे व फिरसुंदर सुगन्धित खोढ़िलयुक्त शोभनवृक्षके सदृशउसगृहमें पैठे १५ इसतरह रावण के भुजोंसेरक्षित व सब प्रकारसे भूषितलङ्कापुरीमें सीताजीके ढूढ़नेकेनिमित्त इधर उधरघूमते हनुमानूजी महात्मा लोगोंसेपूजित व श्रीरामचन्द्रजीके गुणोंकेबेगसेजीती इसीसेअतिदुःखित जानकीजीको वहां न देख बड़ेदुःखितहुये ॥ १६ ॥

हरिगीतिका ॥

बहुभाँति भावित परमआत्मा रामश्री हनुमानजू ।
कृतमैथिली हितमार्गपेखा सकलविहित विधानजू ॥
नहिंदेखि मैथिलराजतनया दुखित भयहु महानजू ।

बहुभ्रस्यहुत्वोजत रामदविला परमचतुर अभानजू १ । १७॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेसुंदरकाण्डेसप्तमस्सर्गः॥ ७॥

पवनकुमार महात्मा हनुमानजीने उस मन्दिरके भीतर टिक मणिरत्नोंसे चित्रविचित्र व तपाये सुवर्ण समूहसेबना बड़ाभारी विमानदेखा १ वहविमान अपरिमित चित्रसारियोंसे बड़ीयुक्ति पूर्व्वक विश्वकर्म्माने बनायाथा व आकाशमार्ग्गमें पवनकी गलीमेंटिका सूर्य्यमार्ग्गका चिन्ह रूप विराजमान होरहाथा २ उसविमानमें ऐसाकुछनहीं कियागयाथा जो विशेषरीतिसे न कियागयाहो किन्तुसब विशेषरीतिहीसे कियागया था व उसमें ऐसा कुछनहीं बनायागया था जो रत्नोंसे न बनायागयाहो व जो रचनाविशेष इसबिमानमें कियेगयेथे वे देवताओंकेभी अन्य विमानोंमें नहींहैं ३ यह विमान रावण ने तपस्या व समाधानसे अर्थात् कृच्छ चान्द्रायणादि व महादेव ब्रह्मा के ध्यानकरने से पायाथा व इस बिमानकीचाल अति सावधानतासे चलते मनकीचालसे भी कुछ बढ़कर थी व अनेक बिलक्षण अङ्गोंकी बनावटोंसे बनायागयाथा इससे तिनतिन मनोवेग व विलक्षणाङ्गोंसे बननेकेहेतु समाधिकरनेका हितथा ४ व फिर स्वामी के मनके अनुसार शीघ्र चलनेवाला व औरोंसे अनादर करनेका असम्भव व पवनसमगामी व महात्मा पुण्यात्मा महातपस्वी व यशस्वी लोगोंके स्थानहीकेतुल्य स्वामीच्छाचारीथा फिर ५ विशेषगमनके आश्रय से वायुमार्ग्गमें स्थित व विचित्र शिखरयुक्त सघन शिखरोंसे शोभित इसीसे अतिमानो ऽभिराम व शरदृतुके चन्द्रमा के समान निर्म्मल विचित्र शिखरयुक्त पर्व्वत के समानशोभित था ६ जिस बिमानकी कानोंमें कुण्डलपहिरे बहुत भोजनकरनेवाले आकाशगामी गोलबड़े व बिकराल नेत्रवाले अति बेगसे चलनेवाले भूतगण व निशाचर लोग जिसको ले चलतेथे ७ बसन्तऋतु के पुष्पोंके ढेरसे भी सुन्दर देखनेके योग्य बसन्त माससेभी दर्शनीय पुष्पकनाम विमान अत्युत्तम वानरश्रेष्ठ हनुमानजी ने देखा ८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टमस्सर्गः॥८॥

तिस बड़े भारी मन्दिरके भीतर कि जिसमें धरा वह विमानदेखाथा एक बिमल व लम्बा चौड़ा अतिश्रेष्ठ और मन्दिर हनुमानजी ने देखा १ यह मन्दिर दो कोशका चौड़ा व चार कोशका लम्बा बनाथा इस राक्षसेन्द्रके भवनमें बहुत धवरहर आदि राजशाला बनीथीं २ जानकीजी को ढूंढ़ते हनुमानजी ने सब ओर से इस मन्दिर को भी अच्छी तरह ढूंढ़ा ३ राक्षसका उत्तम स्थान ढूंढ़तेढूंढ़ते श्रीमान् हनुमानजी खास रावणके शयन करनेका घर देखा ४ यह भवन चौदन्ते व त्रिदन्ते हाथियों सेरक्षितथा व नानाप्रकारके आयुधलिये राक्षसभी इसकी रक्षा करतेथे कहीं आनेजानेकी सांस नहीं मिलती थी ५ व बहुतसी रावणकी स्त्रियों राक्षसियोंसे व जबरदस्ती लाईहुई राजकन्याओंसे वह रावणमन्दिर पूर्णथा ६ इसकेबीचमें जो जलक्रीड़ा करनेकेलिये तड़ागथे व नाक मगरों से पूर्णथे इससे पवनके बेगसे कँपाये सर्प्पसहित सागरके समान शोभित होताथा ७ जो लक्ष्मी कुबेरके घरमेंथी व जो हरितरंगके घोड़ेवाले इन्द्रके मन्दिरमें थी उससे भी अधिक अति रमणीय व स्थिर लक्ष्मी उस समय रावणके प्रत्येक मन्दिरोंमें थी ८ व जो राजा कुबेर यमराज व वरुणके घरमें ऋद्धिविद्यमान रहतीहैवैसी व उससेभी अधिक ऋद्धि रावणके घरघरमें विद्यमानथी ९ उस दो कोश चौड़े व चारकोस लम्बे मन्दिरमें एक बहुतअच्छी तरह बना व बहुत हाथियोंके समूह उरेहा पुष्पकनाम बिमान रूपभवन पवनतयने देखाथा १० यह पुष्पक नाम सबरत्नोंसे बिभूषित बिमान विश्वकर्म्माने बड़ी सावधानीसे आगे ब्रह्माजीकेलिये बनायाथा ११ वही बड़ीतपस्यासे कुबेरजीने ब्रह्माजीसे पाया व फिर अपने पराक्रमसे कुबेरकोजीत राक्षसोंकाईश्वर रावण लाया १२ वह सुबर्णके वृक्षसहित चांदीके खम्भोंसेबना इससे शोभासे शोभित १३ व सुमेरुपर्व्वत मन्दराचलके समान आकाशको छूतेहुये शिखरागार व अन्य शुभागारों से भूषित १४ व अग्नि व सूर्य्य के समान प्रकाशित सुबर्णकी सीढ़ी लगा मनोहर वेदियोंसे संयुक्त बिश्वकर्म्माने भलीबिधि स बनायाथा १५ काञ्चन व स्फटिकमणि के झरोखोंसे युक्त इंद्र नील महानील आदि मणिश्रेष्ठोंसे वेदी बनी १६ व विचित्रमूंगा व महाधन व बड़े बड़े मणि गोल गोलमोती इन वस्तुओंसे नीचेकी गचबनी इससे

देदीप्यमान १७ व उजले लाले पीले सुगन्धित चन्दन से लिपा इससे प्रातःकालीन सूर्य्यके समान प्रकाशित १८ ऐसे पुष्पक नाम विमानपर हनुमान्जी कूद चढ़े व उसपै टिक सबओर घूम सबओरसे खानेपीनेकी बस्तुओंकी सुगन्ध १६ सूंघनेलगे मानों रूपवान् पवनहीं उन पदार्त्थों के रूपसे वहां विद्यमानथा वह सब बस्तुओंका गन्ध उन महावीर्य्यवान् हनुमान्जीको बन्धुहीके समान जानों बुलाते बोला २० कि यहां आवो जहां रावणहै इससे पवनतनयने तहांजाय बड़ीभारी दालान कल्याण-रूप देखा २१ वह शाला रावणको श्रेष्ठ स्त्रीके समान प्रियथी उसमें मणियोंकी तो सिड्ढियां बनीथीं व सुवर्णके झरोखे २२ स्फटिकमणियों से नीचेकी गच जिसमें बीचबीच हाथीदाँत व चांदीसे बुट्टे बनेथे व मोती हीरा मूंगा व सुवर्णकेभी बुट्टेथे २३ मणियोंके बहुतसे खम्भोंसे विभूषित सब खम्भे सीधे व सरल व समानथे इन सबसे बिभूषित २४ उन पक्ष समान खम्भोंसे मानों आकाशको वह शाला उड़ी जातीथी उसमें हीरा आदि मणियोंसे जटित फर्श लगीथी २५ बिदित होतीथी कि गावँ पुर राज्यसहित यह दूसरी पृथ्वीही है मत्तपक्षी ठौरठौर बोलरहेथे सुगंधित जलसे छिरकाव होगयाथा २६ बड़े मोलका बिस्तरा पराथा उसपै रावण शयनकर रहाथा अगरुके धुआंसे धूमिल व साफहोनेसे हंससमान गौरथी २७ व पत्रपुष्पोंसे पूजित होनेके कारण कुछ ललझर बिदित होती मनको बहुत मोद उत्पन्न कराती व नानाप्रकारके वर्णोंको भी भूषित कराती २८ व शोकनाशिनी दिव्य व शोभा उत्पन्न करानेवाली थी तब उस रावणपालितशालाने इन्द्रियोंके पांच शब्द स्पर्श रूपरस व गन्ध इन अर्त्थोंसे पांच श्रोत्रत्वक्चक्षु रसनाघ्राण इन्द्रियोंको माताके समान पाला २६ इससे हनुमान्जीने माना कि यह स्वर्गहै कि देव-लोक कि इन्द्रकी पुरीहै व यहकोई श्रेष्ठसिद्धिहै ३० तहां रत्नकेखम्भोंमें धरे दीपक रावणके तेजके मारे उदास थे जैसे बड़े जुआरियों से हारे जुआरीलोग अपने धनको ध्यावते उदास बैठे रहतेहैं ३१ व दीपकों के प्रकाशसे व रावणके तेजसे व भूषणोंकी चमकसे वहशाला पवनतनयने बरतीही हुईसी माना ३२ तिसकेपीछे नानारंगके बस्त्र व माला धारण किये व नानाप्रकारके वेषोंसे भूषित आसनोंपर बैठी लेदी सहस्रों श्रेष्ठ

स्त्रियां देखीं ३३ वे सब अर्द्धरात्र होनेके कारण मदिरा व निद्राके वश होनेसे क्रीड़ासे निवृत्त हो सोयरही थीं ३४ वे एकत्र शयन किये शब्द रहित कैसे शोभित होरहीथीं जैसे भ्रमर व हंसोंके शब्दसे रहित बड़ा भारी कमलका वन शोभित होताहै ३५ तिन स्त्रियोंके दाँत खुले व नेत्र मुंदे कमलवत् सुगन्धितमुख पवनतनयने देखे ३६ उनके रात्रि बीतनेके पीछे प्रफुल्लित कमलके समान मुख फिर रात्रिमें सम्पुटित कमलों के समान शोभित होतेथे ३७ इन मुख पद्मोंको भ्रमरलोग फुलाने कमलों के समान फिरफिर प्रार्थना करतेहैं ३८ पवनतनयने यहबात मानी वा यहकि भाई इन स्त्रियोंके मुख सबगुणोंसे कमलोंकेही तुल्यहैं ३९ तिन स्त्रियोंसे रावणकी वह शाला नक्षत्रों से शोभित शरदऋतुके आकाशके समान शोभित होतीथी ४० व उन स्त्रियोंके बीचमें शयन करता रावण नक्षत्रोंके बीचमें बिराजमान चन्द्रमाके समान शोभित होताथा ४१ हनुमानजीने माना कि थोड़ीपुण्य बाकी रहनेपर आकाशसे जो तारा गिरतीहैं वे येही स्त्रियांहैं ४२ क्योंकि बड़ीभारी व प्रकाशित ताराओंकेही से प्रभा वर्ण व प्रसन्नता इन स्त्रियोंके शोभित होतेहैं ४३ मुख चुम्बन व ओष्ठपानके समय व रतिके समय पीन कुच मींजेजाने व मालारहित होजानेसे निद्राकेमारे चित्त हत होगया इससे भूषण इधर उधर परे व आप अखल बिखल सोयरहीथीं ४४ जैसे कि किसीकिसीका तिलकही बिगर गयाथा व किसीकिसीके घूंघुर अलग छूटे परे थे किसी किसीके बगलमें टूटेहार परेथे इसतरह व परमसुन्दरी स्त्रियां सोतीथीं ४५ कोई कोई मोतियोंकेहार पहिरेथीं किसीकिसी के वस्त्र अंगोंसे अलग खसक गयेथे व किसीकिसी स्त्रियोंकी क्षुद्रघण्टिकाके नारे टूटगयेथे इससे वस्त्र भी छूटगयेथे वे भार लादनेके पीछे भार उतारी श्रम मिटानेकेलिये लोटती घोड़ियोंके समान शोभित होतीथीं ४६ किसीकिसीके बिहारसमय में कुण्डलही गिरपरेथे इससे वे बिना कुण्डलहीके सोतीथीं किसीकिसी के मींज जानेसे मालाही टूटगयेथे ये स्त्रियां महावन में हाथी की मींजी लताओंके समान अस्तव्यस्त पड़ीथीं ४७ किसीकिसी स्त्रियों की छाती पर चन्द्रसमान उजले मोतियोंकेहार सिमिट एकत्रहो स्त्रियोंके स्तनोंके मध्यमें हंसोंके समान शोभित होतेथे ४८ और स्त्रियोंके वैदूर्य्य मणियों

के हार उनके कुचोंके मध्यमें जलमुर्गियोंके समान शोभितहोते व औरों के सुवर्ण सूत्र सहित हार चक्रवाकपक्षियोंके समान पीले होनेसे शोभित होतेथे ४९ इससे वे स्त्रियां हंस कारण्डव पक्षियोंसे युक्त व चक्रवाकोंसे शोभित जाँघोंसे किनारोंके समान नदियोंके तुल्य शोभित होतीथीं ५० किङ्किणीजालोंको मुकुल बनाये व सुवर्णके भूषणोंको बड़ेबड़े कमलमाने व भाव शृङ्गारचेष्टाओंको ग्राह बनाये व पतिके अनुकूल चलनेसे उत्पन्न यशको तीरकिये सोई हुई वे स्त्रियां नदियोंकेसमान शोभित होतीथीं ५१ किसीकिसी स्त्रियोंके भूषण गिरगयेथे पर उनके कोमल अङ्गोंमें व कठोर कुचोंमें जो भूषणोंकी रेखा होगईथीं वे भूषणोंकेही समान शोभितहोती थीं ५२ मुखकी श्वाससे बारबार कांपते किसीकिसी स्त्रियोंके वस्त्रमुखों के ऊपर बारबार फहरातेथे ५३ वे वस्त्र नानाप्रकारके रङ्गोंके मुखों के नीचे उनस्त्रियोंकी दीप्तिसे शोभित पताकाओंके समान शोभित होते थे ५४ किसीकिसीस्त्रियोंके कुण्डलमुखकी श्वास लगने सेधीरेधीरे चलतेथे ५५स्वभावहीसे सुगन्धित व सुखप्रद शर्करायुक्तमदिरा की सुगन्धिसे सुगन्धित तिन स्त्रियों के मुखका पवन रावणकी सेवा करता था ५६ कोईकोई स्त्रियां रावणके मुखकी भ्रान्तिसे अपनी सौतोंके मुख बारबार सूंघती थीं ५७ उन स्त्रियोंकेमन रावणमें ऐसेलगगयेथे कि अतिवशी-भूतहो परतन्त्र होगई थीं इससे मुख सूंघसूंघ मानों अपनी सौतों का प्रिय करतीथीं ५८ व और बहुतस्त्रियां बहुमूल्य भूषण धारणकिये अ-पनी बाहें व सुन्दरवस्त्र शिरहाने धरे सुखसे सोयरहीथीं ५९ व और स्त्रियां औरकी छातीपर अपनाहाथ धरे व तिसकेऊपर औरकोई अपना भुज धरे व कोई किसीका उदर पकरे व कोई किसीके कुच पकरे ६० कोई किसीकी जाँघ पकरे व कोई किसीकी बगल व कोई किसीकी करि-हाँव व कोई किसीकी पीठ इसतरह मारमदके व स्नेहके आपसमें एक दूसरीके अङ्ग पकड़े ६१ इससे प्रसन्नचित्त सब स्त्रियां एकत्र अपनेहाथ किये सोयरहीथीं ६२ एक दूसरीके भुजरूप सूतसे ग्रथित होनेसे स्त्रियों की माला होगई वह मत्त भ्रमरों की माला के समान शोभित हुई ६३ वायुके लगनेके कारण प्रफुल्लित लताओंके परस्पर ग्रतितहोने स्त्रियों के बालोंमें गुंधे फूलोंके ढेरसे ६४ उनके आपसमें लपटने से स्कन्धरूप

शोभित होनेसे व भ्रमररूप बालों के होनेसे रावणकी स्त्रियों का जानों एकबन होगया ६५ उचितस्थानोंमें धारणकिये भी भूषण बस्त्रोंका विवेक नहींहोसक्ताथा कि यह किस स्त्रीका बस्त्रहै व यह किसका गहना यह किसका अङ्ग क्योंकि सब एक दूसरीसे सँटीहुई लपटी पड़ीथीं ६६ जब रावण सुखसे सोयजाता था व उसकी स्त्रियांभी सब भूषण भूषित सोयजातीथीं तभी सुवर्णसे भूषित देदीप्यमान उन दीपकोंके अधिष्ठाता देवलोग बिना पलकमारे उनको देखतेथे क्योंकि रावणके जागते जागते देवताओंको भी रावणकी स्त्रियोंका देखना दुर्लभ था ६७ रावणके जितनी स्त्रियांथीं सब महर्षि विप्र दैत्य व गन्धर्व्वों की स्त्रियां हैं जो आय आय राक्षसोंकी कन्याहुइथीं उनको रावणने ब्याहीं ६८ उनमें बहुत तो ऐसीथीं कि युद्धकी कामनासे रावणजाय उनके बापोंकोजीत हरलाया व बहुत रावणको देख कामसे मोहित हो आप चलीआई थीं ६९ पूजा करनेके योग्य जनकनन्दिनोको छोड़ और कोई स्त्री रावण सौन्दर्य्यादि गुणके कारणबिना उसकी इच्छा नहींलाया न हठसे किसीको जबरदस्ती लाया न जो स्त्रियां अपना बिवाह अन्य पतिके साथ चाहती थीं तिनको लाया ७० रावणकी कोई स्त्री अकुलीन नहींथी व कोई रूपहीन नहींथी अकुशल भी कोई न थी उत्तम भूषणरहित भी कोई न थी वीर्य्यहीन भी कोई नहींथी व ऐसीभी कोई न थी जो रावणको प्रिय नहो७१ साधु बुद्धिवाले हनुमान्जीने अपनेमनमें बिचारा कि जिस तरह रावण की ये स्त्रियां रावणहीके स्मरणादिमें लगीहैं इसीतरह जो श्रीरामचन्द्र जीकी धर्म्मपत्नी सीताजी रामचन्द्रजीका स्मरणादि करतीहों व रावणने उसमें कुछ बिघ्न न कियाहो तो बड़े कल्याणकी बातहै ७२ तिसकेपीछे हनुमान्जीने चिन्तनाकी कि सीताजो अच्छेअच्छे गुणोंके कारण इन सब स्त्रियोंसे बरन सब स्त्रीमात्रसे अधिकहैं इनको जो रावण हरलाया तो उसने बड़ा अनरपन का कामकिया क्योंकि इसी कर्म्मसे उसका बिध्वंस होजायगा ७३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेनवमस्सर्गः ॥ ९ ॥

उसीस्थानपर हनुमान्जीने दिव्य उपमायुक्तमुख्य स्फटिकमणिसेबना

व अन्य मणियों से बिभूषित शयन करनेका आसन देखा १ वह हाथी दांत व सुवर्णके चित्रोंसे व वैदूर्यमणियों के श्रेष्ठ आसनोंसे व बड़े मोल के बड़े बड़े बिस्तरोंसे व अन्य महाघनोंसे सिद्धथा २ तिसके एकस्थान में दिव्य मालाओं से शोभित चन्द्र सम प्रकाशित बहुत श्वेत छत्र धरा देखा ३ व सुवर्णसे बना सूर्यसम प्रकाशित शोकरहित मालाओंसे शोभित परमसुन्दर आसन देखा ४ जो चमर हाथोंमें लिये स्त्रियां से सब ओरसे पवन कियाजाता व विविधप्रकारके गन्धोंसे सेवित व श्रेष्ठधूप से धूपितथा ५ व बहुत सुन्दर बिस्तरासे भूषित व सब पशमीने बहुत मोलकेबिछे व श्रेष्ठमालाओंसे सबओरसे उपशोभितथा ६ तिस आसन पर काले बादर के समान व चमकदार सुवर्णके कुण्डल धारणकिये अरुणनयन महाबाहु महासुवर्ण जटित बस्त्रधारणकिये ७ व सुगन्धित लालचन्दन सब अंगोंमें लगाये सन्ध्यासे लालविजुली सहित बादरके समान शोभित ८ दिव्य भूषण धारणकिये सुन्दर कामसम रूप वृक्ष बल्ली सहित मन्दराचलके समान शयनकरते ९ रात्रिको बिहार करनेसे निवृत्त श्रेष्ठभूषणपहिरे राक्षसोंकी कन्याओंका प्रिय व राक्षसोंको सुख पहुँचानेवाले १० मद्य व स्त्रियोंका अधरामृतपीकर निवृत्त सुवर्ण से निर्म्मितप्रकाशित शयनपर सोते राक्षसोंके स्वामी रावणकोदेखा ११ रावणको मतवाले हाथीके समान सांसेलेते देख व बनाय निकट आय हनुमान् जी कुछ भयभीत हो थोड़ी दूर अलग चलेगये १२ उसके पीछे वेदीके बीचमें पहुँच सीढ़ी पर चढ़ मदान्ध रावण को महाकपि हनुमान् जी देखनेलगे १३ शयनकरते रावण का शयनस्थान मदचूते हाथियों सहित प्रस्रवण नाम पर्वत के समान शोभित होता १४ सुवर्णके बजुल्ले बँधे इन्द्रध्वज के तुल्य शयनस्थल पर पसरे महात्मा रावणके भुज पवनतनयने देखे १५ जो भुज ऐरावत हाथीके दांतों के लगने से घावसहित व बज्रलगी मोटे कन्धसे मिले व विष्णुजीका चक्र लगनेसे घावयुक्त होगयेथे १६ व जो भुज बहुतमोटे सम कन्धोंमेंमिले बल संयुक्त सुन्दर लक्षण युक्त नख व अँगूठा सहित सुन्दरी मुदरियों से भूषित १७ धरना के समान लम्बे हाथीकी शूँड़के समान गोल चढ़ा उतार पँचमुहें दो सर्प्पोंके बिस्तरापर परे १८ व खरगोश के रुधिर के

समान लाल सुगन्धित व शीतल अत्युत्तम चन्दनसे अनुलिप्त १६ व उत्तम स्त्रियोंसे मींजेजाते उत्तमगन्धलगे यक्ष गन्धर्व सर्प व देवताओंके रोवानेवाले २० तिसरावणके बाहु मन्दराचलपर सोतेहुये बहुत रिसाने दो सर्प्पोंके समान विस्तरा पर परे हनुमान्जी ने देखे २१ सब तरह परिपूर्ण तिन दोनोंभुजोंसे रावण अपने दोश्शृंगोंसे मन्दराचलके समान शोभितहुआ २२ जो मन्दराचल आम व पुन्नाग वृक्षोंसेमहकता उत्तम व कुल वृक्ष संयुक्त मीठ अन्न रस संयुक्त पीनेकी वस्तुओं से सुगन्धित हो २३ सोतेहुये तिस राक्षसों के राजा रावण के मुखसे तिस घरको पूर्णकरताही सानिश्श्वास निकला २४ व मुक्तामणि सुवर्णसेबनेमुकुट व कुण्डलोंसे शोभित मुख २५ व लालचन्दन शोभितहारमोटे व लम्बे भुजोंसे व चौड़ी छातीसे विराजित २६ व उजले रेशमी वस्त्र लालनेत्र व पीताम्बरी अँगौछा लेनेसे २७ इनसबचीजोंसे शोभित उर्दकीराशि के समान दीप्तिमान् सर्प्पके समान श्वासेंलेते व गंगाजीके जलमें सोते हुये मतवालेहाथी के समान बिस्तरापर सोते २८ चारोंदिशाओंमेंचार सुवर्णकेदीपकोंसेशोभित व सबअंगोंसे प्रकाशित बिजुलियोंसे प्रकाशित मेघकेसमान २९ रावणको व उसमहात्मा रावणके चरणोंके निकट लेटी हुईतिसकीस्त्रियोंकोहनुमान्जीनेदेखा ३० वेसबस्त्रियां चन्द्रवत्प्रकाशित मुखवती उत्तमकुण्डल पहिरे प्रफुल्लित पुष्पोंकी माला पहिरेथीं ३१ व सबनाचनेगानेमें कुशल श्रेष्ठभूषण धारणकिये रावणके निकटलेटी कपि ने देखीं ३२ हीरा व वैदूर्य मणियोंके बने कानोंमें कुण्डल धारणकिये व सुवर्णकेभी कुण्डल व बहूँटापहिरे ३३ तिन स्त्रियोंके चन्द्रकार मुखों व ललित कुण्डलों से वह बिमान नक्षत्रों से आकाशके समान शोभित हुआ ३४ व मदयुक्त हो मदयुक्त रावणसे रतिकरानेके कारण थककर रावण की स्त्रियां जहांकी तहां वैसेही खुलीखुलाई सोगई थीं ३५ व एक स्त्री अपने सबअंग पहुढ़े पहुढ़े डुलारहीथी मालूमहोतीथी कि यह नाचना जानतीहै नाचतेही नाचते सोगई है इससे अभी हाथपैर आदि अंग चलायमान होरहेहैं ३६ कोई स्त्री बीणा हाथमें लियेही सोगईथी व बड़ीभारी नदीमें बहती कमलिनी अकस्मात आई नाव को पाय शोभित होनेके समान शोभित होती थी ३७ और कोई एक स्त्री चिकारा

बगलमें दबाये सोगई थी वह मानों पुत्रको बहुत प्रियकरतीथी इससे उसको बगल में दबायेही दबाये सोगई ३८ एक और कोई स्त्री पटह नामबाजाको अच्छीतरह छपटाय सोगईथी जैसे बहुतदिनोंकेपीछे अपने पतिको पाय अच्छीतरह छपटाय कोई स्त्री सोरहे ३६ व कोई कमल लोचनी स्त्री बीणा को अच्छी तरह छपटाये सोगई थी व मानों श्रेष्ठ अपने प्रिय पीतम को छपट कामिनी स्त्रीके समान शोभित होती थी ४० कोई स्त्री विपञ्चीनाम बाजाको लिये सोगईथी वह जानों अपने पतिहीको छपट सोईथी ४१ और एकस्त्री अपने कोमल व मोटे अंगोंसे मृदङ्गनाम बाजा दबाय सोगईथी ४२ एक मदसे अच्छीतरह मैथुनका श्रम कराय अपने भुजों व बगलमें शङ्ख दबाय सोगईथी ४३ एक स्त्री को डमरू बहुत प्रियथा इससे वह डमरू लेकरही सोगई वह उस समय सयानेलड़के को मानों बगलमें दबाये सोगईथी ४४ कोई कमलनयनी स्त्री मारे मदसे मोहित हो आडम्बर नाम बाजा अपनी छाती में छपटाय सोगईथी ४५ एक स्त्री जलसे पूर्ण घड़ा बगल में लिये सोगईथी वह बसन्तऋतुमें धूमिल पुष्पोंकी गोंजी मालाके समान उस पानी कीचड़ से भरी शोभित होती थी ४६ कोई स्त्री सुवर्णके कलशों के आकार अपने कुच अपनेहाथोंसे पकड़े निद्रावश होगईथी ४७ एक कमलपत्र नयनी पूर्णमासी चन्द्रमुखी और स्त्री को छपटसोगईथी ४८ व बहुत स्त्रियां नानाप्रकार के बाजोंको लपट लपट सोगईथीं वे जानों कामी पुरुषोंसे अपने कुच मिँजाय फिर उन्हीं को छपट सोरहीथीं ४६ तिन सबको एकांतमें शुभ बिस्तरापर सोतीदेख एक इन सबोंसे रूपवती स्त्री को क्नाय रावणके निकट सोतीदेखा ५० यह स्त्री सब मोती गजमुक्ता व हीरा आदि मणियों से जड़े सुवर्ण के भूषणों से भूषित थी इसीस मानों भूषणोंकी शोभा व अपने अंगोंकी चमकसे उसमन्दिरको भूषित करतीथी ५१ सुवर्णके रङ्गका तो उसके सब अंगों का रङ्गथा व जितनी स्त्रियां भीतरथीं व जितने पदार्त्थ भीतर रहतेथे सबोंकी वह स्वामिनी थी व मन्दोदरी उसका नाम था सब मनोहर भूषण धारण किये शयन कररही थी ५२ तिसको सब तरहसे भूषित व सबसे रूपवती देख पवनतनय ने अपने मनमें तर्कणा की कि रूप यौवनादि की

सम्पदासे विदितहोताहै कि सीताजी यहीहैं ५३ पर अनुचित आचरण पर पुरुषकसङ्ग सोईदेख हनुमान्जी प्रथमतो बहुतदुःखितहुये फिरजिस कार्य्यकेलिये आये थे उसकी सिद्ध समझ बहुत हर्षितहुये ५४ इससे अपनी पूंछ पटक फिर चूंबलिया व फिर रोम गरगराय फूल उठे इधर से कूद कूद उधर चलेगये कुछ किलकिला शब्दभी कर उठे वहाँसे कूद एक और भवनपर भी चलेगये खम्भा पकड़ पकड़ हिलाने लगे फिर भूमिमें कूदपड़े इसतरह अपनी वानरोंकी प्रकृति देखाई ५५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेदशमस्सर्गः ॥ १० ॥

फिर आगे कहे हेतुओंसे जो मन्दोदरी को सीता समझेथे उस बुद्धि को शिथिलकर सुस्थिर चित्तहो जानकीजी के विषयमें हनुमान्जी बड़ी भारी चिन्ता करनेलगे १ कि सीताजी तो रामचन्द्रजीके वियोगसे न तो शयनही करसक्तीं न भोजनहीं करसक्तीं न अलङ्कारही कर सक्तीं न कुछ जल शर्बत आदि पीही शक्तीं २ व चाहे सब देवताओंके स्वामी ब्रह्मा विष्णु महादेव इन्द्रादिकों के भी तुल्यहों पर पुरुष के समीप वे नहीं सोसक्तीं क्योंकि रामचन्द्रके समान सब बातोंसे कोई देवताओं मेंभी नहींहै फिर औरोंकी क्या गणनाहै ३ बस यहकोई औरही स्त्रीहै सीता किसीतरहसे नहींहैं यहबनाय अपनेमनमें निश्चयकर सीताजीके ढूंढ़नेके लिये हनुमान्जी जहां बैठ रावण मदिरादि रस पीताथा तहां जाय ढूंढ़नेलगे ४ वहांदेखा तो बहुत स्त्रियां क्रीड़ा करनेसे थकीथकाई पड़ीथीं बहुत गानेसे थकीपड़ीथीं बहुत नाचनेसे थकी व बहुत अधिक मदिरा पीनेसे योहीं व्याकुलथीं ५ बहुतसी मुरज मृदङ्ग चोलकाआदि बाजाओं के बजानेमें लगीथीं बहुतसी सुन्दर बिस्तर पर मत्तपरी सोरहीथीं ६ इन सबको हनुमान्जीनेदेखा व वह पान भूमि सुन्दर भूषणोंसे भूषित रूप व बर्त्तालापकरना व शीलयुक्त व गीतके समान अर्थ सहित बोलनेवाली ७ व देशकालजाननेवाली उचित बचन बोलने वाली व अधिक रति करानेवाली सहस्रों स्त्रियोंसे संयुक्तथी उसको पवनतनयजी ने देखा ८ इनकेसिवाय अन्य मदिरादि पानभूमिमें रूप बचनादि युक्त श्रेष्ठ स्त्रियोंके सहस्रों सोतेहुये हनुमान्जीने देखे ९ वेभी

स्त्रियोंकेसहस्र देशकाल जाननेवाले उचित बचन बोलनेवाले रतिमें न थकनेवाले थें १० तिनसब स्त्रियोंके बीच में बड़ीबड़ी बाहोंवाला रावण बड़ेभारी गोंठमें बहुत गाइयोंके बीचमें बैठे बड़ेभारी बैल के समान शोभित होरहाथा ११ उन स्त्रियों से घिरारावण बड़ेबन में हथिनियों के बीचमें बैठे बड़ेभारी हाथीके समान शोभित होताथा १२ तिस राक्षसों के राजा रावण के गृहमें महात्मा रावणके सब कामों से पूर्ण पानभूमि वानर शार्दूल हनुमान्जी ने देखी १३ उस पानभूमि में मृगों महियों व शूकरों के मांसभी बहुततरहके बनेबनायेधरे देखे १४ सुवर्णके बड़ेबड़े पात्रोंमेंधरा मोर व मुरगोंका अनूठामांस वानरशार्दूलने देखा १५ ये सब वराह व वाध्र्णासनामं पक्षी व मृग व छागकामांस दही व सोंचर लोन लगाय लगाय यथाविधि बनायाहुआ व साही मयूरका भी मांस हनुमान्जीने देखा १६ व बिबिधप्रकार के करांकुल छाग खरगोश महिष स्यल्हवा मछरियों आदिका मांस आधा खायादेखा १७ इनमांस के सिवाय और चाटने पीने खाने की छोटी बड़ी नानाप्रकार की चीजें खट्टी लोनखरी व शक्करआदि मिलीधरी थीं १८ इनसबको हनुमान्जी ने देखा व बड़े बड़े घूंघुर बजुल्ले अन्नबहुतधन व पीने खानेकेवरतनों व बिबिधप्रकार के फलों व पुष्पोंसे पूर्ण पानभूमि अधिक शोभा को पुष्ट करतीथी १९ तिसमें ठौर ठौर खानेपीने सोनेकी वस्तुओंसे वह पानभूमि बिना अग्निकेही मानों अग्निसम प्रकाशित होतीथी २० व उसमें मांसोंके जितने श्रेष्ठ सँस्कारहैं उनसेयुक्त उसके बनानेमें निपुण लोगों से बनाये अलग अलग पानभूमि में धरे २१ दिव्य नानाप्रकार की मदिराधरी शक्कर पुष्प महुआआदिसे बनेमद सब विद्यमान थें ये सब हनुमान्जीने देखे २२ इनसबों में गन्ध आनेकेलिये बिबिध प्रकार के अलग अलग चूर्ण भी परे थे उनसे उनकी मलिनता व दुर्गन्धि भी दूरहोगई थी २३ बहुत मालाओं के परने व सुवर्ण व स्फटिकमणि के बर्त्तनों से संयुक्त होने से वह भूमि निरन्तर शोभित होती २४ और बहुतसुवर्णके करवापरेथे व बहुतचांदीकेकुम्भ बहुतपक्के सोनेकेपरेथे २५ इसतरहकी पान करनेकी भूमि वानरश्रेष्ठने देखी व वहां सीधुनाम मदिराके सौकुम्भ मणिमय देखे २६ वे सब वर्त्तन मदिरा से पूर्णथे कहां

कहीं आधेआधे वर्त्तन पीलियेगयेथे इससे आधेआधे खालीथे कहींकहीं सबके सब पीलियेगये थे २७ कहीं कहीं पीनेका लगाही नहींहुआ था कहींकहीं बिबिधप्रकार के भक्ष्यभोज्य व पान भी २८ कहीं आधेखाये पियेगये थे कहींपूरे कहीं लगाही नहींहुआ था इनसबको देखते पवन तनय बिचारते थे स्त्रियोंकेशयन के विस्तरेभी बहुत खालीहीपरे थे २९ क्योंकि बहुतस्त्रियां एकदूसरी को पकड़े और के बिस्तरापरसोतीथी व कोईस्त्री और स्त्रीकावस्त्रओंघानेमें छीनओढ़ेपरी थीं इसतरहसबनिद्राके बशीभूत थीं ३० तिनकी साँसोंके पवन के लगनेसे उनकेअङ्गों में टिके वस्त्रमालादि बहुत नहीं उड़तेथे जैसे मन्दपवन के चलनेसे बहुत नहीं उड़ाते ३१ तिनस्त्रियों के गन्ध व मदिरा व मीठेओठ व बिबिध प्रकार की मालाओंमें व बिबिध प्रकारके पुष्पोंमें ३२ लगकर जो पवनबहता था उसमें उनउन पदार्थोंकी सुगन्धआतीथी ३३ इसीसेरस व चन्दनों व धूपोंमेंलग पवनकेचलनेसे तिस पुष्पकविमानपर सुगन्धितही पवन बहताथा ३४ व रावणके घरमें कोई २ स्त्रियां तो श्यामरङ्ग के वस्त्रधारणकिये थीं कोई कृष्णवस्त्र कोई पीताम्बर ३५ तिन स्त्रियोंका रूप निद्राबश होनेसे व कामसे मूर्च्छितहो सोतीहुई कमलिनियों के समान हुआ ३६ इसतरह रावणके जनाने में हनुमानजी ने सबकुछ देखा पर जानकीजी को न देखा ३७ तब सब उन स्त्रियों को इसतरह उघारी आदिदेख धर्म्मकीनिन्दाके भयसे हनुमानजी बड़ीशङ्काको प्राप्तहुये ३८ कि सोतीहुई परारी स्त्रियोंका देखना यहनिश्चय हमारे धर्म्म का अतिशय लोपकरेगा ३९ यद्यपि दोषदृष्टि से परस्त्रियों का देखना अधर्म्म है व हमारीदृष्टि तो परारीस्त्रियों को विषयकी ओर लौटारने में नहींलगी इससे तो अधर्म्म से बचजाते परन्तु परारी स्त्री सीताजी को हरनेवाले इसदुष्ट रावणको हमनेदेखा इसका पाप जरूर हमको होगा ४० इस विषय में तिन मनस्वी हनुमानजी के मनमें बिचारकरने पर एक और चिन्ता उत्पन्नहुई ४१ कि देखो हमने एकान्त में इसतरह अबल बिखलपरी रावण की स्त्रियांदेखीं परन्तु हमारे मन में कुछ भी विकार न आया ४२ सो कैसेआवे क्योंकि इन्द्रियोंको शुभ वा अशुभ अवस्थाओं में चलानेकेलिये मनहीं कारण है सो तो हमारा स्थिरही है फिर कैसे

इन्द्रियों में विकार पहुँचै ४३ न कही कि इन्द्रियों को अपने बशमेंकिये भी पुरुषकी स्त्रियोंके निकटजाना अनुचितहैं सो तो हमारा मिटाया नहीं मिटसका क्योंकि स्त्रियां स्त्रियोंकेही मध्यमें ढूंढ़ीजाती हैं इससेहम जानकीजी को स्त्रियों के बीच में सिवाय अलग ढूंढ़ही नहींसक्ते तो जरूर स्त्रियोंकेनिकट जानापरेगा ४४ फिर जिसजीवकी जोयोनिहोतीहै वह उसी योनिमें ढूंढ़ाजाताहै इससे स्त्री खोजाने पर मृगियोंके बीचमें नहीं ढूंढ़ीजासक्ती ४५ तिससे शुद्धमन वाले हमने रावण की सब स्त्रियों के बीचमेंभी रत्तीरत्ती ढूंढ़ा परन्तु जानकी नहीं देखपरतीं ४६ तिसकेपीछे उनदेवता व गन्धर्व्व नागोंकी कन्याओंके बीचमेंभी हनुमानूजी ने ढूंढ़ा परन्तु जानकीजी को न देखा ४७ तहां जानकीजी को न देखा व और और श्रेष्ठस्त्रियों को देखा तब वहांसे ऊपर को उछल अन्यत्र चलने को मनकिया ४८ व वह आपान भूमि छोड़ पवनतनयजी बड़ेयत्न से फिर सीताजीको ढूंढ़नेलगे ४९ ॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकादशस्सर्गः ॥ ११ ॥

तिसरावणके भवनमें स्थितहो हनुमानूजीने लताओंसे आच्छादित गृह व अनेकविध चित्र लिखित भवन व रात्रिमें रहनेके योग्य बहुतसे भवनदेखे पर उनमें जानकीजी को न देखा १ जब श्रीरामचन्द्रजी की प्रिया सीताजीको न देखा तो महाकपि हनुमानूजी ने विचारा कि जो हमारे इसतरह के ढूंढ़नेपर भी सीताजी नहीं देखपरतीं तो निश्चययह कि अब वे अपने प्राण नहीं धारण करती २ किन्तु इस दुष्टकर्म्मी राक्षसोंमें श्रेष्ठरावण ने सुशील रक्षाकरने में तत्पर पतिव्रता व पातिव्रत मार्गमेंटिकी सदाचारिणी जानकीजी को निश्चय मारडारा होगा ३ अथवा उसको मारना काहेको पराहोगा विकराल रूप विकृतवर्ण तेज रहित बड़ेबड़े मुखवाली व बड़े विकराल नेत्रवाली तिनरावणकी स्त्रियों को देख जानकीजी मारेभय से आप विनष्टहोगई होंगी ४ इससे अब बहुतकालतक वानरोंके सङ्ग घूम सीताजीको न देख व इसीसे पुरुषार्त्थ को न पाय हमारी गति नहींहै कि सुग्रीवके समीप चलेजायँक्योंकि वे बड़े तीक्ष्णदण्ड देनेवाले व बलवान् वानरहैं मारही डारेंगे ५ सब तो

रावण के जनाने स्थान देखडारे व सब उसकी स्त्रियों को देख डारा परन्तु पतिव्रता सीता नहीं दिखाई देतीं इससे समुद्र नांघ इतनी दूर आय जो हमने श्रम किया वह वृथाही हुआ ६ भला अबहम जो बिना सीताजी को देखे वहां जायँगे तो सब वानर इकट्ठे हो हमसे पूंछेंगे कि वीर लङ्का मेंजाय तुमने कौन कार्य्य किया बताओ तो हम ७ बिना जानकी को देखे उन लोगों से क्या बतावेंगे बस हम कालके उलंघन करने में टिकेहुये किसी तीर्थ में बैठ प्राणही छोड़देंगे ८ क्योंकि जब हम समुद्रके पार फिरजायँगे तो महावृद्ध जाम्ववान्जी हमको क्या कहेंगे फिर अंगदजी क्याकहेंगे व सब बानर इकट्ठेहो क्या कहेंगे ६ उत्साह लक्ष्मीका मूलहै व उत्साहहीसे परमसुख मिलताहै इससे उत्साह युक्तहो जहांजहां अभी नहींढूंढ़ा वहां वहां फिर ढूंढ़ें चुपायरहना ठीकनहीं है १० क्योंकि उत्साहही निरन्तर सब अर्थों में प्रवृत्तरहता है वही जीवके कियेहुये सबकर्मोंको सुफलकरताहै ११ तिससे अब हम उत्साहकारक यत्नकी इच्छाकरें जो रावण पालित देश अभीनहीं देखे उनमेंभी ढूंढ़ेंगे १२ हमने आपानकी शाला ढूंढ़ी तैसेही पुष्पोंके गृहभी ढूंढ़े विचित्रशालाढूंढ़ी क्रीड़ामन्दिर भी ढूंढ़े १३ अब अन्य ढूंढ़नाचाहिये यह बिचार फिर ढूंढ़नेका प्रारम्भकिया तो पहिले घरके निकटकी फुलवाड़ियों में देखा व सब तरह के बिमान ढूंढ़े १४ फिर सब तहखाने व देवालय व गृहके ऊपर विद्यमान गृह व विहारके लिये गृहसे दूर बने गृह इन सबोंमें ऊँचेको जाय फिर नीचे आय फिर बैठे फिर चलते चलते सर्वप्रकारसे ढूंढ़ा १५ सब दरवाजोंके किवाड़ खोलखोल फिर उनके भीतर कोनोंमें व जहां कोई पदार्थ मनुष्यके छिपजानेभरका धरा था उसको वहांसे उठाय उसजगहपर देख भीतरोंमें पैठ फिर निकल फिरपैठे लेटे लेटे बैयां बैयां करवँटिया हो १६ जहां मनुष्य रहनेकीभी जगह न थी आठही दश अंगुलकी जगहथी वहांभी हनुमान्जीने ढूंढ़ा यहांतक किरावणके अतःपुरमें चारअंगुल भी ऐसास्थाननहींबाकीरहा जो हनुमान्जीने न ढूंढ़ाहो १७ शहरपनाहों व रकबोंके भीतरकी गलियांगृहोंकी व देवालयोंकी वेदियां ताख व अन्य झरोखे व छोटी छोटी तलैयां ये सबतिन्होंने फिरफिर देखीं१८ व इन स्थानों में तरहतरहकी

बिरूप व सुरूप राक्षसियां कपिने देखीं पर जानकी जी न देखपरीं १९ व रूपसे लोकमें अद्वितीय बिद्याधरोंकी स्त्रियां हनुमान् जीनेदेखीं पर रामचन्द्रजी को सुखदेनेवाली सीताजी न देखपरीं २० व पूर्णमासीके चन्द्रके समान मुखवाली सर्पोंकी कन्या हनुमानूजीने देखीं पर वे जानकी जी न देखपरीं २१ व नागों को जीत रावण जबरदस्ती जो सर्पोंकी कन्यालायाथा उनकोभीहनुमानूजीनेदेखा पर जनकनन्दिनीजीको न देखा २२ महाबाहु हनुमानूजी जानकीजीको न देख व अन्य सब श्रेष्ठ स्त्रियों को देख बैठ गये २३ व बानरों का उद्योग व समुद्रकानाँघना व्यर्थदेख फिरबड़ी चिन्ता को पवनसुत पहुँचे २४ व मारेशोकसे ब्याकुल उसबिमानपर से उतर बायुनंदन बड़ीचिन्ता को प्राप्त हुये २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्वादशस्सर्ग्गः ॥ १२ ॥

बानरोंमेंश्रेष्ठ हनुमानूजी बिमानसेकूद प्राकारपर ऐसीशीघ्रताकेसाथ कूदगये जिससे बादरोंकेबीचमें बिजुलीकेसमान शोभितहुये १ व सब रावणकेघरकी ओर ओर घूम जानकीजीको न देख हनुमानूजीबोले २ कि रामचन्द्रजीका प्रियकरतेहुये हमने बार बार लङ्काढूंढ़ी परसर्व्वाङ्गों से सुंदरी सीताजीको नहींदेखते ३ छोटी छोटी तलैयां ताल बड़े बड़ेसर छोटी छोटी नदियाँ बड़ी बड़ी नदियाँ काछा व समुद्रकाकाछा व बड़ेबड़े दुर्ग्गमपर्ब्बत व सारीपृथिवी हमलोगोंनेढूंढ़ी परजानकीको नहींदेखते ४ देखो गृध्रोंकेराजा सम्पाति ने भी यहीं रावणके भवनमें सीताकोबतायाथा परवेनहीं देखपरतीं यहक्याबातहै ५ मैथिली जनकात्मजा वैदेहीसीता जो रावण बलसेहरलाया व रावणके समीपबैठी जिसको देखा वहीतोमहीं हैं नहींतो नहींहैं वहतोकोई औरहीहै ६ हमजानतेहैं कि रामचन्द्रके बाणोंसे डरमारेजल्दीके रावण वहाँ से सीताजीको लेकरउड़ाहै तो कहीं बीचहीमें सीताजी गिरपरीहोंगी ७ अथवा जो बीचमें न गिरपरीहोंगी तो हमजानतेहैं कि अतिश्रेष्ठ जानकीजीका हृदय जबवहआकाशमार्ग्गहो चलाहोगा तो समुद्रदेखमारेभयके गिरपरा होगा ८ अथवा ऐसाहुआहो कि जबभुजोंके बीचमेंदबाय वेगसे रावण

भागाहो तो विशालाक्षी रामचन्द्रजी की प्राणप्रियाने प्राणछोड़दिया होगा ६ नहीं तो यह तो ज़रूरहुआहोगा कि जब रावण ऊपरहीऊपर उड़ाचलाआताहोगा तो उसकेहाथों से विकल जनकनन्दिनी समुद्रमें गिरपरीहोंगी १० व नहीं तो अपनापातिव्रत धर्म्मरखाती व बंधुरहित सीताको इसक्षुद्र रावणने भक्षणकरलियाहोगा ११ अथवा सुनयनी अदुष्टा जानकीजीको इसदुष्ट रावणकी दुष्टस्त्रियोंने भक्षणकरलियाहोगा १२ व सम्पूर्ण चन्द्रसमान व कमलदलनेत्र रामचन्द्रजी के मुखारविन्दको ध्यावती वेचारीसीतामृतक होगईहोंगी १३ वा हाराम हालक्ष्मण हाअयोध्ये ऐसाकहबहुतबार बिलापकरजानकीजीने देह छोड़दियाहोगा १४नहींतो रावणके मन्दिरमेंकहीं बड़े गुप्तस्थलमें पिँजरेमेंबैठाई शारिकाके समान मरनेकी परीक्षा केलिये बारबार बतलवाईजातीहोंगी१५ सोभी ठीक नहीं क्योंकि जनककेकुलमें उत्पन्न कमलनयनी रामचन्द्रजीकी पत्नी जानकीजी रावणके बशमें कैसे जायसक्तीहैं १६ चाहेकहीं यहीं गुप्तकर लुकाईहों वा यहां से अन्यत्र कहीं लुकाईहों वा मृतकही होगईहों इन तीनोंमें निश्चियताहै नहीं इससे प्रिय भार्य श्रीरामचन्द्रजी से कहनेके योग्य नहींहै १७ कहनेपरभी दोष होगा व न कहनेपर भी अब कैसा कियाजाय हमकोतो बड़ीकठिनता बिदितहोतीहै १८ इस विषयमें अबक्या करनाचाहिये हनुमानजी बार बार यह बिचारनेलगे १९ जो बिनासीता जीको देखे यहांसे किष्किन्धाको हमगये तो हमारा कौन पुरुषार्थ होगा २० व हमारा यह सागर का नांघना व लंकाका प्रवेश व राक्षसों का देखना सब व्यर्थ होजायगा २१ जो हम बिना जानकीको देखे किष्किन्धा को गयेतो सुग्रीव हमसे क्याकहेंगे व सब बानर इकट्ठेहो क्याकहेंगे व वे दोनों दशरथजी के पुत्र क्याकहेंगे २२ जो हमजाय रामचन्द्र जीसे यह कठोर बचन कहेंगे कि हमने सीताको नहींदेखा तो इसकेसुनतेही वे प्राणछोड़देंगे २३ क्योंकि कठोर दारुण क्रूर इन्द्रियों के तपानेवाला सीताके निमित्त ऐसा दुर्वचन जैसेही वे सुनेंगे फिर वे न होंगे २४ व जैसेही रामचन्द्रजी कष्टमें प्राण छोड़ते बुद्धिमान् लक्ष्मणजी देखेंगे तैसेहीवेभी न होंगे २५ इन दोनोंभाइयोंको मृतकसुन भरतजीभीमरजायँगे व भरतकोमरेदेख शत्रुघ्नभी नहोंगे २६

व इन सब पुत्रोंको मरेदेखजान सब मातालोगभी मरजायँगी कौसल्या सुमित्रा कैकेयी सबकी सब मरेंगी इसमें कुछ भी सन्देह नहीं २७ फिर बड़े कृतज्ञ सत्य प्रतिज्ञ बानरोंके राजा सुग्रीवजीभी जैसेही रामचन्द्रजीको मृतक देखेंगे वे भी अपने प्राणत्यागदेंगे २८ फिर दुःखित व्यथित दीन आनन्दरहित तपस्विनी व पतिके शोकसे पीड़ित रुमाभी प्राण त्यागेंगी २९ व फिर बालीके मरणके शोकसे पीड़ित मारेदुःखके दुर्बल ताराभी सुग्रीवकी ऐसीदशादेख न जीवेंगी३०व फिर मातापिता दोनोंकेमरने व सुग्रीवके दुःखसे दुःखित कुमारअंगदभी न होंगे ३१ व फिर स्वामीके दुखसे सब बानरलोगभी लातोंमूकोंसे अपने अपने शिर पीटपीट मरजायँगे ३२ क्योंकि कपिनाथसुग्रीवजी अभी सबबानरों को समझाया बुझायाकरते व बहुत दानमान कियाकरतेहैं इनबातोंका स्मरणकर जरूरही सब मरजायँगे ३३ फिरयहनहीं कि किष्किन्धाही के बानरमरेंगे नहीं बनों पर्वतों व द्वीपोंमें कहींबानर क्रीड़ाकरनेको न रह जायँगे ३४ व अपनी अपनी स्त्री पुत्र सेवक आदिले स्वामी के विरहसे दुःखित सबबानर पर्बतोंपरसे गिरगिरमृतकहोजायँगे ३५ जोऐसेभी नबचेंगेवे विषपान करने वभक्षणकरने वा फाँशीलगाने व अग्निमें कूद परनेवा उपवासकरने वा शस्त्रसेअपघातकरनेसेमरजायँगे ३६ बातयह हैकि हमारेजानेपर बड़ाभारीहाहाकारशोरहोगा व इक्ष्वाकुकुलका व बानरोंकेकुलका बिनाशहोजायगा ३७ तिससेहम यहांसे बिना जानकीजी के समाचारजाने किष्किन्धाको जायँहीगेनहीं क्योंकिहम बिना सीता सुग्रीवको नहींदेखसक्ते ३८ व जो हमयहींरहे वहां न गये तो महात्मा वे दोनोंभाई व सब वे गवान्‌बानर आशासे जीतेबनेरहेंगे ३९ इससेहम हाथसेतोड़ फलादिखाते वा मुखसेही तोड़ तोड़ खाते इन्द्रियोंको अपने बशकिये वृक्षोंकेनीचेबैठे वानप्रस्थहो बिना जानकी जी को देखे यहींरहेंगे ४० अथवा यहांरह जीनेसेकौन प्रयोजनहै बहुतफलमूल जलयुक्त समुद्रकेकिनारे चिताबनाय अग्निलगाय उसमें पैठजायँगे ४१ प्राणनिकल जायँगे जो शरीर उसमें भस्मभी न होगा तो कौआ व कुत्ते खाजायँगे कुछसन्देहनहीं तो भी स्वर्गहीको जायँगे ४२ जो जानकीजीको न देखेंगे तो जलहीमें गिरडूबकर मरजायँगे क्योंकि ऋषियोंको

इसतरह भी मरते हमने देखाहै ४३ बिना सीताजीको देखे जो हमारी तरह सुजातमूला सुभगा व यशस्विनी कीर्त्तिकीमालाहुईहै कि हनुमान् सीता को देखनेगये वह कुंभिलाय जायगी ४४ इससे हम तपस्वी हो वृक्षकेनीचे बैठेरहेंगे परन्तु बिना जानकीजी को देखे यहांसे न जायँगे ४५ जो हम तिन सीताजी को बिनादेखे यहांसे गये तो सब वानरों सहित अंगद तो समुद्रके तटहीपर मरजायँगे ४६ सो यहभी कुछनहीं मरजानेमें बहुत दोषहैं जो जीतेरहेंगे तो हमको कल्याणही प्राप्तहोगा इससे प्राणधारण कियेरहेंगे कभी न कभीतो सीताको देखहीरहेंगे ४७ इसतरह बहुत तरह के दुःखमन से विचारत विचारते वानरोंमें हाथी-रूप हनुमान्जी शोककेपारको न गये ४८ तिसकेपीछे धैर्य्य धारणकर महाकपि कुञ्जर ने विक्रम को प्राप्तहो विचारा कि बस अब इस महा बलवान् दशग्रीव रावणहीको मारडालेंगे ४९ अच्छा सीताहरीही क्यों रहें नामतोहोगा कि सीताको न पाया तो उनके हरनेवालेही को मार डाला ५० अथवा इसरावण कोपकर ऊपर ऊपरउड़ें व जाय रामचन्द्र जीको सौंपदें जैसे पशुपति जी को पशु सौंपा जाताहै ५१ तिन सीताजीको बिनापाये शोककेमारे व्याकुलहो हनुमान जीने ऐसी चिन्ताकी ५२ व विचारा कि बस जबतक परमयशस्विनी रामचन्द्रजी कीपत्नी सीताजीको न देखेंगे तबतक फिरफिर इसलङ्का पुरीको ढूंढ़ा करेंगे ५३ जो कहैंकि केवल सम्पातिहीके वचनसे रामचन्द्रजीको यहां लिवालावें व वे यहां सीताजीको न देखें तो रामचन्द्रजी भी सब वान-रोंको भस्म करदेंगे ५४ इससे हमनियताहारहोयहीं तपस्वीहोवनमेंबसें जिसमें हमारे निमित्त ये मनुष्य व वानर न मरें ५५ यहां एक यह बड़ी भारी अशोकवनिका भी है इसमेंभी जायँगे क्योंकि यह हमने कभी नहीं ढूंढ़ी ५६ इससे अब आठवसुओं व ग्यारहरुद्रों व बारहसूर्य्यो व अश्विनी कुमार दो भाइयों व उनचासो पवनोंके नमस्कारकर अबको जायँगे जिसमें राक्षसोंको शोक बढ़ावें ५७ व सब राक्षसोंको जीत इक्ष्वाकुके कुलको बढ़ानेवाली सीताजीको ले रामचन्द्रजीको दें जैसे तपस्वीको कोईसिद्धिदेवे ५८ इसतरह एक मुहूर्त्तभरतक विचार मारे चिन्ताके व्याकुलचित्तहो महाबाहु मारुतसुत उठ खड़ेहोगये ५९

व मनमें श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण व श्रीजानकी जी के प्रणामकर रुद्र इंद्र यम पवन चन्द्रअग्नि व अन्यसबदेवताओं के प्रणामकरनेलगे ६० तिन सबके प्रणाम कर सुग्रीवजी के प्रणाम किया व अशोकबनिका को जाने केलिये सब दिशों की ओर निहारा ६१ इसतरह सबके प्रणामकर मन से पवनतनय अशोकवनिकाकोगये फिर मारुतनन्दन चिन्तनाकरनेलगे ६२ कि यहतो निश्चयहै कि अशोकवनिकामें बहुत राक्षसहोंगे व बन भी बहुतहोगा व खाई छहरदीवारी आदि से युक्तहोगी ६३ व राक्षस भी वहां नियतही होंगे जो उसमेंके वृक्षोंको रखातेहोंगे इसीसे विश्वात्मा पवनभगवान् भी उसमें ज़ोर स न चलते होंगे ६४ व हमारा यह शरीर रामचन्द्रजीके व रावणकेभी अर्थ लघुहोगया है इससे इसशरीर के बिषयमें सब देवता व ऋषिगण हमको सिद्धिदें ६५ ब्रह्मा स्वयम्भू भगवान् विष्णु सब देवता व सब तपस्वी अग्नि भगवान्वायु व बज्र धारण किये इन्द्रजी ये सब सिद्धिदें ६६ पाश हाथमें लिये वरुणजी व चन्द्र सूर्य महात्मा अश्विनीकुमार दोनों जने व सब देवता व उंचासों पवन ६७ येसबसिद्धिदें व सबप्राणी व सबप्राणियोंकेप्रभु श्रीनारायण इनके सिवाय जिन देवताओं को हमने कभी देखा भी नहीं पर वे भी व येभी सब देवता मार्ग्गमें हमारी रक्षाकरें व हमको सिद्धिदें ६८ अब नहीं जानते कि कब सुवाकीसी टोंटसमान ऊँची नासिकायुक्त व उजले दांतसहित विस्फोटकादि दागरहित मन्द मन्द मुसुकाती कमलदल समलोचन युक्त व चन्द्रसम प्रकाशित परमश्रेष्ठ जगन्माता जानकीजी का मुख देखेंगे ६९ हम नहींजानते कि अति नीच हीनजाति मूर्ख सुदारुण भूषण बसन व वेषधारी दुष्टरावणके यहां जबरदस्ती बँधुआ ऐसी तपस्विनी जानकीजी हमारे नेत्रोंके सामने कैसेहोंगी ७० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रयोदशस्सर्ग्गः ॥ १३ ॥

एक मुहूर्त्त भर महातेजस्वी हनुमान् जी बिचार मनसे तिस अशोक बनिकामें पहुँच यहां जिस भवनमेंथे उससे उछल प्राकार पर होरहे १ सर्वाङ्ग हर्षित महात्माहनुमान्जीने उसप्राकारपर स्थितहो बसन्तऋतु में फूलसे वृक्षोंके समान पुष्पित वृक्ष देखे २ उन वृक्षोंमें साखू अशोक-

पुष्पित चम्पाके वृक्ष उद्दालक नागकेसर आम्र कपवांच ३ व अमरूत व सामान्य आमोंके बनोंसे घिरी वृक्षोंकी बाटिका देख बाणकेसमान यहां से सीधे उछले व चले ४ व जाय उसमेंपहुँचे वह नानाप्रकारके पक्षियों से नादित चित्रविचित्र व चांदी सोनेके वृक्षोंसेयुक्त ५पक्षियों व मृगसमूहोंसे विचित्र विचित्र व बनयुक्त प्रातःकालके सूर्य्यके समान प्रकाशित ऐसी अशोकबाटिका हनुमान्जीने देखी ६ वह बाटिका फूले फूलेवृक्षों से युक्त व कोकिल भ्रमरादिकों से नित्य सेवितथी ७ व सब कालों में आनन्दित पुरुष बिचराकरते मत्तमृग व पक्षीबोलाकरते मत्तमयूर कुहंकाकरते इनके सिवाय और भी मत्त पक्षियों के झुण्डके झुण्डबोलते ८ बरारोहा अनिन्दिता राजपुत्री सीताजीको ढूंढ़ते हनुमान्जीने सोतेहुये वहांके पक्षियोंको जगादिया ६ व जो वेसब पक्षी एकहीसंग फरफराय उड़े तो उनके पङ्खोंके पवनसे कम्पित वृक्षोंने अनेकप्रकारके पुष्प छोड़े १० इससे उस अशोक बाटिकाके बीचमें मारुतात्मज हनुमान्जी उन पुष्पोंसे आच्छादितहो पुष्पमय पर्व्वतके समान शोभितहुये ११ व सब दिशोंमें दौड़ते वृक्षोंके खण्डोंमें प्राप्त हनुमान्जी को देख सब प्राणियों ने जाना कि यह बसन्त है रूपधारण किये घूमता है १२ वृक्षों से विविधप्रकारके गिरे फूलोंसे आच्छादित होनेके हेतु भूषणोंसे भूषित स्त्री के समान तहांकी भूमि शोभितहुई १३ तिन वेगवान् बानर शार्दूल से बहुत कँपाये वृक्षोंने बिचित्र पुष्प छोड़े १४ उन वृक्षोंके मूल से चोटी तक ऐसे हिली कि जिसने सब पुष्प पत्र गिरपरे निखरहरे होगये जैसे जुआरीलोग जुआमें हार भूषण बस्त्र हारजानेके कारण होजाते हैं १५ वेगवान् हनुमानजी से कँपाये वृक्षोंने बहुत जल्द अपने फल पुष्पादि छोड़दिये १६ पवनतनय से कँपाये वृक्ष पक्षियोंसे हीनहोगये क्योंकि केवल शाखा मात्र उनमें रहगई इसीसे औरोंके जानेके अयोग्य होगये १७ उससमय कम्पित बाल व शुभदांत ओठपीहुई व नख दांतों के घाव लगी मर्द्दित होने से चन्दनादि छुटी स्त्री के समान १८ पूंछ व हाथों पावोंसे मींजी व वृक्ष टूटीहुई तैसेही अशोक बाटिकाहुई १६ पवनतनय ने वेगसे बड़ी बड़ी लताओं की लरें तोड़डालीं जैसे वर्षा में पवन मेघों के जाल तोड़ डारता है २० तिस बाटिका में घूमते

हनुमान्‌जीने मणि चांदी व सुवर्ण की मनोहर पृथ्वियां देखीं २१ व निर्म्मल जल से पूर्ण व बड़ेबड़ मणियों की सिड्ढियों से शोभित अनेक तरह की बावलियां भी तहांतहां घूमतेदेखीं २२ उनमेंमोती व मूंगोंकी वो सिटकियां व स्फटिक मणि की जलके भीतर की दीवार व बाहर चित्रविचित्र सुवर्णके वृक्षलगे २३ प्रफुल्लित कमलोंसे शोभित विमल जल चकई चकवा पक्षीबैठे वृक्षोंपर कोकिल बोलते हंस व सारसों के नाद सेनादित २४ व उनके आसपास लम्बी लम्बी नदियां बड़ेबड़े वृक्षोंसेयुक्त बहतीं जिनकाजल अमृतसमाने तिनसे शोभित २५ जलके किनारे किनारे सैकरों लतालगीं कल्पवृक्ष के भी फूल बीचबीच बहते नाना प्रकार की झाली उरकुटीआदि विद्यमान कँदैल के पुष्प बीचबीच बहते२६इनकोदेख फिर मेघाकार बड़ेबड़े शिखरयुक्त विचित्रकँगूरे चारों ओरसे शोभित २७ पत्थरोंके घरोंसेयुक्त नानाप्रकारके वृक्षलगे जगत् भरमें रमणीय ऐसा पर्व्वत हनुमान्‌जीने देखा २८ व उस पर्व्वतपरसे बहतीहुई एकनदी भी पवनतनयने देखी वह पतिकेकोरासे उछलभागी व गिरीहुई स्त्रीकेसमान थी २९ व जलमें झुंकीहुई डारोंवाले वृक्षोंसे उपशोभित व फिर जललौटीहुई नदी ३० क्रोधसेकहीं अन्यत्रचलीजाती हुई व भाईबन्धुओं के मनानेसे फिर पतिकेऊपर प्रसन्नहुई स्त्रीकेसमान आई पवनतनय ने देखी ३१ जैसे उसरिसानी स्त्रीकोसौतें दूरसे देखा करतीहैं वैसेही उसनदीको पक्षीलोग दूरसे देखतेथे ऐसीनदी हनुमान् जीने देखी ३२ शीतलजल से पूर्ण श्रेष्ठ मणियों से रचित सो पानमोतियोंकी सिटकीसमेत एककृत्रिम बावलीभी देखी ३३ इसमेंभी बिबिध प्रकारके पक्षी बोलरहे थे व विचित्रबन किनारे किनारे लगाथा व विश्वकर्म्मा के बनाये बिबिधप्रकार के राजमन्दिरों से शोभित थी ३४ व सबओर से नकलीबनों से भी उपशोभित थी उसके किनारे जो वृक्ष थे सबोंमें पुष्प व फललगे थे ३५ व सब छत्राकारबने थे सबोंके नीचे की भूमिचांदी से मिढ़ीथी व थाल्हा सबके सुवर्णकेबनेथे व उसके आसपास बहुतसी लतायेंलगी थीं उनके बहुतपत्तों से घिरीथी ३६ तिसके पीछे सोनेकीभूमि पर शोभित सुवर्णहीका एक शिरसाका वृक्ष हनुमान्‌जीने देखा ३७ व सब भूमिभाग पर्व्वतके झरने व वृक्षसब सुवर्णहीके देखे

३८ तिन सब वृक्षोंकी दीप्तिसे सुमेरु पर्व्वत के समान शोभितहो हनुमानजीने अपनाको सुवर्णरूप समझा ३९ तिन सुवर्णके वृक्षोंको पवन से कम्पितहोने के कारण सैकरों किङ्किणियों के शब्द के समान शब्द करते देख हनुमानजी बहुतविस्मितहुये ४० क्योंकि वे सबवृक्ष अच्छीतरहसे फूलरहेथे इससे दीप्तिमान् थे व सबमें नयेपुष्प व पल्लवलगे थे हनुमानजी यहसब देखतेदेखते उस शिंशुपा पर कूदकरचढ़े ४१ व बिचारनेलगे कि इसीपरसे रामचन्द्र के दर्शनकी लालसाकिये इधरउधर अपनेमन से मारेदुःख के पीड़ितहो आईहुई जानकीजी को देखेंगे ४२ दुष्टात्मा रावणकी रमणीय अशोकबनिका यहीहै जो चम्पा चन्दनादि वृक्षोंसे विभूषित है ४३ व यह नानाप्रकारके हंसादि पक्षियोंसे सेवित नदीहै महाराजाधिराज रामचन्द्रजीकी पट्टरानी जानकीजी यहां अवश्यही आवेंगी ४४ क्योंकि वे जानकी जी महाराज राघवजीकी राजमहिषीहैं व रामचन्द्रजीको प्रियहैं बनमें बिचरनेमें बहुत कुशलहैं इससे जरूर यहां आवेंगी ४५ अथवा वे मृगशावकनयनी इसबनके बिहरनेमें चतुर हैं रामचन्द्रजी की चिन्तासे दुर्ब्बल भी हैं तथापि यहां अवश्य आवेंगी ४६ यद्यपि वे रामचन्द्रजीके शोकसे सन्तप्त हैं पर बनबास में उनकामन बहुत लगता था इससे वे बनचारिणी यहां आवेंगी ४७ रामचन्द्रजीकी भार्य्या व जनक की कन्या पतिव्रता सीताजी आगे बनेचर मृगादिकोंकी बाञ्छा बहुत रखती थीं ४८ व जब सन्ध्याकाल होगा तो सन्ध्या करनेके लिये इस निर्म्मल जलबाहिनी नदीके तीरपर अवश्य आवेंगी ४९ यह अशोकवाटिका भी तिन्हीं जानकीजीहीके रहनेके योग्य है क्योंकि रामचन्द्र महाराजकी पत्नीहैं वे सबप्रकार शुभरूपहैं ५० जो पूर्ण चन्द्रमुखी जानकीजी जीतीहोंगी तो इस शीतल जलवाली नदीके किनारे जरूर आवेंगी ५१ इसतरह महात्मा हनुमानजी अशोकबनिका में जाय सघनपातोंके बीचमें छिपकर राजेन्द्र श्रीरामचन्द्रजीकी पत्नीको परखतेहुये कि अब आने चाहतीहैं वहां सबकुछ देखा ५२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुंदरकाण्डेचतुर्दशस्सर्गः ॥ १४ ॥

जानकीजीको ढूंढ़तेहुये हनुमानजी तहांटिके इधर उधर देखतेथे कि

सब अशोकबनिका वहींसे देख ली १ जोकि कल्पवृक्षकी लताओं से व वृक्षोंसे उपशोभित दिव्य सुगन्धित रसोंसे संयुक्त व सबओरसे सुभूषित २ इसीसे नन्दनबनके समान प्रकाशित मृगों व पक्षियोंसे पूर्ण अँटारी व राजमन्दिरोंसे घनी कोकिलाओंके शब्दसे पूर्ण ३ व सुवर्णके कमलों से पूर्ण बापियोंसे शोभित बहुत रेशमी व ऊर्णा बस्त्रोंके आसनोंसे शोभित व बहुत तम्बू कनातोंसे शोभित ४ व सब ऋतुओंमें फूलनेवाले पुष्पों व फलयुक्त वृक्षों व पुष्पित अशोकोंकी शोभासे सूर्योदयकी प्रभाके समान ५ मानों बार बार कूदते पक्षियों से पत्र शाखारहित कीजाती प्रकाशके मारेदीप्तियुक्त पवनतनय ने देखी ६ व चित्र बिचित्र पुष्पों के कर्ण भूषणधारणकिये शोकनाश करनेवाले सैकरों अशोकोंके पुष्पों से शोभित ७ जो अशोक मारे पुष्पभार से झुकेहुये मानों पृथिवीही को छुयेलेते थे इनके सिवाय पुष्पित पीले कँदैल व छितुल के वृक्षोंसे शोभित ८ वह स्थान इन पुष्पोंकी प्रभासे मानों सबओर से प्रकाशित होरहाथा क्योंकि पुन्नाग शतावरी चम्पा आदि ९ बहुत बड़े बड़े वृक्ष फूले फले तहां शोभित होरहे थे कोईकोई वृक्ष तो सुवर्णके रङ्गके थे कोई अग्निके वर्णके १० कोई नील अञ्जन के वर्णके इनमें अशोक तो सहस्रों वहांथे इसीसे अशोकबाटिका वा अशोकबनिका उसकानाम था यहबन देवताओंके नन्दनवन व चित्रविचित्र चैत्ररथबनको भी ११ नाँघगयाथा इससे अचिन्त्यरूप दिव्यशोभायुक्तथा मानोंपुष्पसम नक्षत्र युक्त दूसरा आकाशहीथा १२ रत्नरूप सैकरों पुष्पोंसेयुक्त मानोंपाँचवाँ सागरथा सबऋतुओंमें फुलानेवाले मीठे व सुगन्धित नानाप्रकार के वृक्षोंसेशोभित १३ व मृगगण व पक्षियोंके नानाप्रकारके शब्दोंसेना-दित अनेक गन्धवहानेवाला पुण्यगन्धसे मनोहर १४ व ऐसागन्धयुक्त था मानोंदूसरा गन्धमादन पर्ब्वतहीथा तिस अशोकवनिकामें बानरोंमें श्रेष्ठ हनुमानूजी ने १५ देवालय व राजों व धनियों के मन्दिरोंसे युक्त रम्यमध्यमें सहस्रों खम्भालगा कैलाससम श्वेत १६ मूंगोंकी सिढ़ढियों से भूषित व तपाये सुवर्णकीवेदी से शोभित शोभासे ऐसाप्रकाशित मा-नोंनेत्रोंको चुरायेलेता १७ व उजलेकपड़ोंकी अधिकतासे मानों आका-शमें मिलाजाताथा ऐसा मन्दिरदेखा तिसमें बैठीहुई मलिन वस्त्र ओढ़े

पहिरे राक्षसियोंके घेरमेंपरी १८ उपासकरने से दुर्बलदीन बार बार ऊर्धीसाँसेंलेती शुक्लपक्षकी द्वितीयाको चन्द्ररेखा के समान सूक्ष्ममूर्त्ति पवनतनयनेदेखी १९ यद्यपि उनकारूप कहनेको मन्दहोगयाथा परंतु बड़ीप्रभा विद्यमानथी जैसेधुआंकेजालसेमूंदी आगकीप्रभाप्रकाशितहोतीहै २० व एकही बड़ेमोलका उत्तमबस्त्र धारणकिये बिना भूषणकिये हुई कीचड़सहित बिनकमलकी तलैयाके समान २१ व मारेदुःख के पीड़ित अतिदुर्बलरूप व तपस्विनी मङ्गलग्रहसे पीड़ित रोहिणीताराके समानमन्द २२ आंशुओंसे पूर्णमुखीदीना उपवासकरनेसे अतिदुर्बल शोकयुक्त ध्यानकरती व नित्यदुःखमें परायण २३ अपने किसीभी प्रियजनको न देखती व राक्षसियोंके झुण्डदेखती अपने झुण्डसे बिछुड़ी कुत्तोंके झुण्डसेघिरी मृगीकेसमान ब्याकुल २४ व नीलनागकी आभावाली एकवेणी पीठके पीछेपरी बादरके न होनेपर नीलबन पाँतिसे पृथ्वीके समानशोभित २५ सुखकेयोग्य मारेदुःखके सन्तप्तदुःखोंको न जाननेवाली अधिकमलिन अङ्गवाली व बिशालाक्षीकोदेख २६ हनुमानजी ने बिचारकिया कि सबकारणोंसे सीतायही बिदितहोतीहैं क्योंकि जब वहराक्षस जिसकोहरेलिये आताथा २७व जिसरूपकी हमलोगोंने किष्किन्धामें आकाशमार्गमें आतीदेखीथी उसीरूपकीयहस्त्रीहै क्योंकि पूर्णचन्द्रमुखी सुंदरभौंहवालीयहस्त्रीहै २८ व अपनीप्रभासे सबदिशोंको प्रकाशित करती मयूरीकीसी बोली बोलती कुंदुरूके समान ओष्ठवाली शोभन मध्यभागवती व सुप्रतिष्ठितरूप २९ कमलदलाक्षीसीताको पूर्णचन्द्रप्रभा के समान व कामकी स्त्री रति से बढ़कर रूपवती देखा ३० भूमिमें शयन किये नियत तापसीके समानव सर्प्पिणी के समान बहुत सांसें लेती ३१व बड़े भारी बिस्तृत शोकके जालसे ब्याकुल होने से न शोभित होती धूमके जालमें लीन अग्नि की ज्वाला के समान अप्रकाशित ३२ व अर्थविषयक सन्देहयुक्त स्मृतिकेसमान व गिरीहुई ऋद्धि के समान व नास्तिक बुद्धिके अनादृत श्रद्धाके समान व लाभ न होने से प्रतिहत आशाके समान ३३ व बिघ्नसंयुत सिद्धि की तरह व संशययुक्त बुद्धिकी तरह व मिथ्याभूत कलङ्कसे दूषित कीर्त्तिकीतरह ३४ रामचन्द्रजीकी सेवा न करने पानेसे ब्याकुल राक्षसगणोंसे पीड़ित व मृग-

शावकाक्षी बल हीन जानकीजी को बारबार देखा ३५ जिनके बारबार आँशु बहरहेथे इससे मुख पलक सब एकतरहका श्याम होगयाथा अप्रसन्न मुखसे बारबार सांसलेरहीथीं ३६ मैलकाकीचड़ धारणकिये दीन-मुखी भूषितहोनेके योग्य परअभूषित जैसे चन्द्रमाकी प्रभा बर्षाकालीन मेघसे मूंदी नहीं प्रकाशित होती ३७ व अनभ्यास के कारण शिथिल विद्याके समान जानकीजीको देख हनुमान्जीकी बुद्धिमें बड़ा सन्देह हुआ ३८ बिना अलङ्कारयुक्त सीताजीको देख हनुमान्जीने बड़ेदुःखसे जानपाया जैसे व्याकरणसे उत्पन्न संस्कारसे हीन बचन और अर्थमें चलेजानेसे बड़ेदुःखसे जानपरताहै ३९ इसतरह तिन बिशालाक्षी राज-कुमारी सीताजीको देख बहुत तरहके कारण सिद्ध करते हनुमान् जी तर्कणा करनेलगे ४० देखनेलगे कि हरणके समयमें जिस अङ्गमें जो भूषण पहिरे बैदेहीजीको रामचन्द्रजीने बताया था उन भूषणोंसे अनु-शोभी इनके अङ्गहैं वा नहीं ४१ फिर मनमें कहनेलगे कि अच्छे बने ये कुण्डल व कूकुरके दांतके आकार टेढ़ी ये दो फेनियां व मणियों व मूंगोंसे बने ये सबहाथके भूषण ४२ यद्यपि बहुतदिनोंसे धारणकरने व न मां-जने धोनेसे मैले होगये हैं पर जैसे रामचन्द्रजी बताते थे वैसेही हैं व उन्हीं उन्हीं अङ्गोंमें धारण भी कियेहैं इससे जरूर सीता यही हैं ४३ उनमें जो ऋष्यमूकादि पर्ब्बतपर गिरपरेहैं उनको तो हमनहीं जानते परन्तु जो इससमय इनके अङ्गोंमें भूषणहैं वेतो हम जानतेहैं कि वहीहैं जिन्हें रामचन्द्रजी बतातेथे इसमें कुछभी सन्देह नहीं ४४ व जो पीत-बसन अपना इन्होंने ऋष्यमूकपर फेंकदियाथा जो सब बानरोंने देखा था ४५ व भूषणभी जो इन्होंने धरतीपर बहाये थे वेभी सबोंने देखे थे सो तो इन्हींके फेंकेहैं जो बड़ी देरतक गिरनेपर शब्द करतेरहे ४६ अब बहुतदिनोंसे धारण करनेके कारण यहबस्त्र जो धारण कियेहैं मलिन होगयाहै तथापि अभी पीतवर्ण बनाहै व शोभा भी बनीहै जैसे कि उस बस्त्रमें थी ४७ येवो प्रनष्ट होने परभी रामचन्द्रजीके मनसे कहींअन्यत्र नहींजातीं तो ये अवश्य श्रीरामचन्द्रहीकी रानी हैं ४८ ये अवश्य वही सीताजी हैं कि जिनकेलिये रामचन्द्रजी कारुण्य आनृशंस्य शोक व मदन इन चार कारणोंसे परितप्त होतेहैं ४९ सो स्त्रीकी रक्षा आपत्कालमेंभी

करनी चाहिये उसके नष्टहानेसे तो करुणा आई व आश्रितकी रक्षा न होसकी इससे अनृशस्य अर्थात् अपवाद हुआ पत्नी नित्य संयोगवती होती उसके नष्ट होनेसे शोकहुआ व प्रिया प्रनष्ट होनेसे मदनसे सन्तप्त हुये ५० जिसतरहके इनदेवीके रूप व अङ्ग प्रत्यङ्गोंमें सुन्दरता है तैसेही रामचन्द्रजी का रूप है इससे यह रामचन्द्रजीही की प्रिया है ५१ इन देवीकी मति रामचन्द्रजीमें है व तिनकी इनमें टिकीहै इसीसे ये जानकीजी व वे धर्म्मात्मा रामचन्द्रजी दोनों मुहूर्त्तभर भी अलगजीतेहैं नहीं तो न जीते ५२ जोकि इन अपनी प्राणप्रियासे हीन रामचन्द्रजी शोकके मारे विदीर्ण नहीं होजाते अपनी देह धारणही कियेहैं यह उन्होंने बड़ा दुष्कर कर्म्म कियाहै औरसे तो नहोसक्ता ५३ इस तरह सीताजी को देख पवनतनय मनमें बहुत हर्षितहुये व मनकी द्वारा रामचन्द्रजीकेपास पहुंचे व बारबार रामचन्द्रजीकी प्रशंसाकरनेलगे ५४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चदशस्सर्गः ॥ १५ ॥

प्रशंसाकरने के योग्य सीताजीकी प्रशंसाकर व गुणाभिराम रामचन्द्रजीकी भी बड़ाईकर हनुमानूजी फिर चिन्ता करने लगे १ एकमुहूर्त भरतक ध्यानकर नेत्रोंमें आंशुभर तेजस्वी हनुमानूजी सीताजीके आश्रितहो विलाप करनेलगे २ किजो गुरुओंसे शिक्षित लक्ष्मणजीकेगुरु श्रीरामचन्द्रजी की अति मान्या प्रिया सीताजीभी दुःखसे पीड़ित हैं तो काल बड़ा दुर्लंघ्यहै जोचाहे सोकरे ३ व रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके अनिवार्य्य पराक्रम जाननेवाली सीताजीका मन तिसपरभी चलायमान नहीं होता जैसे वर्षाकालमें भी गङ्गाजी बहुत वेगसे नहीं बहतीं ४ शील अवस्था व आचरणमें तुल्य कुल व लक्षणोंमें भी तुल्य जानकीजी केयोग्य रामचन्द्रही हैं व रामचन्द्रजीके तुल्य जानकीजी ५ तिन जानकीजीको नये सुवर्णके समान रङ्गकी देख जोकि लोकान्तरकी शोभारूप थीं हनुमानूजी मन से रामचन्द्र के पासपहुंचे व यह वचन बोले ६ कि इन्हीं जानकीजीके हेतु महाबली बाली मारागया व रावणहीके समान वीर्य्यवान् कवन्ध भी मारागया ७ व वनमें भयङ्कर कर्म्मकारी विराध भी मारागया इनसबों को बड़े पराक्रम से रामचन्द्रजी ने मारा जैसे

इन्द्र ने शम्बरासुर को मारा था ८ व जनस्थान में अग्नि की ज्वालाके समान प्रकाशित बाणोंसे बड़े भयङ्कर कर्म्मकारी चौदह हजार राक्षस मारेगये ९ व वहीं सङ्ग्राम में खरदूषण व त्रिशिर को भी सर्व्वज्ञ रामचन्द्रजीने मारा १० व बालिसेपालित अतिदुर्लभ वानरोंका ऐश्वर्य्यभी इन्हींके निमित्तलोकमें विख्यात सुग्रीवजीने पाया ११ व इन्हीं विशालाक्षीके निमित्त नद व नदियों के पति समुद्रको हमनांघ आये व यह लङ्कापुरी भी देखी १२ परन्तु इतना क्या जो इनके वास्ते रामचन्द्रजी सबपृथ्वीभर वरन संसारभर घूमआवें तो भी योग्यहोहै हमारेनिश्चय में तो ऐसा आताहै १३ एकओर तीनोंलोक का राज्यधरे व एकओर जनकनन्दिनी सीताजीको तोसब तीनोंलोकोंकाराज्य सीताजीके सोलयें भागकोभी न पहुँचै१४ क्योंकि ये धर्म्मशील महात्मामैथिलराज जनकजीकी कन्या पातिव्रत धर्म्ममेंटिकी सीताजी१५ जबभूमिमें सुवर्णकाहल चलायागया तो खेतसे निकल आईं इनकेअंगोंमें कमलकी धूलिके तुल्य खेतकी धूलिलगीथी१६ फिर ये परमयशस्विनीमहाविक्रमी श्रेष्ठस्वभाव विज्ञानी दशरथजीकी ज्येष्ठपुत्रबधूहुईं१७फिरधर्म्मज्ञ कृतज्ञ व विज्ञानी रामचन्द्रजीकी परम प्यारी भार्य्याहुईं वे अब राक्षसियों के बशमें आय परीं १८ फिर सबतरहके भोग विलास परित्यागकर मारे अपनेपतिके स्नेहसे सब कष्टों को भुलाय निर्ज्जन वनको आईं १९ व वनमें भी फल मूल खानेहीसे सन्तुष्टहो पतिकी सेवामें लगीरहती रहीं पर जैसे घरमें प्रसन्न रहती रहीं वैसेही बनमें भी प्रसन्नरहीं २० वे सुवर्णवर्णाङ्गीनित्य मुसुका कर बोलनेवाली सीताजी जो अनर्थों के योग्य नहीं हैं पर इस नरकरूप यातनाकोभोगतीहैं २१ अब रावणकी हरीहुई इन शीलसम्पन्नाको रामचन्द्रजी देखाचाहतेहैं जैसे प्यासा पौशालाको देखनाचाहता २२ हमअच्छीतरह जानतेहैं कि राज्यसे निकाराहुवा राजा जैसे अपने राज्यकीपृथ्वीपाय प्रसन्नहोताहै वैसेही इनको पाय रामचंद्रजी प्रसन्न होंगे २३ देखो ये कामभोगोंसे त्यागभीदीगईं व बंधुजनोंसे हीनभीहैं तथापि रामचन्द्रजी के आगमनकी आशादेखतीं अपनाशरीर धारणकियेहैं २४ न तो ये राक्षसियोंको देखतीहैं न फलेफूले वृक्षोंको किंतु एकत्र मनलगाये रामचन्द्रहीको देखतीहैं २५ स्त्रियोंका परमशोभा करनेवाला

पतिही सब्र भूषणोंसे अधिकहै पर ये पतिहीन हैं इससे इससमय नहीं शोभितहोतीं २६ व रामचन्द्रजी बड़ादुष्कर कर्म्मकरतेहैं जो इनसेहीनहो फिरभी अपनाशरीर धारणहीकियेहैं मारेदुःखकेविशीर्णनहींहोजाते २७ इनश्याम सुकेशी कमलनयनी सुखकेयोग्य परदुःखित सीताको देख हमाराभीचित्त व्यथितहोगया २८ पृथ्वीसम क्षमाकरनेवाली व कमलदल नयनी सीताजी कि जो सदा रामचन्द्र व लक्ष्मणजी से रखाईजातीथीं वे अब विकरालनेत्रवाली राक्षसियों से रक्षितहोतीहैं २९ पालाकीमारी कमलिनी के समान शोभाहीन व बार बार दुःखपरने से पीड़ित व चक्रवाकरहित चक्रवाकी के समान जनकनन्दिनीजी कृपणदशाको प्राप्तहुईहैं ३० इसअशोक वाटिकाके मारेपुष्पोंसे आगेको शाखानवाये अशोक व अनेक किरणयुक्त चन्द्रमा जोकि पाला म परनेकेकारण प्रकाशित है ये सब इन जानकीजीको और भी शोकउत्पन्न करातेहैं ३१ ऐसाविचार कर व देख हनुमानजी ने अच्छीतरहजानलिया कि ये सीताहीहैं इसमें कुछसंदेहनहींहै इससे उसी वृक्षकेऊपर अच्छीतरह सँभरकर बानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् जी बैठे ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेषोडशस्सर्ग्गः ॥ १६ ॥

तिसकेपीछे कुमुद समूहसमश्वेत व अतिनिर्मल आकाशमें चन्द्रोदयहुआ जैसे हंसनील जलमें प्राप्तहोनेपर प्रकाशितहोताहै १ उससमय अपनी प्रभासेमानों हनुमानजीका मन्त्रीहीहो उनकीसेवा अपनी निर्म्मलप्रभासे करनेको उदयहुआ २ ऐसे हनुमानजी ने पूर्णचन्द्रतुल्य मुखवाली व शोककेभारसे बड़ेबोझसेजलमेंदबी नावकेसमानदबाई सीताजीकोदेखा ३ जानकीजीके देखनेकी इच्छा किये हनुमानजी ने दूर खड़ी घोर दर्शन राक्षसियां देखीं ४ उनमें कोई कानी कोई एककनी बड़कनी बिनकनी खड़ेकानकी माथेमें नासिकावाली ५ बड़े शरीरवाली व बड़े मूड़वाली व अतिछोटे अतिलम्बे शिर ओठवाली खोड़हे मूड़वाली बिना बारवाली जलमें बाल हिलगीहुई ६ लम्बेकान व लम्बे माथवाली व लम्बे कुचों वाली लम्बे ओठ व लम्बी दाढ़ी वाली लम्बे मुख व लम्बी जांघवाली७ बहुत छोटी बहुत बड़ी कुब्री बिकटरूपिणी बामनी करालरूपिणी मुंह-

टुटी पीले नेत्रवाली बिकृतमुखी ८ महाबिकृत पीली काली क्रोधवती कलहप्रिया कालेलोहके शूलकूट मुद्गर आदि धारणकिये ६ शूकर मृग शार्दूल महिष छाग सियारिनके तुल्य मुखवाली व हाथी ऊँट घोड़ों के तुल्य पावँवाली बिना मूँड़वाली १० एकहथी एकगोड़ी तीक्ष्णकानवाली बड़े कानवाली गायकेसे कानवाली हाथीकेसे कानवाली बानरकेसे कान की ११ बड़नकी टेढ़नकी बिननकी गजनकी शिरनकी १२ गजगोड़ी बहुगोड़ी गोपदी पावोंमें बारवाली बड़ी ग्रीवा व बड़े शिरवाली बड़कुचो बड़वठी १३ बड़मुखी बड़आँखी बड़जिभी अति बड़मुखी छागमुखी हस्तिमुखी गोमुखी सूकरीमुखी १४ घोड़मुहीं उँटमुहीं गदह मुहीं इस तरहकी घोरदर्शन राक्षसियां शूल मुद्गर हाथमें लिये बहुत क्रोधकिये सदाकलहप्रिय १५ करालरूपिणी धूम्रकेशिनी बड़ेबडे मुखबाये घड़ों मदिरा पानकरती मद्यमांस प्रियकरनेवाली १६ मांस व रुधिर देहमें लगाये मांसरुधिरही खाती पीती जिनके देखनेहीसे रोमखड़ेहोजाते थे ऐसी बिकराल राक्षसियोंको हनुमान्‌जीने देखा १७ वे सब उसीवृक्षको सबओरसे घेरे खड़ीथीं जिसके ऊपर हनुमान्‌जी बैठेथे व उसीके नीचे निन्दारहित राजकुमारी सीताजी बैठीथीं उन्हींको ये सब रखातीथीं १८ हनुमान्‌जीने सीताजीको लक्षित करलिया कि प्रभारहित शोकसेदुर्ब्बल व मलसे युक्त शिरकेश सहित १६ पुण्यक्षीण होनेकेपीछे भूमिमें गिरी ताराकेसमान उदासपतिके दर्शनकी इच्छाकिये आचरण न करने पानेसे दुःखित २० उत्तम भूषणोंसे हीन पर अपने स्वामी की दयासे भूषित रावणके यहां रोकी व बन्धुरहित २१ अपने झुण्डसे बिछुड़ी व सिंहके घेरमें परी हथिनीके समान ब्याकुल व शरदऋतुके मेघोंसे छिपी चन्द्ररेखाके समान २२ टूटी फूटी इसीसे बिना बजानेवालेकी वीणाके समान व पतिके हितमें युक्त राक्षसियों के बशमें परनेके अयोग्य पर उन्हींके बशमें परी २३ अशोकबनिका के बीच में शोकके सागर में डूबती तिन राक्षसियों के घेरमें परी मङ्गल ग्रह से ग्रस्तरोहिणी ताराके समान उदासीन २४ बिना फुलानी लताके समान हनुमान्‌जी ने देखा यद्यपि बहुत भूषण नहीं धारणकिये व किसीतरहके भी मज्जन अलङ्कारादि नहीं करतीथीं तथापि उस मलिनतासभी शोभितहीसी होतीथीं व नहीं

भी शोभित होतीथी जैसे कमल को भँसीड़ चहला लगनेसे शोभितभी नहींहोती व बीच बीचमें चमकतीभी है २५ मलिन बस्त्र अंगोंमें लपटे उन मृगशावाक्षी सीताजी को हनुमान्नाम बानरश्रेष्ठ ने देखा २६ व जानकीजी दीनमुखीतोथीं परन्तु अपने पतिके तेजसे प्रसन्नमुखीही थीं व अपने स्वभावसे भी रक्षितथीं इसतरहकी श्यामनयनी सीताजीको देखा २७ तिन जानकीजीको हनुमान्जीने मृग शावकके समान नयन वाली देखा जोकि चकित मृगीके समान चारों ओर निहारती थीं २८ मानों अपनी गर्म्मसांसोंसे वृक्षोंको भस्मही कियेदेती थीं व मानों दुःख की लहरियोंसे शोक समुद्र बहातीथीं २९ तिनको दुर्व्वलांगी व बिना भूषणोंकेही शोभित देख हनुमान्जी बहुत हर्षितहुये ३० तिन जानकी जीको अति शोभितदेख हनुमान्जीने हर्षके आँशुछोड़ व फिर श्रीराम- चन्द्र जीके प्रणामकिया ३१ रामचन्द्र जी व लक्ष्मणजी के प्रणामकर वीर्यवान् हनुमान्जी सीताजीके दर्शनसे प्रसन्न हो उसी वृक्षके पत्तों में छिपकर बैठे ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेसप्तदशस्सर्ग्गः ॥ १७ ॥

इसतरह जानकीजी को देखते देखते व पुष्पित वृक्षोंसे शोभित बन देखते देखते व बैदेहीजीको ढूंढ़ते ढूंढ़ते थोड़ीही रात्रि बाकी रही १ कि षडंगसहित वेदजाननेवाले व श्रेष्ठ यज्ञ करनेवाले ब्रह्मराक्षसोंका शब्द दो घड़ी रात्रि बाकीरहे हनुमान्जीने सुना २ व कानोंके सुख देनेवाले व मन हरनेवाले मङ्गल समय के बाजोंके शब्दोंसे महाबल व महाबाहु रावण जगायागया ३ जैसेही महाप्रतापी महाभाग रावण जागा कि तैसेही नये माला व नये बस्त्रधारणकर जानकीजीका स्मरण करनेलगा ४ क्योंकि काम नेवार नेवारै उसको जानकीजी की ओर प्रेरित किया था इससे वह राक्षस अपनामें कामको न रोंकसका ५ इससे वहरावण सब भूषण बस्त्र धारणकर मानों उजली शोभाको धारण करताही हुआ सब पुष्प फल युक्त वृक्षों से पूर्ण ६ व छोटी छोटी पुष्करिणियों से शो- भित व नानाप्रकारके पुष्पोंसे शोभित व मदमत्त चित्र विचित्र पक्षियों से चित्रित ७ व सुवर्ण चांदी आदिके खेलवाले मृगों से भूषित अशोक-

बाटिका की सड़कें देखता हुआ रावण मणि व सुवर्ण की छहरदीवारी से भूषित ८ व नाना प्रकारके मृगगणों से सेवित व गिरेहुये फलों से युक्त व घनेवृक्ष लगी अशोकबाटिकामें आया ९ रावण के पीछेपीछे सैकरों स्त्रियां चलीआतीथीं जैसे इन्द्रके पीछेपीछे देवता गन्धर्व्वादिकों की स्त्रियां चलतीहैं १० कोईकोई स्त्रियां तो उनमें सुवर्णके दीपक बारे हाथों में लिये थीं कोई चमर हाथों में लिये व कोई कोई ताड़ आदिके पंखे हाथोंमें लियेथीं ११ कोईकोई सोनेकी पिचकारियों से आगेआगे जल छिरकती जातीथीं कोईकोई नानाप्रकारके उत्तम ऊर्णादिके बिछौने संगलिये पीछेपीछे जातीथीं १२ कोई एकरत्नकी कलशी मदिरासे भरी परम चतुर स्त्री दहिनेहाथमें लिये चली आतीथी १३ व एक राजहंसके तुल्य श्वेत व पूर्ण चन्द्रसम प्रकाशित सुवर्णकी डांड़ी लगा छाता लिये पीछेपीछे चलीआती थी १४ व मारे निद्रा के मदसे अलसाते नेत्रवाली रावणकी उत्तम स्त्रियां तिस वीररावणके पीछे पीछे चली आतीथीं जैसे बादरकेपीछे बिजुलियां चमकती चलती हैं १५ सब हार बहूँटा आदि भूषण रात्रिको उनके अङ्गोंमें गड़गयेथे व सब बनाव मींज गींज मई डारीगईथीं इसीसे सबके बार छूटगयेथे व सबोंके मुखमें पसीना चक-चका आयाथा १६ बाकी मदसे व नींदके मारे भी मुख घुमाती हुई व पसीनेसे अङ्गमेंके पुष्पोंको भिगोतीहुई व मालाओंसे शिरके बारगुहे १७ ऐसी रावणकी स्त्रियां मदयुक्त लोचनकिये चलजाते राक्षस पतिके पीछे पीछे मारे कामके व मानके चली आईथीं १८ परन्तु तिन सबोंका पति रावण कामपराधीनहो सीताजीमें चित्तलगाये महामन्द व नीच धीरे धीरे चलाजाता था १९ तिसकेपीछे स्त्रियोंकी क्षुद्रघण्टिकाओं व नूपुरों का शब्द मारुतनन्दनने सुना २० फिर द्वारपर आये अचिन्त्य बल पौ-रुष वाले रावणको भी हनुमान्‌जीने देखा २१ कि उसके आगे आगे सुगन्धित तैलकी हजारों मसालें लिये स्त्रियां चलीआती थीं २२ व आम कामके मदों से युक्त टेढ़े व लाल नेत्रोंसे शोभित मानों साक्षात् दूसरा कामही बिना धनुष धारणकिये चलाआताथा २३ व मथे दूधके फेनाके समान श्वेत बहुतसारु उत्तमबस्त्र धारणकिये व बहूँटामें अरझे उस वस्त्र को छुड़ाता पुष्प धारणकिये चलाआता था २४ जब वह बनाय समीप

आगया तो घनेपत्तोंके बीचमें उसवृक्षपर बैठे हनुमानजी उसके जानने के लिये बनाय नगिचाय गये २५ जब कपिकुञ्जर हनुमानजी देखने लगे तो पहिले उसकी उत्तम स्त्रियां रूपयौवनसे युक्तदेखपरीं २६ फिर तिन सबस्त्रियोंके बीचमें उनसबोंका पति महायशस्वी रावण मृगपक्षियों के शब्दसेभरे उसस्त्रियोंके वनमें पैठा २७ वह अतिमत्त विचित्रवस्त्र भूषण धारण किये जानों कानोंसे कुछ सुनाई नहींदेता था ऐसे कान खड़े किये व महाबलवान् विश्रवाकापुत्र इन्हींकारणोंसे उसीके तुल्य राक्षसाधिप २८ उत्तम स्त्रियोंसे घिरा इससे नक्षत्रों से घिरे चन्द्रमा के समानशोभित तिस रावण को महाकपिने देखा २९ व बिचारा कि बस रावणयहीहै क्योंकि यही गृहकेभीतर सोताथा जब हमनेदेखा था यह बिचार हनुमानजी जिस डारपर थे उससे ऊँचे कीडारपर कूदगये ३० क्योंकि यद्यपि हनुमान् जी अत्युग्रतेजस्वी थे पर कार्य्य सिद्ध करनेके लिये जानों रावणके तेजसे निवृत्तहीसे होगये इससेपत्रोंके बीचमें और छिपकरचुप्पेबैठे ३१ व रावण श्यामकेशवाली सर्व्वाङ्ग सुन्दरी जानकी जीको देखनेकेलिये उनकेआगे जायबैठगया ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टादशस्सर्ग्गः ॥ १८ ॥

व उसी समय निन्दारहित राजपुत्री जानकीजीने रूप यौवनसंयुक्त व उत्तम भूषणोंसे भूषित १ राक्षसोंके स्वामी रावणको देखा व देखतही वैदेहीजी कांपनेलगीं जैसे पवनसे केला कांपने लगताहै २ इससे उँटकुरुआ बैठ जांघोंसे पेट झांप व हाथोंसे स्तनमूंद रोदन करतीहुई परम विशालाक्षी जानकीजी बैठीं ३ व रावणनेआय राक्षसियोंके बीचमें सन्न बैठी अति दीन दुःखकेमारे पीड़ित समुद्रमें डूबती नावके समान कांपती सीताजी को देखा ४ जो बिना बिछाई पृथ्वी पर बैठी अपनी इन्द्रियां अपनेबशमें किये कटी व भूमि गिसीपरी वृक्षकी डालके समान टिकी ५ सबअङ्गोंमें मल लगी मण्डन करनेके योग्य पर बिना मण्डनकी इससे पङ्क लपटी भँसीड़के समान शोभित व अशोभित ६ व सङ्कल्पके घोड़ोंकी द्वारा मनोरथों से राजसिंह श्रीरामचन्द्रजीके निकट जातीहुई ७ ध्यान शोकमें तत्परहो सूखती व रोतीहुई व दुःखका अन्त न देखतीहुई राम-

चन्द्रकी आज्ञानुसारिणी ८ व औषध मंत्रादिसे रूँधी बिबिधप्रकार की चेष्टा करती विषधर सर्प्पिणीकी तरह व धूमकेतु ग्रहसे सन्तप्यमान रोहिणीकी तरह ९ व आचारी धार्म्मिक सुन्दर कुलमें उत्पन्नहो पीछे राक्षसादि दुष्कुलमें पर संस्कार करनेके योग्य किसी स्त्री की तरह १० व दुर्ज्जनोंसे दूषितकीर्त्तिकी तरह व आदर रहित श्रद्धाकी तरह व परिक्षीण बुद्धिकी तरह व प्रतिहत आशाकी तरह ११ व किसीतरहसे निवारित आनेवाली वृद्धिकी तरह व भङ्गहुई आज्ञाकी तरह अग्नि लगी दिशाकी तरह व अकालमें कीहुई अपहृत पूजा की तरह १२ व ग्रहण लगे चन्द्रसहित पौर्णमासीकी रात्रिकी तरह व हाथीआदिसे उखाड़ी कमलिनीकी तरह व शूरमारी रणभूमिकी तरह १३ व राहुसे ध्वस्त सूर्य्यचन्द्र की प्रभाकी तरह व धारा कमहोगई नदीकी तरह व चण्डालादिकी छुई वेदीकी तरह व बुझीहुई अग्निकी शिखाकी तरह १४ व हाथियोंकी शूंड़ोंसे मर्दीहुई कमल उखड़ी भगे पक्षियोंकी इससे व्याकुल तलैयाकी तरह १५ व पतिके शोकसे आतुर अलग बहवाई सूखी नदीकी तरह व उबटन आदिके न लगानेसे कृष्णपक्षकी रात्रिकी तरह उद्विग्न १६ सुकुमारी व सुन्दरी रत्नभरे मन्दिरमें बैठनेके योग्य पर घामसे तपी कमलकी डांड़ीकी तरह मुरझानी १७ व पकड़ी खूंटामें बांधी दुलराईजाती अपने साथियोंसे बिछुड़ाई मारेदुःखके बारबार ऊधीसांसें लेती हथिनी की तरह व्याकुल १८ व एक बड़ी लम्बी बारोंकी जटासे शोभित वर्षाकालके पीछे नीली बनपांतिसे पृथ्वीके समान शोभित १९ व उपवास शोक ध्यान व भयसे परिक्षीण दीन अल्प भोजन करती तपस्विनीकी तरह २० याचना करती हाथजोरे दुःखके मारे व्याकुल रामचन्द्रजीमें चित्तलगाये देवताके समान व रावणके अनादरको २१ निहारती रोदनकरती निन्दारहित व सुन्दरी पलके सहित बड़ेश्वेत नेत्र वाली रामचन्द्रजीकी अति अनुव्रता ऐसी जानकीजीको रावण अपनेवध करवानेके लिये ललचवानेलगा २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकोनविंशस्सर्ग्गः ॥ १९ ॥

रावण राक्षसियोंसे घिरी दीन आनन्दरहित व तपस्विनी सीताजी

से ऊपरसे बड़ेमोठे बचनोंसे बोला १ हे हाथीकी शूंड़के समान चढ़ा उ-
तार जांघवाली तुमने हमको देख स्तन व पेट मूंदलिया इससे तो यह
जानपरताहै कि जानों भयसे यहांसे कहीं चलीजाया चाहतीहो २ हे
बिशालाक्षि हम तुम्हारे दर्शन बहुतदिनोंसे चाहतेथे इससे हमको बहुत
मानो क्योंकि तुम सर्व्वाङ्गगुणोंसे सम्पन्नहो इससे सर्व्वलोकोंका मन
हरनेवालीहो ३ हे सीते न तो कामरूपी यहां कोई राक्षस हैं न कोई
मनुष्यही हैं इससे हमारी ओरसे जो तुमको भय जानपरताहै वह दूर
हो ४ व जो हमतुमको यहांलेआये सोतो राक्षसोंका यह सदाका धर्म्म
है कि पर स्त्रीके सङ्ग भोगकरआवें व जबरदस्ती हरलावें ५ यद्यपि
हमारीइच्छा तुमको अच्छीतरह देखनेकी है तथापि बिनां तुम्हारीइच्छा
हमतुमको अच्छीतरह नहीं निहारसक्के ६ हे देवि यहां अब भय न करो
हमारे बिषयमें बिश्वासकरो व सत्यसत्य हममें प्रेमकरो इसतरह शोक-
युक्त नहो ७ एकबेणी धारण बिनाबिछाई भूमिपर सोना आकाश व पवन
में ध्यानलगाना उपबास करना ये भलेचङ्गमें कोई उपयोगी काम नहीं
हैं ८ यहां बिचित्रमाल्य चन्दन अगर बिबिधतरहके बस्त्र व तरहतरहके
भूषण ९ बड़ेमोलकी पीनेकी चीजें व बहुत तरहके सोने बैठनेके लिये
आसन गाना नाच बाजा यहां मौजूदहैं हमको प्राप्तहो इनसबको ग्रहण
करो १० तुम स्त्रियोंमें रत्नरूपहो ऐसी नहो अपनेअङ्गोंमें भूषण धारण
करो क्योंकि हमकोपाय अबतुम इस सुन्दर शरीरमें गहना न पहिरने
के योग्य कैसे होसक्तीहो ११ यह तुम्हारी सुन्दर जुआनी बीतीजातीहै
व जो बीतजाता वह फिरनहीं आता जैसे नदी नदादि बहनेवालोंसे जो
पानी बहजाता फिर लौटकर उनमें नहीं आता १२ हम जानते हैं कि
सबका रूप बनानेवाले ब्रह्माजी तुमको बनाय फिर शान्त हो बैठरहे
क्योंकि तुम्हारे रूपकी दूसरेकी उपमा नहीं देखपरती १३ हे बैदेहि
रूप यौबनशालिनी तुमकोपाय ऐसाकौनहै जिसकामन न ललचाय चाहे
साक्षात् ब्रह्माजी भी हों औरोंकी क्या गिनती १४ हे चन्द्रमुखि जो जो
अङ्ग हम तुम्हारे देखते हैं तिसतिसमें हमारी दृष्टि बँध जातीहै १५ हे
मैथिलि हमारी भार्य्याहोवो व यहमोह छोड़ो हमारी बहुत स्त्रियोंमेंबड़ी
रानीहोवो १६ सबलोकोंसे जबरदस्ती जोनजोन रत्न हम लायेहैं तोन

सब तुमको देंगे १७ व तुम्हारेलिये यहसब नानाप्रकारके नगरों से युक्त पृथिवीजीत तुम्हारे पिता जनकजीको देदेंगे १८ हम इस लोकमें दूसरेको नहींदेखते जो हमारे समान बलवानहो संग्राममें हमारे सङ्ग लड़नेवाला कोईनहींहै सो तुमसे बताते हैं देखो १९ सबदेवता व दैत्य हमारी सेनाकेआगे खड़ेनहीं होसक्ते क्योंकि हजारोंबार समरमें हमारे आगेसे भागचुके हैं व ध्वजा उनकी तोड़डाली गईहै २० इससे हमको चाहो जिसमें हम तुम्हारेलिये उत्तम उत्तम कर्म्मकरें व तुम्हारे अङ्गोंमें ये बड़ीप्रभाके उत्तमउत्तम भूषण धारण करायेजायँ २१ हम तुम्हारा रूप भूषित करनेहीके योग्य देखतेहैं हे वराननेे तुमअपनी चतुरतासेही प्रति कर्म्मसे संयुक्तहो २२ इससे यथेष्टभोग भोगो व पीनेकी वस्तु पानकरो व क्रीड़ा करो व जिसकोचाहो पृथिवी वा धन दानकरो व हममें विश्वस्त हो अच्छीअच्छी वस्तुकी चाहनाकरो व ढिठाईके साथ हमको आज्ञादेती रहो २३ हमारे प्रसादसे लालित तुम्हारे भाई बन्धु भी लालितहोंगे व तुम होओगी २४ हे यशस्विनि हमारी ऋद्धि व राजलक्ष्मी देखो तो चीर-धारी रामचन्द्रको क्या करोगी २५ सोभी कुछ ठीकनहीं क्योंकि हमसे हारेहुये श्री रहित बनमें घूमते ब्रतधारणकिये निखरहरी भूमिमें सोते रामचन्द्रके विषयमें तो शङ्काहै कि जीतेहैं वा नहीं २६ वहांभी तो क्या करेंगे क्योंकि रामचन्द्र तुमको देखने भी तो नहींपाते जैसे बकोंकी पंक्ति को आगेकिये बादरोंसे मूंदी सूर्य्य वा चन्द्रमाकी प्रभा कोईनहीं देखने पाता २७ अब हमारे हाथमें परी तुमको रामचन्द्र नहींपासक्ते जैसे इंद्र के हाथमें प्राप्तकीर्त्ति हिरण्यकशिपुने नहींपाई २८ हे सुन्दर मुसुकाने सुन्दर दांत व सुन्दर नेत्रवाली हमारेमनको हरेलेतीहो जैसे गरुड़ सर्प्प को हरलेतेहैं २९ तुमको हम मलिन रेशमी वस्त्र धारणकिये तन्वङ्गी व अभूषित देख मारेशोचसे अपनी स्त्रियोंके भी सङ्ग रति नहीं करते ३० हमारे अन्तःपुरमें रहनेवाली जितनी उत्तम स्त्रियांहै तिन सबोंका ऐश्वर्य्य अपनामें स्थापितकरो ३१ हे जानकि हमारे तीनोंलोकोंकी श्रेष्ठ स्त्रियां हैं वे सब तुम्हारीसेवा करेंगी जैसे अप्सरा लक्ष्मीजीकी सेवाकरतीहैं ३२ हे सुश्रोणि जो रत्न व धन कुबेर के हैं हमारे साथ वे सब व अन्य लोकों के सुख भोग करो ३३ ॥

चौ० सुमुखि देखि तप विक्रम माहीं । धन बल तेजरु यश महँनाहीं ॥ हमरे रामचन्द्र यह जानहु । सकल मोह तजि यह पहिचानहु १ । ३४
पिअहु रमहु बिहरहु चखु भोगा । धन महिदेव तुम्हेंगत शोगा ॥ मम संग सुखित रहहु सुखसाथा । तुमहिं पाय तव बन्धु सनाथा २ । ३५
कुसुमित तरु समूह घन सारे । भ्रमर सहित वर जलधि किनारे ॥ अति शोभित कानन रमु प्यारी । बिमल हार भूषित युतसारी ३ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयसुन्दरकाण्डेविंशस्सर्गः ॥ २० ॥

तिस रौद्रस्वभाव रावणके ऐसे बचन सुन सीताजी बहुत दुःखित हो धीरेसे उससे बोलीं १ बोलनेके समय मारे दुःखके बारबार रोदनकरती व थरथराती परम तपस्विनी व पतिव्रता सोताजी अपने पतिही की चिन्ता करती २ तृणको छांड़कर तिससे बोलीं हे रावण हमारी ओरसे अपना मन लौटारो व अपनी स्त्रियोंमें मनकरो ३ क्योंकि तुम हमको नहीं पासक्के जैसे पापी पुरुष अणिमादि सिद्धियों को नहींपा-सक्का हम अपने एकही पतिको प्राप्त होसक्तीहैं यह निन्दित अकार्य्य हमसे नहीं होसक्का ४ क्योंकि पहिले तो उत्तम कुलमें हमारा जन्म हुआ फिर उत्तमही कुलमें बिवाह हुआ यहकाम ऐसी कुलीन स्त्रियोंका नहींहै इतना कह परम यशस्विनी वैदेही जी ने ५ रावण की ओर पीठ करली व फिर पिछवँड़ियां बोलीं हममें ऐसी सामर्थ्य नहीं जो तुम्हारी भार्य्याओंकी रक्षाकरें ६ व तुम्हारे घरमें हैं इससे तुम अच्छी गलीचलो व साधुओंके ब्रतको धारणकरो हे निशाचर जैसे तुम अपनी स्त्रियोंकी रक्षाकरते हो वैसेही तुमको औरोंकीभी स्त्रियोंकी रक्षा करनी चाहिये ७ इससे अपनाको उपमान बनाय अपनीही स्त्रियोंके साथ बिहारकरो औरोंकी स्त्रियोंके रोंकनेका मन न करो क्योंकि जो पुरुष अपनी स्त्रीकेसङ्ग भोगकर असन्तुष्टही बनारहता औरकी स्त्रियोंमें अपनी चञ्चल इन्द्रियों को चलाताहै ८ उस सज्जनों से धिक्कारपाये पुरुष को परस्त्रियां बड़भारी अनादर व नरकको पहुँचातीहैं ९ भलाइस लंकापुरीमें कोई सज्जन महात्मा नहींहै व वेहैं परन्तु तुम उनकी चाल चलतेही नहीं इसीसे तुम्हारी बुद्धि महात्माओंके विरुद्ध सदाचार रहित है १०

अथवा मिथ्याभिमानी तुम्हारे हित व योग्य पण्डितोंके कहे वचन राक्षसोंका नाश करानेकेलिये ग्रहणही नहींकरते ११ क्योंकि अन्यायी अविवेकी अजितेन्द्रिय राजा को पाय अच्छीतरह भरे पुजे देशग्राम व नगर सब नाशहोजाते हैं १२ तिसीतरह तुम अन्यायी अविवेकी को पाय रत्नोंके ढेरोंसे भरीपुरीलंका अकेले तुम्हारेही अपराधसे थोड़ेही दिनों में नाश होजायगी १३ हे रावण अपनेही किये पापों से मरने महा पापकर्म्मा तुम्हारे मरनेपर सबप्राणी आनन्दितहोंगे क्योंकि तुमको वे बहुतदिनों तक नहीं देखा चाहते १४ इससे पापकर्म्मा तुमको मरेदेख जो लोग तुमसे क्लेश पारहे हैं वे हर्षितहो कहेंगे कि बड़भाग्य की बातहै जो यह दुष्टरावण मरगया १५ इससे जाव धन व ऐश्वर्य्यसे हमको तुम नहीं लोभासक्त क्योंकि जैसे सूर्य्यको छोड़ प्रभा अन्य किसीके पीछे नहींजा-सक्ती इसीतरह हम भी प्राणप्रिय श्रीरामचन्द्रजीको छोड़ अन्यपुरुषको स्वप्नमेंभी नहीं ग्रहण करसक्तीं १६ क्योंकि तीनलोकोंके नाथ श्रीरघु-नाथजीका सत्कृत भुज शिरकेनीचे धर शयनकर अब अन्य किसीपुरुष का भुजकैसे अपने शिरकेनीचेधर सोवेंगी १७ हम सम्पूर्ण ब्रह्माण्डोंके अधिप श्रीरामचन्द्रजीही की योग्य भार्य्या हैं जैसे व्रत करनेवाले विप्र की विद्या उसी के योग्य होती सब साधारण लोगों के योग्य नहीं होती १८ इससे हे रावण जो तुम अपना कल्याणचाहो तो दुःखित ह-मको रामचन्द्रजीके निकट पहुँचाआवो जैसे बनमें बिछुड़ी हथिनी यूथ के अधिप बड़े हाथीहीके निकट पहुँचनेसे आनन्दित होतीहै १६ जो तुम अपनी पुरीकी रक्षाचाहो व अपना बध न चाहो तो पुरुष श्रेष्ठ श्री रामचन्द्रजीका अपना योग्य मित्रबनावो २० क्योंकि वे संसारमें सर्ब्ब धर्म्मज्ञ व शरणागत वत्सल के नाम से प्रसिद्धहैं यदि अपना जीवन चाहतेहो तो तिनकेसाथ मैत्रीकरो २१ तिनशरणागत वत्सलके निकट जाय तिनको प्रसन्नकरो व पवित्रचित्त हो हमको ले उनको सौंपआवो २२ इसतरह जब रामचन्द्रजीको हमें सौंपआवोगे तबतुम्हारे जीवको स्वस्तिहोगी व इसके बिपरीत करनेसे तुम बड़ी बिपत्ति पावोगे २३ इन्द्रका छोड़ावज्र जिसकेऊपर चलायाजाय चाहे उसकोबचादे व यम-राज चाहे बचादें पर सबलोकों के नाथ श्रीरघुनाथ जी जब क्रोधकरेंगे

तो तुम्हेंऐसेदुष्टको कभी न जीता छोड़ेंगे२४ हमको जानपड़ताहैकि राम
चन्द्रजीके धनुषका बड़ाभारी शब्द इन्द्रकेछोड़े बज्रकेसमान सुनोगे २५
व बहुतही शीघ्र यहां रामचन्द्र व लक्ष्मण के चलाये बड़ीबड़ी फोंकों के
ज्वलितवाण मुहँबाये बिषधर सर्प्पोंके समान कूदेंगे २६ व कङ्कपक्षीके
पङ्खोंसे बने फोंकवाले वे वाण राक्षसोंको मारमार इसलंकामें इतनेभर
होंगे कि कहीं बैठने उठनेका स्थान न बाकीरहेगा २७ इन महासर्प्प
रूप राक्षसेन्द्रों को गरुड़ रूप श्रीरामचन्द्रजी बड़ेबेग से कैसे उड़ाले
जायँगे जैसे गरुड़ छोटे सर्प्पों को उड़ालेजाते हैं २८ हमारे स्वामी
शत्रुओंको दमन करनेवाले श्रीरामचन्द्र जी तुमसे हमको छीनलेजायँगे
जैसे बामनजी तीनबार पैरउठाने से राजाबलिकी राज्य लक्ष्मी लेगये
थे २६ जो कहो कि तभी क्यों न छीनलिया तो जब जनस्थान में श्री
रामचन्द्रजीने सब राक्षसों को मारडाला था व हमारे कहनेसे वे दोनों
भाई मृगकेपीछे चलेगये थे तब उनके वहां न होनेपर तुमने यहचोरी
की ३० अब वे दोनों नरसिंह उस आश्रम को खाली करगये उसमें
भी तुझी दुष्ट ने माया से उनको दूर करदिया तब तू गया था ३१
नहीं तो तुझमें इतनी शक्ति न थी कि रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीकी म-
हँक सूंघ उनके देखनेको वहां थँभ सक्ता जैसे दो सिंहोंकी महँक पाय
कुत्ता बेचारा वहां नहीं खड़ाहोसक्ता ३२ तिन दोनोंजनोंसे बिग्रहकरने
पर अकेली तुम्हारी स्थिति वहां न होसकेगी जैसे जबवृत्तासुरका एकही
हाथ रहगया तो इन्द्रके दोभुजोंके सामने उसकी स्थिति न होसकी
बरन वहभी काटडालागया इसीतरह तुमभी काटे जावगे ३३ बहुतही
शीग्घ्र लक्ष्मणसहित श्रीरामचन्द्रजी बाणोंसे तुम्हारे प्राण शोषेंगे जैसे
थोड़ा जल सूर्य शोषलेतेहैं ३४ ॥

कुण्डलिका ॥

बरुणालय गिरिपर गयहु अरु कुबेरके धाम ।
पहुँचेहु परदशकण्ठ शठ त्वहिंनहिं छोड़हिं राम ॥
त्वहिंनहिं छोड़हिंराम बाणसों करि तवखण्डन ।
इन्द्र बज्रसों यथा वृक्ष कटिहैं महिमण्डन ॥
काल आय नियरान यदपि रघुवर करुणालय ।

परनहिं त्यगिहैं तोहिंचहै लुकिहहु बरुणालय १ । ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकविंशस्सर्गः ॥ २१ ॥

सीताजीके कठोर बचन सुन रावण पियदर्शन जानकीजीसे अप्रिय बचन बोला १ जैसे जैसे पुरुष स्त्रियों को समझाताहै तैसे तैसे स्त्रियोंके बशमें परताहै व हमने जैसे जैसे प्रियकहा तैसे तैसे तुमने अनादर किया २ क्याकरें तुम्हारे विषयमें जो हमको कामप्राप्तहुआ है वह क्रोधको रोंकताहै जैसे मार्गसे बाहर चलते घोड़ोंको सुन्दर सारथि रोंकताहै ३ मनुष्योंमें काम बड़ा दुष्टहै क्योंकि जिसमें वह बँधजाताहै उसके ऊपर दया व स्नेह आजाताहै ४ हे बराननें इसकारण हम तुमको नहीं मारडालते नहीं तो मिथ्या बनमें घूमते रामचन्द्र में निरत तुम अपमान व बध करनेके योग्यहो ५ व जोजो कठोर बचन तुमने हमको कहेहैं तिन तिन बचनोंके सुनने पर तुम्हारा दारुण बधही उचितहै ६ राक्षसों का स्वामी रावण बैदेहीजीसे ऐसाकह फिर उन्हींके बचनोंका उत्तर देनेलगा ७ हमने जो अवधि बदीहै खैर दोमास तुम और यहां रहो तिसके पीछे हमारे बिस्तरा पर आना ८ व दो मासों के ऊपर जो तुम हमको अपना पति न बनाओगी तो हमारे रोसोईबरदार तुमको हमारे प्रातःकालके भोजनके लिये रत्ती रत्ती काटेंगे ९ जब रावणने जानकीजी को इसतरहके अपकार बचनकहे तो जो उसके संग देवता व गन्धर्बों की कन्यायें थीं वे बहुत बिषादितहुईं १० व सीताजीको ओष्ठोंसे संज्ञा बतानेलगीं कोई कोई नेत्रोंसे कोई मुखसे तिस राक्षससे डरवाई सीताको समझानेलगीं ११ तिन स्त्रियोंसे समझाई सीताजी अपने हित व आचरणसे व पति के बीर्य से गर्ब्बित बचन रावणसे बोलीं १२ हमने निश्चय किया कि इस लङ्का में कोई तुम्हारा हितकारी नहींहै इससे इस सत्कर्म्मसे तुमको नहीं रोकता १३ व इन्द्राणीके पति इन्द्रजीकी इन्द्राणीकेसमान महात्मा श्रीरामचन्द्रजीकी पत्नी हमसे तुम्हारे सिवाय औरकोई तीनोंलोकमें ऐसाअनुचित न कहेगा १४ हे राक्षसाधम अमित तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीकी भार्य्या हमसे जो तुमनेयह पापकी बातकही इसपापसे कहांजाय तछूटेगा १५ जैसेबनमें मत्तहाथी व खरगोश दोनों

रहतेहैं उनमें हाथीके समान श्रीरामचन्द्रजी हैं व खरगोश के तुल्य तुम १६ सो तुम जबतक रामचन्द्रजीकी नज़रके सामने नहींपरते तभीतक इक्ष्वाकुनाथ श्रीरामचन्द्रजीकी निन्दा करते नहींलजाते १७ हे अनार्य हमको कुदृष्टि से देखते हुये ये क्रूर पीले विकृत व काले तेरे नेत्र नहीं जाते किसकारण पृथ्वीमें नहीं गिरपड़ते १८ हेपाप तिन धर्मात्मा श्री रामचन्द्रजी की पत्नी व महाराज चक्रवर्ती दशरथजी की पतोहू हमको ऐसा कहते तुम्हारीजीभ क्यों नहीं फटजाती १९ हमको एकतो भस्म करडालनेकेलिये रामचन्द्रजीकी आज्ञानहीं दूसरेतपके पालनसे इससे हे रावण भस्मकारक तेजसे हम तुमको भस्मनहीं करतीं २० क्याकरें रामचन्द्रजी ने जो तेरेवधकेलिये प्रतिज्ञा की है उसको हम मिटा नहीं सक्तीं २१ जो तुम बड़े शूर व कुबेर के भाई व बड़े बली थे तो रामचन्द्र व लक्ष्मणको दूर लेजाय तुमने उनकी स्त्री को चुराया कैसे २२ सीताके वचन सुन राक्षसों का राजा रावण आंखें फैलाय जानकी जी की ओर निहारनेलगा २३ वह रावण नीले बादलके आकारका व महाभुज शिर ग्रीवयुक्त सिंहसम चलनेवाला दीप्त जीभ व चारो उग्रलोचनवाला २४ चलायमान मुकुटशिखर धरे बड़ा ऊँचाशरीर चित्रमालापहिरे व विचित्र अनुलेपन लगाये लालमाला व लालही वस्त्रधारणकिये व तपायेसुवर्ण का पहुँचा बांधे २५ मोरके पङ्खकेसमान सूतकरिहांवमेंबांधे समुद्रमन्थनके समय वासुकिनागसे बांधे मन्दराचलकेसमान शोभित २६ व वह पर्वता-काररावण परिपूर्ण अपनेभुजोंसे शृङ्गोंसे शोभित मन्दराचल के समान शोभित हुआ २७ प्रातःकालके सूर्यकेसमान प्रकाशितकुण्डलोंसेशोभित रावण लाल पत्र व फूलोंसे युक्त अशोक के वृक्षोंसे शोभित पर्ब्बत के समान शोभित हुआ २८ व वह कल्पवृक्ष के समान मूर्तिमान् वसन्त सदृश शोभित हुआ परन्तु श्मशान भूमिमें बने मन्दिरके समान भूषित होनेपरभी भयङ्करही लगता था २९ इसतरहका रावण वैदेहीजी की ओर कोपसे लालनेत्र किये देख श्वासोंसेलेते सर्पके समान कोपकर जानकीजीसे बोला ३० कि धर्मनीति को सम्पन्न व अर्थ हीन राजा में अनुरक्त तुमको हम अभीमारेडालतेहैं जैसे अपनेतेजसेसूर्य्य सन्ध्याका नाशकरतेहैं ३१ शत्रुओंके रोवानेवाला राजा रावण जानकीजीसे ऐसा

कह तिनके मरनेके लिये घोरदर्शन राक्षसियोंको आज्ञा देनेलगा ३२ उन राक्षसियों के नाम ये थे॥

चौ० एकाक्षी वक्रकन्नी कुनामा । कन प्रावरणवती बदसामा॥ गोकर्णी करिकर्णी माना । लम्बकर्णि बिनकर्णी जाना १ । ३३ हस्तिपदी श्वपदी गोचरणी । पादचूलिका जाय न बरणी॥ एकलचनी यक दीर्घपृथुपादी । पादरहित अतिशय बकवादी २ । ३४ अति शिरगाढ़ कुचवती कुपेटी अतिनयनी अतिमुखी कुचेटी ॥ दीर्घदनासा यति रमन्य नारी मुण्डरहित देखत भयकारी ३ । ३५ सिंहमुखी नासिका बिहीना। गोमुखि शूकर मुखी मलीना ॥ ज्यहि बिधि सीता ममबश होई । करहु उपाय सकल तुम सोई ४ । ३६ दण्ड दिखाय तासु मद मोषहु । और बात मनमें नहिं घोषहु ॥ इमिकहि सकलराक्षसिनपाहीं । बार बारअति कोपकराहीं ५ । ३७ बहुप्रकार करिक्रोधअपारा । जनकसुताकहँ कुवच उचारा ॥ धान्य मालिनि नाम निशाचरि । रावण सों बोलीअति नागरि ६ । ३८ । ३९ हमरेसंगबिहरहु महराजा । सीतहिलेकरिहहुका काजा ॥ इमिलपटाय रावणहि सोई । कहिसि बुझाइ कछुनहिंगोई ७ । ४० यह बिवर्ण मानुषतनु धारिणि । कृपणरूप नहिंतवप्रिय कारिणि ॥ विधि न लिख्यहु यहि माथे माहीं । भोग सकल जो दुर्लभआहीं ८ । ४१ ॥

क्योंकि तुम्हारेभुजोंसे इकट्ठाकीहुई सम्पदा भोगकरना बहुत दुर्लभ है इसकेसिवाय जो स्त्री रतिकामना न करतीहो उसके सङ्ग भोगकरनेसे शरीरको सन्तापहोताहै ४२ व जो स्त्री भोगकी इच्छाकरतीहो उसकेसङ्ग भोगकरनेसे शोभन प्रीतिहोतीहै ४३ जब इसतरह उसराक्षसीने कहा तो हँसकर महाबलवान् राक्षस जानकीजीके मारनेआदिसे निवृत्तहुआ ४३ व पृथिवीको कँपताहुआ वहांसेचला व मध्याह्नकेसूर्य्यके समान प्रकाशित अपने मन्दिरमें जाबैठा ४४ व वे सबदेवताओं व गन्धर्व्वोंकी कन्या रावणकेसाथ उसीके घरकोगईं ४५ धर्म्ममें तत्पर कँपतीहुई जानकीजीको डरवाय व कुवाक्यकह वह उनको वहीं छोड़ काम मोहितहो अपने गृहमेंगया ४६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्वाविंशस्सर्गः॥ २२॥

इसतरह जब शत्रुओंको रोवानेवाला रावण सीताके समझानेको राक्ष-

सियोंको आज्ञादे चलागया १ व क्रूर जाय अपने अंतःपुरमें पहुँचा तो व सबभयङ्कर रूपवाली राक्षसियाँ सीताजीकेसामनेदौड़ीं २ व जानकीजी के समीपजाय मारेक्रोधके मूच्छितहो ऐसे बचनबोलीं ३ हे सीते पुलस्त्य-मुनिके बंशमेंउत्पन्न श्रेष्ठराव की भार्य्याहोना तुम बहुत नहीं मानती ४ तिसकेपीछे उनमें एक एक जटानाम राक्षसी थी वह सीताजी से बोली बोलने के समय हाथजोरी सीताजीको अपनी ओर निहराय लियाथा ५ कहा कि सब प्रजापतियोंमें ये ब्रह्माजी के मानसी पुत्र पुलस्त्यजी चौथेप्रजापतिहैं ६ उनपुलस्त्यजी के मानसीपुत्र प्रजापतियोंकेही समान तेजस्वी विश्रवाजीहुये ७ हे बिशालाक्षि तिसोंके ये शत्रुओंकोरोवानेवाले रावणनाम पुत्रहुये तिनराक्षसों के इंद्र रावणकी तुम भार्य्या होनेके योग्यहो ८ हे चारुसर्ब्बाङ्गि हमारेकहे बचन क्योंनहीं मानती तिसकेपीछे हरिजटानाम राक्षसीबोली ६ इसके बिलारकेसे नेत्र थे मारेकोपके घुमाकर बोली कि जिस रावण ने तेंतीशदेवता व देवराज इंद्रको भी जीतलिया १० तिस राक्षसेन्द्रकी तुमभार्य्या होनेकेयोग्यहो क्योंकि व बड़े-वीर्य्यवान् शूर व संग्रामोंसे न लौटनेवाले बलवान् व वीर्य्ययुक्तहैं तिनकी भार्य्याहोना तुम क्योंनहीं चाहती ११ देखो अपनी सब स्त्रियोंमें उत्तम व प्रियमन्दोदरीको छोड़रावण तुम्हारेपास यहांतक चलेआये १२ व सहस्रों स्त्रियोंसेभरा अंतःपुरछोड़ सदारावण तुम्हारेही निकट प्राप्त-हुआकरेंगे १३ भला अपने मनसे बिचारो तो जिस रावण ने कईबार देवता गन्धर्ब्ब व दानवादिकोंको जीतलिया वह अपने आप तुम्हारे निकटआया १४ हे अधमे तिन महात्मा महाधनी महाप्रतापी राक्षसेन्द्र की भार्य्याहोना क्यों नहींचाहती १५ हे बड़े कमलनयनवाली जिसरावणके भयसे सूर्य्य जोरसेनहींतपते व पवन जोरसे नहींबहता तिसकी स्त्री तुम क्यों नहींहोती १६ जोरावण जब इच्छाकरताहै तभी वृक्षफल गिरातेहैं व पर्ब्बत पानीबहातेहैं व मेघभी तभी बरसतेहैं १७ हे भामिनि तिस राजराज राक्षसराज रावणकी भार्य्या होनेके निश्चयमें तुम अपनी बुद्धि क्यों नहींकरती १८ हे भामिनि हमने तुमसे सबठीकठीककहदिया हमारे बचनगाँठी बाँधो क्योंकि ऐसा न करनेसे तुम अपना को न समझो १६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रयोविंशस्सर्गः ॥ २३ ॥

तिसकेपीछे विकृतमुखी सब राक्षसियाँ कठोर बचनके अयोग्य सीताजी से कठोर व अप्रियबचन कहनेलगीं १ हे सीते भला सबप्राणियोंका मनहरनेवाला बड़े मोलके बिस्तरोंसेयुक्त अंतःपुर का बास तुमको क्यों नहीं अच्छा लगता २ आखिर मानुषी तो हैंहीहो इससे मानुष पति को बहुत मानतीहो रामचन्द्रकी ओरसे मनखींचो रामकेसाथ अब तुम्हारा संगकभी न होगा ३ अब त्रैलोक्यके सुखभोगनेवाले राक्षसोंके ईश्वर रावणको पतिबनाय सुखपूर्व्वक बिहारकरो ४ तुमअनिन्दिताहो मानुषी होनेके कारणराज्यसंभ्रष्ट लक्ष्मी रहित मानुषरूप रामचन्द्रकी इच्छाकरतीहो ५ राक्षसियोंके बचनसुन नेत्रोंमेंआँशुभर कमलदलनयनी सीताजी बोलीं ६ हे राक्षसियो तुम सब इकट्ठीहो जो लोकविरुद्ध बचन कहतीहोयहपापयुक्त बचनहमारे मनमेंनहींटिकता ७ मानुषीकहींराक्षस की भार्य्या नहीं होसक्ती इससे तुमलोग हमको चाहो खा लो पर हम तुम्हारे बचन न करेंगी ८ चाहेदीनहैं चाहे राज्यहीन हैं पर जो हमारे पतिहैं वही हमारे गुरूहैं हम तिन्हींके विषय में अनुरक्तहैं जैसे सूर्य्य की स्त्री सुवर्चला ९ व जैसे महाभाग्यवती इन्द्राणी इन्द्रमें प्रीतिरखतीं व अरुन्धती बशिष्ठमें व रोहिणी चन्द्रमा में १० लोपामुद्रा अगस्त्य में सुकन्या च्यवन में सावित्री सत्यवान् में व श्रीमती कपिलदेव में ११ मदयन्ती दुष्यन्तमें केशिनी सगरमें दमयन्ती नल में भैमी अपनेपति में १२ तिसीतरह इक्ष्वाकुनाथ श्रीरघुनाथजीकी अनुब्रता हम हैं सीताजीके ऐसे वचन सुन राक्षसियां मारेक्रोधके मूर्च्छितहोगईं व रावणकी प्रेरणासे कठोर वचनोंसे सीताजीका अपकार करने लगीं १३ व हनुमानजी उसी शिंशुपावृक्षपर बैठे पत्तोंमेंछिपे चुप्पे सीताजीको डरवाती उन राक्षसियोंके बोल सुनेजाते थे १४ वे सब क्रोधकर कांपती जानकीजीको सब ओरसे घेर अपनेअपने दांत व जीभें निकाल लपलपाने लगीं १५ व अपने अपने हाथों फरशाले बड़े क्रोध से बोलीं कि यह सीता रावण को भर्त्ता बनानेके योग्यनहींहैं १६ इसतरह राक्षसियोंसे अपमानित सीता जी आंशु पोंछती हुई शिंशुपावृक्ष की जड़ पर आय बैठीं १७ व सब राक्षसियों के घेरमें परी शोकसागर में डूबती उसी शिंशुपा के नीचे बैठीं जिस पर हनुमान् जी बैठे थे १८ तिन दुर्व्वल

मात्रवती दीनमुखी मलिन वस्त्र धारणकिये सीताजीको वे भयानक रा-
क्षसियां भर्त्सित करनेलगीं १६ तिनमें एक भीमरूपिणी रिसाली
सूरतवाली महाकराल बड़े गहिरे पेटवाली विनतानाम राक्षसी कोपसे
बोली २० हे सीता जी बस अब तुमने इतना बहुतकिया अपना स्नेह
अपने भर्त्ता में दिखादिया पर अब बस सबकहीं जो किसी काममें अति
होती है तो वह दुःखही के लिये होती सो तुमने बहुत किया २१
हम तुम्हारे ऐसा मानुषी स्वभाव दिखाने व मानुषी विधि करने से
तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहुईं पर अब जो हम तुम्हारे अतिहितकी बातकह-
तीहैं वह भी करो २२ वह यहहै कि सब राक्षसोंके भर्त्ता महापराक्रमी
इन्द्रको भी भयभीत करानेवाले रावणको अपना भर्त्ता बनावो २३ अब
परमचतुर दानी व सबसे प्रिय बोलनेवाले मानुषरूपधारी बेचारे राम-
चन्द्रको त्याग रावणकी आश्रयहोवो २४ व आजहीसे अङ्गोंमें दिव्यच-
न्दनादिअङ्गरागलगाय दिव्याभरणोंसभूषितहो सबलोकोंकी स्वामिनी
होवो २५ जैसे कि अग्निकीस्त्री स्वाहा उनकेसाथ शोभितहोती व इंद्र
के साथ शची हे वैदेहि थोड़ी आयुषवाले कृपण रामचन्द्र से तुमको क्या
है २६ जो हमारा कहा यहबचन तुम न करोगी तो इससमय हमसब
तुमकोखालेंगी २७ इसकेपीछे बड़ेलम्बे कुचोंवाली विकटानाम एक और
राक्षसी मूंकाउठाय डरवातीहुई बड़ाकोपकर सीताजी से बोली २८ हे
मैथिलि हमलोगोंने तुम्हारेऊपर दयाकरने व अपने कोमलस्वभाव से
तुम्दुष्ट मतिवाली के बहुतअयोग्य बचनसुने २९ व जो बचन हमलो-
गोंने समयके अनुसारकहे वे तुमनेनहींसुने देखो औरोंको बड़ेदुःखसे
आनेकेयोग्य तुम समुद्रके इसपारको लाईगई ३० व यहां अतिघोर
रावण के अन्तःपुर में पठाईगई उसमें भी रावणके मन्दिर में हमलोग
तुमको रखाती हैं ३१ इससे साक्षात् इंद्रभी तुम्हारी रक्षा नहीं कर
सक्ते इससे तुम्हारे हितकी कहनेवाली हमारा बचनमानो ३२ आंशु
गिराने से कुछनहीं है यहअनर्थक शोकछोड़ो प्रीति व हर्ष धारणकरो
वह नित्यकी दीनता छोड़ो ३३ व राक्षसराजके साथ सुखपूर्वक
क्रीड़ाकरो हे भीरु हमजानती हैं जिसतरह स्त्रियोंका यौवन अस्थिर है
३४ इससे जबतक तुम्हारी युवावस्था नहींजाती तबतक सुख करलो

रम्य उपवन पर्वत व उद्यानों में ३५ राक्षसराज के साथ मत्तनयन हो घूमो हे सुंदरि सहस्त्रों स्त्रियां तुम्हारे बशमें रहेंगी ३६ इससे अब सब राक्षसोंके भर्त्ता रावण को अपना भर्त्ताबनाय उसकीसेवाकरो नहीं तो तुम्हारा कि तो करेज निकालडालेंगी वा योंही भक्षणही करलेंगी ३७ जो हमारा बचन मानो तो मानों नहीं तो वही हाल होगा तिसके पीछे महाक्रूररूप चण्डोदरी नाम राक्षसी ३८ शूल घुमातीहुई यह बचन बोली इन मृग शावकनयनी व भयसे काँपती हुई ३९ को रावण की हरी देख हमारेजी में बड़ीखराब इच्छाहुईहै वह यह है कि इनके पेटके दहिने बायें दोनोंभाग व छातीगल काँधा ४० व अन्यअंग व शिरभी हम खालें यह हमने निश्चय किया है इसके पीछे प्रघसानाम राक्षसी बोली ४१ कि हम इसक्रूरा का गलदबादें इसके यहां रहने से क्या है व राजासे कहदें कि वह मानुषी जो बँधोईमेंथी मरगई ४२ ऐसाकहनेपर राजाकहदेगा कि जोमरगई तो तुमलोग उसेखालो इसमेंकुछभीसन्देह नहीं तब आकर खालेंगी तिसकेपीछे अजामुखीनाम राक्षसी बोली ४३ कि कुछनहीं इसको मार इसके मांसकेपिण्ड बनाडालो हमसब एकएक पिण्ड उठाउठा खाजायँ हमको झगड़ानहीं नकिलसता ४४ व मांसखाने केपीछे पीनेकेलियेमदिरा लावो व फिर पहिरनेकेलिये विविधप्रकारको माला यहसुन सूर्प्पनखानाम राक्षसीबोली ४५ कि जो बात अजामुखी ने कहा वही हमकोभी रुचती है सबशोक विनाशिनी मदिरा लावो ४६ मनुष्यका मांसपायहम निकुम्भिलानाम भद्रकालीकेनिकट जायनाचेंगी ४७ देवकन्याओंसे भी अति सुन्दरी सीताजी जो घोर विरूप राक्षसियों से पीड़ितहुई तो धैर्य्य छोड़रानेलगीं ४८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचतुर्विंशस्सर्गः २४ ॥

जब दुष्ट व घोर राक्षसियोंने ऐसा कठोर बचन कहा तो जानकीजी रोदन करनेलगीं १ कुछ देर रोदन कर परम मनस्विनी जानकी जी गद्गदवाणी से बोलीं २ कि मानुषी किसी तरह राक्षसकी भार्य्या नहीं होसक्ती अब तुमलोगोंको इखतियार है हमको भले खावो पर हम तुम लोगोंका बचन न मानेंगी ३ यह देव कन्याओं से भी अधिक सुन्दरी

सीताजी राक्षसियों के बीचमें बैठी रावणसे अपकारित व शोकके मारेपी ड़ित कल्याणको न प्राप्तहुई ४ व कछुही के समान अपने अङ्गोंमेंसिंकुर पैठीही सोजाती जानकीजी कांपनेलगीं जैसे अपनेझुण्डसे बिछुड़ीमृगी वृकोंके बीचमें परने से कांपतीहै ५ व अशोकसदृश शिंशुपावृक्षकी एक पुष्पित शाखा हाथसेपकड़मनतोड़ मारेशोकके अपनेस्वामीकी चिन्तना करनेलगीं ६ व आंशुओंसे अपनेअङ्ग सींचती व शोचतीथीं परन्तु शोक के अन्तको नहींजातीथीं ७ प्रचण्ड पवनके चलनेसे केलाके समान कांपती सीता राक्षसियों के भयसे डरी विवर्णमुखी होगई ८ तिन कांपती सीताजीकी बड़ी लम्बी कांपती बेणी चलीजाती सर्प्पिणीके समानदेख पड़तीथीं ९ मारे शोकके पीड़ित व इससे व्याकुल चित्त हो ऊधी सांसें लेती सीताजी आंशु छोड़ने व बिलाप करनेलगीं १० व कहती कि॥

चौ० हा! राघवकरुणावरुणालय। हा! लक्ष्मणशुभलक्षणआलय॥ हा! कौसल्ये सासु पियारी। हाय! सुमित्रे मम हितकारी १। ११॥

लोकमें यह प्रवाद जो पण्डितोंने कर रक्खाहै कि चाहे स्त्री हो वा पुरुष अकालमें मृत्यु दुर्लभहै वह सत्यही है १२ इसी से देखो इन क्रूर राक्षसियोंसे पीड़ित हमदुःखित बिना रामचन्द्रजीके मुहूर्त्तभरभी जीती हैं १३ पर कहांतक जीवेंगी अब अल्प पुण्य करनेवाली कृपणा हमअ-नाथोंके समान मरजायँगी जैसे बहुत बोझीनाव पवनके बेगसे समुद्रमें डूबजातीहै १४ इससमय तो हम अपने स्वामीको न देखतीहुई व इधर राक्षसियोंके बशमें परी मारेशोकके दुःखित होतीहैं जैसे जबनदी बढ़ने लगतीहै तो उसके कूल कटते चलेजातेहैं १५ तिन कमलदल नयन व सिंहवद्विक्रान्त हमारे भर्त्ताको जोइस समय देखते होंगे वे धन्य हैं १६ अब तिन प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्र रहित हमारा सबतरहसे जीवनदुर्लभही है जैसे बिष खानेपीनेवालेका होताहै १७ हमने और जन्ममें कैसा पाप कियाहै जिससे महादारुण व घोर यहदुःख मिलताहै १८ अब राक्ष-सियोंकी रक्षामें परने से हमको रामचन्द्र जी नहीं मिलते इससे प्राण त्याग करेंगी १९ इस मनुष्यदेहको धिक्कार है व पराधीनताको भी धि-क्कार है जिससे जबचाहे तब मरण नहीं होसक्ता २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डपञ्चविंशस्सर्गः ॥ २५ ॥

आंशु बहाती व नीचेमुखकिये ऐसाकहते जानकीजीने विलापकरने का प्रारम्भकिया १ उस समय उन्मत्त व प्रमत्त व भ्रान्तचित्तसीहो जानकीजी शोचती व तड़फराती थीं जैसे भार उतार डारनेके पीछे सुस्ताने के लिये छोड़ी घोड़ी इधर उधर लोटतीहै २ हमारे कहनेसे दूरचलेगये रामचन्द्रजीकी रोतीहुई हमको जबरदस्ती यह कामरूपी राक्षस रावण हरलाया ३ अबयहां राक्षसियोंके बशमें आयपरीं उसपरभी नानाप्रकार के अपमानित बचन कहीजातीहैं इससे चिन्ता करतीहुई मारे दुःखके पीड़ित हमजी नहींसक्तीं ४ बिना महारथ श्रीरामचन्द्रजीके राक्षसियों के बीचमें बैठी हमारा न कुछ जीनेहीसे प्रयोजनहै न धनसे न भूषणोंसे ५ हमारा हृदय निश्चयहै कि कितो पत्थरके सारसे बनाहै वा अजर अमरहै तिसीसे इतनेदुःख परभी नहीं फटजाता ६ हम अनारिनी को धिक्कारहै जो हमबिना रामचन्द्रजीकी होगईं व फिर ऐसी पापजीविका से मुहूर्त्तभर भी जीतीरहीं ७ हमतो चरणसे भी निशाचरको न छुएंगी फिर इसरावण निशाचरको पतिबनाना तो बहुतदूरहै कभीनहींहोसक्ता ८ यह क्रूरस्वभाव रावण न तो हमारे कहनेको जाने कि हमने साफ साफ कहदिया कि राक्षसके देशमें हमनहीं रहसक्तीं फिर बारबार सन्देश भेजताही चलाजाताहै व अपनाको नहींजानता कि हम कौनहैं व हमारा कुल कैसाहै ऐसा दुष्टहै कि बारबार प्रार्थनाही करता है ९ हे राक्षसियो तुम क्यों बारबार बकतीहो हमचाहे रत्तीरत्ती काटडालीजायँ वा बनाय विदीर्ण करडालीजायँ वा औरभी पीसकर चूर्ण करडालीजायँ वा अग्निमें डालदीजायँ वा ऐसेही बारदीजायँ परन्तु रावणको न प्राप्त होंगी १० सर्व्वत्र प्रसिद्ध महाप्राज्ञ कृतज्ञ दयालु सदाचारी निर्दयत्व हीन रामचन्द्रजीको हम अपने अभाग्यसे भी शङ्का नहीं करतीं कि वे हमारी रक्षा न करेंगे ११ क्योंकि जिन श्रीरामचन्द्रजीने चौदहहजार राक्षस जनस्थानमें अकेलेही मारडाले थे क्या हमको न प्राप्तहोंगे १२ यद्यपि हम अल्पवीर्य्य इसरावण राक्षसकी रोकमें पड़ीहैं तथापि जब संग्राममें कभी रावण उन हमारे भर्त्ताके सामने पड़ेगा तो वे इसे मारही डालेंगे १३ व जिन रामचन्द्रजीने दण्डकारण्यमें बिराधनामराक्षस को मारडाला वे हमको कैसे न प्राप्तहोंगे १४ यद्यपि यहलङ्का समुद्रके

बीचमें होनेके कारण और लोगोंके जीतनेके योग्यनहीं तथापि महाराज श्रीरामचन्द्रजीके बाणोंकी रोक यहां न होगी १५ किन्तु जो राक्षस की हरी भार्य्याको रामचन्द्रजी नहीं प्राप्तहोते उसका यह कारण है १६ कि वे लक्ष्मणजीके बड़ेभाई श्रीरामचन्द्रजी हमको यहांटिको न जानते होंगे नहींतो वे महातेजस्वी जानकर फिर इसहमारी दुर्दशाको कभी न सहसकेंगे १७ क्योंकि जो गृध्रराज रामचन्द्रजीसे कहता कि सीताको रावण हरलेगया उसकोभी तो रावणने मारडालाथा फिर किसनेबताया होगा १८ उन महात्मा जटायुने बड़ा कामकिया क्योंकि जबरावण हमको हरलेचला तो जटायु उसको मारडालनेपर उद्यत हुयेथे १९ जो हमको रामचन्द्रजी यहां टिको जानेंगे तो लङ्काके निशाचरोंको तो क्या सबलोक बिना राक्षसके करडालेंगे २० व इस लङ्कापुरीको तो तुरन्त भस्मकरदेंगे व समुद्रकोभी भस्मकरदेंगे व इस नीच रावणकी कीर्त्ति व नाम सबका नाशकरदेंगे २१ तबइन राक्षसियोंके स्वामियोंके मारजाने पर इनसब निशाचरियोंके घरोंमें इसीतरहका रोदन बरन इससे भी अधिक होगा जैसा कि इस समय हम करतीहैं २२ सो कुछ बात नहीं लक्ष्मणसहित श्रीरामचन्द्रजी लङ्कामें राक्षसोंको ढूंढ़ढूंढ़ मारेंगे इनमेंका एकभी दुष्ट न बचेगा क्योंकि उन दोनों जनोंने कभी कभी अपना शत्रु मुहूर्त्तभर भी जीतानहीं देखा २३ इससे बहुतही जल्द इसलङ्कामें इतनी चिता बरेंगी जिसमें धुआँके मारे कहीं गली न ढूंढ़मिलेगी व गीधों के झुण्डके झुण्ड ऊपर मड़रायँगे इससे स्मशान भूमिके सदृश होजायगी २४ हमारा यह मनोरथ बहुतही शीघ्र सिद्ध होगा क्योंकि तुम सब राक्षसियोंका यहशास्त्र बिरुद्ध मार्ग्ग हमको बिदित होताहै फिर जहां शास्त्रबिरुद्ध कुमार्गमें लोग चलते उस स्थानका बिध्वंस तो होताही है २५ जिसतरहके अशुभ आजकल लङ्कामें देखपरते हैं उनसे यही बिदित होताहै कि थोड़ेही समयके पीछे यहपुरी प्रभाहीन होजायगी २६ हमतो जानतीहैं कि इसपापी रावणके मारजाने पर यहलङ्का आप सूख जायगी जैसे विधवा स्त्री सूखजातीहै २७ यह पुण्योत्सवसे भरी पुरी लङ्का रावणके मारजानेपर सहित राक्षस नष्टस्वामिनी होजायगी जैसे पतिरहित स्त्री होजातीहै २८ इससे निश्चयहै कि घरघर रोदनकरती

राक्षसोंकी कन्याओंका मारे दुःखसे हाहाकार शब्द बहुतही जल्द यहां बैठीबैठी हम सुनेंगी २९ रामचन्द्रजीके बाणोंसे राक्षस श्रेष्ठोंके मारजाने पर यहलङ्कापुरी अँधेरी प्रकाशरहितहो भस्महोजायगी ३० ये सबबातें उसीदिन होंगी जब अरुणलोचन दासभयमोचन श्रीरामचन्द्र जी जानेंगे कि हम राक्षसके गृहमें परीहैं ३१ इस क्रूर अधम राक्षस रावण ने जो अवधि दोमासके पीछे हमारे मारडालनेके लिये कियाहै वह समय उसीके मरने व लङ्का की दुर्दशा होने का है ३२ इसदुष्ट रावण ने जो हमारे मरनेका समय नियत कियाहै उसको ये राक्षस जो अकार्यनहीं जानते जानतेहैं कि अभी आगया ३३ परन्तु ये मांसाशी राक्षस धर्म्म तो जानतेही नहीं इससे अधर्म्मके कारण महाउत्पातहोगा कुछहमारा मरना सहजसी बातनहींहै ३४ देखो यहतो निश्चयही है कि दोमास के पीछे रावण हमको अपने प्रातःकालके भोजनकेलिये करेगा तो उस समय बिना प्राणनाथ रघुनाथजीके हम क्याकरेंगी ३५ अबतो अरुण-नयन श्रीरामचन्द्रजीको न देखतीहुई हमको जो कोई यहां विष देनेवाला होता तो अच्छा था ३६ तो हम बिन पतिहीकी शीघ्रही देवलोक को चलीजातीं हम जानतीहैं कि व भरतके ज्येष्ठभाई हमको अब जीती न जानतेहोंगे ३७ क्योंकि भला व दोनोंजन जो जीती जानतेहोते तो अबतक पृथिवीभर न ढूंढ़डालते हम जानतीहैं कि हमारेशोकसे वे लक्ष्मणके बड़ेभाई बीर श्रीरामचन्द्रजी ३८ भूतलमें देहछोड़ देवलोकको यहांसे चलेगये देवता गन्धर्व्व सिद्ध व परमर्षिलोग धन्यहैं ३९ जोकि हमारे बीर राजीवलोचन रामचन्द्रजीको देखतेहोंगे अथवा तिन धर्म्मात्मा बुद्धिमान् परमात्मा राजर्षि श्रीरामचन्द्रजीका ४० हमऐसी भार्य्या से कुछ प्रयोजनही न होगा क्योंकि देखने पर प्रीति होतीहै व बिना देखे सौहृद नहींरहता ४१ परन्तु यहबाततो कृतघ्नलोगोंकी है रामचंद्र जी न देखनेपर सौहृद कभी न नाशेंगे वा हममें कोई अगुण होंगे अथवा हमारे भाग्यहीका नाश होगया होगा ४२ क्योंकि जो हम श्रेष्ठपदार्थों के ग्रहण करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीसे हीनहोगई नहींतो कभी न हीन होतीं अब महात्मा शूर व शत्रुओंके मारनेवाले श्रीरामचन्द्र बिना हमको जीने से मरनाही कल्याणदायक है ४३ अथवा अब वे दोनोंभाई

मनुष्योंमें श्रेष्ठ वनमें मूल फल लेनेकेलिये घूमतेहोंगे शस्त्रास्त्र कुछ धारणही न करतेहोंगे ४४ अथवा राक्षसेन्द्र दुरात्मा रावणने छलसे उन शूरवीर दोनोंभाई रामचन्द्र व लक्ष्मणको भी मारडालाहोगा ४५ इससे हम इससमय अब सबतरहसे मरनाही चाहती हैं पर क्याकरें इसदुःख में भी हमारीमौत नहींहोती ४६ भाई मुनिलोग धन्यहैं जो अपनेमनसे जीते रहते हैं इसीसे उनको न कोई प्रिय होता न अप्रिय ४७ प्रियसे कभी दुःख होताही नहीं व अप्रियसे अधिक दुःख होताहै पर जो प्रिय अप्रिय दोनोंसे रहितहैं उन महात्माओंको नमस्कारहै ४८ इससे अति प्रसिद्ध आत्मप्रिय श्रीरामचन्द्रजी ने हमको त्यागदिया उसमें भी पापी रावण के वशमें आयपरीं इससे प्राण छोड़देंगी ४९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुंदरकाण्डेषट्विंशस्सर्गः ॥ २६ ॥

जब सीताजी ने ऐसे कठोरवचन राक्षसियोंसेकहे तो मारे क्रोध के मूर्च्छितहो बहुतसी तो दुष्टात्मा रावणसे हालकहनेगईं १ व बहुतभयंकररूपिणी राक्षसियां जानकीजीके निकट आय फिर वही कठोर व अनर्थ वचन कहनेलगीं २ हे अनार्थे सीते हे पापमें निश्चय करनेवाली आज राक्षसियां तुम्हारा मांस सुखसे खायँगी ३ तिन दुष्ट राक्षसियोंसे सीताजीको डरवाई देख त्रिजटानाम बड़ी बूढ़ी राक्षसीथी वह सोयकर जागी तो राक्षसियोंसे बोली ४ हे दुष्टो अपना अपनको खावो सीताको न भक्षो क्योंकि ये राजा जनकजीकी तो कन्या हैं व महाराज दशरथजीकी पतोहू ५ इसके सिवाय हमने आज रात्रिको स्वप्न देखाहै जिससे राक्षसों का नाश व इनके पतिकी वृद्धि पाईजाती है ६ इसतरह जब त्रिजटा ने कहा तो सब राक्षसियां मारे क्रोधके मूच्छितहो बहुत डर सबकी सब त्रिजटासे बोलीं ७ कि कहो तुमने रात्रिको कैसास्वप्न देखा है तिन राक्षसियोंके मुखसे निकले वचन सुन ८ स्वप्नमें जोदेखा था त्रिजटा सब कहनेलगी कि हमने देखा है कि जानों हाथीदांत से बनी आकाश में उड़ती ६ हजार घोड़े नही शिविका पर सवारहो श्री रामचन्द्रजी आप शुक्ल पुष्पोंकी माला व शुक्लही वस्त्रधारणकिये अपने भाई लक्ष्मण सहित आय हैं १० व स्वप्नही में हमने यहभी देखा कि

सीताजी शुक्ल वस्त्र धारणकिये समुद्रसे उफलायेहुये श्वेत पर्व्वतपरबैठी ११रामचन्द्रजीकेसङ्ग बिराजमान सूर्य्यकेसङ्ग प्रभाके समान शोभितहैं फिर देखा कि जानों श्रीरामचन्द्रजी चौदन्ते हाथीपर चढ़े १२ लक्ष्मण जीके साथ शोभायमान होरहे हैं तिसके पीछे सूर्य्य सम प्रकाशित व अपने तेजसे दीप्यमान १३ शुक्ल माला व वस्त्रधारण किये जानकी जी के समीप आये फिर उस आकाश में टिके पर्व्वताकार हाथी के १४ कन्धेपर जानकीजी चढ़ी हैं व हाथीको इनके पति रामचन्द्रजी पकड़ेहैं फिर अपने पतिके कोरासे उछल कमललोचनी सीताजीको हमनेदेखा तो १५ चन्द्रमा व सूर्य्य को अपने हाथों से पोंछती हैं तिसकेपीछे उस हाथी पर वेभी दोनोंजन सवारहुये १६ व विशालाक्षी सीताजी को भी अपने साथ लिये आयलंका के ऊपर पहुँचे फिर श्वेतबैल नहे रथपर सवार १७ शुक्लवस्त्र व शुक्लही माला धारण किये अपने भाई लक्ष्मणजी के साथ रामचन्द्रजी को हमने अन्यस्थान पर देखा १८ फिरदेखा कि रामचन्द्र लक्ष्मण व सीताजी पुष्पकविमान पर सवारहो १९ उत्तरदिशा की ओर चलेगये ये सब शुभसूचक स्वप्न तो रामचन्द्रादिकों के विषय में देखे व अब अशुभ सूचक जो रावण के विषयमें देखे बतातीहैं रावणको हमनेदेखा जानों बार बनवाये तेलल-गाये २० रक्तवस्त्र धारणकिये मदिरापान करते कदैलके फूलोंकीमाला पहिरे पुष्पक विमान पर से नीचे गिरपरे हैं २१ फिर देखा कि जानों रावण शिरमुंड़ाये काले कपड़े पहिने गधेजुते रथपर सवार लाल चन्दनलगाये २२ तेलपीते हँसते नाचते भ्रान्तचित्तहोनेसे सबइन्द्रियों से व्याकुल गदहेपर सवार दक्षिणदिशाको जातेहैं २३ फिर हमनेदेखा कि राक्षसोंके स्वामी रावण उस गदहेपर से नीचे मुखकर मारे भयसे मोहितहो भूमि में गिरपड़ेहैं २४ व फिर झटपट मारे भयसे भ्रांतचित्त विह्वल शरीरहो नङ्गेउनमत्त के समान बहुत दुर्व्वचन कहते २५ व दु-र्गन्ध दुस्सह घोर अन्धकार नरक के समान मलका कीचड़ भरा ऐसे स्थानमें गिर रावण डूबगये २६ फिर उसमें से निकले तो फिर दक्षि-णहीदिशाको चले वहांएक लालवस्त्र धारणकी स्त्रीने गर्द्दनपकड़ रावण को कीचड़ के कुण्डमें ढकेलदिया २७ फिर उसमेंसे भी कीचड़ अंगों में

लगाये एककाली स्त्री दक्षिणदिशा की ओर खींचरही है इसीतरह फिर हमने कुम्भकर्णको भी देखा जानों दक्षिणदिशा को जातेथे पर कीचड़के कुण्डमें गिरपड़े २८ व रावणके सब पुत्रों को हमनें मूंड़मुंड़ाये तेलपीते देखा व फिरदेखा कि रावण तो शूकरपरचढ़ा व मेघनाद शिशुमार पर २९ व कुम्भकर्ण ऊँटपर चढ़ा ये सब दक्षिणदिशा को चलेजातेहैं इनमें श्वेतछत्र लगाये विभीषणको देखा कि अपने चारमन्त्रियों के साथ आकाशमें उड़े चलेजाते हैं ३० व विभीषण को छोड़ और सब राक्षसोंका समाज गाताबजाता मदपीता व लालवस्त्र व लालहीमाला धारणकिये है ३१ व इस रमणीय लंकापुरीको देखा कि जानों खाँवाँ फाटक अटारीवरी टूटीफूटी सहित हाथी घोड़े रथादियुक्त समुद्र में भहरापड़ी ३२ व भस्महुईलंकामें तेलपीप्रमत्तहो हँसती व हल्लाकरती राक्षसोंकीस्त्रियां घूमरहीहैं ३३ व ये कुम्भकर्णादि सब राक्षसश्रेष्ठ लालवस्त्र धारणकिये गोबरके कुण्डमें पैठगये ३४ इससे यहांसेभागो देखोचलो रामचन्द्रजी सीता को प्राप्तहुआ चाहतेहैं व इस तुमलोगों के अन्यायको न सहकर राक्षसों सहित तुमलोगों को मारडालेंगे ३५ क्योंकि वे वनवासिनी अपनी परमप्रिय भार्य्याको डरवाई व अपकारकराई न सहसकेंगे ३६ तिससेअब ये क्रूरबचन तो रहनेदो अबयोहीं प्रेमपूर्वक इनसेबातेंकरो व सबमिल वैदेहीजीकी प्रार्थनाकरो हमको तो यहीबात रुचतीहै ३७ जिस जानकीजीके दुःखित होनेपर ऐसास्वप्न देखपरा व अब इनदुःखों से छूट अपने उत्तमपतिको पावेंगी ३८ हे राक्षसियो यद्यपि तुमलोगों ने जानकीजी को बहुत अपकार युक्त बचन कहे तथापि अब इनसेहाथ जोड़ो बहुत बतलाने से क्याहै श्रीरामचन्द्रजी से राक्षसों को बड़ाभारी भय आगयाहै ३९ जो प्रणाम करनेसे ये जनकनन्दिनी जी प्रसन्नहोजायँगी तो बड़ेभारी भयसे इनतुम राक्षसियोंके छोड़ानेमें समर्थहोंगी ४० देखो इन बिशालाक्षी सीताजीके अंगोंमें कोई विपरीत नहीं दिखाई देता न कोई आपत्तिकारक सूक्ष्मभी चिह्नही दिखाई देताहै ४१ देखो हमने इनको जैसी स्वप्नमें आकाशमें टिकीदेखा उससे ये किसीतरह से भी दुःखपाने के योग्य नहींहैं पर यह जो दुःख इनको हुआहै वह जैसे राहुकीछाया परनेसे सूर्य्य व चन्द्रमा को होताहै उसीतरह इनको भी

स्वभाव की विगुणतासे हुआहै ४२ हमतो वैदेहीजीके अर्थकी सिद्धि उपस्थित देखतीहैं व रावणका विनाश व श्रीरामचन्द्रजी की विजय ४३ इन सीताजी का प्रिय सुनने को पद्मपत्र सम देदीप्यमान नेत्रदिखाई देतेहैं ४४ देखो तो इन परमचतुर सीताजी का वामबाहु कैसे धीरे २ फरक रहाहै ४५ व हाथीकी शूंड़ के समान चढ़उतार इनकी जाँघ भी फरकरा रहीहै ये सब जानों इनसे कहतेहीसे हैं कि रामचन्द्रजी आये आगेखड़े हैं ४६ व देखो तो उत्तम समझाने वाला यहपक्षी शाखापर बारबार उलट उलट बैठताहै जानों हर्षितहो सीताजीको प्रेरित करता है कि तुम आनन्दको प्राप्तहोवो ४७ जबत्रिजटा ने ऐसाकहा तो भर्त्ता श्रीरामचन्द्रजी की विजयसुन हर्षितहो सीताजी बोलीं कि जो तुम्हारा वचन सत्यहोगा तो हम तुम सबोंकी रक्षा करेंगी ४८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेसप्तविंशस्सर्ग्गः ॥ २७ ॥

त्रिजटाके वचन सुनने परभी सीताजी को जो रावणडरवागया था वे उसका स्मरणकर अप्रिय सुननेके अयोग्य जानकीजी बनमें सिंहसेडरी गजराजकी कन्याके समान डरीं १ एकतो सीताजी स्वभावही से डरभुतथीं फिर राक्षसियोंके मध्यमेंबैठी उसमें रावणने कुवचन कहकह अति तर्ज्जित कियाथा इससे निर्ज्जन बनमें छोड़ीहुई कन्याके समान विलाप करने लगीं २ पण्डितलोग यहबात सत्य कहतेहैं कि लोकमें अकालमृत्यु नहींहोती इसीसेदेखो हम इसतरह भर्त्सितभी हुईं पर ऐसी बिना पुण्यकीहैं जिससे अबभी जीतीहीहैं ३ यह सुखरहित व बहुत दुःखसे पूर्ण हमारा हृदय बहुतपोढ़ाहै जोकि वज्रसेमारे पर्व्वतके शृंगके समान नहीं फटजाता ४ सो इस विषयमें हमारा कुछ दोषनहीं इस अप्रियदर्शन रावणके मारनेके योग्य हम समझीगईहैं तो वह मारे परन्तु उसके मनमें जो भावहै कि वे यहीं हमारी स्त्री होरहें यहतो हमनहींकरसक्तीं जैसे ब्राह्मण शूद्रको वेद नहींसुनासक्ता ५ तिन लोकनाथ श्रीरामचन्द्रजीके न आनेके प्रथमही दितिके गर्भमें टिके पवनको इन्द्रके समान यह रावण हमारे अङ्ग सैकरों वाणोंसे काटडालेगा ६ बड़े दुःखकी तो यहबातहै कि ये जो दोमास रावणने हमारे मारनेके लिये नियतकियेहैं

वे ऐसेहैं जैसे मारडारनेके योग्य किसी चोरके लिये नियमित रात्रिका बीतजानाहै ७ हाराम हालक्ष्मण हासुमित्रे हाराममातः व हाहमारी मातालोगो हम अल्प भाग्यवाली इसविपतिको देखतीहैं जैसे बड़ीबोझी नाव पवनके वेगसे भारी समुद्रमें डूबतीहै ८ हम जानतीहैं कि मृगरूप धारणकिये वज्ररूप उस जन्तुने महासिंह व वृषभ समान राजपुत्रोंको हमारे कारण मारडाला ९ हम निश्चय जानतीहैं कि वह मृगरूपधारी काल आयाथा जिसने अल्पभाग्य हमको ललचाया कि जिससे हममूढ़ने आर्य्यपुत्र श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण दोनोंको भेजदिया १० हासत्यव्रत राम हादीर्घबाहो हापूर्णचन्द्रमुखसम हाजीवलोकके प्रिय व हितहमको राक्षसोंके बधके योग्य होगई नहींजानते ११ हाहमारा एक अपनेपति को छोड़ अन्यको कुछ न समझना व रावणादि अपराधियोंके ऊपरभी ऐसी क्षमा व भूमिमें शयन करना व धर्म्ममें नियम व पतिव्रतापन ये सब विफल होगये जैसे कृतघ्न मनुष्योंके साथ किया उपकार निष्फल होजाताहै १२ यह सफलधर्म्म जो हमने किया व जो एकपत्नीव्रतधारी रामचन्द्रहीको पति समझा येभी निरर्थक होगये जोकि दुर्ब्बल शरीर विवर्ण तुमसे हीन व तुम्हारे संग जानेसे निराश हो अब तुमको नहीं देखती १३ अब हम जानतीहैं कि अबतक तो आपभी एकनारीव्रतरहे पर अब हमारे न होनेपर पिताकी आज्ञा नियमसे कर व बनसे निवृत्त हो व सब व्रत पूर्ण कर व निर्भ्भय हो बड़े बड़े नेत्रवाली स्त्रियों के सङ्ग बिहार करोगे १४ पर हे प्राणनाथ श्रीराम हमतो तुममें अपनी इच्छा लगाये अब बहुत दिनोंके लिये मरनेमें चित्त लगायाहै जो सफल तप व व्रत हमने किया सब छोड़ती हैं व अल्प भाग्यवाली हमारे जीनेको धिक्कारहै १५ अबहम विषसेव तीक्ष्ण शस्त्रसे अपना जीव शीघ्रही त्या-गेंगी परन्तु इस राक्षसके गृहमें न कोई हमको विषहीका दाताहै न शस्त्र हीका क्या करें १६ सब तरहसे रामचन्द्रजी को स्मरण करती सीता देवी इस तरह बहुत भांति बिलाप कर काँपती व मुख सूखाकिये उस फूले शिंशुपाके नीचे बैठगई १७ व मारे शोकके सन्तप्त हो बहुत तरह शोच सीताजीने शोचा कि बस अब जिस मोटेसूत्रसे शिरके बार बाँधेहैं इसीको छोर गलमें बाँध बहुत शीघ्र यमराजकेभी मूल श्रीरामचन्द्र के

लोकको चलीजायँ १८ यह बिचार कोमलाङ्गी सीताजी उसशिंशुपावृक्ष की डाल पकड़ खड़ीहुईं कि बस अब इसीमें केशबन्धन सूत्रलगाय गल में बाँध प्राणछोड़ें इतनेमें रामचन्द्रजी की चिन्तना तो करी रहीथीं लक्ष्मणादिकों व अपने दोनों कुलोंकी भी चिन्तनाकी १६ उसमें बड़ेबड़े शकुनके निमित्तहुये कि रामचन्द्रजी ज़रूर आवेंगे इससे फिर कुछधैर्य्य हुआ व शुभशकुन अङ्गस्फुरण आदिभी शुभ सूचकही उस समय हुये जैसे धनुर्भङ्गके समय आगे जनकपुरमें हुयेथे २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टाविंशस्सर्गः ॥ २८ ॥

हर्षरहित व मरनेपर तैयार अति व्याकुल व अनिन्दित व दीनमानसी सीताजीकी सेवा उससमय आय शुभनिमित्तोंने की जैसे धनवान् पुरुषकी सेवा उसके उपजीवीलोग करतेहैं १ तिन जानकीजीका चञ्चल पलकों सहित कृष्ण व बड़ा व शुक्लवामनेत्र चलायमान मछलियोंकेलगनेसे कमलके समान फरकउठा २ व तिनका अच्छीतरह पूजितगोल व मोटा बड़ेबड़े मोलके भूषणोंके योग्य बहुत कालसे उत्तमपति श्रीरामचन्द्रजीके शिरके नीचे रहनेवाला बावाँहाथभी उसीसमय फरकउठा ३ व गजेन्द्रकी शूंड़केसमान चढ़ाउतार व गोलमोट व दोनोंएकमें मिलीहीसी जाँघोंमेंसे बाँईजाँघभी फरकउठी जिसने फरकतेही मानों रामचन्द्रजीका आगेप्राप्तहोना बताया ४ दाड़िमके बीजकेसमान दाँतोंवाली वहांस्थित सीताजीका शुभ सुवर्णकेरङ्गका व कुछधूलिलगने से मलिन वस्त्रकुछउड़उठा ५ इननिमित्तोंसे व और भी प्रथमकेहुये निमित्तोंसे प्रेरित सीताजी ने जानलिया कि हमारा कामसिद्धिहोगया इससे पवन व घाम के लगनेसे नष्टबीज वर्षाहोनेसे जैसे हर्षितहो जमउठताहै वैसेही सीताजी हर्षितहुई ६ फिर तिनसीताजीका पाकेकुँदुरूके समान सुंदरनेत्र सुंदरीभौंहों सहित व केशोंके अन्तसहित व चञ्चलपलकयुक्त मुख राहुकेमुखसे छूटे चन्द्रमा के समान प्रकाशितहुआ ७ विगतशोक आलस्यरहितशान्तज्वर व हर्षसेहर्षित शक्ति सीताजीका प्रकाशितमुख शुक्लपक्षमें चन्द्रके उदयसे रात्रिकेसमान शोभितहुआ ८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकोनत्रिंशस्सर्गः ॥ २९ ॥

बड़ेविक्रमी हनुमान्जी भी सीताजीका विलाप त्रिजटाका स्वप्न व राक्षसियोंका डरवाना सब अच्छीतरह सुनते व बिचारतेजाते थे १ नन्दनबनमें देवता के समान प्रकाशित व शोभित सीताजी को देख बड़ी चिन्तनाकरनेलगे २ कि जिसकोहज़ारोंलाखों किड़ोरोंबानर सबदिशोंमें ढूंढ़तेहैं तिनइन सीताजीको हमपायगये ३ उसमेंभी स्वामीकी आज्ञासे प्रेरित इसीसे शत्रुकीशक्ति देखतेहुये व इसीसे गुप्तरूपसे घूमतेहुये हम दूतनेप्रथम सीताजीके वृत्तान्ततोजाना ४ व राक्षसोंमें विशेष इसरावण को भी देखा व यह रावणकी लङ्कापुरीभी व राक्षसों के अधिप इस रावणका प्रभावभीदेखा ५ परंतु अप्रमेय व सबप्राणियोंके ऊपर दया करनेवाले रामचन्द्रजीके समझाने व सन्तोषकरानेके योग्य पतिके दर्शन की इच्छाकिये ६ पूर्णचन्द्रमुखी व जिन्होंने इसके सिवाय और कभी दुःखदेखाहीनहीं व दुःखकाअन्तनदेखतीहुई इनको अब हमकोसमझाना चाहिये ७ जो हम इनसती सीताजीको बिनासमझाये बुझाये चलेजायँ तो हमाराजाना सदोषहो ८ क्योंकि हमारे चलेजानेपर ये राजकुमारी जानकीजी अपना रक्षकनदेख झटप्राण त्याग करदेंगी ९ व पूर्णचन्द्र सदृशमुख महाबाहु रामचन्द्रजी ने सन्देशकहने व समझानेहीको कह दियाहै नहीं तो मुंदरीकाहेकोदेते १० परंतु इन निशाचरियोंके सामने बतलानाहोही नहींसक्ता अबहम कैसा करें बड़ेकष्टमेंपड़े हैं ११ व जो अबइतनीबाकी रात्रिहीभरमें हमनहीं समझादेते तो इसमें कुछसन्देहही नहीं कि ये अपनेप्राण त्यागदेंगी १२ इसकेसिवाय जब श्रीरामचन्द्रजी हमसेपूंछेंगे कि सीताने हमसेकौन बचनकहाहै तो बिनाइनसे बतलाये हमकौनसन्देशकहेंगे १३ व बिना सीताका सदेशलिये जो हमयहां से शीघ्रताके कारण जायवहांपहुँचेंगे तोमारेक्रोधसे कड़ेनेत्रोंसे रामचन्द्रजी हमको भस्मभी करदेंगे १४ व जो रामचन्द्रजी के कारण से आय अब जाय सुग्रीवसेकहदें उनको जो भाविगा उत्तरदेरहेंगे तो भी सैन्यसहित सुग्रीवकाआनाही व्यर्थहोगा क्योंकि ऐसाहीथा तो सुग्रीवआपही आकर जानजाते हमारेयहां आनेकीकौन ज़रूरतथी इससे समझायहीकर जानाठीकहै १५ इससे अबहमइन्हीं राक्षसियोंके बीचमेंबैठ धीरेसेबहुत सन्तापवाली इनकोसमझावें १६ हमएकतो बहुतछोटेहैं और बानरकी

देहधारणकियेहैं इससे मनुष्यकी बोलीबनाय सँस्कृतभाषा इनसेबोलेंगे १७ व जो ब्राह्मणका वेषबनाय सँस्कृत भाषामेंबोलें तो हमको रावण जान सीता औरभी डरजायँगी १८ इससे अवश्य हम मनुष्योंकी सी बोलीबनाय सँस्कृतभाषा से इनको समझावें और किसी तरहसे नहीं समझा सक्के १६ परंतु हमारारूप तो बानरका देख व बोली मनुष्यकी सुन प्रथम से राक्षसों से त्रासित तो होही रहीहैं हमको राक्षस जान और भी भयको प्राप्तहोंगी २० व हमको यथेच्छा रूपधारी रावण जान विशालाक्षी व मनस्विनी सीताजी मारेडरके हल्लान करउठें २१ फिर सीताजीके हल्लाकरने पर नानाप्रकार के शस्त्र धारणकिये यमराज के समान कोपकिये राक्षसियों का झुण्ड आजायगा २२ तो सबहमको अच्छीतरह देख सब ओरसे घेर बड़े बड़े कराल मुखवाली व बड़े बल वाली हमारे मारडालने व पकड़नेकी युक्ति करने लगेंगी २३ तब हम को बड़े बड़े उत्तम वृक्षोंकी छोटीबड़ीडारों व ठाँसोंपर दौड़तेदेख सबकी सब शङ्कितहोंगी २४ व फिर हमारा बानरका रूपदेख फिर वृक्षोंपर इधर उधर कूदते फाँदते जान मारेभयके ब्याकुल हो राक्षसियाँ भी चिल्लानेलगेंगी २५ तब राक्षसियाँ रावण ने जिनको अशोकबाटिका रखानेके लिये नियत कियाहै उन राक्षसोंको पुकारेंगी २६ व लोग शूल बाण भाला आदि नानाप्रकार के आयुध ले ले बड़े वेगसे हमको मारनेकेलिये आवेंगे २७ व सब जब हमको सब ओरसे घेरलेंगे तो राक्षसों की सब सैन्य तो हमनाशकरदेंगे परंतुसमुद्रपार फिर न जासकेंगे २८ व जो शीघ्र कर्म्मकारी बहुतराक्षस बटुरहमको पकड़लेंगे तो जानकीजी भीहमारेआनेका हाल न जानेंगी कि यहकौ नहै व कहांसे आया व हमबंधुआ जुदाहोजायँगे २६ व जब हमको सीतासे बतलाते जान मारने पीटनेमें सदा चित्तलगाने वाले राक्षस सीताजीही को मार डारें तो रामचन्द्रजी व सुग्रीवजीका यह जो ब्यवहारहुआ है वहीब्यर्थ होजाय ३० फिर यह भी नहीं कि हम बँधुआ होजायँगे तो होजायँगे औरहू कोई आय सीताजी को देख जायगा क्योंकि यह ऐसास्थान है कि किसी ओरसे आनेका मार्ग्गही नहीं है क्योंकि प्रथम तो इसकी चारोंओर समुद्रभराहै फिर सब ओरसे राक्षस रखाते हैं इससे इसबड़े

गुप्तस्थान में जानकीजी हैं कोई भी न देखपावेगा ३१ क्योंकि जो हम मारगये वा संग्राममें बँधुआ होगये तो और किसीको हम रामचन्द्रजी के कार्य्यसाधन करनेमें सहायक नहीं देखते ३२ क्योंकि हम भलभल अपने मनमें बिचारतेहैं परन्तु हमारे मरजाने के पीछे ऐसा वानरकोई नहीं दिखाईदेता जो सौयोजन का समुद्रनाँघे ३३ व हमतो अकेलेही किंहोरों वरन असंख्य राक्षसोंके मारनेमें समर्त्थहैं परन्तु समुद्रके उस पारको नहीं जासक्के क्योंकि इसदेखा सुनीमें कहीं सीताजीको राक्षसों ने मारडाला तो हमारीशक्ति मारेशंका व शोच के जातीरहेगी ३४ जो कहो कि राक्षसोंके मारडारने पर तो सीताजीके दर्शनहोहींगे फिरकौन संशय करतेहो तो इससमय जानकीजीके जीनेके विषयके संशयसे राक्षसोंसे युद्धकरना असत्यरूपहै इससे इस समय युद्ध न करेंगे क्योंकि ऐसा कौन पण्डितहै जो असंशय कार्य्य को संशय सहित करदे इससे हमको संशयका कार्य्यनहीं अच्छा लगता ३५ इस समय सीताजी से वार्त्तालाप करनेसे तो यहा बड़ाभारी दोषहै व बिना वार्त्तालाप करनेसे वैदेहीजीका प्राणत्यागही होताहै ३६ डरभुतदूतकोपाय सिद्धभी कार्य देशकाल के विरोधसे नाशहोजाते हैं जैसे सूर्य्य के उदय में अन्धकार नाशहोजाताहै इससे दूतकोबड़ी सावधानी से कामकरना चाहिये ३७ जिससे कि मूर्ख दूतलोग कार्य्यों का नाशकरदेते हैं इससे कर्त्तव्य व अकर्त्तव्य के विषयमें जो निश्चित भी बुद्धिहै वह शोभितहोती कि ऐसा नहो कि कोई कार्य्य बिगड़जाय तो दूतही के ऊपर दोष आवेगा ३८ अब ऐसीकौन युक्तिकरें जिसमें कार्य्यकाभी न नाशहो व हमारी विक्लवताभी न ठहरै व समुद्रनाँघ जो इतनीदूर हमआये यह भी न वृथाहो ३९ ऐसाकैसेहो कि हमारे बचन जानकीजी सुनलेंपरऊबें न यहअपने मनमें शोच बुद्धिमान् हनुमान्जीने शोचलिया ४० कि पहिलेहम रामचन्द्रजीकी कथा कहनेलगें क्योंकि वे इनके बन्धुहैं इससे उनकी कथा सुन न ऊबेंगी क्योंकि इनकाचित्त परमहितू श्रीरामचन्द्रही में लगाहै इससे और कोई बातकह इनको न उबावें ४१ अब इक्ष्वाकुवंशियोंमें वरिष्ठ व प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजीके धर्म्मयुक्त व शुभवचन निवेदन करते हुये ४२ मधुरवाणी से सब वृत्तान्त सुनावेंगे जिसतरह सीताजी

विश्वास करेंगी हम उसीतरहके समाधान करेंगे ४३ इसतरह बहुतसी बातें शोचबिचार वृक्षकी मोटीजड़ाओं के बीचमें जानकीजीकी थोड़ीही दूरपर बैठ हनुमान्‌जी सबलोकों के नाथ श्रीरघुनाथजी की भार्य्या को देखतेहुये मधुर बचनबोले ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रिंशस्सर्ग्गः॥ ३० ॥

महा मतिवाले हनुमान् जी इसतरह बहुत प्रकार की चिन्ताकर जानकीजीके सुननेकेलिये मधुर बचन धीरे धीरे बोले १ रथहाथी घोड़े आदिसे संय्युक्त पुण्यकीर्त्ति महा यशस्वी इक्ष्वाकु बंशियों के महाराजा धिराज दशरथजी हुये २ इनराजा की प्रीति हिंसाकरने में नहीं थी व बड़ेप्रशस्त दयावान् सत्यपराक्रम थे व मुख्य इक्ष्वाकुबंशयों के लक्ष्मी बढ़ानेवाले व लक्ष्मीवान् थे ३ व सब उत्तम राजचिन्होंसे संय्युक्त महा शोभावान् राजाओंमें श्रेष्ठ चारों समुद्रपर्य्यन्तकी पृथ्वीभर में विख्यात सबके सुखदेनेवाले व आप सदा सुखीरहनेवालेथे ४ तिनके अतिप्रिय चन्द्रसम मुख सकल शास्त्र व वेदों को विशेषता से जाननेवाले सब से ज्येष्ठपुत्र श्रीरामचन्द्रजी हैं ५ ये अपने समाचारके रक्षक व अपनेजनों के भी पालक व जितने जड़चेतन जीव इस संसारमें हैं सबके रक्षक व धर्म्मके बड़ेहीरक्षक व शत्रुओंको सन्तप्त करनेवालेहैं ६ वे श्रीरामचन्द्र जी तिन सत्यप्रतिज्ञ व वृद्ध अपने पिताकीआज्ञा से अपनीस्त्री व भाई के साथ बनकोआये ७ तिन्होंने बनमें घूमते घूमते शिकार की रीति से बहुत यथेच्छा रूपधारी व बड़ेशूर राक्षस मारडाले ८ तब जनस्थान निवासी अन्य सबराक्षस व खरदूषणको भी मारेगये सुन इसबात को न सहकर रावण उनकी भार्य्या हरलेगया ९ हरने के समय मृगरूप बनाय मायासे रामचन्द्रजीको भी छलमें डालदियाथा सो निन्दारहित सीताजीको ढूंढ़तेढूंढ़ते १० बनमेंआय सुग्रीवनाम वानरको मित्रबनाया तिससे शत्रुओं के पुरध्वंसक श्रीरामचंद्रजी ने बाली को मार ११बानरों का राज्य महात्मासुग्रीवजीकोदेदिया तिनसुग्रीवकी आज्ञासे कामरूपी किरोड़ोंबानर १२ सबदिशाओंमें तिनसीतादेवीको ढूंढ़तेहैं उन्हींबानरों में एक हम भीहैं सो सम्पातिके बचनोंसे यहां सीताका सुन सौयोजन का

समुद्र नांघआयेहैं १३ तिन्ही बिशालाक्षीकेहेतु बड़ेवेगवानहम समुद्रको देखतेदेखते कूदआये व जैसेरूपकी जैसेरङ्गकी व जिसतरहके चिन्होंकी तिन सीताजीको १४ हमने रामचन्द्रजीके मुखसे सुनाथा उन सीताजी को वैसेही हमने आजपाया इतनाकह बानरोंमें श्रेष्ठ हनुमानूजी चुपहो रहे १५ व जानकीजी ऐसाबचनसुन बहुतबिस्मितहुई व फिर टेढ़ेबालों वाली व सुकेशी सीताजी ऊपरको मुखउठायशिंशुपाको देखनेलगीं १६ बानरके बचन सुन व सब दिशोंकी ओर देख श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करती सीताजी बहुत हर्षितहुईं १७ व तिरछा ऊंचे नीचे देखतीदेखती जानकीजीने अचिन्त्य बुद्धि व बानरोंके राजासुग्रीवके मंत्री हनुमानूजी को उदयाचल पर स्थित सूर्य्यके समान देखा १८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकत्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३१ ॥

वृक्षकी शाखाके मध्यमें लीन अर्ज्जुनवृक्षके समान हरेरङ्ग का वस्त्र ओढ़े व बिजली के समान पीले हनुमानूजी को देख सीताजी का मन काँपनेलगा १ पर फिर उधर निहारा तो प्रियवादी अतिनम्र फुलाने अशोकके सम प्रकाशित व तपाये सुवर्णके समान पीलेनयन बानरश्रेष्ठ को देखा २ बड़ी नम्रतासे बैठे बानरश्रेष्ठको देख सीताजी बड़ी चिन्ता कर अति विस्मित हुईं ३ व शोचने लगीं कि यहतो बड़ाभयङ्कर बानर का शरीरहै व बड़ेदुःखसे देखनेके योग्यहै यह मान फिर मोहित होगईं ४ व मारे भयके व मोहके करुणशब्दसे रोनेलगीं व कहनेलगीं हेराम हेराम हेलक्ष्मण हेलक्ष्मण ५ सीताजी रोदन तो करनेलगीं पर धीरेहो धीरे रोईं जब अपने रोदन करनेपरभी हनुमानूजी को नम्रताईके साथ ही बैठे देखा वरन वे बनाय समीप चलेआये तब जानकीजी बिचारने लगीं कि क्या हम स्वप्न तो नहीं देखतीं ६ यहशोच फिर अच्छीतरह देखनेलगीं तो बड़ाभारी मुख नीचेकोकिये जैसा शाखामृगेन्द्रोंका होता है वैसाही सुन्दरमुख पवनके तनय बुद्धिमानों में अतिश्रेष्ठ बड़े मोलके भूषण पहिरनेके योग्य हनुमानूजीको देखा ७ व तिनको देखतेही सीता जी अत्यन्त व्याकुल होगईं मनमें जाना कि बस यह रावणहै रूपान्तर कर आयाहै इससे ऐसा व्याकुलहुईं जानों प्राणही निकल जायाचाहते

थे कुछघड़ीके पीछे फिर कुछहोश आया तो विशालाक्षी सीताजी चिन्ता करनेलगीं ८ कि बस हमने यह स्वप्नही देखाहै और कुछ नहींहै पर स्वप्नमें बानरका देखना शास्त्रोंमें बहुत निषिद्ध लिखाहै श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण व हमारे पिता राजाजनकजीका कल्याणहो ९ परन्तु यह तो स्वप्न नहींहै क्योंकि मारे शोक व दुःखसे पीडित हमको नींद तो आतीही नहीं फिर स्वप्न कैसे बस तिन पूर्णचन्द्रसममुख श्रीरामचन्द्रजीसे जिससे कि हम हीनहैं इससे हमको सुख नहींहै और सब अच्छेही होंगे १० व जो हम अपनीबुद्धिसे सदैव रामरामकह चिन्तना कियाकरतीहैं व शोच कर फिर कभी कभी बचनसेभी तिन्हीं का नाम लेतीहैं इसीसे तिन्हींके अनुरूप व तिन्हींके अर्थकी कथा देखती सुनतीहैं ११ व हम तिन्हीं रामचन्द्रहीं के निमित्त इस समय कन्दर्प्प से पीडित हैं इसीसे हमारे सब भाव उन्हींमें लगेहैं व निरन्तर तिन्हींकी विचिन्तनाभी करतीहैं इसीसे तैसाही देखती हैं व तैसाही सुनाती हैं १२ यह तो हम जानतीहैं कि यह हमारा मनोरथही है और कुछनहींहै परतथापि बुद्धि से वितर्कणा करतीहैं कि मनोरथके न तो रूपहोता न वह बोलसक्ताहै व यहसुन्दर बानरका रूप धारणकिये साफवचन हमसे कहताहै इससे मनोरथ नहींहोसक्ता यह औरही कुछहै १३ हम ब्रहस्पतिजी व इंद्र व ब्रह्माजी व अग्निके प्रणामकरती हैं व प्रार्थनाकरती हैं कि इस बानर ने जो हमारे आगेकहाहै वह वैसाही हो अन्यथानहो १४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्वात्रिंशस्सर्गः ॥ ३२ ॥

तिसकेपीछे मूंगासम मुखयुक्त हनुमानूजी अतिनम्रहो शिंशुपावृक्ष परसे उतरप्रणामकर जानकीजी के निकटजाय १ शिरपर दोनोंहाथ जोरधर मधुरवाणी से महातेजस्वी पवनतनय सीताजी से बोले २ हे पद्मपलाशाक्षि मलिन रेशमीवस्त्रपहिरे निन्दारहित तुमकौनहो वृक्षकी डारपकड़े खड़ीहो ३ व तुम्हारे कमलदल समान नेत्रोंसे शोककाजल फूटेपात्र से पानीके समान क्यों चूताहै ४ हे शोभने देवता दैत्य नाग गन्धर्व्व राक्षस यक्ष किन्नरों में से तुम किसकी हो ५ वा ग्यारह रुद्र उञ्चासपवन आठवसु इनमें तो कोई तुमनहींहो क्योंकि देवताओंसेभी

अधिकशोभितहोतीहो ६ कि तुम चन्द्रमासेहीन स्वर्गसेगिरी नक्षत्रोंमें श्रेष्ठ व सबगुणोंमें श्रेष्ठ व अधिकरोहिणीहो ७ व जो तुम इस लोकसे अन्यस्थानमेंप्राप्त किसीप्राकृत विलक्षण पुरुषकोशोचरहीहो सोकौनहो हे अनिन्दितलोचने बतावोतो ८ अथवा हे कल्याणि कोपसे वा मोहसे अपनेपति वशिष्ठजीको कुपितकराय तुमअरुन्धती हो यहांबैठीहो ९ हे सुमध्यमे तुम्हारे पुत्र पिता भ्राता व भर्त्ताका क्यानामहै परंतु रोदनकरने निश्वासलेने व भूमिस्पर्शकरनेसे हमतुमको देवी नहींमानते क्योंकि ये तीनोंकार्य्य देवियां नहींकरतीं किन्तु बार बार राजारामचन्द्रजी का नामलेनेसे १० व जो तुम्हारे असाधारण चिन्हबोधक लक्षण देखतेहैं तिनसे भूमिपाल सम्पूर्ण ब्रह्माण्डाधिपति श्रीरामचन्द्रजीकी महाराज्ञी व राजाजनककी कन्या तुमकोहम समझतेहैं ११जो जनस्थानसे जबरदस्ती रावण तुमकोलायाहो तुमवही सीताहो तो पूंछतेहुये हमसेकहो १२ जिसतरह तुममें दीनताटिकीहै व जैसे तुम्हारा प्राकृत विलक्षण रूपहै व तपस्यायुक्त वेषहै इनकारणोंसे तुमनिश्चयहै कि श्रीरामचन्द्रजीहीकी पट्टरानीहो १३ हनुमान्जी के ऐसे बचनसुन रामचन्द्रजी का कीर्त्तनसुननेसे हर्षितहो वृक्षकी डारपर बैठे हनुमान्जी से जानकीजी बोलीं १४ कि अबइसपृथिवीमें तो राजसिंहोंमेंमुख्य व प्रसिद्ध व शत्रुसैन्यके नाशकरनेवाले महाराज दशरथजीकी तो हम बहूहैं १५ व वैदेह महात्मा जनकजीकी कन्याहैं सीताहमारा नामकहतेहैं व धीमान् भगवान् महान् श्रीरामचंद्रजीकी भार्य्याहैं १६ बिवाह होनेकेपीछे रामचंद्रजी के गृहमें सब कामनायुक्त बिबिध प्रकारके मनुष्यों के भोग भोगतीहुई हमबारह वर्षतक रहीं १७ तिसके पीछे जब तेरहवां वर्षलगा तो श्रीराजकुमार रामचन्द्रजीको युवराज पदवीपर अभिषेक करने को अपने गुरूसभी सम्मतले राजाने प्रारम्भकिया १८ जब रामचन्द्रजीके अभिषेक के लिये सब सामग्री इकट्ठाहुई तो कैकेयी अपनेपति से यह बचन बोली १९ कि जो रामचन्द्र का अभिषेकहुआ तो यही हमारे प्राणोंका नाशकहै इससेजबतक यहनिवृत्त न होगा प्रतिदिन न कुछ हमपियेंगी न कुछखायँगी जो भोजन इससमय हमारे पेटमेंहै वहीहै २० हेनृपति सत्तम प्रसन्नहो जो बचन आपने हमसेकहाथा जो वह मिथ्या न किया

चाहो तो रामचन्द्र बनकोजायँ २१ व राजा सत्यवादी तो थेही केकयी के बरदान का स्मरणकर कैकेयीके क्रूर व अप्रिय बचनसुन बहुतविकल हुये २२ व राजावृद्ध तो थेही सत्यधर्म्ममें टिक यशस्वी अपने ज्येष्ठपुत्र रामचन्द्रजी से उन्होंने राज्य मांगलिया २३ परन्तु उन श्रीमान् रामचन्द्रजी ने पिता के बचन राज्य से भी अधिक प्रियसम समझने से तो पहिलेही ग्रहण करलिया था फिर बचनसे भी अंगीकार करलिया २४ क्योंकि सत्यपराक्रम रामचन्द्रजीका यह स्वभावहै कि आप दान देतेहैं पर ग्रहण नहींकरते व सदासत्यही बोलते झूंठकभीनहीं चाहे इसविषय में उनके प्राण भी जातेहों पर वे वैसाही करते हैं २५ व रामचन्द्र जी बड़ेबड़े मोलकेवस्त्र व राज्य मनसे छोड़ बन चलनेकेलिये अपनी माता से बोले २६ व चले तबहम उनके आगेआगे बन चलनेकेलिये तैयारहुई क्योंकि बिना तिन महाराजाधिराज के हमको स्वर्गका भी बास नहीं रुचता २७ व मित्रों के आनन्द बढ़ानेवाले महा भाग्यवान् लक्ष्मणजी अपने ज्येष्ठभाईके चलनेके प्रथमही बनजाननेकेलिये कुशचीर धारणकर तैयार होरहेथे २८ सो हम तीनोंजन महाराज दशरथजी की आज्ञाको बहुतमान दृढ़व्रत हो जो वन कभी पहिले देखा भी नथा उसमेंपैठे २९ यहां दण्डकारण्य में बसते महापराक्रमी श्रीरामचन्द्रजी की भार्य्या हमको दुष्टात्माराक्षस हरलाया ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रयस्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३३ ॥

दुःखसे अतिदुःखित सीताजीके बचनसुन वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्जी तिनके दुःखके सान्त्वकारक बचन बोले १ हे देवि हम रामचन्द्रजी के सन्देश से दूतहो तुम्हारे पास आयेहैं हेवैदेहि रामचन्द्र जी कुशली हैं उन्होंने अपना कुशल तुमसे कहाहै व तुम्हारा कुशल पूंछाहै २ हेदेवि जो रामचन्द्रजी ब्रह्मास्त्र व सबवेद जानतेहैं व वेदज्ञोंमें श्रेष्ठहैं उनदशरथजीके पुत्र रामचन्द्रजीने अपनाकुशल तुमसेकहाहै व तुम्हारा कुशल पूंछाहै ३ महातेजस्वी व तुम्हारे भर्त्ताके अनुचर व प्रिय लक्ष्मणजी ने शोकसे सन्तप्तहो शिरसे तुम्हारे प्रणाम कियाहै ४ तिनदोनों नरसिंहों का कुशल सुन सर्बाङ्गों से हर्षितहो सीताजी हनुमान्जी से बोलीं ५

जीतेहुये मनुष्यको सौबर्षके पीछे भी आनन्द प्राप्तहोताहै यह जो लोक की वार्त्ताहै वहहमको सत्यजान पड़तीहै ६ तिनदोनों सीता व हनुमान् जीके समागम में अद्भुतप्रीति उत्पन्नहुई इससे परस्पर विश्वासमान दोनोंजन वार्त्तालाप करनेलगे ७ शोकसे सन्तप्त सीताजी के बचनसुन मारुतसुत हनुमान्जी तिनके और समीप चलेआये ८ जैसेजैसे हनुमान् जी सीताजीके समीप धीरेधीरे आतेथे तैसेतैसे तिनको सीताजी रावण समझ शङ्कित होतीं ९ व अपने मनमें कहनेलगी कि जो हमने अपना सबवृत्तान्त व मनोरथ कहा उसपर हमको धिक्है धिक् है क्योंकि यह रूपान्तरकर वही रावणहीहै आयाहै १० यह शोच अशोक सदृश उस शिंशुपाकी डारछोड़ पापरहित जानकीजी उसीधरणी पर बैठगईं ११ तब महाबाहु हनुमान्जीने तिनके प्रणामकिया पर मारेभयके व्याकुल हो सीताजी ने उनकी ओर फिर न निहारा १२ चन्द्रमुखी सीताजी तिनको प्रणाम करते देख बड़ीलम्बी साँसले तिन वानर श्रेष्ठ से मधुर बचन बोलीं १३ कि जो तुम माया को प्राप्तहो मायावी रावणहीहौ व हमको फिर सन्ताप प्राप्त करातेहो तो यहकर्म्म अच्छा नहींहै १४ हमने जानलिया तुमको अपनारूप छोड़ दण्डीकारूप धारणकिये हमने जन-स्थान में देखाथा तुमवही रावण हो इसमें कुछ भी सन्देह नहींहै १५ उपास करनेसे दुर्व्वल इससे दुःखित हमको जो कामरूपी निशाचर तुमफिर सन्तप्त करातेहो यह कर्म्म तुम्हारा अच्छानहीं है १६ परन्तु तुम्हारे देखनेसे हमारे मनमें प्रीति उत्पन्नहुई है इससेतुम रावण नहीं हो इससे जो हम रावण जान शङ्कितहुई थीं वह बात कुछ नहींहै १७ यदितुम रामचन्द्रजीके दूतही आयेहो तो तुम्हारा कल्याण हो हेवानर श्रेष्ठ तो हमतुम से रामचन्द्रजी की कथा पूछती हैं क्योंकि वही हमको प्रियहै १८ हेवानर हमारेप्यारे रामचन्द्रजी के गुणकहो हे सौम्य इस समय हमारा चित्त हरलेतेहो जैसे जलकावेग नदीके कूलोंको हरलेता है १९ अहोस्वप्न के सुखको क्याकहें जो बहुतदिन की हरी हम राम-चन्द्रजीका भेजा वानरदूत देखती हैं बड़े आश्चर्य्य की बातहै २० क्या कहें जो स्वप्नमेंभी लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीको देखें तो भी न क-ष्टितहों परन्तु हमारा स्वप्न भी अहङ्कारी है कि कभी हमारे पास नहीं

आता २१ हमइसको स्वप्ननहीं मानतीं क्योंकि जो स्वप्नमें वानर दि-
खाई देता है तो देखनेवाला अभ्युदय को नहीं प्राप्तहोता व हमने
अभ्युदयपाया बसयहस्वप्न नहींहै २२ फिर फितो चित्तका मोहहोगा
वा वायुका विकार होगा या भूतावेशादि हेतुक कोई विकार होगा वा
यह मृगतृष्णा होगी २३ अथवा उन्माद से उत्पन्न विकार नहींहै न
वायुहीका विकारहै क्योंकि हम अपनाको जानतीहैं व इसवानरको भी
जानतीहैं व जिसको भूतवाधा वा वायुका विकार होताहै उसे अपना
विराना कुछनहीं सूझता २४ इसतरह सीताजीने बहुतप्रकारसे बिचार
राक्षसों के कामरूपीहोने से हनुमानूजी को फिर रावणही माना २५
इसतरहकी बुद्धिकर सूक्ष्मकटी सीताजी पवनतनयसे कुछ न बोलीं २६
तब वायुसूनु हनुमानूजी सीताजीका ऐसा निश्चयजान कानके अनुकूल
बचन कह कह हर्षित कराने लगे २७ जो सूर्य्य की तरह तेजस्वी व
चन्द्रमाकीतरह लोकभरकोप्रिय व कुबेरकीतरह सब लोकोंके राजा २८
व विक्रममें महायशस्वी विष्णुकी तरह व वृहस्पतिजी की तरह सत्य-
वादी व मधुर बोलनेवाले २९ व मूर्त्तिमान् कन्दर्प्प की तरह रूपवान्
व सुभग व समय परभी क्रोधजीतनेवाले व लोकोंमें सबसे श्रेष्ठ महा-
यशस्वी ३० व जिन महात्माकी भुजाकी छायामें लोक सुखसे बसा है
तिन रामचन्द्रको मृगरूप धारण कर जो स्थान परसे दूर लेगया ३१
व शून्य होजानेपर जो तुमको हरलाया तिसका फल देखोगी कि उस
रावणको शीघ्रही जो वीर्य्यवान् श्रीरामचन्द्रजी ३२ क्रोधसे प्रेरित व
अग्नि के समान प्रकाशित बाणों से मारेंगे तिन्हीं के भेजे हम दूतहो
तुम्हारेपास आयेहैं ३३ वेतुम्हारे वियोगसे मारेदुःखके पीडितहैं इससे
उन्होंने अपना कुशल तो तुमसे कहाहै व तुम्हारा कुशल पूंछाहै व महा
तेजस्वी सुमित्राजीके आनन्द बढ़ानेवाले लक्ष्मणजीने ३४ प्रणाम कर
तुमसे अपना कुशल कहाहै व तुम्हारा कुशल पूंछाहै व हे देवि रामचन्द्र
जीके सखा सुग्रीवनाम वानर ३५ जो सब वानरोंके राजाहैं उन्होंनेभी
तुमसे अपना कुशल कहाहै व तुम्हारा पूंछाहै सुग्रीव व लक्ष्मण सहितो
श्रीरामचन्द्रजी नित्यही तुम्हारा स्मरण कियाकरतेहैं ३६ बड़ी खुशीकी
बातहै जो तुम राक्षसियोंके मध्यमें प्राप्तहोकरभी जीतीहो अब बहुतही

जल्द महारथ श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणको देखोगी ३७ व किरोड़ोंबानरों के बीचमें अमित पराक्रमी सुग्रीवजीको भी देखोगी हम उन्हीं सुग्रीवके मन्त्री हनुमान्नाम बानरहैं ३८ समुद्र नाँघ दुष्टात्मा रावणके शिरपर लातधर लङ्कापुरीमें आयेहैं ३९ अपने पराक्रमके बलसे हम तुमको देखनेके लिये आयेहैं हेदेवि जैसा तुम हमको समझतीहो कि यह रावण है वह बात नहींहै ४० इससे अब अनेक तरहकी शङ्काछोड़ हमारे कहनेको विश्वासमानो ४१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचतुस्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३४ ॥

वानरश्रेष्ठ हनुमान्जीसे रामचन्द्रजीकी कथा सुन जानकीजी मधुर वचन सान्त्व पूर्वक बोलीं १ कि तुम्हारा व रामचन्द्रजी का समागम कहांहुआ व लक्ष्मणको तुम कैसे जानतेहो व वानरोंका व नरोंका समागम कैसे हुआ २ हे वानर रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी में जोजो चिह्न हों वे फिरसे कहो जिसमें हमको शोक न हो ३ तिन रामचन्द्र व लक्ष्मणके सब अङ्ग कैसेहैं व रूप उनका कैसाहैव जाँघेंकैसीहैंबाहेंकैसी ये सब बातें हमसे बतावो तो हम जानें कि उन्हींके दूतहो ४ वायुपुत्र हनुमान्जी जब जानकीजीसे ऐसा कहेगये तो रामचन्द्रजीके समाचार कहनेलगे ५ कि कमलपत्राक्षी वैदेहीजी तुम अपने भर्त्ता व लक्ष्मणजी के भी सब चिह्न जानतीहो पर हमसे पूंछतीहो यह बड़ेभाग्यकी बात है ६ हे विशालाक्षि जो चिह्न रामचन्द्रजीके व जो लक्ष्मणजीकेहैं हम कहतेहैं सुनो ७ हे जनककुमारि रामचन्द्रजी कमलदल नयन पूर्णचन्द्र सदृश मुख रूप व चातुर्य्य से युक्तही हो उत्पन्न हुयेहैं कुछ उत्पत्ति के पीछे ये बातें उनमें नहीं आईं ८ व वे तेजसे तो सूर्य्यके सदृश व क्षमा में पृथिवी के सम व बुद्धिसे वृहस्पति के सम व यशसे इन्द्रके तुल्य ९ सबे जीवलोकके रक्षकहैं व अपने जनोंकेभी रक्षकहैं अपनेवृत्त व धर्म्म केभी परिपालकहैं १० हे भामिनि रामचन्द्रजी सब लोक व चारोंवर्णों के रक्षकहैं व लोककी मर्य्यादाओंके तो करने व करानेवालेहैं ११ बड़ेदीप्तिमान् अतिपूजित ब्रह्मचर्य्यव्रतमें टिके साधुओंके उपकार जाननेवाले सत्कर्म्मका प्रचार करना जानने वाले १२ राजनीतिमें बड़ेनिपुण व

ब्राह्मणोंके उपासक ज्ञानवान् शीलसम्पन्न सबशास्त्रव्यवहार अच्छीतरह सीखे व शत्रुओंको सन्तप्त करनेवाले १३ व यजुर्व्वेदादि सब वेदों को अच्छीतरह जाननेवाले व वेदवादियोंसे अच्छीतरह पूजित धनुर्व्वेद व वेद व वेदाङ्गोंमें अच्छीतरह निष्ठ १४ जिनका बड़ाभारी काँधा व आजानुबाहु शङ्खसम ग्रीवा सुन्दरमुख हँसियोंकेभी हाड़मूंदे सुन्दर अरुण नयन राम ऐसानाम १५ नँगारके शब्दके समान बोलनेवाले वर्ण सुन्दर शरीर का रङ्ग व बड़े प्रतापवान् सब देह सम जो जितना ऊंचा लम्बा चौड़ा अङ्गचाहिये वह अपने प्रमाणसे अधिक कम नहीं व श्याम उनकेदेहका रङ्गहै १६ ऊरू मणिबन्ध व मुष्टियेतीनस्थान स्थिर व भौंहें वृषण व बाहु ये तीन स्थान लम्बे व केशाग्र वृषण व जानु ये तीनअङ्ग समान व नाभि कुक्षि व छाती तीनअङ्ग ऊंचे व नेत्रके अंत नख व हाथ पावोंके तरवा ये तीन अङ्ग लाल पावँकी रेखा शिरके बाल व लिङ्ग का अग्र भाग ये तीनअङ्ग चीकने स्वर नाभि व चाल ये तीन गम्भीर १७ उदर व कण्ठमें त्रिवली परीं व पावोंका तरवा पावोंकी रेखा व स्तनों की चपुनी ये तीनअङ्ग गहिरे गल लिङ्ग पीठ व फीली ये चार अङ्ग छोटे व तीन घेरायुक्त शिर अंगुष्ठके मूलमें चार रेखा जिनसे चारों वेदों का पढ़ना विदित होताहै व ललाटमें चाररेखाबनी व छानवे अंगुलका ऊंचा शरीर बाहु जानु ऊरू व गण्डस्थल ये चारअङ्ग सम कहीं खाली ऊंचे नहीं १८ भौंहें नासिका के छेद नेत्र कान ओष्ठ औस्तनकी चपुनियां कर्प्पूर मणिबन्ध जानु वृषण गलहरी हाथ पैर व बगलें ये चौदह जोड़े समान यहनहीं कि एक नेत्रादि छोटा एक बड़ा दांत पांति जोड़ा व अपनी बगलका दांत ये समान व सिंह शार्दूल गज व वृषभ इनचारोंकीसी चाल व प्रशंसित अरुण ओष्ठ ऊँची चोंह बाणी मुख नख लोम व त्वचा ये पांच पदार्त्थ चीकने बाहु ऊरू अंगुष्ठ व जङ्घा ये आठ वंशयुक्त १९ मुख नेत्र जिह्वा ओष्ठ तालु स्तन नख हाथ पावँ व मुखका भीतर ये दश स्थान कमलाकार व छाती शिर लिलार गल बाहु कांधा नाभि पाद पीठ कान ये दश बड़ेबड़े व कँखरी कोखि छाती नासिका के छेद कांधा लिलार ये छः ऊँचे अँगुलियोंके पोढ़ केश लोम नख त्वचा लिङ्ग ये नव पदार्त्थ छोटे श्री यश प्रताप इन तीनोंसे युक्त पिता व माता

दोनोंके उज्ज्वल कुलयुक्त इसतरहके रामचन्द्रजी हैं २० व सत्य धर्म्म में रत श्रीमान् ग्रहण करने व अनुग्रह करनेमें रत देश व काल का विभाग जाननेवाले सब जनोंसे प्रिय बोलनेवाले हैं २१ व उनके भाई सुमित्राजीके पुत्र लक्ष्मणजी अनुराग प्रीति रूप व गुणादिकोंसे उन्हींके समान हैं २२ हां इतना अन्तर तो अवश्य है कि वे गौरबर्ण हैं व महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी स्यामवर्णहैं सो वे दोनोंनर शार्दूल तुम्हारे देखने को चटपटाते हैं २३ वे दोनोंभाई तुमको ढूंढ़तेढूंढ़ते बहुतसी पृथ्वी देखते भालते आय हमलोगोंसे मिलगये २४ जब ये लोग वहां तुमको ढूंढ़ते ढूंढ़ते आये तो बहुत वृक्षोंसे सघन ऋष्यमूकपर्ब्बतके नीचे बैठे अपने बड़े भाई बालीके निकाले २५ इसीसे भाईके भयसे दुःखित बानरोंके सङ्ग बैठे बानरोंके अधिपप्रियदर्शन सुग्रीवजीकोदेखा हमलोगभी सत्यप्रतिज्ञ बानरोंके राजा सुग्रीवकी २६ सेवा पहिलेहीसे करतेथे जबकि वे राज्य से निकाले न गयेथे सो तबभी करतेरहे उसीबीचमें चीर धारणकिये व श्रेष्ठधनुष हाथोंमें लिये २७ आये व उन धनुर्द्धर दोनों नर ब्याघ्रोंको बानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवजीने देखा २८ व भयसे मोहितहो कूद उसपर्ब्बत के शिखरपर चढ़गये व उस शिखरपर अच्छीतरह बैठ सुग्रीवजीने २९ तिन दोनोंजनोंके समीप बहुतही जल्द हमीको भेजा व सुग्रीवके बचन से हम वहांजाय उन पुरुष व्याघ्र सबकुछ करनेमें समर्थ ३० व रूप लक्षण सम्पन्नोंके आगे हाथजोरि खड़ेहुये व अपना हाल उनसे कहा उनका पूंछा जब उनका प्रयोजन हमने जाना व उन्होंने हमारा ३१ तो हम उनदोनों पुरुषश्रेष्ठोंको अपनीपीठ पर चढ़ाय वहांलाये व सब बातें महात्मा सुग्रीवसे समझाय बुझाय कहदीं ३२ उनदोनों रामचन्द्र व सुग्रीवकी जब बतकही हुई तो परस्पर बड़ी प्रीति उत्पन्नहुई व तहां उनदोनों कपीश्वर व नरेश्वरोंने ३३ परस्पर अपनीअपनी पूर्ब्बक कथा कह आगतस्वागत किया प्रथम सुग्रीवजीको श्रीरामचन्द्रजीने सान्त्व किया ३४ क्योंकि स्त्री लेलनेकी इच्छासे बड़े तेजस्वी उनकेभाई बाली ने उन्हें निकालदिया था तिसकेपीछे तुम्हारे हरजानेसे जो शोकविशेष कर्म्मकारी रामचन्द्रजीको था ३५ लक्ष्मणजीने बानरेन्द्र सुग्रीवजीसे कहा लक्ष्मणजीके कहे बचन सुन सुग्रीवजी ३६ बहुतही उदास व

ब्याकुल होगये जैसे ग्रहण लगनेके समय सूर्य्य होजातेहैं तिसके पीछे तुम्हारे अङ्गोंमें लगनेके कारण शोभित होनेवाले भूषण ३७ जोकि जब तुम हरी जातीथीं आकाशसे तुमने पृथिवी में छोड़दिये थे वे सब बानरोंके यूथपोंने लाय श्रीरामचन्द्रजीको ३८ हर्षितहो दिखाया पर वे लोग तुम्हारी गति नहीं जानतेथे कि कहां हो वे सब तुम्हारे भूषण व बस्त्र हमोंने उठाय रामचन्द्रजीको दियेथे ३९ वे सब जानों उससमय भी शब्द कररहे थे इससे उनको हृदयमें बारबार रामचन्द्रजीने लगाया ४० व देवताओंको भी प्रकाशित करानेवाले श्रीरामचन्द्रजीने बड़ा रोदनकिया यहांतक कि रामचन्द्रजीके शोककी आग उससमय औरभी बरउठी ४१ इससे वे महात्मा ब्याकुलहो मूर्च्छित होगये व बड़ी देर तक वैसेही लेटेरहे तब हमने व लक्ष्मणजीने तरहतरहकी बातेंकह बड़े कष्टसे उठाये ४२ वे बड़ेमोलके भूषण रामचन्द्रजीने ले फिरफिर लक्ष्मण जीको दिखाय पीछे दोनोंजनोंने सुग्रीवको सौंपदिये ४३ हे आर्य्ये वे रामचन्द्रजी तुमको न देखनेसे बहुत सन्तप्त होरहे हैं जैसे नित्य बरते हुये बड़ेभारी अग्निके समूहसे पर्ब्बत सन्तप्त होताहै ४४ तुम्हारेलिये अनिद्रा व शोक चिन्ता रामचन्द्रजीको सन्तापित करातीहैं जैसे अग्नि अग्न्यगारको सन्तापित कराते हैं ४५ तुम्हारे न देखनेके शोकसे राम-चन्द्रजी कांपा करतेहैं जैसे बड़े भूकम्पसे पर्ब्बत हिलताहै ४६ हे राज-कन्ये सुंदर रमणीय बन व नदियों व झन्नोंके समीप घूमते रामचंद्रजी को बिना तुम्हें देख प्रीतिनहीं प्राप्तहोती ४७ हे जनकात्मजे मित्रबान्धव सहित रावणको मार वे मनुष्यशार्दूल रामचन्द्रजी तुमको शीघ्रही पावेंगे ४८ क्योंकि रामचंद्रजी व सुग्रीवजी दोनोंजनोंने यहीक़ौल कर लियाहै कि रामचंद्रजी तो बालीको मारें व सुग्रीव तुमको ढूंढ़दें ४९ तिसकेपीछे उनदोनों बीर राजकुमारोंके सङ्ग सुग्रीवने किष्किन्धापुरी में जाय युद्धमें बालीको मरवाडाला ५० तब संग्राममें रामचंद्रजीने बाली को मार सुग्रीवको सब ऋक्षों व वानरोंका पति करदिया ५१ हे देवि रामचंद्र व सुग्रीवकी एकता इसतरहसे हुई इसीसे उनके भेजे हमको हनुमान्नामदूत आयेजानो ५२ जब सुग्रीवने इसतरह अपना राज्यपाया तो अपने महाबली बड़े बड़े बानरोंको बुलाय तुम्हारेढूंढ़नेके

लिये दशोंदिशोंको भेजा ५३ व बानरेन्द्र सुग्रीवजी की आज्ञापाय महा पराक्रमी पर्ब्बताकार बानर सबओरको पृथिवीपरचले ५४ तिसीसे सुग्रीवके बचनसे तुमकोढूढ़तेहुये हम व अन्यसब बानर सम्पूर्ण पृथिवीमें घूमतेहैं ५५ जितनीसेना भेजने से बाकीरहीथी उसमेंका एकभाग तो किष्किधामें छोड़ व तीनभाग अपने सङ्गले बालिकेपुत्र महाबलवान् अङ्गदजी इधरकोचलेथे ५६ वे हमसब बानरलोग विन्ध्यपर्ब्बतपर भूल गये इससेमारेशोकके व्याकुलहोगये वहां हमलोगोंको बहुतदिनलगगये ५७ इससे कार्य्यसे निराशहोने व नियमितसमय बीतजाने व सुग्रीवके भयसे हमसबलोग प्राणत्यागकरनेपर उतारूहुये ५८ क्योंकि जब पर्ब्बतोंके दुर्गमस्थान नदीझरना आदिकोंमेंढूंढ़ा व तुम्हारा पतानपाया तो सिवायमरनेके और क्याकरते इसीसे मरनेपर उद्यतहुये ५९ व मरनेकेलिये हमलोग उसीपर्ब्बतके ऊपरचढ़गये तब सबबानर श्रेष्ठोंको मरनेपर उपस्थितदेख ६० शोकसमुद्र में बनायमग्नहो अङ्गदरोदन करनेलगे व कहने कि देखो बैदेहीजीहरगईं व बालीकाबधहुआ ६१ व हम सबबानर मरनेपर उद्यतहैं व जटायुका मरणहुआ इसतरह स्वामीकेकार्य्यसे निराश व मरनेकेलिये निरशनब्रतकिये तिन हमलोगों के ६२ कार्य्यकेहेतु गृध्रराजजटायुका सहोदरभाई बड़ावीर्य्यवान् पक्षी सम्पातिनाम गृध्रोंकाराजा हमलोगोंके निकटआया ६३ व अपने भाई जटायुका बधसुन बड़ाकोपकर हमलोगोंसेबोला कि हमारे छोटेभाईको किसनेमारा व वह कहां मारागयाथा ६४ हे वानरोत्तमो हमयह तुमलोगोंसे जाननाचाहतेहैं तबजिसतरह जनस्थानमें उसकामहाबध ६५ तुम्हारेउद्देश से भयङ्कररूपधारी रावण ने किया अङ्गदनेसबकहा तब जटायुका बधसुन अरुण केपुत्र उस सम्पाति ने ६६ हे वरारोहे तुमको रावणकेस्थानमें बसीबताया तिससम्पातिके प्रीतिबर्द्धन बचनसुन ६७ अङ्गदादिहम सब बानरलोग चलनेपर उद्यतहुये व विन्ध्यपर्ब्बत परसे उतर समुद्रके किनारे आये ६८ व तुम्हारे दर्शकरने के लिये हर्षित व पुष्टहो अंगदादिसब बानरबनाय समुद्रकेतटपर पहुँचे ६९ वहां तुम्हारे देखनेकेलिये यहांआनेके बिषयमें इच्छातोसबोंकीहुई परनाँघनेके भयसे सब चिन्ताकरनेलगे तब हमनेदेखा कि यह बानरोंकी सेना सागरदेख

उतरनेकेमारे कष्टितहैं ७० इससे सबकाकठिन भयकुड़ाय सौयोजनका समुद्रनाँघआये व इसीरात्रिको राक्षसोंसे भरी लंका भी हमनेदेखी ७१ रावणको भी देखा व शोकपीड़ित तुमकोभी हे अनिन्दिते यह सबवृत्तांत हमने तुमसेकहा ७२ अब हे देवि हमसे अच्छीतरहबोलो क्योंकि हम श्रीरामचन्द्र जी के दूतहैं व तुम्हारेलिये रामचन्द्रजी के भेजे यहांआयेहैं ७३ हमको पवनकेपुत्र व सुग्रीवके मन्त्रीजानो सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ तुम्हारे प्राणनाथ श्रीरघुनाथजी कुशलीहैं ७४ व तुम्हारेभर्त्ता श्रीरामचन्द्रजी अपने गुरूके आराधन करनेमें युक्त शुभलक्षणवाले लक्ष्मणजी तिन वीर्य्यवान् तुम्हारे पतिके हितमेंनिरतहैं ७५ सुग्रीवकेबचनसे हम अकेलेही यहांआयेहैं व सहायरहित कामरूपी घूमतेहुये ७६ व तुम्हारा मार्ग्गढूंढ़तेहुये हमने यहदक्षिणदिशा सबमझाई बड़ेभाग्यकी बातहै कि हमतुम्हारे देखनेको शोचते व तुमको मृतक समझतेहुये बानरोंके सैन्य से ७७ तुम्हारे समाचारकह उनकासन्ताप दूरकरेंगे व बड़े भाग्यकी यह भी बातहुई कि समुद्रनाँघ हमारा यहांकाआना न ब्यर्थहुआ ७८ हे देवि हमतुम्हारे दर्शनकरनेका यह यशपावेंगे व महावीर्य्य श्रीरामचन्द्रजीभी शीघ्रही ७९ पुत्रबान्धवसहित रावणकोमारतुमकोप्राप्तहोंगे जो कहोकि तुमतो बानरहो पवनके पुत्रकैसे उसका वृत्तान्तयहहै कि पर्व्वतोंमें उत्तम एकमाल्यवान्नाम पर्व्वतहै ८० तिस पर्व्वतपरसे केसरी नाम बानर गोकर्णनाम पर्व्वतपरगये ये केसरी हमारेपिताहैं इन्हों ने देवर्षियोंकी आज्ञासे समुद्र के जलमेंपैठ शम्बसादननाम दैत्यकोमारा ८१ इन्हीं केसरीजीकी अञ्जनानाम स्त्रीमें हमपवनसेउत्पन्नहैं व अपनेही कर्म्मसे लोक में हनुमान्नाम से प्रसिद्ध हैं ८२ हे बैदेहि हमने अपने पिताके गुण तुम्हारे विश्वास के लियेकहे हे देवि बहुतहीजल्द श्रीरामचन्द्रजी तुमको यहांसेले जायँगे ८३ जब इसतरहसे बहुतहेतुओं से शोककेमारे दुर्ब्बल सीताजी विश्वासित हुईं तब इनसिद्धपतोंसे हनुमान्जीको उन्होंने सत्य सत्य रामचंद्रजीका दूतसमझा ८४ व बड़े हर्षको जानकीजी प्राप्तहुईं व टेढ़ी पलकवाले नेत्रोंसेआनंदके आँशुछोड़ने लगीं ८५ उससमय ताम्रवत् अरुण व बड़ेनेत्रोंसे युक्त तिनका मनोहर मुखराहुसे छूटे चन्द्रमाकेसमान शोभितहुआ ८६ व हनुमान्जीको बानर

माननेलगीं और राक्षसादिकी भ्रान्ति जातीरही तब हनुमान्जी प्रिय दर्शना सीताजीसे फिर बोले ८७ हे मैथिलि यह सब वृत्तान्त तो हमने तुमसे कहा अब प्रसन्न होवो अब हम रामचन्द्रजीके समीप जायँगे तुमको क्या रुचता है ऐसेही चलेजायँ वा और कुछकरें ८८ क्योंकि जब शम्बसादन असुर महर्षियोंके कहनेसे कपियोंमें बड़ेबीर हमारे पिता केशरीजी से मारागया तब हम पवनसे अपनीमातामें उत्पन्नहुये हैं इससे यद्यपि वानरहैं परन्तु प्रभावसे पवनहीके समानहैं ८९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चत्रिंशस्सर्गः ॥ ३५ ॥

महातेजस्वी पवन के पुत्र हनुमान् जी सीताजी के बिश्वासकेलिये नम्रताके साथ फिरबोले १ हे देवि हम वानरहैं व धीमान् श्रीरामचन्द्र जीके दूतहैं देखो रामनामाङ्कित यह उनकी अँगूठीलायेहैं २ यह तुम्हारे विश्वासके लिये तिन महात्माने दी है व हमलाये हैं अब तुम्हारे दुःख क्षीणहोगये इसेदेख स्वस्थचित्त होवो ३ पतिके हाथकी अँगूठी ले बार बार उसकोदेख अपनेपति को पायेही के समान सीताजी हर्षितहुईं ४ उस समय अरुण व शुक्ल व बड़ेनेत्रों सहित सीताजी का अति मनोहर मुखारविन्द हर्षकेमारे राहुग्रस्त होनेसे छूटजाने पर चन्द्रमा के समान शोभितहुआ ५ व अपने स्वामीके सन्देशसे हर्षितहो लज्जावती जानकीजी प्रसन्नहो व अच्छी तरह प्यारकर हनुमान्जी की प्रशंसा करने लगीं ६ हे वानरोत्तम तुम बड़े विक्रमी व समर्थ व बड़े पण्डितहो क्योंकि जो तुम अकेलेही इस राक्षसस्थान को निर्भय चलेआये ७ यह मकरादिकोंका स्थान सौ योजन का सागर बड़ाई करने के योग्य विक्रमवाले तुमने गायकेखुरके समान करदिया ८ हे वानरश्रेष्ठ जिस तुमको रावणसेभी त्रास व सम्भ्रम नहीं तिसतुमको हम प्राकृतवानर नहींसमझतीं ९ हे कपिश्रेष्ठ तुमजरूर हमारे वार्त्ताकरनेके योग्यहो क्योंकि परमविज्ञानी श्रीरामचंद्रजी के भेजे हो १० क्योंकि अतिदुर्द्धर्ष श्रीरामचन्द्र जी बिना परीक्षित व बिना पराक्रम जाने हमारे पास तुमको कभी न भेजते ११ बड़ेभाग्यकी बातहै कि धर्म्मात्मा व सत्यप्रतिज्ञ श्रीरामचन्द्रजी व महा तेजस्वी सुमित्राजीके आनंद बढ़ानेवाले लक्ष्मणजी कुशलपूर्वक हैं १२

भला जो श्रीरामचंद्र जी कुशली हैं तो कोप से समुद्र पर्यंत इस पृथिवीको युगांतके अग्निके समान क्यों नहींभस्म करडालते १३ अथवा वे रामलक्ष्मण देवताओंको भी दण्डदेनेमेंसमर्थहैं परअभी हमारे दुःखोंके विनाशका कालनहींहैइसमानतीहैं १४ भला रामचन्द्रजी व्यथिततो नहींहोते व परितप्ततो नहींहोते व पुरुषोत्तम अपने सबकार्य्य तो कियेजातेहैं व दुःखसे उतरनेकेयत्नतोकरतेहैं १५ भला सम्भ्रान्तहो दीन तो नहींहोजाते व कार्य्य करनेमें मोहित तो नहींहोते भला वे राजकुमार पुरुषोंके कार्य्य करतेहैं १६ भला मित्रों व अमित्रोंके सुहृद भी रामचन्द्रजी इसलोक व उसलोकका उपाय व ब्रह्म विष्णु महादेव इनतीनोंके प्रेरक होनेसे तीन तरहके उपाय विजय करनेकी इच्छासे करतेजातेहैं १७ भला मित्रोंको प्राप्तहोतेहैं व मित्रोंके सङ्ग उठते बैठतेहैं व भला कल्याण मित्र श्रीरामचन्द्रजीका मित्रलोग आदर सत्कार करतेहैं १८ भला महाराज कुमार रामचन्द्रजी देवताओंके शत्रुमार देवोंकी प्रसन्नता ग्रहणकरतेहैं व भला दैवबल पुरुषार्थ इनका भी स्मरण करतेहैं १९ भलाहमारे न होनेसे श्रीरामचन्द्रजी स्नेहरहित तो नहीं होगये भलाहमको इसदुःखसे कभीछुड़ावेंगे २० भलासदा सुखोंकेही योग्यरामचंद्रजी अबपीछेसे असुखोंके योग्यहो उत्कृष्टदुःखपाय कष्टिततो नहींहोते २१ भला कौशल्याजी व सुमित्राजी व भरतजीका कुशल बार बार सुनाईदेताहै २२ भला हमारे निमित्त उत्पन्न शोकसेव्याकुल सदा मानही पानेकेयोग्य राघवजी अन्यत्र मनलगातेहैं व हमको इसदुःखसे उबारेंगे २३ भलाहमको छुड़ानेकेलिये भ्रातृवत्सल भरतजी मन्त्रियों से रक्षित भयङ्कर व कई अक्षौहिणीकी सेनाभेजेंगे २४ भला दन्तवन खहीको आयुधबनाये वानरोंको सङ्गले बानरोंके अधिपति सुग्रीवजी हमकोछुड़ानेको आवेंगे २५ भला सुमित्राकेआनन्द बढ़ानेवाले व अस्त्रशस्त्र चलानेमें चतुर व शूर लक्ष्मणजी वाणोंके समूहसे राक्षसोंको मारेंगे २६ भला हमथोड़ेही दिनोंमें अतिकराल आयुधसे श्रीरामचन्द्र के मारेहुये सहित परिवार रावणको रणमेंपरादेखेंगी २७ भला तिन रामचन्द्रजी का सुवर्णके रङ्गका व कमल के गन्धका मुख विनाहमारे शोककेमारे जलन होनेपर घामलगने से कमलके समान सूख तो नहीं गया २८

औ रामचंद्र धर्म्मवान् अपना राज्यछोड़ हमको भी सङ्गले वैदर बनको चलेआये तिसपरभी जिनको न भय हुआ न शोक भला वे रामचंद्रजी अब हृदयमें धैर्य्यधारण करतेहैं २९ इन रामचंद्रजी को स्नेहके कारण हमसे अधिक व हमारे समान माता पिता व औरही कोई नहींहै इससे हे दूत जब तक परमप्रिय रामचंद्रजी की कथा सुनतीहैं तभी तक हम जीतीहैं ३० इसतरह सीताजी महार्थयुक्त मधुरबचन तिन वानरेंद्र से कहा फिर रामचंद्रके अर्थसे युक्त तिन हनुमान्जीके बचन सुननेकेलिये चुपहोरहीं ३१ सीताजीके बचन सुन भीमविक्रमवाले हनुमान्जी हाथ जोर अपने शिरपर धर मुख नीचेकर उत्तर बचन बोले ३२ कि कमल दल लोचन श्रीरामचंद्रजी तुमको यहांस्थित नहींजानते तिसीसे शीघ्र तुम्हारे लेनेको यहां नहीं आये जैसे इंद्र शचीके लेनेके लिये ३३ अब जैसेही हमारे बचनसुनेंगे वैसेही ऋक्ष व बानरोंकी बड़ीभारी सेनालिये श्रीरामचंद्रजी तुरंत आवेंगे ३४ व इस अक्षोभ्य समुद्र को अपने बाण समूहों से पाट इस लङ्कापुरी को राक्षस रहित करदेंगे ३५ व जो इन राक्षसों के बीचमें मृत्यु व सब देवता व असुर भी पड़ेंगे तो उनको भी रामचंद्रजी मारडालेंगे ३६ हे आर्य्ये तुमको न देखनेसे उत्पन्न शोकसे परिपरित श्रीराघवजी सुख नहींपाते जैसे सिंहसे पीड़ित गजराज३७ हे देवि हम मन्दराचल मूल व फल मलयाचल व विंध्याचल व मेरु व दर्दुरनाम पर्व्वत की सौगंद खातेहैं ३८ कि सुनयने मनोहर बिम्बवत् ओष्ठयुक्त व शोभन कुण्डल सहित पूर्णचंद्रसम उदित श्रीरामचंद्रजीका मुखारविंद बहुतही शीघ्र देखोगी ३९ हे वैदेहि प्रस्रवण पर्व्वत पर विराजमान रामचंद्रजीको बगलमें बहुत हाथी युक्त ऐरावत गजपर चढ़े इंद्रके समान शीघ्रही देखोगी ४० रामचंद्रजी सुग्रीवके संसर्गसे प्राप्त राज्यसुख नहीं करते इसीसे कोई मीठीबस्तु नहींखाते केवल जबसंध्या होजातीहै तो मुनियोंके लिये बनमें उत्पन्न तिनी पसाढीका भात थोड़ा सा भोजन करलेतेहैं ४१ जबसे तुम वहांनहींहो तबसे अपनेऊपर राम-चंद्रजी मारे शोकके डांश मशक कीड़े मकोड़े व सर्प्पोंकोभी अपने ऊपर चढ़आने व काटनेपरभी नहीं दूरकरते ४२ रामचंद्रजी नित्यही तुम्हारे ध्यानमें लगे रहते व नित्यही शोकयुक्त रहते जब इच्छाके वशीभूतहोते

तो सिवाय तुमको और किसीका स्मरण नहींकरते ४३ रामचन्द्रजी बहुधा तो सोतेही नहीं कदाचित् सोय भी गये तो सीता ऐसा शब्द मधुर वाणीसे कहतेहुये जागपरतेहैं ४४ उत्तमफल वा पुष्प वा औरकुछ स्त्रियोंका मन हरनेवाली चीज जैसेही देखतेहैं तुमको स्मरणकर हाप्रिये ऐसा पद बहुत बारतक कहा करतेहैं ४५ हेदेवि वे महात्मा व्रत धारण किये राजकुमार श्रीरामचन्द्र जी नित्यही परितप्यमानहो हे सीते ऐसा कहते तुम्हारेही पानेका यत्न किया करतेहैं ४६

कुण्डलिका ॥

सीता रघुवरकी कथा सुनिकै भई विशोक ॥
रामहि शोकित सुनि वहुरि तासोंभई सशोक ॥
तासोंभई सशोक ताहि सम दुख इन व्यापा ॥
कम्पित भे सबगात नहीं कछु तनिक ध्वसाता ॥
शरद लगत युत मेघ यथा यामिनी प्रतीता ॥
तथा भई त्यहिकाल जनक तनया सुठिसीता १ । ४७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेषट्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३६

हनुमानजी के धर्म्मार्थ सहित बचन सुन पूर्ण चन्द्रमुखी सीताजी धर्म्मार्थ सहितही बचनबोलीं १ हेवानर जो रामचन्द्र जी मारेशोक के व्याकुल होनेसे अन्यपदार्थों में मन नहीं लगाते यह बचन तुमनेकहा वह विषयुक्त अमृतके समानहै २ चाहेपुरुष बड़ेऐश्वर्य्यमें पड़ाहो अथवा दारुणदुःखमें परन्तु कालमानों रस्सीमेंबाँध उसको घसीट लेजाताहै ३ हेवानरोत्तम परमात्मा किसीकेहरने के मानका नहींहै प्राणियों को वह जहांचाहता लेजाताहै देखो लक्ष्मण व हम व रामचन्द्रजी सब दुःखोंसे मोहितहैं ४ इसशोक के पारको रामचन्द्रजी कैसे जायँगे जैसे नावडूबजानेपर पैरताहुआ पुरुष सागरमें पार नहींजाता ५ राक्षसोंका वधकर व रावणको मार व लंकाको उन्मथितकर प्राणनाथ रघुनाथजी हमको कबदेखेंगे ६ उनसेकहना कि जल्दीकरो जबतक यहवर्ष नहीं पूर्णहोता तभीतक हमारा जीवन है ७ क्योंकि रावण क्रूरने हमारेलिये यहां अलग जीतीरहनेको वर्षभर का समय नियत करदियाहै उसमें यहांआये हमको यह दशवाँमास बीतताहै केवल दोमास और बाकी रहेहैं ८ सो

भी तिसके भाई बिभीषण ने हमारे मारडालने के विषय में बहुत कुछ समझाया व नीतिशास्त्र की बहुतसी ऊँचीनीची बातें उसकोकहीं तिससे अब मारने से वर्षदिन तक निवृत्त है बिभीषण ने यह भी कहाथा कि रामचन्द्रजीकी भार्य्या उन्हींको सौंपआवो परउसको यहबात नरुची ६ क्योंकि काल के बश प्राप्तरावण को संग्राम में मौत ढूंढ़रहीहै इससे उसको हमारा देना नहीं रुचता १० यह बात हमने बिभीषणकी ज्येष्ठ कन्या अनला से सुनीहै उसने अपनी माता के मुखसे सुन यहां आय हमसे कहाहै ११ व रावणका मन्त्री एक बड़ामेधावी विद्वान् राक्षसोंमें श्रेष्ठ धारणावान् शीलवान् व वृद्ध अबिन्ध्यनाम राक्षस है १२ उसने बहुत तरहसे कहा कि रामचन्द्रकी ओरसे राक्षसोंका नाश प्राप्तहुआ है इससे जानकी रामचन्द्र को देदो परन्तु वह दुष्टात्मा रावण अपनाहित उसका बचन सुनताही नहीं १३ हे कपिश्रेष्ठ हमारा अन्तःकरण शुद्धहै व तिन रामचन्द्रजी में बहुत गुणहैं इससे हम कहसक्तीं हैं कि हमारे स्वामी हमको शीघ्रमिलेंगे १४ हे वानर इत्साह पौरुष सत्व अक्रूरता कृतज्ञता बिक्रम व प्रभाव ये सब पदार्थ श्रीरामचचंद्रजीमें हैं १५ जिन रामचंद बिना अपनेभाईहीके जनस्थानमें चौदहहजार राक्षस मारडाले भलाकौन ऐसा शत्रुहै जो उनसे न डरे १६ इन रामचंदजीकी व इन दुःख प्रापक राक्षसोंकी बराबरी नहींहोसक्ती क्योंकि जैसे शची इन्द्रकाप्रभाव जानतीहैं वैसे हम श्रीरामचन्द्रजीका प्रभाव अच्छीतरह जानतीहैं १७॥

चौ० शर समूह कहँ किरण बनाये। शूर राम दिनकर समभाये॥
वैरी राक्षसमय जल आपू। सोखि लेहिंगे नहिं कछु दापू १।१८॥

रामचन्द्रजीके अर्थ इसतरह शोक से दुर्व्बल आँशु नेत्रोंसे बहाती व बारबार ऐसाकहती सीताजी से हनुमानूजीबोले१६ कि हमारे बचन सुनतेही ऋक्षों व वानरोंकी बड़ीभारीसेना संगलिये श्रीरामचन्द्रजी शीघ्रहीआवेंगे २० अथवा हेआनन्दिते तुम हमारीपीठपरचढ़ो हम तुमको अभी इसराक्षसकेदुःखसेछुड़ायेलेतेहैं २१ तुमकोपीठपरचढ़ाय हमअच्छी तरहसे समुद्रउतरजायँगे क्योंकि हमारेतो इतनीशक्तिहैकि सहितरावण इस लङ्काको पीठपर धर समुद्र उतरजायँ २२ इससे प्रस्त्रवणनामपर्वत पर टिके रामचन्द्रजीके निकटआजही तुमको लेजायबैठादेंगे जैसेअग्नि

खौर इंद्रके निकट पहुँचा देताहै २३ हे बैदेहि आजही लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीको देखोगी जैसे सबलोगोंने हिरण्यकशिपु के मारने के समय झटपट प्रकट विष्णुजीको देखाथा २४ व रामचन्द्रजी तो तुम्हारे दर्शनकी अभिलाषा किये पर्व्वतके ऊपर इंद्रके समान बैठेही हैं व युद्ध करनेको भी तैयारही हैं २५ हे शोभने अब आगे पीछे न करो झटपट हमारी पीठपर चढ़ीही लो व रामचन्द्रजीके साथ अपने योगकी इच्छा करो जैसे चन्द्रमाके साथ रोहिणी अपनायोग चाहती है २६ व जैसे शची इन्द्रके साथ व सुवर्च्चला सूर्य्यके साथ हमारीपीठपर चढ़ो व आकाशमार्ग्गहो समुद्र उतरो २७ व जो हम तुमको यहांसे लेकरचलेंगे तो हमारे पीछेपीछे कोई भी लङ्कानिवासी नहीं दौड़सक्ते २८ हे बैदेहि जिसतरह हमयहांको आयेहैं उसीतरहतुमको ले यहांसे फिर चलेजायँगे तुम देखलेना २९ वानरश्रेष्ठ से अद्भुत बचन सुन हर्षसे सर्व्वाङ्ग विस्मितहो जानकीजी बोलीं ३० हे हनूमान् इतनी दूरका मार्ग्ग है हमको तुम कैसे लेजाया चाहतेहो हे हरियूथप हमतो वही बानरों का बल थोड़ासा मानतीहैं इस तरहका नहीं ३१ हे बानरर्षभ तुम्हारा शरीर तो बहुत छोटाहै तुम हमको हमारे भर्त्ताके समीप कैसे पहुँचाना चाहतेहो ३२ सीताजीके बचनसुन मारुतसुत हनुमानूजी लक्ष्मीवान्तो थेही शोचनेलगे कि आज सीताजीने पहिलपहिल हमारा यह अनादर किया जो कहतीहैं कि तुमतो छोटेसे हो हमको कैसे लेजावगे ३३ सो ये हमारा सत्व व प्रभाव नहीं जानतीं तिससे अबजो रूप हम धारण करेंगे वह बैदेहीजी देखें ३४ यहशोच बानरसत्तम हनुमानूजीने बैदेही जीको अपना स्वाभाविकरूप दिखाया ३५ उस वृक्ष परसे कूद भूमिमें आय सीताजीके विश्वासके लिये बानरसत्तम बढ़नेलगे ३६ यहांतक कि मन्दराचलके व सुमेरुपर्व्वतके समान प्रकाशितहो शोभित होनेलगे व सीताजीके आगे खड़े होगये ३७ पर्व्वताकार लालमुख महाबल व बज्रवत् दांत नख इसतरह महाभीमरूप बनाय हनुमानूजी बैदेहीजीसे बोले ३८ कि देखो पर्व्वत बन व देश सहित व अटारी प्राकार तोरणादि सहित व सहित स्वामी इसलङ्काको उठालेजानेकी शक्ति हममेंहै ३९ तिससे अब बुद्धिस्थिर करो बिकांक्षा करनेकी कुछ ज़रूरत नहीं

हे वैदेहि चलो रामचंद्रजी व लक्ष्मणजीको विशोक करो ४० तिसको पर्व्वताकार देख पद्मपत्र विशालाक्षी जानकी जी मारुतके और सपुत्र हनुमान्जीसे बोलीं ४१ हे महाकाये हम तुम्हारा सत्व व बल जानती हैं कि तुम्हारी बायुकीसी तो गति है व अग्निकासा अद्भुत तेज ४२नहीं तो अन्य प्राकृत कपि इस अपार समुद्र के इसपार की भूमिमें कैसे आसक्ता ४३ हम जानतीहैं कि तुमको चलेजाने व हमको भी लेजानेकी शक्ति है तथापि अपने कार्य्यकी सिद्धि अवश्य बिचारकरनेके योग्य है ४४ हे वायुवेगकपि श्रेष्ठ तुम्हारे साथ हमको जाना अयोग्यहै क्योंकि जबतुम अपनेवेगसे चलोगे तो वहवेग हमको मोहित करदेगा ४५ जब तुम बड़े वेगसे आकश मार्ग्गहो चलोगे व समुद्र के ऊपर ऊपर जावोगे तो हम फिर तुम्हारी पीठपरसे गिरपड़ेंगी ४६ व मकर नक्र महामीन युक्त समुद्रकेभीतर चलीजायँगी व बिवशहोजल जन्तुओंको उत्तम भोजन होजायँगी ४७ इससे हेशत्रुबिनाशन तुम्हारे सङ्ग हम नहीं जासक्तीं क्योंकि स्त्री सङ्गले तुम्हारे जानेमें भी हमको सन्देहहै ४८ क्योंकि जब हमको ले तुम भागोगे तो बड़े भीम विक्रमी राक्षस दुष्टात्मा रावणके भेजे तुम्हारे पीछे पीछे दौड़ेंगे ४९ तब हेबीर हम स्त्री को संगलिये तुम शूल मुद्गर हाथमें लिये तिन शूर राक्षसों के घेरमें पर संशय युक्त होजावगे ५० क्योंकि उस आकाश मार्ग्गमें नानाप्रकारके आयुधलियेराक्षसलोग तो बहुतहोंगे व निरायुध तुमअकेले तब तुम कैसे अच्छीतरह चल व हमको भी सँभार सकोगे ५१ जब उन क्रूर कर्म्मकारी राक्षसोंसे तुमसे युद्ध होनेलगेगा तो मारे डरके हम जरूर तुम्हारी पीठपरसे गिरपड़ेंगी ५२ अथवा राक्षसलोग बड़ेभयङ्कर व बड़े भारी व बड़े बलवान् तो होतेही हैं किसीतरह संग्राममें उन्होंने तुमको जीतलिया ५३ अथवा तुम उनके संग लड़ने लगे व हमारे ऊपर तुम्हारी दृष्टि न रही व हम गिरपड़ीं तो वे पापी राक्षस हमको पकड़ फिर यहींको लावेंगे ५४ अथवा उन्होंने तुम्हारे हाथहीसे हमको छोर लिया वा तुम्हारे ऊपरही चढ़े चढ़े हमको मारडाला तो कैसे बनेगा फिर युद्ध में जय वा पराजयकी अव्यवस्था तो होतीहै कौन जाने कैसा होताहै ५५ कदाचित् राक्षसोंके भयसे व मार पीटसे हम उसयुद्धमें मरगईं

तो हे कपिश्रेष्ठ तुम्हारा इतना बड़ाभारी प्रयत्न समुद्र के पार आनाही व्यर्थ होजायगा ५६ अथवा तुम सब राक्षसों को समर में मारसक्ते हो हमने माना व राक्षसोंको तुम्हारे मारडालने रामचन्द्रजीका कुछयशभी नहींहोगा पर हमजो मरजायँगी तो तुम्हाराआना तो जरूरही निरर्थक होगा ५७ अथवा राक्षसोंने हमको तुमसे पायभी न मारा व जायकहीं ऐसे गुप्तस्थान में लेजाकर बैठादिया जहां न वे बानरही जानसकेंगे न रामचन्द्रन्ही ५८ तोभी तो हमारेलियेजो आरम्भ तुमनेकियाहै वह निरर्थकही होजायगा इससे जो तुम्हारेसंग रामचन्द्रजी यहां चलेआवें तो उसमें बड़ागुणहै ५९ अमित तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीकेप्राण हमारेलाभ के अधीनहैं व उनके सब भाइयोंके व तुम्हारे व राजकुलकेभी प्राण६० इससे हमारे मरजानेपर निराशहो मारेशोकके दुर्ब्बलहो सबऋक्षों व वानरोंकेसाथ दोनोंभाई प्राणत्याग करदेंगे ६१ इसकेसिवा यह हमारी एक और भी प्रतिज्ञाहै कि अपने भर्त्ताकी भक्तिको आगेकर श्रीरामचन्द्र के सिवाय अपनेबूते और किसीपुरुषकी पीठछूना हमनहींचाहतीं ६२ व जो हमसे जबरदस्ती रावण ने अपने गात्रछुआये तो हम अबशथीं व असमर्त्थथीं क्याकरें कोईनाथतो उससमय हमाराथाहीनहीं इससेबिवश होगईं उसने अपनेरथपर बैठालिया कुछ हमअपनी इच्छासेनहींगईं६३ जो रामचन्द्रजी यहांआय सपरिवार रावणकोमार हमको यहांसे लेचलें तो यहबात उनकेयोग्यहो ६४ तिनमहात्मा व रणमें शत्रुओंके मर्द्दन करने वाले रामचन्द्रजीके गुण बहुत हमनेसुनेहैं व बहुत देखभी हैं कि देवता गन्धर्व्व सर्प व राक्षसादि कोईभी संग्राममें रामचन्द्रजीके समनहीं हैं६५ महाधनुषलिये इंद्रतुल्य पराक्रमी लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीको संग्राममें बायुसे प्रेरित बरते अग्निके समान देख कौन सहसकेगा ६६ हे बानर समरमर्द्दन व दिशा गजके समान मत्तहोटिके सहित लक्ष्मण रामचन्द्रजीको युगान्तके सूर्य्यके समान क्रोधकिये तपतेदेख समरमें कौन सहसकेगा ६७ हे कपिश्रेष्ठ तिससे लक्ष्मण व सुग्रीवादिकों के साथ हमारे प्राणप्रिय रामचन्द्रजीको शीघ्र यहांलावो व बहुतदिनों से रामचन्द्रजीके शोकसे कर्षित हमको हे बानरवीर हर्षितकरो ६८ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेसप्तत्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३७ ॥

वाक्य जानने में बड़े चतुर हनुमान्‌जी सीताजी के तिस बचन से सन्तुष्टहो सीताजीसे बोले १ हे देवि तुमने जोकहा वह स्त्रियोंके स्वभाव के व विशेषकर पतिव्रता स्त्रियोंके बिनय के योग्य बचनहैं २ सत्य सत्य हमारेऊपर चढ़ सौयोजनके चौड़े समुद्रके पारको स्त्रीहोनेके कारण तुम नहीं जासक्तीहो ३ व हे जानकि जो तुमने दूसरा कारण बताया कि रामचन्द्रको छोड़ हम अन्यपुरुषका संसर्ग्ग भी नहीं चाहतीं ४ वहभी तिन महात्मा श्रीरामचन्द्र की पत्नी तुम्हारे सदृशही बचनहै क्योंकि तुम से अन्य कौनस्त्री ऐसे बचन कहसक्तीहै ५ हे देवि जो तुमने रोदनादि कियाहै व जो हमारे आगेकहाहै वह सब रामचन्द्र जी सुनेंगे ६ हे देवि हमने बहुत कारणों व रामचन्द्र जी के प्रिय करनेकी इच्छा से मारे स्नेहके मन भीज जानेसे ऐसा तुमसेकहा ७ एक तो लङ्का में बड़ी कठिनता से औरोंका प्रवेश होनेसे व समुद्र के दुस्तरहोने स व अपनी सामर्थ्य स हमने यह कहा कि सङ्गहीचलो ८ हम अपने गुरुस्नेह व भक्तिसे आजही रामचन्द्रके साथ सँय्योग चाहतेहैं इससे कहाथा और कोईकारण नहींहै ६ हे अनिन्दिते जो हमारेसाथ नहींजाया चाहतीहो तो कोई निशानी तुमभी अपनी दो जिससे रामचन्द्र जी हमको जानें कि वहांतक गये थे १० इसतरह जब हनुमान् जी ने कहा तो देव-कन्याओं सभी अधिक सीताजी मारेप्रेम के गद्गदाक्षर सहित बचन बोलीं ११ कि हमारी यही सबसे श्रेष्ठ निशानी व पता तुम बताना कि चित्रकूट पर्व्वत के ईशानकोण वाले पादपर कि १२ जिस पर बहुत मूल फलादि विद्यमान्‌थे व सिद्ध मुनिलोग उसपर तपस्या कर रहेथे मन्दाकिनीके समीपही है १३ तिसके नानाप्रकार के पुष्पोंसे सुगंधित उपबनोंमें बिहारकर व जलक्रीडाकर हे राम तुम हमारे अङ्कमें बैठगये थे १४ तिसकी थोड़ीही देरमें एक कौवाने आय मांसके लिये हमारे ऊपर टोंट चलाया तब हमने ढेलासे उसे निवारणकिया १५ परंतु वह कौवा हमको काटनेके लिये तहांहीरहा मांसलेनेसे निवृत्त न हुआ क्यों कि उसको भोजन करनेकी इच्छा थी १६ तब हम उस पक्षी के ऊपर कोपकर उसकी ओर जोरसेचलीं यद्यपि क्षुद्रघण्टिका नारा अच्छीतरह पकड़ेरहीं तथापि कुछ हमाराबस्त्र नीचेको खसका उससमय तुमहमको

देख १७ व बहुत हँसे तब हमने लज्जित हो बड़ा क्रोध किया व उस काकसे दारित हम तुम्हारे समीपआईं १८ व थकजानेसे बैठेहुये तुम्हारे कोरामें बैठगईं यद्यपि हम कुछ क्रोधही कियेरहीं तथापि आपने प्रसन्नतापूर्व्वक हमको समझाया बुझाया १९ उससमय हम उस वायससे कोप तो कराईही गईथीं इससे आँशु बहते चलेआतेथे व हम नेत्र पोंछतीथीं तब आपने देखा २० व हेराघव मारेपरिश्रमके थक हम तुम्हारी गोदमें सोयगईं व देरतक सोती रहीं फिर जब हम जागीं तो आप हमारीगोदमें सोरहे २१ तब वहकौवा फिर तहां आया व रामचन्द्रजीके अङ्कमें सोकर उठीहुई हमको २२ प्राप्तहो उस वायसने हमारे स्तनोंके बीचमें टोंटमारी सो एकही बार नहीं फिरफिर उड़उड़ हमको कई बार उसनेकाटा तब रामचन्द्रजी जागे व रुधिरके बूंदचुभीहुई २३ व स्तनोंके बीचमें घावलगी देख महाबाहु श्रीरामचंद्रजी बिषधर सर्प्पके समान श्वास लेतेबोले २४ कि हे हाथीकी सूंड़के समान गोल व चढ़ाउतार जाँघोंवाली किसने तुम्हारे स्तनोंके बीचमें घावकिया वहकौनहै जोपांच मुखवाले रिसाने सर्प्पके साथ खेलताहै २५ यहकह जब चारोंओर निहारा तो वह काक देखपड़ा जोकि नहोंमें रुधिर लगाये हमारीओरको मुखकिये खड़ाथा २६ वह काक इंद्रका पुत्रथा रामचंद्रजी परीक्षाकेलिये इंद्रने भेजाथा वह चालमें पवनके समान तोथाही इससे शीघ्रहीभूतल में प्राप्तहुआ २७ तब महाबाहु श्रीरामचंद्रजी तिसकाकके ऊपर क्रोध युक्त नेत्र कर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ श्रीरामचंद्रजी ने उस काकके विषय में बड़ी क्रूरमतिकी २८ व अपने बिछानेवाले कुशोंमसे एककुश निकाल अस्त्रके मंत्रसे योजितकिया वह अभिमंत्रित कुश उसपक्षीकी ओर कालाग्नि के समान प्रज्वलित हो २९ रामचंद्रजी का प्रेरित उसकाक के पीछेपीछे आकाशमें दौड़नेलगा ३० व वह काक उलटी सीधी तिरछी बहुत चालोंसे उड़ा व अपनी रक्षाके लिये इन्द्रादिकों के सब लोकों में गया व इसलोकमें भी ठौर ठौर घूमा ३१ पर उसको उसके पिताने भी त्यागा व अन्य सब देवता ऋष्यादिकों ने भी इससे तीनोंलोकों में घूम फिर वह तिन्हींके शरणमें आया ३२ जब वह शरणागत हुआ तो यद्यपि मारहीडालनेके योग्यथा तथापि श्रीरामचंद्रजीने कृपासे उसका

पालनही किया ३३ जब वह बनाय खिन्न विवर्णहो चरणों पर गिरा तो रामचंद्रजी बोले कि यह मंत्रित अस्त्रनिष्फल तो नहीं करसक्ते कहो क्याकरें ३४ तब उसने कहा अच्छा हमारा एक नेत्र फोर डालिये प्राणों से न मारिये इसलिये उसका दहिनानेत्र रामचंद्रजीने उसबाण की सफलता के लिये फोरडाला व प्राणोंसे रक्षाकी ३५ तब वह रामचंद्रजी के व राजादशरथजीके प्रणामकर तिन बीररामचंद्रजीसे बिदाहो अपने स्थानको चलागया ३६ हेरामचंद्रजी हमारे निमित्त थोड़ेभी अन्याय करनेपर उस काकके ऊपर आपने ब्रह्मास्त्र रूप कुश मारा जो अबतुम से हमको छीनेलेताहै उसके ऊपर क्यों क्षमाकरतेहो ३७ हे नरश्रेष्ठ महाउत्साहयुक्त कृपा हमारे ऊपरकरो क्योंकि हेनाथ तुमऐसे नाथसे नाथवतीहो हम अनाथके सम दिखाईदेतीहैं ३८ हमने तुम्हींसे सुनाहै कि अक्रूरता परमधर्म्महै व हम तुमको महावीर्य्य महोत्साह व महा बल जानतीहैं ३९ व गम्भीरता के कारण अपार समुद्रके समान व अचल भी सागरही के तुल्य व सहित समुद्र पृथिवी भरके इससमय भी तुमको भर्त्ताजानतीहैं जैसे इंद्र देवलोकके स्वामीहैं ४० आप इस तरह अस्त्रशस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ बलवान् व सत्वान्भीहैं फिर हे राघव राक्षसोंकेऊपर अस्त्र क्यों नहींछोड़ते ४१ यह हमारासंदेश उनसे कहदेना देखा समरमें सर्प्प गन्धर्व्व असुर व पवनादि कोई भी रामचन्द्रजीका वेगनहीं सहसक्ते ४२ जो तिनवीर्य्यवान् रामचन्द्रजीका हमारे विषयमें आदरहै तो तीक्ष्णबाणों से राक्षसोंका नाश क्यों नहीं करते ४३ अथवा अपने भाईकी आज्ञाले महाबली लक्ष्मणजी जो बड़े वीर्य्यवान् व शत्रुओंको सन्तप्त करनेवालेहैं तो वे बली व बीर हमारी रक्षा क्यों नहींकरते ४४ व जो वे दोनोंपुरुष व्याघ्र वायु व इन्द्र के तुल्य तेजस्वीहैं व देवतालोग भी उनकासामनानहीं करसक्ते तो हमारी उपेक्षा क्योंकरतेहैं ४५ इसमें उनकी कुछलगायनहीं वरन हमाराही कोईऐसा दुष्कृतहै कि जिससे वे समर्थ भी हैं पर दोनोंजन हमारी ओर नहींदृष्टिदेते ४६ वैदेहीजी के ऐसे करुणापूर्व्वक आँशुवाय करकहे बचनसुन बानरोंके यूथप हनुमान्जी बोले ४७ हे देवि हम अपने सत्यकी शपथकरकेकहतेहैं कि रामचन्द्रजी तुम्हारेशोकमेंपड़ेहैं व उन्हींके

दुःखसे लक्ष्मणजी भी परितप्त होरहेहैं ४८ अब किसीतरहसे आपदेख पड़ीहैं तो यहकाल शोच करनेका नहींहै बरन इस मुहूर्त्तको दुःखों का नाशक समझो ४९ क्योंकि वे महाबल पुरुष ब्याघ्र राजपुत्र राम लक्ष्मण तुम्हारे देखनेके लिये जो लोकभी अवरोधक होंगे तो उनकोभी भस्म करदेंगे ५० व हे बिशालाक्षि सहित परिवार रावणको समर में मार श्रीरामचन्द्रजी तुमको अपनी पुरीको लेजायँगे ५१ अब आप बतावें रामचन्द्रजीसे कौन सन्देश कहना है व महाबल लक्ष्मणजीसे कौन व महातेजस्वी सुग्रीव से कौन व कौन उन आयेहुये बानरों से ५२ हनु-मानूजीके ऐसा कहनेपर सीताजी फिरबोलीं कि मनस्विनी कौशल्याजी ने जिन लोकभर्त्ता को उत्पन्न कियाहै ५३ तिनसे हमारी ओरसे सुख पूंछना व प्रणाम भी करना व नानाप्रकारके पुष्पोंकी माला सबतरहके रत्न अति प्रिय श्रेष्ठश्रेष्ठ स्त्रियां ५४ व बड़ीभारी पृथिवीमें व स्वर्गमेंभी दुर्ल्लभ ऐश्वर्य्य छोड़ वे पिता माताका मानकर उनकी प्रसन्नता ले ५५ सबतरहके उत्तम सुख त्याग रामचन्द्रजीके पीछे चले व जिससे सुमित्रा जी सुप्रजा हुईं ५६ यहां बनमें आये श्रीरामचन्द्रजीका पालन करते व जो सिंहस्कन्ध व महाबली महाबाहु मनस्वी व प्रियदर्शन ५७ व राम-चन्द्रजीमें पिताकी बुद्धि रखते हमको माता समझते ऐसे लक्ष्मणजीने जब हम हरीगईं तब हमको नहींजाना ५८ वे वृद्धोंके समीप सदा बैठने उठनेवाले व उनकी सेवा करनेवाले अति शोभायमान व सबकुछ कर-सक्ते परन्तु बहुत नहींबोलते राजपुत्र रामचन्द्रजीको प्रिय व सबबातों में हमारे श्वशुरके समान ५९ व हमसेभी अधिक अपनेभाई रामचंद्रजी को प्रिय लक्ष्मणजी जिनको जिस कार्य्यके भार उठाने में उनके भाई लगाते वे परमबीर्य्यवान् उसीको उठालेते ६० जिन लक्ष्मणजीको देख श्रीरामचन्द्रजीको अपने मृतक पिताजीका स्मरण भूलगया तिनलक्ष्मण जीसे हमारी ओरसे कुशल पूंछना ६१ जो लक्ष्मण बड़ेही कोमल चित्त व अति पबित्र सबकार्य्य करनेमें निपुण व रामचन्द्रजीके अत्यन्त प्यारे हैं उनसे इसतरहसे कहना कि जिससे वे हमारे दुःखोंके क्षयकारकहों ६२ हे बानर यूथप तुम्हारे उत्साह करानेसे रामचन्द्रजी हमारे बिषय में यत्न करनेमें तत्पर होंगे इससे इस कार्य्यके निर्ब्बाहमें तुम्हीं प्रमाण

हो ६३ हे दशरथात्मज हम अब एकमास पर्य्यन्त और प्राण धारण करेंगी मास पूर्ण होनेके ऊपर फिर न जीवेंगी यह तुमसे सत्यही कहती हैं ६४ हे हनुमन् हमारे ये बचन महाशूरबीर हमारे नाथ रघुनाथजीसे बारबार कहना कि हे बीर रामचन्द्र पापकर्म्मा रावण के यहां बँधोई में परी हमारीरक्षा करनेके तुम योग्यहो जैसे बराहजीने पातालसे पृथिवी की रक्षाकी है ६५ तिसकेपीछे बस्त्र ओढ़ेही ओढ़े शिरसे चूड़ामणि छोर जानकीजीने हनुमानूजीको दिया व कहा कि यह रामचन्द्रजीको देना ६६ महाबीर हनुमानजीने वह उत्तम मणि पाय अपनी अँगुलीमें पहिर लिया क्योंकि उसके छेदमें हनुमानूजीका भुज न जायसका यद्यपि उनका रूप छोटा भी था ६७ मणिरत्न ग्रहणकर व सीताजीके प्रणाम कर फिर प्रदक्षिणा भी कर फिर माथ झुकाय आगेहनुमानूजी खड़ेहोगये६८ व सीताजीके दर्शनसे उत्पन्न बड़ेभारी हर्षसे युक्तहो मनसे शुभ लक्षण युक्त राम व लक्ष्मणजीके समीप पहुँचे ६९ ॥

कुण्डलिका ॥

मणिवर जो बहु मूल्य अरु जनकसुता धृतनीक ।
अति प्रभावसों पवनसुत निज करसों करि ठीक ॥
निज करसों करि ठीक लीन करि प्रेम बहूता ।
मुदित भये सब गात तबहिं रघुपति के दूता ॥
गिरिवरकी लहि पवन पवनसुत चलन चरणधर ।
अति हर्षित सब गात भये जब पायहु मणिवर १ । ७० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टत्रिंशस्सर्गः ॥ ३८ ॥

मणि दे सीताजी फिर हनुमानूजीसे बोलीं कि यह चिह्न जो हमने तुमको दियाहै रामचन्द्रजी इसे अच्छीतरह पहिचानते हैं १ व इस मणि को देख रामचन्द्रजी अपनी माता व हमको व राजा दशरथजी इनतीन जनोंका स्मरण करेंगे क्योंकि जब बिवाहके पीछे हम अयोध्यामें आईं तो राजा दशरथजीके निकट श्रीरामचन्द्रजीकी माताने यह मणि हमको मुहँदिखौवामें दियाहै २ हे बानरसत्तम जब तुम रामचन्द्रजी को मणि दोगे तो वे मणिपाय युद्धकरनेके बिषयमें तुमको फिर प्रेरित करेंगे इस

से इसकार्य्यमें उत्साह बढ़ानेके लिये तुम अच्छा उत्तर अभीसे शोच रक्खो ३ हे हरिसत्तम तुम इसकार्य्यके करने करानेमें प्रमाणहो इससे वह यत्न बिचारो जो हमारे दुःखका क्षयकारक हो ४ हे हनूमन् तुम यत्नमें टिक दुःखके नाशक हो यहसुन बहुत अच्छा कह भीमविक्रम पवनकुमार ५ शिरसे जानकीजी के प्रणामकर चलने के लिये तैयारहुये वानरके पुत्र वानरश्रेष्ठको चलनेपर तैयारजान जानकीजी ६ गद्गद वाणीसेबोलीं हेहनुमन् रामलक्ष्मण दूनोंजनों से कुशल कहना ७ व मन्त्रियोंसहित सुग्रीवजीसे व सब वृद्धवानरोंसे भी धर्म्मयुक्त कुशल कहना ८ व जिसमें महावाहु श्रीरामचन्द्रजी इसदुःख सागरसे हमको उतारें तुम इसीबातका समाधानकरना ६ हे हनुमन् तुमयहीबात कहना जिससे रामचन्द्रजी हमको जीतीही यहां पावें व उनकी कीर्त्तिबढ़े ऐसे बचनकह तुम वाचिकधर्म्म पावोगे१० हमारी कहीबात प्रतिदिन तुम्हारे मुखसेसुनते सुनते नित्य उत्साहयुक्त रामचन्द्रजीका पौरुषहमारे पानेके लिये बढ़ता रहेगा ११ कुछ रामचंद्रजी भी सुस्तनहीं हैं हमारे सन्देश से युक्त तुम्हारे बचन सुनतेही पराक्रम करनेमें वे बोर बुद्धि लगावेंगे १२ सीताजीके बचनसुन मारुतात्मज हनुमानजी हाथजोर अपने शिर पर धर उत्तर बचनबोले १३ कि ऋक्ष व बानरोंके साथ श्रीरामचंद्रजी शीघ्रही यहां आवेंगे व समर में तुम्हारे इन राक्षस शत्रुओं को जीत तुम्हारा शोकदूरकरेंगे १४ क्योंकि हम मनुष्यों असुरों व सुरोंमेंभी ऐसा किसीको नहीं देखते जो बाण छोड़तेहुये रामचंद्रजीके आगे खड़ाहोसके १५ व तुम्हारे अर्थ रामचंद्रजी संग्राम में सूर्य्य मेघ व यमराजका भी बेग सहसक्ते व उन्हें पराजित करसक्ते हैं १६ वे रामचंद्र जी सागर पर्य्यंत पृथिवीको कौनकहे संसार भरको आज्ञा देसक्तेहैं इससे तुम्हारे निमित्त उनकी जय होहीगी हे जनकनन्दिनि १७ बहुत सत्य व अच्छी तरह कह तिनके ऐसे बचन सुन जानकी जी ने १८ जाना कि अब ये जायाही चाहतेहैं इससे बार बार हनुमानजीकी ओर देख अपनेपतिके स्नेहकी बात अच्छीतरह बिचार हनुमानजीका बड़ा मानकर फिरबोलीं १६ हेबीर हे अरिन्दम जो हमारा कहामानो तो किसी ढकेछिपे स्थान में एक दिन रहजाव फिर सुस्ताकर प्रातःकाल चलेजाना २० क्योंकि

हे बानर तुम्हारे निकट रहनेसे अल्पभाग्यवाली हमारा भी एक मुहूर्त इस शोकका बिध्वंसक होगा २१ व तिसके पीछे जो तुम्हारे फिर यहां आनेमें संदेह हुआ तो हमारे प्राणोंके न रहनेमें कुछ संदेह नहीं वे तो जातेही रहैंगे २२ हे बानर तुम्हारे दर्शनसे उत्पन्न शोक हमको अधिक सन्तापित करावेगा क्योंकि हमको जानो दुःखसे दुःखहीमें डाल और जलावेगा २३ हेवीर यह सन्देह हमारे मनकेआगे टिकताहै तुमजिनके सहायकहो उन ऋक्षों व बानरोंमें बड़ेभारी सुग्रीवजी २४ व वह ऋक्षों व बानरोंकी सेना व वे दोनों भूपति शिरोमणि दशरथजीके पुत्र ये सब दुष्पार समुद्र कैसे उतरेंगे २५ क्योंकि सब प्राणियोंमें तीनही जनोंकी गतिहै कि सागरको नाँघजायँ एक गरुड़की व तुम्हारी व पवनकी २६ तिससे हे बीर इसबड़े दुरतिक्रम कार्य्यके सिद्ध होनेका तुमने कौनसा समाधान बिचाराहै बतावोतो क्योंकि कार्य्यजाननेवालोंमें तुमश्रेष्ठहो २७ यद्यपि इसकार्य्यके साधन करनेमें अकेलेतुम्हीं बहुतहो क्योंकि तुम्हारा फलोदय यशस्यहै २८ तथापि रामचंद्रजीके लायक तो यह कार्य्य तभी होजावे यहां आय सहित सेना रावणको संग्राममें जीत हमको यहांसे लेचलें २९ श्रीरामचंद्रजी जो इस लङ्कामें सब सैन्यही सैन्यभर हमको लेजायँ तो उनके सदृश कामहो ३० तिससे जैसा करनेमें तिन महात्मा के अनुरूप विक्रमहोवे सोतुम बतावो ३१ अर्थयुक्त नम्रता सहित व स कारण तिनके बचनसुन हनुमान्‌जी बोले ३२ हेदेवि ऋक्ष व बानरोंकी सेनाके स्वामी नाँघने कूदनेवालों में श्रेष्ठ सत्यवक्ता सुग्रीवजी तुम्हारे लिये निश्चय करचुके हैं ३३ वे राक्षसों का नाश करनेके लिये किड़ोरों असंख्यों बानर लिये शीघ्रही आवेंगे ३४ कुछ उनको अब सेना ढूंढ़ने की भी आवश्यकता नहींहै क्योंकि बड़े बड़े बिक्रमी सत्ववान् महाबल व जहां मनकरें वहीं पहुंचनेवाले असंख्यों बानर वहां इकट्ठे हैं ३५ जिन बानरोंकी गति न तो ऊपर जानेमें रुँकती न नीचजानेमें न तिरछा चलनें व वे ऐसे अमित तेजस्वीहैं कि बड़े बड़े कर्म्मोंके करनेमें भी कभी कष्टित नहींहोते ३६ व तिनलोगोंने कईबार पर्व्वत समुद्रसहित पृथ्वी की प्रदक्षिणा की है क्योंकि सब बायुमार्ग्गानुसार चलनेवाले हैं ३७ व सब बानर हमसे अधिक व हमारेतुल्य हैं व हमसे न्यून तो कोई भी

बानर सुग्रीव के निकटहैं ही नहीं ३८ फिर जो हमींयहां चलेआये तो तिनसब महाबलोंको क्याकहनाहै व उनलोगोंका हमसे अधिक महत्व तो जानों इसीसे प्रसिद्धहीहै कि जहाँ बड़ेछोटे सब बैठेहोते तो कार्य्य करनेकेलिये छोटेही भेजेजातेहैं बड़े कहींनहीं भेजेजाते इसीसे सबमेंकम जान हमयहांको भेजेगयेहैं ३६ तिससे हे देवि परिताप करनेका कुछ कामनहीं तुम्हारा शोकदूरहो क्योंकि वे बानरलोग एकही कुदक्केमें लङ्कामें आजायेंगे ४० व रहे वे दोनों मनुष्यसिंहसे चन्द्रव सूर्य्यसमान उदितहो हमारीपीठपर सवारहो तुम्हारसमीप शीघ्रहीप्राप्त होजायँगे ४१ व वेमहाबीरनरबर श्रीरामचन्द्र जी व लक्ष्मणजी यहां आयबाणोंसे लङ्कापुरीके चिथड़े उड़ादेंगे ४२ व सबपरिवार रावणको समरमें मार तुमकोले श्रीरामचन्द्रजी अपनी पुरीको चलेजायँगे ४३ तिससे अब अपने मनमें धैर्य्यकरो व कुछदिन कालपरखो बहुतही शीघ्र अग्निसम प्रज्वलित रामचन्द्रजी को देखोगी ४४ जब मन्त्रीदीवान व परिवार सहित रावण मारजायागा तो तुम रामचन्द्रजी के साथ जैसे चन्द्रमाके साथ रोहिणी शोभितहोतीहैं शोभितहोवोगी ४५ हेमैथिलि तुमशीघ्रही शोककापार देखोगी व जबरदस्ती रामचन्द्रजी से माराहुआ रावण भी देखोगी ४६ मारुतसुत हनुमान्‌जी इसतरह बैदेहीजी को समझाय चलनेका बिचारकर फिर जानकीजीसे बोले ४७ तिनशत्रुमारण प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी को धनुष हाथमेंलिये लक्ष्मणजीको लङ्काके द्वारपर खड़े शीघ्रही देखोगी ४८ व नखदाँत आयुधबनाये सिंह व शार्दूलके समान बिक्रमी व ऐरावतादि बड़े बड़े हाथियोंके समान इकट्ठा आयेहुये बान-रोंको भी देखोगी ४६ व पर्ब्बत व मेघोंके आकारके लङ्का में व मलया-चलपर गर्ज्जतेहुये बानरोंके यूथप देखोगी ५० व तुमको बिनादेखे रामचन्द्रजी को खुद क्षणमात्र आनंद नहीं मिलता जैसे सिंहसे पीड़ित हाथीको सुख नहीं मिलता ५१ हे देविशोक से रोदन नकरो व तुम्हारे मनको भयनहो तुम इंद्रकेसाथ इंद्राणीके समानअपने पतिकासाथ पावो गी ५२ रामचंद्र से अधिक चौदहोभुवनमें कौनहै व कौन लक्ष्मणजी के समहै वे दोनोंभाई जिन के आश्रयमें तुमहो अग्निव पवनसेभी अधिक प्रकाशितहैं ५३ ॥

कुण्डलिका ॥

नहिं बसिहौ तुम बहुतदिन देविकहत समुझाय ।
राक्षसगण सेवित अधिक रौद्रदेश महँ आय ॥
रौद्रदेश महँ आय तुम्हारे प्रियंकर सङ्गम ।
बहुत दिनन महँ नाहिं होइहै अति हृदयङ्गम ॥
क्षमहु तबहिलग देवि जातनहिं जबलग मैं वहिं ।
सुनतहि ऐहैं तुरत दयानिधि करहिं विलँबनहि १ । ५४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुंदरकाण्डेएकोनचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ३९ ॥

महात्मा वायुसूनुके बचनसुन सुरकन्याओं से भी अधिक सीताजी अपने हितकीबात बोलीं १ हे बानर अति प्रियवक्ता तुमको देख हम बहुत हर्षित होती हैं जैसे आधाअन्न पकी पृथ्वी वर्षा होने से हर्षित होतीहै २ अब ऐसी कृपा हमारे ऊपर करो जिसमें शोककेमारे दुर्व्वल अङ्गों से तिन पुरुष व्याघ्र रामचन्द्रजी का स्पर्शकर हम सकामहोवें ३ हे वानरों के गुणों में उत्तम रामचन्द्रजी को यह चूड़ामणि हमारा चिन्ह देदेना व दूसरा चिन्ह उस काक की आँखें फोड़नेवाला समाचार कहना ४ व तीसरा चिन्ह यह देना कि एकसमय हमारे मुखमें के सब तिलकादि मिटगये थे तो श्रीरामचन्द्र जी ने अपने हाथसे हमारे एक गण्डस्थल में मैनशिल का तिलक बनादिया था उसकोभी स्मरण करें ५ हे महेन्द्र वरुणोपम श्रीरामचन्द्रजी ऐसे वीर्य्यवान् हो आप राक्षसों के बीचमें बसी हम सीता को कैसे अच्छा मानते हो ६ हे पापरहित यह दिव्य चूड़ामणि हमने रक्षामें रक्खा था जब बड़ा कष्ट होता था तो इसको देख कुछ हर्षित होती थीं ७ जलसे उत्पन्न यह चूड़ामणि तुम्हारे चिन्ह के लिये हमने भेजा है ग्रहण कीजिये व एक मास के ऊपर हम न जीवेंगी सोभी जानिये ८ देखिये असह्यदुःख व हृदय के छेदन करनेवाला लंकाकावास फिर राक्षसों के बीच का रहना ये सब बातें तुम्हारेही लिये सहती हैं ९ हे शत्रुसूदन मासभर हम और जैसे तैसे जीतीरहेंगी जो महीनाभर में तुम न आये तो माससे एकदिन भी

ऊपर हम न जीसकेंगी १० क्योंकि यह राक्षसराज बड़ाक्रूरहै इसीसे हममें सुखदायक दृष्टि नहींरखता वरन सदा मारनाही चाहता है फिर जो तुमको भी कहीं अलग चित्तलगाये सुना कि जिस्से मासभर में न आसके तो क्षणभर भी हम न जीवेंगी ११ रोयरोय व करुणा सहित कहे वैदेहीजीके बचनसुन मारुतसुत हनुमानजी फिर बोले १२ हेदेवि हमतुम से सत्यही कहतेहैं रामचन्द्र जी तुमको नहीं जानते कि यहांहो नहीं तो अबतक जरूर आगयेहोते परन्तु तुम्हारे शोकसे व्याकुल बहुत रहतेहैं व उन्हींके शोकसे लक्ष्मणजी परितप्तहुआ करतेहैं १३ जानकी जी भला अब किसीतरह से आप देखपड़ी हैं यहमुहूर्त्त रोदनकरने का नहींहै वरन इस मुहूर्त्तको दुःखोंका अन्तक समझना चाहिये १४ वे दोनों अनिन्दित पुरुषव्याघ्र रामचन्द्र व लक्ष्मण जी तुम्हारे देखनेही में उत्साह किये हैं इससे लंका तो क्या अन्य लोकोंका भी भस्मकर डालेंगे १५ समर में सहित परिवार रावण राक्षस को मार दोनोंभाई तुमको अपनी पुरीको ले जायँगे १६ पर हे अनिन्दिते इन चिन्हों के विशेष जो कुछ और रामचन्द्रजी को अधिक प्रीति बढ़ानेवाला पदार्थ हो वहभी दीजिये लेतेजायँ १७ जानकीजी बोलीं कि यही जो चिन्ह हमने तुमको दियाहै इसी हमारे केशभूषण चूड़ामणि को देख श्रीराम-चन्द्रजी १८ तुम्हारे बचनमें बिश्वासकरेंगे यहसुन वह मणिवर अच्छी तरह श्रीहनुमानजी ले १९ सीताजीके शिरसे प्रणामकर चलनेपर हुये तिनको ऊपरको उचकने के लिये वेगकिये देख २० जानकी जी बोलीं नेत्रोंसे आँशुबहते थे व मुखसे बोलनहीं निकलता था इस गद्गदवाणी से बोलीं २१ हे हनुमन सिंहवत तेजस्वी व प्रकाशित दोनोंभाई राम लक्ष्मण से व मंत्रियों सहित सुग्रीवजी से यहां का कुशल कहना २२ व जैसा कहने सुनने व करनेसे महाबाहु श्रीरामचंद्र जी हमको इस दुःखसागर के पारलगावें तुम वैसाही करना २३ हेवानर वीर यह हमारे तीव्रशोकका वेग व राक्षसोंकी ओरसे जो हमारा अपमान होता है जोतुमभी देखचुकेहो यह सब रामचंद्रजीके बनाय समीपजाय कहना जाव तुम्हारा मार्ग्ग तुमको कल्याण दायकहो २४ राजकुमारी जानकी जीसे इसतरह संदेश ले कृतार्थ मान व बहुत हर्षितहो हनुमानजी ने

जाना कि बसअब थोड़ासा कार्य्य और बाकी रहाहै और तो सब हो-
गया इससे अपने मनसेही उत्तरदिशा को चले २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचत्वारिंशस्सर्गः ४० ॥

चलनेके समय अच्छी बाणियोंसे जानकीजीकी ओरसे पूजित ह-
नुमानजी तहां से कुछदूरचल अपने मनमें चिंतना करनेलगे १ कि
जानकीजीको हमनेदेखा इससे मुख्यकार्य्य तो सिद्धहोगया परंतु इसीका
पुछल्ला एकछोटासा कार्य्य रहाजाताहै जो कि शत्रुकीसेना हमनेदेखी व
उसकेसङ्ग कुछ उपद्रव न किया परंतु इसमें साम दान व भेद येतीनउपाय
तो चलनहींसक्ते केवल चौथा अर्थात् दण्ड देख परता है २ क्योंकि रा-
क्षसोंके विषयमें नतो साम अर्थात् समझाना गुणकरेगा व द्रव्यसे भरे
पुरेइनराक्षसों में न दानकरनायोग्यहै क्योंकि कोईकहांलक इनकोदेकर
प्रसन्न करेगा व बलकमारे अहंकारी लोगों में भेद अर्थात् तोड़ फोड़
भी नहीं चलसकी इससे इनदुष्टों के साथ पराक्रमही करना हमको
अच्छा लगताहै ३ क्योंकि पराक्रम के सिवाय इसकार्य के लिये और
कुछ निश्चय नहीं देखपड़ती इससे जो कुछ वीर संग्राम में मारेजायँ
तो सायद कुछ ढीले पड़जायँ व सूधी सूधी बातें करनेलगें ४ जो कहो
कि तुमको तो जानकी व रावण के देखनेही के लिये आज्ञाहुई थी अब
व्यर्थ राक्षसोंको क्यों मारना चाहतेहो सो यहबात नहीं क्योंकि जिस
कार्य्य के लिये स्वामीकी आज्ञाहो जब उस कर्म्म की सिद्धिहोजाय उ-
सकेपीछे उसके अनुयायी बहुतसे कार्य्य जो करे परन्तु मुख्य कार्य्य के
कुछ विरुद्धनहो तो वहीकर्त्ता कार्य्यकरनेके योग्यहोताहै ५ व ऐसाकोई
छोटासाभी कार्य्यनहीं जो एकहीसाधक से सिद्धहोसके इससे जो अर्थ
सिद्धकरने के बहुत उपाय जानताहो वह अर्थ साधन में समर्थ होस-
क्ताहै ६ जो हमयहीं रहेरहे शत्रुओंके मनका विध्वंस अच्छीतरह जान
व कुछकर भी सुग्रीवके स्थानकोजायँ तो स्वामीकी आज्ञा करचुके नहीं
तो नहीं ७ अब हम ऐसाकरें कि हठके साथ तो राक्षसों से युद्धहो व
उसमेंभी सुखपूर्व्वकहीं चलेजायँ व रावण भी हमारे पराक्रम व हमको
व अपने बल को अच्छीतरह जानले ८ व युद्ध में रावण हमारे साम्हने

अपने मन्त्री सेनापति सहित आवे तो हम उसका बल व मतजानलें कि कितना इसके बलहै व विचार इसका क्या है तो फिर हम यहां से जायँ अभी क्या जायँ ६ इसकेलिये और कोई अच्छा उपाय नहींहै बस इसक्रूर रावणका अतिप्रिय व नेत्रमनका सुखदायक नानाप्रकारके वृक्ष लतादि से भरा नन्दनवन के सम यह उपवन १० हम विध्वंसिडारैं जैसे सूखावन अग्नि विध्वंसताहै जब यहबन उखड़ पखड़ जायगा तो रावण कोपकरेगा ११ व हाथीघोड़े रथसहित त्रिशूल खड्गपटा आदि अस्त्रशस्त्र धारणकिये बड़ाभारी सैन्य तब रावण यहां भेजेगा उससे हमसे महा युद्धहोगा १२ व संग्राम में महाप्रचण्ड विक्रम वाले राक्षसों को पाय भीम विक्रमवाले हम रावणकी भेजीहुई सब सेनामार सुखपूर्व्वक सुग्रीवजीके स्थानको चलेजायँगे १३ यहविचार पवन के समान क्रोधकर भीम विक्रम हनुमानजी ने अपनी जाँघोंके बड़ेवेग से वृक्षों के उखाड़ने व तोड़नेका प्रारम्भ करदिया १४ हनुमानवीर ने यह प्रमदा वन सबका सब तोड़डाला, जिसमें प्रमत्त पक्षी शब्द करतेथे व नाना प्रकारकेवृक्ष लतादि लगेलगायेथे१५ वहबन वृक्षोंके टूटजानेसे व वापी कूप तड़ागादि जलाशयोंके घाट फूटजानेसे व पर्व्वतोंके चूर्ण होजाने से अतिभयङ्कर होगया १६ ठौरठौर नानाप्रकार के पक्षियोंके रोने चिल्लाने से व जलाशयोंके मर्य्यादा टूटजानेके कारण इधरउधरबहनेसे व कमलों के उखड़पखड़जानेसे१७ वह बन बिलकुल शोभित नहीं होताथा जैसे दावानललगनेसे नहीं शोभितहोता व उसमेंकी लतायें बिह्वल स्त्रियोंके समान नहीं शोभितहोतीथीं१८ लतागृह व चित्रगृहोंके तूड़ फोड़ उजाड़ डालनेसे व पक्षीसर्प्प मृगोंके दुःखितशब्दकरनेसे वशिलागृह वसामान्य गृहोंके गिर पड़जाने से उस महाबनका सबरूप नष्टभ्रष्ट होगया १९ रावणकी स्त्रियोंकी वनस्थली पवनतनय कृत शोकसेतनीहुई व बिह्वल अशोककी लताओंसेयुक्तरक्षाहीनहोनेके कारण अति व्याकुलहोगई २० बहुतसे महाबलवानोंके साथ युद्ध करनेकी इच्छा किये इससे युद्धसम्पत्तिसे ज्वलित एक महाकपि हनुमानजी वहांकी पृथ्वीके पति रावणका महादुःखका कारणकर उसउपबनके बाहर केद्वारपै आयखड़हुये २१ ॥

इत्यार्षेरामायणेसुन्दरकाण्डेएकचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४१ ॥

तिसके पीछे पक्षियोंके चिचियाने व वृक्षोंके टूटनेके शब्दसे सब लङ्का निवासी भयके मारे भ्रम उठे १ व मारे भयके भाग भाग मृग व पक्षी शब्द करनेलगे व राक्षसोंके निकट क्रूरशकुन होनेलगे २ वे राक्षसियां जो जानकीजीको रखातीथीं कुछ सोगईथीं जागपरीं जागनेपर बनकी तो वह दशादेखा व हनुमानूजी को वहां खड़ेदेखा ३ महासत्व व महा बली हनुमानूजीने तिन राक्षसियोंको देख अपनारूप राक्षसियोंके भय पहुंचानेवाला किया ४ तब पर्व्वताकार माहाबल बड़ाभमङ्कर बानरदेख राक्षसियोंने जनकनन्दिनीजीसे पूंछा ५ कि यह कौनहै व किसकाहै व कहांसे किस निमित्त यहां आयाहै व तुम्हारेसाथ इसने वार्तालाप क्यों किया ६ हे विशालाक्षि हमसे कहो तुम कुछ डरो मत व इसने तुमसे कौन सम्वाद किया ७ यह सुन सर्वाङ्ग सुन्दरी पतिव्रता शिरोमणि जानकीजी बोलीं कि कामरूपी राक्षसोंकी अच्छीतरह जाननेमें हमारी क्या गतिहै ८ तुम्हींलोगजानों यह जोहो व जोकरेगा क्योंकि सर्प्पके पांव सर्प्पही जानताहै इसमें कुछभी सन्देह नहींहै ९ हमभी बहुत डरतीहैं नहीं जानती यह कौनहै हमतो जानतीहैं यहभी कोई राक्षसही है क्योंकि यथेच्छ रूपधारी तो राक्षस होतेहीहैं १० बैदेहीजीके बचन सुन राक्षसियां बहुत व्याकुल हुईं कोई तो वहीं रहगईं व कोई रावण से हाल कहनेगईं ११ विकृत मुखबाली राक्षसियों ने विरूप बानरका हाल रावण से कहा १२ हे राजन् अशोक बनिका में एक बड़ा भारी व भयंकर बानर आयाहै वह सीतासे सँव्वाद कर वहां खड़ा है पर उसके विक्रमका कुछ ठीक नहींहै कि कितनाहै १३ व कमल नयनी सीतासे हमलोगोंने बहुतपूंछा परन्तु वे बतानेकी इच्छानहीं करतीं १४ सो वहकितो इन्द्रका दूतहोगा वा कुबेरका वा सीता के ढूंढ़ने के लिये रामचन्द्रजी ने दूत भेजाहोगा १५ तिस अद्भुत रूप बानरने नानारूप गणयुक्त व मनोहर तुम्हारा प्रमदाबन उखाड़ व तोड़डाला १६ ऐसा कोई स्थान वहांबाकी नहींरहा जो तिसने न विध्वंसाहो हां जहां जानकीदेवी रहतीहैं उसको उसने नहीं बिनाशा १७ यहनहीं जानपड़ता कि जानकीको रक्षा करनेकेलिये उतनास्थान उसने नहीं नष्टकिया वा श्रमकेमारे नहीं किया परन्तु जबसबबन तो उसने तोड़डाला तो उतने

के तोड़नेमें कौनश्रमथा इससे जानपड़ताहै कि उसने सीताकी रक्षाही के लिये उतनास्थान छोड़दियाहै १८ जिस चारुपल्लव पत्रयुक्त शिंशुपा वृक्षकेनीचे सीता बैठीहै वह वैसेसी फूलाफला चटक उससे रक्षितबना है १६ जिस कठिन स्वभाव वानरने बनविध्वंसा व सीतासे सम्भाषण किया है तिसकेलिये कुछ आप कठिन दण्डदेने को आज्ञादीजिये २० क्योंकि मनसे तुम्हारी ग्रहणाकीहुई सीतासे ऐसा कौन है जो वार्त्ताकरे व जीता बचजाय २१ राक्षसियों का बचनसुन राक्षसोंका ईश्वर रावण कोपवर्ज्जित नेत्रहो चिताके अग्निके समान बरउठा २२ तिसक्रुद्ध रावणके नेत्रों से आँशुकेविन्दु गिरनेलगे जैसे बरतेहुये दीपकों से दीप्ति सहित तेलकेविन्दु गिरतेहैं २३ ऐसा क्रोधकर अपने तुल्य पराक्रमी किङ्कर नाम राक्षसों को हनुमानूजी के पकड़ने के लिये महा तेजस्वी रावणने आज्ञादी २४ रावणके मन्दिरसे अश्शीहजार किङ्कर नाम राक्षस नानाप्रकार के कूट मुद्गरादि हाथमेंलिये निकले २५ जितने चलथे सबके सब बड़ेबड़े पेटवाले व बड़ेबड़े दांतवाले व घोररूपा महाबल व सब युद्धकरनेको मनकिये व सब हनुमानूजीको पकड़ने पर उद्यत २६ बाहरके फाटकके ऊपर खड़े हनुमान् वानर के ऊपर वे सब एकहीसाथ ऐसेगिरे जैसे पाँखियां अग्निमें गिरतीहैं २७ व विचित्र गदाओं व परिघों व सुवर्णके वहूँटों व सूर्य्यसम प्रकाशित बाणोंसे सबके सब हनुमानूजीको मारनेलगे २८ मुद्गर व पटा व शूलादिकोंसे भी मार व फाँशी व भाला हाथमेंलेले हनुमानूजी की चारोंओर घेर खड़ेहोगये २६ तब महातेजस्वी शोभायमान व पर्व्वताकार हनुमानूजीभी अपनीपूंछ पृथ्वी में पटक बड़ेजोरसे गर्ज्जे ३० मारुतपुत्र हनुमानूजीने महा पर्व्वताकार शरीर बनाय अपनीपूंछ ऐसे जोरसे दमारी कि उसके शब्दसे सबलंका भरगई ३१ उस बड़ेभारी शब्दकेहोनेकी धमकसे आकाशमें उड़तेपक्षी भूमिपरगिरपड़े व उसकेपीछे ऐसाबड़ेजोरसे पवनतनय बोलेभीकि ३२

हरिगीतिका ॥

जयति अतिबल राम पूरण काम सुन्दर धाम जू ।
जयति अति बलवानलक्ष्मण कराहैं पूरणकाम जू ।
जयतिकपिपति सुगलराघव सदयपालित ज्योसही ।

॥ ३ ॥ इतिकह्यहु श्रीहनुमान रणमें शिवदजानि अशोकही ॥ ३३ ॥ परम उत्कृष्ट कर्मकारी कोशलेन्द्र श्रीरामचन्द्रजी के हमदास हैं व शत्रुसैन्योंके निहन्ताहैं हनुमान् हमारा नामहै व पवनके हमपुत्रहैं ३४ जब हम समर में शिलाओं से लड़नेलगेंगे तो एक रावण को कौनकहे सहस्रोंरावण हमारी बराबरी न करसकेंगे ३५ इस लङ्कापुरीको मटिया मेटकर व जानकीजी को प्रणामकर अपना मर्थ सिद्धकर सब राक्षसोंके देखतेही देखते चलेजायँगे हमारा कोई कुछ न करसकेंगे ३६ हनुमान् जीके उसशब्दसे सबराक्षस बहुत शंकितहुए फिर तिनको उनसबोंने सन्ध्याकालके बादरकेसमान ऊँचदेखा ३७ स्वामीके सन्देशसे निश्शंकसब राक्षस सबओरसे चित्रविचित्र अस्त्रशस्त्रोंसे हनुमान्जीको मारनेलगे ३८ महाबलवान् हनुमान्जी जब तिन शूरबीर राक्षसोंके घेरमें चारोंओरसे पड़गये तो उस फाटकमेंसे एक बड़ामोटा व लम्बा परिघ सड़ाकाखींच ३९ उसीसे सब राक्षसोंको मारडाला जैसे चमकते व फरफराते सर्प्प को पकड़ गरुड़जी खेलकरतेहैं उसी तरह वह परिघले हनुमान्जी कूदनेलगे ४० व उन्हींसे आकाशमें कूदकूद ढूंढ़ढूंढ़ राक्षसोंको मार बिचरनेलगे जैसे इंद्रजी वज्रसे दैत्योंको मारतेहैं वैसेही ये पवनतनय परिघ से राक्षसोंको मारनेलगे ४१ इसतरह उन अश्शीहज़ार किङ्करनाम राक्षसोंको मार महाबीर पवनसुत युद्ध करनेकी काङ्क्षासे उसी फाटकपर चढ़कर फिर बैठे ४२ उनमें बाजबाज जो अधमरे किसीतरहसे बचगये उन्होंने जाय मरेहुये किङ्कर नाम राक्षसों का हाल रावणसे कहा ४३ राक्षसोंकी इतनीबड़ी सेनाका माराजाना सुन बहुत नेत्र घुमाय व मुह बिचुकाय रावणने समरमें अति दुर्ज्जय व महापराक्रमी प्रहस्तके पुत्र कोलड़नेके लिये भेजा ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४२ ॥

व यहां हनुमान्जी किङ्करनाम राक्षसोंको मार अपने मनमें बिचारने लगे कि हमने सब बनतो भग्न करडाला परन्तु राक्षस कुलके अधिष्ठाता देवके स्थान पर यह जो एक बड़ाभारी प्रासाद बनाहै इसको तो नहीं बिनाशा तबतक कुछ न सही लावो इसीको बिध्वंसें १ तिससे इस

प्रासादको अभी विध्वंस करूँगा यह विचार मनसे अपना बल सबको दिखातेहुये २ मेरुके शृङ्गके समान ऊंचे उस राक्षसदेव मन्दिरपर कूद कर मारुतात्मज हनुमान्जी चढ़े ३ उस पर्व्वताकार प्रासाद पर चढ़ महातेजस्वी हनुमान्जी उदितसूर्य्यही के समान शोभितहुये ४ व महा दुर्द्धर्ष हनुमान्जी उसपर जाय इधरउधर उसे ढकेलपकेल उसका अनादर कर उस बिजयलक्ष्मीसे कुलाचलके समान शोभितहुये ५ उसके ऊपर चढ़ औरभी बड़ाभारी शरीरकर बड़े देदीप्यमान् मारुतसुत उस प्रासादको तरेसे उलट पलट गिराय ऐसा शब्द किया जिसके शब्दसे लङ्का पूरगा होगई ६ वह बड़ाभारी शब्द सुन आकाशसे पक्षी गिरपड़े व उस देव मन्दिरके रक्षक बहिरेहो मोहितहोगये ७ अस्त्र जाननेवाले रामचन्द्रजीकी जयहो व महाबल लक्ष्मणजीभीजीतें व रामचन्द्रजी से पालित राजासुग्रीवभी जीतें ८ हम अद्भुतकर्म्मकारी कोशलेन्द्र श्रीरामचन्द्रजीके दास मारुतके पुत्र हनुमान् शत्रुकी सेनाओंके नाशनेवालेहैं ९ जब हम समरमें शिला व वृक्षोंसे लड़ने लगेंगे तो एकरावणको कौन कहे सहस्त्रोंभी रावण हमारेसामने अपनाबल न दिखासकेंगे १० इस से यह लङ्कापुरी विध्वंस व जानकीजीके प्रणामकर अपना अर्थ सिद्ध कर इन सब राक्षसोंके देखतेही देखते इनका निरादर कर चलेजायँगे ११ यहकह महाकाय हनुमान्जी उसप्रासादके गिरगिराये स्थानपर बैठ बड़ेजोरसे गर्ज्जे जिससे राक्षसोंको अति भयहुई १२ तिस शब्दसे व्याकुल उस स्थानके सहस्त्रोंरक्षक खड्ग परशा फाँशीआदि अस्त्रशस्त्र ले आये १३ व बड़ेबड़े शरीरवाले राक्षस पवनतनयकेऊपर अस्त्रशस्त्र चलाने लगे विचित्र गदाओं व परिघों व सुवर्णके वस्त्रोंसे लपेटे अन्य अस्त्रोंसे १४ व सूर्य्यसम प्रकाशित बाणोंसे बानरश्रेष्ठको मारनेलगे तबगङ्गाजीकेजल के बड़ेभारीकुण्डके समान १५ हनुमान्जीको घेर राक्षसोंकागण शोभित हुआ तिसकेपीछे क्रोधकर पवनतनयजी १६ उसप्रासादका एकसुवर्णका खम्भा उखाड़ मारवेगसे १७ उसे ऐसघुमाया कि उससेआग निकलने लगी जिससे सबप्रासाद भस्म होगया १८ जबइधर प्रसादजलनेलगा तोउसीबीचमें जो उसकेरक्षक सैकरों राक्षस अस्त्र शस्त्र लेलेआये थे सब को उसीखम्भासे पीट मारडाला जैसे इन्द्र वज्रसे दैत्योंको मारतेहैं १९

इसतरह सबको मार आकाशमें जाय हनुमान्जीबोले कि हमारे समान सहस्रों महात्मा २० बलवान् वानर सुग्रीवकी आज्ञामें रहनेवाले भेजे गयेहैं वे सब व हमभी इसपृथ्वी में घूमतेहैं २१ उनमें किसी किसी के तो दशहाथियों का बलहै किसी किसी के सौका व किसी किसी के हजारका २२ किसी किसी के हाथियोंके समूहका बलहै किसी किसी के वायुके तुल्य विक्रमहै व बहुतसे तो ऐसेहैं जिनके अप्रमाण बलहै २३ इसतरह के दांत व नखोंको आयुध बनाये सैकरों हजारों लाखों किड़ोरों व अर्व्वों निखर्व्वों २४ वानरोंके साथ हमसबों के राजासुग्रीवजी तुमलोगों का बल नाशनेवाले आवेंगे तब न तो यह लंकापुरी रहेगी न तुम सबजन न रावण क्योंकि ऐसे महात्मा इक्ष्वाकुनाथ स तुमलोगोंने वैरही कियाहै जिससे सब समाप्त होजायगा २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः ४३ ॥

रावणकी आज्ञासे प्रहस्तका पुत्र जम्बुमाली नाम महाबली बड़ेबड़े दाँतवाला धनुष धारणकिये १ लाल कपड़े व लालही मालापहिरे व और तरहके भी फूलों की मालापहिरे सुन्दर कुण्डल धारणकिये बड़ा भारीडील बड़े बड़े नेत्रोंवाला बड़ा कोप करनेवाला व अतिदुर्ज्जय २ इन्द्रके धनुषके समान धनुष व बड़ा सुन्दर बाण धारणकिये मारेवेगसे धनुषपर टङ्कोर देताहुआ कि जिसका शब्द वज्रके शब्दकेतुल्य होताथा लंकासे चला ३ तिसके बड़ेभारी धनुष के शब्द से दिशा व बिदिशा व आकाश सब एकाएकी पूर्णहोगया ४ गदहेजुते रथपर सवार उसराक्षस को देख वेगयुक्त हनुमान्जी बहुत हर्षितहुये बहुतजोरसे नादभीकिया ५ तिन हनुमान्जीको बाहरके फाटक के छज्जापर स्थितदेख महा तेजस्वी जम्बुमाली ने पैनेबाणों से मारा ६ एक अर्द्धचन्द्राकार बाण तो मुखमेंमारा व एक अंकुशाकार शिरमें व बाहोंमें लोहिआ१०बाणमारे७ हनुमान्जीका ताम्रवत् अरुणमुख उसबाणके लगनेसे ऐसा शोभितहुआ जैसे शरदऋतु में फूलाहुआ कमल सूर्य्य किरण लगनेसे शोभित होता है ८ तिन हनुमान्जीका लालमुख लालरुधिरके लगनेसे ऐसा शोभित हुआ जैसे आकाशमें सुवर्ण बिन्दुओंसे सींचा कमल शोभित होताहै ६

राक्षसका बाण लगनेसे हनुमानजीने बड़ा कोपकिया व देखा तो बग-लहीमें एक बड़ीभारी पर्व्वतकी शिलापड़ी थी १० तिसको बड़ी जल्दी के साथ उठाय बड़ेजोर से जम्बुमाली के ऊपर चलाया उस शिलामें कोपकर राक्षस ने दशबाण मारे ११ अपना वहकर्म्म बिफलदेख महा प्रचण्ड विक्रम हनुमानूजी एक बड़ाभारी साखूकावृक्ष उखाड़ बड़ेवीर्य-वान् तौथेही घुमानेलगे १२ इनको साँखूका वृक्षलिये घुमातेदेख महा बलवान् जम्बुमाली ने बहुत बाण हनुमानूजी के मारे १३ उनमें चार बाण तो उस वृक्षहीमें मारे व पाँचवाण भुजामें व छातीमें एक बाण व दशस्तनोंके बीचमें १४ जबठौर ठौर मारेबाणों के लगनेसे हनुमानजी का देह पूर्णहोगया तो हनुमानजी ने बड़ाकोप किया व वही परिघ बड़ेजोर से घुमाया १५ व बड़े वेगवाले तो थेही इससे बड़ेजोरसे वही परिघ घुमाय जम्बुमाली की बड़ीछाती में मारा १६ उसके लगतेही न तो जम्बुमाली का शिररहगया न बाहें न जाँघें न धनुष न रथ न घोड़े न बाण ये कुछ नहीं रहगये १७ व वह जम्बुमाली उसके लगतेही मृतक होगया व चूर्णित वृक्षके समान पृथ्वीमें गिरपड़ा १८ जम्बुमाली व किङ्करनाम राक्षसों को मारे सुन रावणने बड़ा क्रोधकिया १९ जब महाबलवान् प्रहस्तकापुत्र मारागया तो निशाचरराज ने अपने मंत्री के पुत्रोंको लड़नेके लिये आज्ञा दी २० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचतुश्चत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४४ ॥

तिसके पीछे राक्षसेन्द्रके भेजे अग्नितुल्य प्रकाशित १ व महासेना सङ्गलिये धनुषबाण धारणकिये महाबलवान् अस्त्रशस्त्रमें कुशल लोगोंमें श्रेष्ठ व परस्पर जीतनेकी इच्छाकिये २ व सुवर्णके समूहसे बने ध्वजा पताका युक्त मेघके समान शब्द करते व उत्तम घोड़े जते बड़ेबड़े रथोंपर चढ़े ३ व तपाये सुवर्णसे बेल बूटा कढ़े धनुष हाथोंमें लिये व टङ्कोर देते हुये बहुत हर्षितहो बिजुली सहित मेघोंके तुल्य चमकते मंत्रियोंके सात पुत्र लङ्कापुरीसे लड़नेको बहिराने ४ तिनकी माताओंने जैसेही सुनाहै कि किङ्करनाम राक्षस मारडालेगये तैसेही अपने सुहृदों व बान्धवों के साथ शोकके मारे सम्भ्रान्तचित्त होगईं ५ व तपायेहुये सुवर्णके भूषण

पहिरे एक दूसरेसे आगे लड़नेके लिये बढ़ेभये उनसातों मंत्रिपुत्रों ने हनुमान्जीको उस प्रासादके ऊपर बैठेदेख अपने अपने अस्त्रशस्त्र उनके ऊपर छोड़ा ६ व फिर मघवत् शब्दकरकर बाणोंकी वर्षा भी करनेलगे व उनके रथोंको गर्जनाका मेघोंके शब्दके समान सुनाई देताथा इन बादर रूप निशाचरोंका शब्द वर्षासमयके बादरोंकी समान होताथा ७ उन लोगोंने ऐसी बाणोंकी वर्षा हनुमान्जीके ऊपर की कि जिहसे पवन-तनयजी वर्षासे आच्छादित पर्ब्बतराजके समान शोभित हुये ८ परन्तु बड़ी शीघ्रताके साथ उछल आकाशमें जाय तिन बीरोंके बाण व उनके रथोंके वेग बचागये ९ व तिनलोगोंके साथ आकाशमें क्रीड़ाकरते हनुमान्जी मेघोंके साथ आकाशमें क्रीड़ा करते पवनके समान शोभित हुये १० व अति वीर्य्यवान् हनुमान्जी तिस राक्षससेनाको घोरनादसे डरवाते हुये उन राक्षसोंके ऊपर अपना बड़ा वेगकिया ११ किसीकिसीको तो लातसे रौंदडाला व किसीकिसीको नखोंसे मारा किसीकिसी को मूकोंसे व बहुतोंको नखोंसे चीड़फाड़ डाला १२ व बहुतों को छाती से रगड़डाला व बहुतोंको जांघोंसे बहुत तिनका नाचहीं सुन पृथ्वीमेंगिर पड़े १३ जब वे सब मरमर इसतरह भूमिमें गिरे तो उनकी फौज़ इधर उधर भाग खड़ीहुई १४ हाथी बड़ेज़ोरसे चिग्घड़चिग्घड़ भागगये व घोड़े उछलउछल पृथ्वीमें गिरगिर मरगये व अङ्गभङ्ग चूर्णीभूत रथोंसे वहां की पृथ्वी पूर्णहोगई १५ लङ्काके मार्ग्गमें रुधिरकी नदियां बहचलीं व बिविधप्रकारके शब्दोंसे लङ्का अति भयङ्कर रोदन करनेलगी १६ तिन बड़े पराक्रमी राक्षसोंको मार महाबल व प्रचण्ड पराक्रम हनुमान्जी और राक्षसोंसे युद्ध करनेकी इच्छासे कूदकर फिरजाय उसी फाटक के छज्जापर बैठे १७॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४५ ॥

महात्मा हनुमान्जीसे मारेहुये मंत्रिपुत्रोंको जान रावण बहुतउदास हो बिचारनेलगा १ व फिर बिरूपाक्ष यूपाक्ष दुर्द्धर्ष प्रघर्ष व भासकर्ण इन पांच महाबलवान् सेनापतियोंको आज्ञा देनेलगा २ ये पांचों वीर नीतिशास्त्रमें बड़े चतुरथे व संग्राममें वायुके समान वेग धारण करतेथे

इससे सब हनुमान्‌जीके पकड़नेके लिये तड़फराते थे कि हमको आज्ञा होती तो उस बानरको पकड़लाते इससे रावण इन्हीं पांचोंसे बोला ३ कि तुम सबजने सेनापति हो रथ घोड़े हाथी पैदरोंकी चतुरङ्गिनी बड़ी भारी सेनालेजावो व उस बानरको शिक्षा करो ४ परन्तु उस बानर के पास पहुँच बड़ेयत्नसे काम करना होगा व कार्य्य भी ऐसा करना होगा जो देशकालसे बिरुद्ध न हो ५ हम उसके किये कर्म्मसे जो बिचारते हैं तो उसको बानर नहींमानते हमतो सबतरहसे यही जानते हैं कि इस महाबल व बड़े भारीको ६ अपने तपोबलसे इन्द्रने हमारे मारनेकेलिये उत्पन्न कियाहै व नाग यक्ष गन्धर्व्व देवता दैत्य व महर्षिलोगों को ७ हमारे भेजे तुमलोगोंने एकही समयमें जीतलियाहै वे लोग हमारे दुःख के लिये कुछपै कुछ अवश्य बनाय खड़ाकरेंगे ८ सो इसमें कुछ सन्देह नहीं उन्हींलोगोंका किया कराया यह कुछहै इससे तुम सबलोग वहां जाय उसे पकड़लावो व अभी बड़ीभारी सेनाले वहां चलेजाव ९ सेना हाथी घोड़े रथादि युक्त लेजाव व उस बानरको शिक्षादो वह बानर अति धीर पराक्रम है इससे तुम लोग उसका अपमान नहीं करसक्के १० क्योंकि हमने बिपुल पराक्रम बहुतसे बानर दिग्विजय करनेके समय देखेहैं जैसे बाली सुग्रीव व महाबलवान् जाम्बवान् ११ सेनापति नील व औरभी द्विविद आदि बहुतसे देखे परन्तु तिनमें इसकीसी न तो भयङ्कर चालहै व न इसकासा तेज पराक्रम १२ न इसकीसी मति न बल का उत्साह व न इसके तुल्य रूपही वे लोग बदल सक्के इससे यह बानररूप कोई बड़ाभारी जीवहै यहां प्राप्तहुआहै १३ इससे बड़े प्रयत्नके साथ इसको पकड़ना यद्यपि देवता असुर मनुष्य सहित तीनोलोक १४ आपलोगों के सामने समरमें नहीं खड़े होसक्के तथापि जो नीति शास्त्र जानताहो व रणमें जयकी इच्छा रखताहो तो १५ उसको उचितहै कि अपनी रक्षा यत्नसे कियेरहे क्योंकि युद्धकी सिद्धि बड़ी चञ्चलहै यहनहीं जानाजाता कि किसकेहाथ लगेगी १६ वे सब बड़े तेजस्वी स्वामीके बचन अङ्गीकार कर अग्निसम तेजस्वी बड़ेबेगसे चले उनकेसाथ अनेक रथ हाथी व अतिबेगसे चलनेवाले घोड़े चले १७ व तीक्ष्ण पैने नानाप्रकारके शस्त्रभी धारणकिये व बड़ीसेना सङ्ग लिये चले व जाय वहां

पहुँच उन महावीरोंने अति दीप्तिमान् महाकपि को देखा १८ जोकि करणसहित सूर्य्यके समान प्रकाशितहो महासत्व महाबल महापराक्रम धारणकिये उसी प्रासादके छज्जापर बैठेथे १६ तिनको महामति महाकाय महाउत्साहयुक्त देख उन राक्षसोंने सबओरसे घेरलिया २० व जोजो अस्त्रशस्त्र लियेथे सब उनके ऊपर चलानेलगे व तिनके शिरपर पांच लोहे सोनेके मुख बने बाण २१ दुर्द्धरने मारे वे पांचों बाण हनुमानूजीके शिरमें लगे २२ कि तैसेही दशो दिशा नादसे पूरित करते पवनतनय आकाशको कूदगये तब दुर्द्धरवीर धनुषपर रोदा चढ़ाय अपने रथपै खड़ाहोगया २३ व सैकरों हज़ारों बाण उसने चलाये २४ परंतु हनुमानूजी उसके बाणोंकी वृष्टि बचातेरहे जैसे बरसतेहुये बादरकेपीछे और बादरको पवन बचाताहै २५ जब दुर्द्धरने बहुतबाण मारे तो उनसे पीड़ितहो हनुमानूजी बड़ा शब्दकर बड़े लम्बे चौड़े होगये २६ व बड़ी दूर ऊपरको उछल उस दुर्द्धरके रथहीपर आगिरे जैसे वज्र पर्ब्बत के ऊपर गिरताहै २७ उनके बड़ेबेगसे कूदनेकी चोटसे आठ घोड़े नहा रथ सब चूर्ण होगया व दुर्द्धर भी मृतक होगया २८ तिस दुर्द्धरको मारा देख बिरूपाक्ष व यूपाक्ष दोनों बड़ेवीर राक्षस शत्रुके मारनेकेलिये बड़ा कोपकर प्राप्तहुये २६ व दोनोंने कूद आकाश में टिके पवनकुमार की छातीमें मुद्गरों से मारा ३० परन्तु उन दोनों बेगवानों का बेग बिनाश महा बलबान् हनुमानूजी आकाशसे फिर पृथ्वीमें कूदपड़े जैसे गरुड़जी सर्प्पोंके ऊपर कूदते हैं ३१ व भूमिमें आय बड़ा भारी सांखू का वृक्ष उखाड़ पवनकुमारने उन दोनों महावीर राक्षसोंको मारडाला ३२ तब महाबेगवान् बानरसे तीन सेनापतियोंको मारेदेख महाबली प्रघस ३३ व भास्कर्ण आय क्रोधकर शूल हाथमें ले एकओरसे हनुमानूजीको वह घेर खड़ाहुआ दूसरी ओरसे वह ३४ उनमें प्रघसने तो पट्टिशसे व भासकर्ण राक्षस ने शूलसे पवनतनयको मारा ३५ तिन दोनोंके दोनों प्रहार लगनेसे हनुमानूजी अङ्गोंमें रुधिर लगनेसे प्रातःकालीन सूर्य्य के समान शोभित हुये ३६ व पर्ब्बतका शृंग मृग सर्प्पादि युक्त उठाय उसीसे मारुतनन्दन ने उन दोनोंको भी मारडाला ३७ उस पर्ब्बत के शृङ्गके लगनेसे वे दोनों चूर्णहोगये ३८ जब इसतरह पांचों सेनापतियों

को हनुमान्जीने मारडाला तो फिर उनके सङ्ग आई सेनाको भी मार डाला ३६ सेनाके मारनेमें तो घोड़ोंके ऊपर तो घोड़ेउठा देमारे व हाथियों पर हाथियों को व योधोंपर योधों को व रथों पर रथें इस तरह उन बानरजीने सब सेना मारडाली जैसे इन्द्र असुरोंको मारडालते हैं ४० मारेहुये हाथीघोड़ोंसे व टूटे रथोंसे व मारेहुये राक्षसोंसे सबओरसे पृथ्वी रूँधगई ४१ तिन सेनापतियों को बीरबाहन सेनासहित समर में मार हनुमानूजी उसीतरह फिर जाय प्रासादके छज्जापर प्रलय के समय कालसम बैठे ४२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४६ ॥

सेना व बाहन सेवक सहित उन पांचों सेनापतियोंको हनुमानूजीसे मारे सुन रावण समर करनेमें बड़े उद्भट अपने पुत्र अक्षनामकी ओर देखनेलगा १ तब महाप्रतापवान व सुवर्ण का धनुष धारणकिये अक्ष रावणकी दृष्टिमात्रसे प्रेरित बीच सभामें कूद खड़ाहोगया जैसे ब्राह्मण श्रेष्ठोंके कहने से अग्नि हव्य लेनेके लिये तैयार होजाता है २ तिसके पीछे प्रातःकालके सूर्य्यके समान प्रकाशित व सुवर्णसे बने व सुवर्णही का वहार पड़े रथपर सवार हो राक्षसोंमें श्रेष्ठ अक्ष बानरोंमें श्रेष्ठ हनुमानूजीसे लड़ने को चला ३ व तपस्या संग्रह से पाये तपाये सुवर्ण के जालसे चित्र बिचित्र सुवर्णकी ध्वजा पताका व रत्नोंसे भूषित मनोबेग आठघोड़े नधा ४ व देवता दैत्योंकी शक्तिसे बाहर निराधारमेंभी चलनेवाले बिजुलीके सम चमकते आकाशमें उड़ते सब अंग अच्छे भले बने बनाये तरकस ऊपर धरे आठ खड्गोंसे युक्त व यथाक्रम शक्ति तोमरादि अस्त्र धरे ५ व परिपूर्ण वस्तुओंसे बिराजमान व चन्द्र सूर्य्यकी दीप्तिके तुल्य चांदी सोनेसे प्रकाशित व सूर्य्यसम श्वेत रथपर सवारहो देव तुल्य पराक्रमी अक्ष लङ्कासे निकला ६ व हाथी घोड़े रथोंके शब्दोंसे आकाश व पर्ब्बत सहित पृथ्वीको पूर्णकरते बड़ी भारी सेना सङ्गलिये उसदेव मन्दिर की छज्जापर बैठे अति समर्थ हनुमान् जी के निकट पहुँचा ७ व पीली आंखें किये अक्ष बड़े मान के साथ प्रजाओं के नाश करनेके लिये युगान्तकालके अग्निके समान बैठे व मुसुकातेहुये हनमान्

को देखा ८ व महाबल रावणका पुत्र अक्षकुमार महात्मा पवनतनयका व अपना पराक्रम बिचारता हुआ युगक्षय के सूर्य्यके समान बढ़ा ९ व एकाग्रचित्त हो संग्राममें सँभल व बड़ा कोपकर दुर्न्निवारणीय हनुमान् जीको रणमें बैठेदेख तीनबाण चलाय युद्धकरने के लिये प्रेरित कराया १० तिसके पीछे बाणबेग रहित अहङ्कार युक्त व शत्रुओंके हरानेकेयोग्य हनुमान्जीको बहुतहर्षित देख अक्षनेहाथोंमें धनुषबाणले निहारा ११ व अति शीघ्रबहुतपराक्रम दिखानेवाला सुवर्णके कुण्डलादि भूषण धारण कियेअक्षहनुमान्जीको प्राप्तहुआ उन दोनोंका समागम ऐसा अद्वितीय हुआकि जिसदेख देव अदेव सबको सम्भ्रम हुआ १२ इनदोनोंकासंग्राम देख भूमि शब्द करनेलगी सूर्य्यका घाम बन्द होगया पवनने चलना छोड़दिया पर्व्वत चलउठे आकाशमें शब्द होनेलगा व समुद्र खलभला उठा १३ प्रथम पहुंचते पहुंचते अक्षने सुवर्णकी फोंकबने विषधर सर्प्पों के समान आगेको दौड़ते तीनबाण हनुमान्जी के शिरमें मारे यह अक्ष बाणोंका चलाना व फिर अपनेपास बुलालेने व शत्रुके अस्त्रभी अपनेपास बुलालेनेमें समर्त्थथा १४ उन तीनोंबाणोंके शिरपर लगनेसे रुधिरबहने व नेत्र घूमजानेके कारण हनुमान्जी बाणोंकोही किरण बनाये प्रातः- कालके सूर्य्यके समान शोभित हुये १५ तिसके पीछे बानरों के अधिप सुग्रीवजीके मंत्रियोंमें श्रेष्ठ हनुमान्जी बड़ेभारी चित्र बिचित्र बाणधनुष हाथमें लिये रावणके पुत्र अक्षको समरमें देख बहुत हर्षित हुये व बहुत बड़े होगये १६ मन्दराचल पर टिके सूर्य्यके समान कोप बढ़ाये व बल बीर्य्य संयुक्त हनुमान् अपने नेत्रोंकी दीप्तिके किरणोंसे सेना व वाहन सहित अक्षकुमारको भस्म करनेलगे १७ तिसके पीछे बादररूप उस राक्षसने धनुषको इन्द्रधनुष बनाय व बाणोंको बर्षा समुझ पर्व्वताकार हनुमान्जीपर बाण छोड़ने लगा जैसे मेघलोग उत्तम पर्व्वत पर जल बरसाते हैं १८ तब रणकर्म्ममें अति प्रचण्ड बिक्रमी व महातेजस्वी व अति बलबीर्य्य युक्त बाण धारण किये अक्षकुमारको समरमें देख हनु- मान्जी बादरों के समान गर्ज्जे हर्षित हुये १९ बाल्यावस्थाही से सं- ग्राममें बीर्य्य दिखाय दिखाय अहङ्कारयुक्त व मारे क्रोधके रुधिरके सम लालनेत्र किये अक्ष समरमें अद्वितीय बानरको तृणसे ढँके कूपको महा

गजके समान प्राप्तहुआ २० तिसके मारेहुये बाणोंके लगनेसे मारे उ-
त्साहके भुजा जाँघोंके चलानेसे घोर दर्शन हनुमानूजी आकाशको चीड़ते
फाड़ते मेघोंकेसमान गर्ज्जे २१ तिनको आकाशमेंउछलतेकूदतेदेख प्रता-
पवानूमहाबली राक्षसोंमेंश्रेष्ठ रथपरचढ़ा व महारथोंमेंश्रेष्ठ अक्ष बाणोंसे
मारनेलगा जैसेमेघपर्वतके ऊपर पत्थरोंकी बर्षाकरताहै २२ तबतिसके
बाणोंके बीचमें पड़ेहुयेभी हनुमानूजी भीमविक्रम व मनसमगतिहो आ-
काशमार्ग्गमें ऐसा घूमे कि एकभीबाण अङ्गोंमें न लगनेपाया २३ धनुष
बाणलियेसंग्राम करनेको तैयार व विविधि प्रकारके बाणोंसे आकाशको
आच्छादितकरतेहुये अतिमानी अक्षकोदेखपवनतनयचिन्ताकरनेलगे २४
महात्मा अक्षकुमारके बाणोंसे भुजोंके बीजमें भिन्नहो महाभुज हनुमान्
जी नाद करने व उसका विशेष पराक्रम बिचारने लगे २५ कि प्रातः-
कालके सूर्य्यके समान प्रकाशित यह महाबल व महान् अक्ष अबालव-
त्कर्म्म करता है इससे संग्रामकी सब क्रिया जाननेवाले इसके बिध्वंस
करनेकी मति इससमय हमारे नहीं उत्पन्न होती २६ यह अक्षमहात्मा
बीर्य्यसेमहान् सावधान् संग्राममें प्रहारादिके अतिसहनेवालाहै इससे
कर्म्मके गुणोंके उदयसे निस्संदेह नाग यक्ष व मुनिलोगों से पूजित हो
सक्ताहै २७ पराक्रम व उत्साह से मन बढ़ाये इससे योद्धाओं में मुख्य
आगे खड़ा यह कुमार हमको देखरहाहै इससे इस शीघ्रप्रकारीका परा-
क्रम सुरों व असुरोंकेभी मनोंको कँपावेगा २८ जिससे क्षिरणमें इसका
पराक्रम बढ़ताही जाताहै इससे जो हम इसको छोड़ दें तो क्या यह
हमारा अनादर न करेगा अवश्यही करेगा इससे इसका नाश करनाही
हमको अच्छा लगताहै क्योंकि बढ़तेहुये अग्निको छोड़देना ठीक नहीं
होता उसको जैसे बने पहिलेही बुझाडालना चाहिये २९ इसप्रकार से
शत्रुकावेग व शत्रुके बध करनेके योग्यअपने कर्म्मकी चिन्तनाकरते बीर्य
वान् हनुमानूजीने इसके बधकरनेके बिषयमें अपनी मतिकी इससे वेग
किया ३० इससेबीरपवनसुत बानरश्रेष्ठने इसअक्षकेश्रेष्ठसावधान बड़ा
भार सहनेवाले व अनेक तरहके चक्रदेने में कुशल आठ घोड़े आकाश
मार्ग्गहीमें चलते चलते अपने लातके प्रहार से मारडाले ३१ तिसके
पीछे हनुमानूजीके लातके लगनेसे रथ टूटगया व घोड़े मरगये व इसी

से बानरोंके अधिप सुग्रीव के मन्त्री हनुमान्जी से हार महारथ अक्ष भूमिमें गिरपड़ा ३२ रथको छोड़ धनुषबाण खड्ग धारणकिये वह महारथ अक्षकुमार आकाशको उछलताहुआ तपस्याके प्रभावसे देवताओं के लोकको जातेहुये ऋषिके समान दिखाईदिया ३३ तब मारुतकेसमान वेग व बिक्रमवाले हनुमान्जीने गरुड़ पवन व सिद्धोंसेसेवित आकाश में बिचरते हुये तिस अक्षकुमारके पास जाय अपने दोनोंपावोंके बीचमें जोरसे दबा पकड़ लिया ३४ व जैसे गरुड़जी बड़ेभारी सर्प्पको पकड़ बारबार झिटकतेहैं वैसेही हनुमान्जीने आकाशही में हजारों झिट्टे व घुमाय महीतलमे बड़ेजोरसे पटक दिया ३५ कि जिससे उसके बाहु ऊरू करिहाव स्तन सब चूर्णहोगये व रुधिरकी धार अंगोंसे चली हाड़ सब रत्ती रत्ती टूटगये नेत्र निकलआये सब देहके जोड़ उखड़गये बार छूटगये चौतनी व लुंगी जाँघिया जो कुछ कसे पहिरेथा सब छूटगये इस तरह वायुसुतने पृथ्वीमें पटक उसेमारडाला ३६ तिसपरभी ऊपर से उसके ऊपर कूद भूमिमें और जोरसे दबादिया कि जिससे बिलकुल प्राण जातेरहे तिस अक्षकुमारके मारेजाने के पीछे महर्षि लोगों ने सब यक्ष गन्धर्व भूत नाग व इन्द्रादि देवोंकेसाथ आय बिस्मय युक्तहो हनुमान् जीको देखा ३७ इंद्रके पुत्र जयन्तके समान तिस अक्षकुमार को समरमें मार महाबीर हनुमान्जी फिर औरों से युद्धकरनेकी इच्छासे उसी देव मन्दिरके छज्जापर प्रजाओंके नाशके समयके कालकेसमानजाबैठे३८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेअक्षबधो नामसप्तचत्वारिंशस्सर्गः॥ ४७॥

जब हनुमान्जीने रावणके पुत्र अक्षकुमारको मारडाला तो राक्षसों के स्वामी रावणने एकाग्रचित्त हो फिर क्रोधकर देवताओं के तुल्य इंद्रजित नाम अपने पुत्रको आज्ञादी १ कि तुम सब अस्त्रों के वेत्ता सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ देवता व दैत्यों को भी शोक देनेवाले व इन्द्रादि देवोंके सामने भी तुम्हारा कर्म्म हम देखचुके हैं व ब्रह्माजी के आराधन से अस्त्र पाया है २ व तुम्हारे अस्त्र के बलको पाय इंद्रके आश्रममें भी टिके पवनादि सबदेवता समर में तुम्हारे सामने नहीं

टिक सके ३ तीनोंलोकों में तुम्हारे साथ संग्राम करने से कोई नहीं सुखपूर्व्वक बचा व इससे अपने भुजोंके वीर्य्यसे व तपस्याके प्रभाव से भी तुम्हीं रक्षितहो व देशकालके जाननेमें भी तुम्हीं प्रधानहो व तुम्हीं उत्तम बुद्धिवालेहो ४ समरमें ऐसा कोई कर्म्म नहीं जो तुम न करसके हो व जो बुद्धिसे समझनेके योग्य पदार्थ हैं उनमें ऐसा कोई नहीं जो तुम न जानसको व तीनोंलोकोंमें ऐसा कोई पुरुष भी नहीं जो तुम्हारा अस्त्रबल व बल न जानता हो ५ व तपस्याका बल बल पराक्रम व समरमें अस्त्रबल तुम्हारे सब हमारेही तुल्य हैं इससे तुमको महासंग्राम में प्राप्तहो निश्चय करने में हमारे मनको कुछभी श्रम नहीं होता ६ देखो उस बानरने किङ्करनाम राक्षसोंको मारडाला व जम्बुमाली राक्षस को भी मारडाला व पांच मंत्रियोंके पुत्र बड़ेबीर जो सेनापति थे उन्हें भी मारडाला ७ व हाथी घोड़े रथादि युक्त बहुतसी सेना मारीगई व परमप्रिय तुम्हारा सहोदर भाई अक्षकुमार भी मारागया परन्तु जो सारांश तुममें है वह उनलोगों में हम नहीं मानते ८ इससे अब यह बड़ीभारी सेना मारी देख व बानरका प्रभाव व बलदेख व अपनेशरीर का भी सारदेख अपने बलके अनुसार बेगकरो ९ जैसा करनेसे बहुत सेना न मारीजाय व शत्रु शान्त होजाय तैसे जानकीयुक्ति बिचार व अपना बल जान कार्य्य करनेका प्रारम्भकरो क्योंकि तुम सब शस्त्रास्त्र धारियोंमें श्रेष्ठहो १० इससे अच्छीतरह वह अर्थदेख व अपने कर्म्मों की सबता से सावधान हो व अपने इस दिव्य धनुषका वीर्य्य स्मरण करते जाव व निर्विघ्नता से कार्य्य करनेका प्रारम्भ करो ११ यद्यपि जो जिस मतिके अनुसार हम तुमको वहां भेजतेहैं वह मति श्रेष्ठनहींहै तथापि यह राजधर्म्मवाले पुरुषों व क्षत्रियोंकी मति कहाती है १२ रण में तुम बिजयकी इच्छा ज़रूर कियेरहना इससे समरमें नानाप्रकार के शास्त्रोंमें निपुणता अवश्य जनाना १३ तब पिताके ऐसे बचनसुन देवों के तुल्य प्रभाववाला वीर व सिद्धबुद्धि मेघनाद समर जानेकेलिये बड़ी जल्दीके साथ रावणके प्रदक्षिणा करनेलगा १४ इसतरह अपने इष्ट- गणोंसे पूजितहो युद्ध करनेके लिये बड़ा उत्साहकर मेघनाद अपने सं- ग्राममें पहुँचनेके लिये तैयारहुआ १५ व शोभायमान कमलदलसमनेत्र

राक्षसोंके स्वामीकापुत्र लङ्कासेबहराना जैसेपूर्णमासीकीरात्रिको समुद्र उछलाताहै १६ चलनेकेसमयगरुड़के बेगवाले व बड़ेबड़े व तीक्ष्णदांतों वाले चारसर्प्पनहे रथपर इन्द्रसमान पराक्रमी व इंद्रकेजीतनेवालामेघनादचढ़ा१७ व वहधनुर्द्धरोंमें श्रेष्ठ शस्त्रविद्याजाननेवाला व अस्त्रजानने वालोंमें श्रेष्ठ रथपर चढ़ जहां हनुमानूजी थे शीघ्रवहीं जायपहुँचा १८ तब जिसके रथका शब्द व धनुषकी प्रत्यञ्चाका शब्दसुन बानरबीर हनुमानूजी बहुत हर्षित हुये १६ रणमें बड़ापण्डित मेघनाद धनुष व तीक्ष्ण बाणले हनुमानूजीको देख सामने चला २० जब युद्धकरनेके लिये मेघनाद हर्षितहो व हाथमें बाण ले चला तब सब दिशा मलिन होगईं व मृगलोग भयङ्कर शब्द करनेलगे २१ व नाग यक्ष गन्धर्ब्ब महर्षि व सिद्धलोग सबदेखनेको आये व आकाश में आय पक्षीलोग शब्द करने लगे २२ रथपर चढ़े मेघनादको आते देख हनुमानूजी बहुत गर्ज्जे व बाढ़गये २३ व इन्द्रजित् भी उस दिव्य रथपर सवार बड़ा सुंदर धनुष लिये मेघके समान शब्दयुक्त धनुषमें टङ्कोरदिया २४ तिसकेपीछे एकत्र हो अति तीक्ष्ण बेग व महाबल बरण में निश्शङ्क बानरबीर व राक्षसबीर दोनों देवता व दैत्योंके समान परस्पर बैरकर खड़ेहुये २५ कि महारथ धनुर्द्धर अति बीर व संग्राममें प्रसिद्ध मेघनादने बाण चलाया परन्तु अपने पिता बायुके समान बेगवान् हनुमानजी उसका बाण बचाय आकाशमें होरहे २६ तब फिर बड़ेबड़े लम्बे चौड़े तीक्ष्ण फोंक लगे अति दृढ़ व बज्रसम बेगवाले बहुतबाण मेघनाद ने छोड़े २७ तब हनुमानूजी तिसके रथकाशब्द व मृदङ्ग तुरुही नगारोंका शब्द व खींचे हुये धनुषका शब्द सुन और ऊपरको उछलगये २८ व तिसके मारेहुये बाणोंके बीचमें पर मेघनादको भी निहारतेहुये हनुमानूजी इधर उधर घूमघाम उसके सब बाण बचागये २६ फिर पवनतनय हनुमान् जी अपने दोनोंहाथ आगेको फैलाय तिसके बाणोंके सामने दौड़े व सब हाथोंसे पकड़लिये ३० वे दोनों बेगयुक्त व रण कर्म्ममें बड़े चतुर थे इससे ऐसा युद्धकिया जिससे देखनेवालोंका मन खींचलिया ३१ राक्षस ने हनुमानूजीका भेद न पाया कि किसतरह ये मेरेबाणोंको बचाजातेहैं व पवनतनय ने भी तिस मेघनादका भेद न जाना कि इतनी जल्दीकैसे

बाण चलातेही जाताहै इससे वे दोनों देव समान बिक्रमवाले परस्पर असह्य हुये ३२ जब सब सफलही बाणमारे व हनुमानूजीके बहुतलगे भी पर उनसे व कुछ पीड़ितही हुये पर मरेनहीं तो महात्मा इन्द्रजित् अपने मनमें बड़ी चिन्ता करनेलगा ३३ व बड़ी देरमें शोचा कि यह बानरोंमें मुख्य किसीके मारडालने के तो योग्य नहींहै तो इसको कैसे पकड़ें जो रावणके निकटतक पहुँचे ३४ बहुत शोच बिचार तिन बानर श्रेष्ठको पकड़नेके लिये सब अस्त्रशस्त्र चलानेमें निपुण मेघनादने ब्रह्मास्त्र चलानेको मनकिया ३५ क्योंकि सबतरहसे जानलिया कि यह बानर सब शस्त्रास्त्रोंसे अवध्य है इससे उसी ब्रह्मास्त्र से मारुतसुतको उसने पकड़लिया ३६ जब तिस राक्षस ने उस अस्त्रसे हनुमानूजीको बांध लिया तो व्याकुल हो ये धरणी में गिरपड़े ३७ व फिर सँभरगये तो स्वामी रामचन्द्रजीके प्रभावसे अजमाया तो अपना बेग कुछकम न पाया परन्तु ब्रह्माजीका बरदानी अस्त्र जान अपने ऊपर तिनका बड़ा अनुग्रह माना ३८ व हनुमानूजी ने अपने मनसे अच्छीतरह बिचारा तो वहअस्त्र सब ब्रह्ममंत्रोंसे अभिमंत्रित था व ब्रह्माजीका बरदानी ३९ व लोकगुरु ब्रह्माजी के प्रभाव से इसबन्धन से छुड़ानेकी शक्ति हमारे नहींहै इससे इसतरह के ब्रह्माजी के बन्धन के अनुकूल हमको चलना चाहिये ४० फिर हनुमानूजीने अस्त्रकावीर्य्य बिचार अपने ऊपर ब्रह्माजीका अनुग्रह माना व यहभी शोचलिया कि मुहूर्त्तभर के पीछे तो इस बन्धनसे छूटही जानाहोगा इससे पितामहकी आज्ञाका पालनकिया ४१ व फिर बिचारा कि ब्रह्मा इन्द्र व पवनसे रक्षित हमको इसअस्त्रसे बँधनेसेभी भय न होगी ४२ व ये राक्षस जो हमको पकड़ लेजायँगे तो उसमेंभी बड़ागुण दिखाईदेताहै क्योंकि रावणसे अच्छीतरह वार्त्तालाप कर उसके हृदयकाभी हाल जानलेंगे तिससे बहुत अच्छा ये हमको पकड़ें ४३ ऐसा अपने अर्थका निश्चयकर बिचारपूर्व्वक कार्य्य करने में निपुण हनुमानूजी ने और सब यत्नकरने में चेष्टा कमकरदी तब राक्षस लोग अच्छीतरह बाँध घुड़कने धमकने व अपकारयुक्त बचन कहनेलगे जैसे जैसे वे बकते झकतेथे वैसेवैसे वे अपनी बानर की बोली से शब्द करतेथे ४४ जब राक्षसोंने देखा कि अब तो यह बानर बिलकुल अपने

अङ्गनहीं डुलाता व निश्चेष्ट होगयाहै सनके वकला व वृक्षोंकीछाल की रस्सियों से अच्छीतरह बाँधा ४५ जो शत्रुओं ने बाँधा व जबरदस्ती बहुत ऊँचीनीची बातें राक्षसवीरोंने कहीं उनसबको हनुमान्‌जीने प्रसन्न किया क्योंकि अच्छाहै जो शौकके मारे रावण हमको देखनेकेलिये चुनेगा तो बहुत अच्छाहोगा इसबातका निश्चय अपनेमनमें करलिया४६ जैसेही सनआदि के रस्सों से हनुमान् जी को बाँधा तैसेही ब्रह्मास्त्र से इनके सबअंग अपनेआप छूटगये क्योंकि उस ब्रह्मास्त्रका यह स्वभावहीहै कि जबऔर किसी वस्तु से बंधुआको बाँधदो तो वह छोड़देता है क्योंकि अन्य बन्धनकी वह पछोई नहींकरता ४७ तिन हनुमान्‌जीको रावणकी सभा देखनेकी आकांक्षा किये व सनवल्कलादि से बँधे व ब्रह्मास्त्रसे छूटेदेख मेघनादके मनमें बड़ी चिन्ताहुई कि यह हनुमान् जब और पदार्थोंसे बाँधागया तथापि उस अस्त्रकापीछा नहीं छोड़ता ४८ अहो राक्षसोंने मन्त्रकीगति न जाननेकेकारणमेरा यहकर्म्महीं निरर्थक करदिया जो कहें कि फिर इसअस्त्रको मन्त्रपढ़ योजितकरें तो जब एक बार कोईअस्त्र निरर्थक होजाताहै तो फिर वह नहीं चलता इससे हम सब संशयमें पड़ेहैं ४९ परन्तु हनुमान्‌जीने अपना को अस्त्रसे छूटा न जाना वे यहीजानतेथे जानोंहम ब्रह्मफाँसमें फँसेहीहैं इससे उनराक्षसों के खींचनेसे पीड़ित होतेथे ५० तिसके पीछे सब राक्षस तिनको मारते पीटते व घिसियाते रावणके पासलेचले ५१ तब मेघनाद तिनको ब्रह्मफाँस से छूटे व अन्य सनआदि के रस्सोंसे बाँधेदेख समाज सहित बैठे रावणके पासलेगया ५२ तब मतवाले हाथीके समान बाँधेहुये हनुमान् जीको राक्षसोंने रावणसे जाय बताया ५३ इनकोदेख सब राक्षसलोग आपसमें पूंछनेलगे कि यहकौन है व किसका पुत्रहै व किस कार्य्य के लिये आयाहै व यह किसके निकट रहताहै ५४ यह आपसमें कह इसकोमारो भस्मकरो भक्षणकरलो इसतरह क्रोधकर राक्षसलोग परस्पर कहनेलगे ५५ इसतरह महात्मा हनुमान्‌जी ने सब मार्ग्गचल रावण के चरणोंकेनिकटबैठे राजाकेवृद्धसेवकों व राजमन्दिरकोभी देखाजोकि रत्नोंसे विभूषितथा ५६ व तेजबल समायुक्त सूर्य्यकेसमान तपतेहुये रावणने देखा कि वानरश्रेष्ठको राक्षसघसीटेलिये आतेहैं ५७ व सूर्य्यसम

प्रकाशित महातेजस्वी व बलवान् रावणको हनुमानजीनेभी देखा ५८ व रोषके मारे नेत्र लालकिये रावणने हनुमान्जी को देख समीप बैठे अपने वृद्ध मन्त्रियोंसे कहा कि ५६ इस वानरसे सब हाल पूंछो तब सब मन्त्रियोंने यथाक्रम सब बातें पूंछीं तब हनुमानजी ने प्रथम अपने आनेके कार्य्यका मूल कहा कि हम वानरोंके राजा सुग्रीवजीके दूत हैं व उन्हींके पाससे आये हैं ६० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४८ ॥

भीम विक्रमवाले हनुमान्जी तिस मेघनाद के कर्म्मसे विस्मित हो व रावण के कर्म्म से क्रोध के मारे लाल नेत्रकर रावण को निहारने लगे १ वहरावण सुवर्णके सबभूषण धारण करनेसे शोभित व मोतियों की झालरलगे सुवर्णके मुकुटसे अतिप्रकाशित २ व सब सुवर्णके भूषणों में बड़ेबड़े मोलके मणिजड़े व बीचबीचगुहे मानों ब्रह्माने अपने मनसे सब बनादिये थे तिनको वह धारण किये था ३ व बड़े मोल के रेशमी कपड़े पहिरे लालचन्दन लगाये व बिबिधप्रकारकी रचनाओंसे अच्छी तरह अनुलिप्त ४ व दर्शनीय पदार्त्थ धारण करनेसे विचित्ररूप लाले लाले व भीमनेत्रों से आश्चर्य्यरूप व बड़े बड़े ओठों से लम्बायमान व तीक्ष्णदांतों से बड़े दाँतवाला ५ व दशशिरों से नानाप्रकारके सर्प्पयुक्त शिखरोंसे मन्दराचल के समान शोभित ६ हारपहिर नीलाञ्जन की राशिके समान काले व पूर्णमासी के चन्द्रमाकी आभा के समान मुखसे शोभित प्रातःकाल के सूर्य्य सहित बादरकी तरह प्रकाशित ७ बाहोंमें बजुल्ला बाँधने से पाँचमुह के सर्प्पों के समान शोभित ८ चित्र बिचित्र स्फटिकादि मणियों व रत्नोंसे बने व उत्तम बिस्तराबिछे आसनपर बि-राजमान ९ व सब भूषणवस्त्रों से भूषित व चमरहाथ में लिये स्त्रियोंसे सेवित १० व दुर्द्धर प्रहस्त महापार्श्व व निकुम्भ इनचार मन्त्र जाननेवाले मन्त्रियों से ११ शोभित होनेसे चारों समुद्रोंसे शोभित पृथिवी के समानशोभित १२ मन्त्री व औरभी लोगोंसे अच्छीतरह सिखायेजाते देवताओंसे शिक्षित इन्द्र समान शोभित १३ ऐसे रावणको पर्व्वत के शिखरपर बैठे वर्षा के मेघके समान महातेजस्वी हनुमान् जी ने देखा

१४ तिन भीमविक्रम राक्षसोंसे पीड़ित भी हनुमान्‌जीने परमविस्मय को प्राप्तहो राक्षसों के अधिप रावण को देखा १५ तिसको महातेज से भ्राजमान देख तिसके तेजसे मोहितहो हनुमान्‌जी मनसे चिंतनाकरने लगे १६ कि इस राक्षस राज का बड़े आश्चर्य का रूप धैर्य्य सत्व व दीप्तिहै व बड़े आश्चर्य्य की सर्व्वलक्षण युक्तता है १७ इससे जो यह अधर्म्मकारी न होता तो इन्द्रादिदेवोंका भी रक्षकहोनेके योग्यथा १८ परन्तु इसके क्रूर व घोर व लोकमें निन्दित कर्म्मोंसे देवता दानव सहित सब लोक डरतेहैं १९ कदाचित् यह क्रोधकरे तो संसार भर को समुद्रमय करडाले राक्षसराज का अमितवीर्य्य देख हनुमान्‌जी ने इस तरह से विविधभांति की चिन्ता की २०॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुंदरकाण्डेएकोनपञ्चाशत्तमस्सर्गः ४९॥

तिन हनुमान्‌जीको पीली आँखे किये आगे खड़े देख बड़ा रोषकर महाबाहु लोकों को रोवानेवाला रावण १ कपीन्द्रको महातेजस्वी देख शङ्काकेमारे व्याकुलचित्त मनमें शोचनेलगा कि क्या ये साक्षात् भगवान् नन्दीश्वर तो नहींहैं जो किसीकारण यहां आयेहैं २ जिनको हम आगे कैलासपर्वतपर जाय हँसेथे तो उन्होंने हमको शाप दियाथा वही वानरमूर्ति हो आये हैं अथवा बाणासुर दैत्य तो नहीं है ३ इस तरह विचार मारे रोषके नेत्रलाल कर प्रहस्त नाम अपने मन्त्रीसे कालयुक्त व अर्थयुक्त बचन बोला ४ कि इस दुष्टात्मा से पूंछो कहांसे आया व इसके आनेका कारण क्या है व बन उखाड़डालनेसे इसका कौन प्रयोजनथा व राक्षसोंके डरवाने मारनेका क्या मतलब ५ व अगम्य हमारी पुरीमें आनेका इसका कौन प्रयोजन है फिर संग्राम करने से इसका कौन प्रयोजन ये सब बातें इस दुर्म्मति से पूंछो ६ रावणका बचनसुन प्रहस्त बोला हेवानर सावधान होवो तुम्हारा कल्याणहो डरनेका कुछ काम नहीं है ७ हेवानर जो तुम इन्द्रके भेजे रावणके स्थानको आयेहो तो सत्य सत्य कहो डरोनहीं हम तुमको छोड़देंगे ८ व अथवा तुम कुबेर यम वरुणका यह सुन्दररूप धारणकर हमलोगोंकी पुरीको आये हो ९ अथवा विजयकांक्षी विष्णुजीने दूतभेजाहो बताओ क्योंकि तुम्हा-

श। बानरकासा तेज नहीं है केवल रूपही बानरका है १० हे बानर जो ठीकठीक कहदोगे तो छोड़ दियेजावोगे व जो झूंठ कहोगे तो तुम्हारा जीनाभी दुर्ल्लभ है ११ अथवा ये कोईबातें न हों तो जिसनिमित्त तुम राक्षसोंके स्थान में आयेहो बताओ जब इसतरहकहेगयेतो हनुमान् जी राक्षसोंकेईश्वरसेबोले १२ कि हमइन्द्र यम वरुण कुबेर इन किसीकेमित्र नहीं हैं व न हम विष्णुके भेजे यहां आयेहैं १३ किन्तुहमारी जातिही ऐसी है व हम बानरही हैं हमलोगोंको रावणके दर्शन दुर्ल्लभहैं इससे उनके दर्शनही की इच्छासे यहां चलेआये १४ व बनभी राक्षसराज के दर्शनहीके लिये हमने उखाड़ तूरफाड़डाला तिसके पीछे बलवान् व युद्धकरनेकी इच्छाकिये तुम्हारे राक्षसलोग वहां पहुँचे १५ जब वे मारनेपर उतारूहुये तो अपनी देहकी रक्षाके लिये समर में हम उन से लड़े व अस्त्र फांशी आदिसे राक्षस तो क्या हमको देवता व असुर भी नहीं बांधसक्के १६ क्योंकि ब्रह्माजी ने हमकोभीबरदानदे रक्खा है कि मुहूर्त्तभरसे अधिक हमारा अस्त्र भी तुमको न बांधसके फिर अन्यबंधन की कौन गणना है परन्तु हमको राजा देखने की इच्छाथी इससे अस्त्र में पड़गये १७ फिर अस्त्रसे वहीं छूटभी गयेथे इसबात को तुम्हारे राक्षसभी जानते हैं परन्तु हम रामचन्द्रजीके किसी कार्यके लिये तुम्हारे निकट चलेआये हैं कुछ तुम्हारे राक्षसोंके पुरुषार्थसे नहींआये१८ अमितपराक्रमी श्रीरामचन्द्रजीके हम दूत हैं इससे इसबातको जान हम तुम्हारे हित व पथ्य बचन कहते हैं सुनो १९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५० ॥

बड़ेसत्ववान् बानरोंमेंश्रेष्ठ हनुमान्जी महासत्व तिस रावणको देख बड़ी सावधानी के साथ अर्थयुक्त बचन उस दशाननसेबोले १ हेराक्षस देव हम सुग्रीवके सन्देशसे तुम्हारे निकट आये हैं सुग्रीव तुम्हारे भाई ने तुमसे कुशल कहाहै व तुम्हारी कुशल पूंछा है २ अब इसलोक में व परलोकमें हित धर्म्म अर्थ सहित वचन जो तुम्हारे भाई सुग्रीव ने कहाहै वह सुनो ३ रथ हाथी घोड़ेआदि सब राजपदार्थयुक्त व पिताके समान लोकभरके बन्धु व इन्द्रसम प्रकाशित दशरथनाम राजाहुये ४

तिनके अति प्रियतर महाबाहु ज्येष्ठ पुत्र सब कुछ करनेमें समर्थ श्री रामचन्द्र जी पिताकी आज्ञासे दण्डकारण्य को निकले ५ उनके साथ उनके भाई लक्ष्मणजी व उनकी भार्य्या सीताजी भी चलीं वे रामचन्द्र महातेजस्वी व धर्म्मही के मार्ग्ग में चलते हैं ६ तिन श्रीरामचन्द्रजीकी महारानी सीताजी महात्मा जनकजीकी कन्या हैं व जनस्थानसे जाती रहीं ७ तिनको ढूंढ़ते ढूंढ़ते अपने भाई सहित श्रीरामचन्द्रजी ऋष्यमूक पर्व्वतपर आये वहां सुग्रीवजीसे समागम हुआ ८ उसमें सुग्रीवने तो सीताजी के ढूंढ़ने की प्रतिज्ञाकी व श्रीरामचन्द्रजीने सुग्रीव को बानरों का राज्य दिलानेकी ९ तिसके पीछे तिन महाराजकुमार ने तो संग्राम में बाली को मार सुग्रीव को ऋक्षों व बानरों का राजा बनादिया १० बानरोंमें श्रेष्ठ बालीको तुमभी अच्छीतरह जानते हो कि कैसा बलीथा उसको समरमें श्रीरामचन्द्रजीने एकही बाणसे मारडाला ११ तिसके पीछे सत्य प्रतिज्ञा करनेवाले सुग्रीवजी सीताजीके ढूंढ़नेमें बहुतब्याकुल हुये तब उन सब बानरोंके स्वामीने सब दिशोंको बानर भेजे १२ तिन के भेजे वे सहस्रों लाखों किडोरों व अर्ब्बों बानर सब दिशोंके मार्ग्गोंमें व आकाश पाताल में ढूंढ़ते हैं १३ उनमें बहुत तो गरुड़के समान चल सक्ते हैं व बहुतपवनके समान शीघ्र चलते हैं व बहुतसे निराधारही चलेजाते हैं ऐसे महाबीर महाबलवान् बानरहैं १४ व हमारा हनुमा-न्नाम है व पवनके हम औरस पुत्रहैं इससे सीताजीके लिये बहुतही जल्द सौ योजनका चौड़ा १५ समुद्र नांघ तिनको देखनेके लिये यहां आयेहैं सो घूमतेहुये हमने तुम्हारे घरमें जानकीजी को देखा १६ तिस से आप तो धर्म्म शास्त्रका अर्थ अच्छीतरह जानते हैं व तप भी बहुत किया है हे महाप्राज्ञ तुम परस्त्री को अपने यहां रोंकने के योग्य नहीं हो १७ क्योंकि आपलोगोंके समान बुद्धिमान्लोग वेद विरुद्ध व बहुत नाशयुक्त व इसीसे मूलनाशक कर्म्मोंमें नहीं आसक्त होते १८ जो कह-ते हो कि वेद विरुद्ध कर्म्मकर प्रायश्चित्तकर फिर शुद्ध होजायँगे इसमें हमारीकौन हानिहै तो रामचन्द्रजीके कोपकेअनुवर्त्ती लक्ष्मणजीकेबाणों के आगे देवता असुरोंमें भी कौन खड़ा होसक्ता है कोई भी नहीं १९ हे राजन् ऐसा कोई पुरुष तीनोंलोकों में भी नहींहै जो रामचन्द्रजी को

होसके पहुँचाय आप सुखपावै २० तिससे तीनोंकाल में हित करनेवाला धर्म्मयुक्त व अर्थ प्राप्तकरनेवाला हमारा वचनमानो नरदेव श्रीरामचन्द्र जीको जानकी देदो २१ व हमको क्या हमनेतो सीताजीको यहां देखा इससे जो दूतोंको बहुत दुर्ल्लभ होता व यश पाया अब जो बाकीकर्म्म सीताजीको यहांसे लेजानाहै उसकेकारण श्रीरामचन्द्रजीहैं वहीलेजायँगे २२ हमने देखा तो सीताजी हमको बहुत शोकयुक्त जानपड़ी जिस को तुम घरके भीतर पांचमुखकी सर्प्पिणीके समान नहीं जानते २३ इन सीताजी को देवता व दैत्य भी अपने यहां छिपा नहींसके जैसेविष मिला अन्नकोई चाहे पराक्रम के मारे खाभीले पर पचानहींसक्ता २४ तुमने बड़ा तपकर यह बड़ाभारी धर्म्मपाया है चाहिये कि उसे अब न नाशो क्योंकि तुम्हारे प्राणभी चलते चलते वहलेजायगा २५ हेराजन् जो तपकरने के कारण तुम अपनाको देवता व दैत्योंसे अवध्य देखतेहो क्योंकि ब्रह्माजी ने तुमको बरदिया है कि देवासुर तुम्हें न मारसकैंगे उसमें भी यह बड़ाभारी कारणहै २६ कि सुग्रीव व रामचन्द्रजी न तो देवताहैं व यक्ष न राक्षस किन्तु हेराजन् रामचन्द्र जी तो मनुष्य हैं व सुग्रीवजी बानरों के राजा फिर ब्रह्माजीने यह तो वरदियाही नहीं कि मनुष्य व बानरभी तुमको न मारसकेंगे तिससे हेराजन् तुम इनदोनों जनोंसे अपने प्राणों की रक्षा कैसे करोगे २७ जो कहो कि तपोबल से हमारानाश न होगा तो अधर्म्मकारी पुरुष धर्म्मफलको नहीं प्राप्तहोता किन्तु अधर्म्महीको प्राप्तहोताहै जो कहो कि अधर्म्म तो थोड़ा बहुत सबमें रहताहै फिर धर्म्मकरने पर उसका फल भी तो मिलना चाहिये तो जो बहुत धर्म्मकरै तो अल्प अधर्म्मको वह नाशताहै तुम्हारे अनंत अधर्म्मों को तपोबल से उत्पन्न धर्म्म न नाशैगा क्योंकि वह अधर्म्मकी अपेक्षा थोड़ाहै २८ फिरजो तुमने धर्म्मकिया उसका फल इतना बड़ा राज्य पाभी तो चुके अब अधर्म्म कियाहै तो इसकाभी फल पावोगे २९ अब जनस्थान वाले राक्षसोंका वध व बालीकाबध समझ रामचन्द्र जी व सुग्रीव से मित्रता करनेही को अपना हित समझो ३० यद्यपि हम अकेलेही घोड़े हाथी रथसहित लंकाका नाशकरसक्ते हैं परन्तु क्याकरैं रामचन्द्रजी ने यह निश्चय नहीं करदिया कि तुम लंकानाशो भी करवे

आना ३१ क्योंकि जिन अमित्रों ने सीता जी को दिक्क किया है उनके मारनेकी प्रतिज्ञा रामचन्द्रजी ने अपनेही हाथोंसे की है ३२ रामचन्द्र जीका अपकार करतेहुये इन्द्र भी सुखनहीं पासक्ते फिर तुम्हारेसमान जनोंको कौनकहे वे बेचारे क्यापासकेंगे ३३ जिसको तुमसीता समझ- तेहो जो तुम्हारे गृहमें टिकीहैं इनको सब लंकानाश करनेवाली काल- रात्रि समझो ३४ तिससे अपने कण्ठपर स्थापित किये सीता विग्रह रूपकाल फाँशी से कुछ काम नहीं इसको न धारणकरो किन्तु अपने कल्याणकी चिन्ताकरो ३५ सीताजी के तेजसे भस्म व रामचन्द्रजी के कोपसे बरतीहुई अँटारी प्रासादादि युक्त यहलंकापुरी बिलकुल भस्मी- भूतही समझो ३६ हेरावण अपने मित्र मन्त्री जातिके लोग भाई हित पुत्र स्त्रियां व लंकापुरी इनसबको विनाशको न पहुँचावो ३७ हेराक्षस राजेन्द्र हमारा सत्यबचन सुनो क्योंकि हम रामचन्द्रजीके दास व दूत हैं वानर तो जानोहईहैं ३८ चर अचर सहित पृथ्वी भस्म आयु आका- श अग्नि व सबलोकों का संहारकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्र जी फिर तिसीतरह की सृष्टि बनावकर सक्ते हैं ३९ देवता दैत्य नरेन्द्र यक्ष रा- क्षसविद्याधर नाग गन्धर्व मृग४० सिद्ध किन्नर व सब पक्षियोंमें सर्व इनमें व सब प्राणियोंमें ऐसा कोई भी नहीं है जो विष्णुतुल्य पराक्रमी श्रीरामचन्द्रजीके साथ लड़सके ४१ इससे चतुर्दश भुवनोंके ईश्वर श्री रामचन्द्रजीका ऐसा विप्रियकर तुम्हारा जीना दुर्लभ है ४२ हे निशा- चरेन्द्र देवता दैत्य गन्धर्व विद्याधर नाग यक्ष कोई भी तीनोंलोकों के स्वामी श्रीरामचन्द्रजीके सामने नहीं ठाढ़होसक्ता ४३ ॥

दो० चतुरानन बिधि हर त्रिपुर हर त्रिनयन शचिनाथ ॥
राघव सम्मुख समरमहँ टिकते होहिंअनाथ १ । ४४
बीरवादि कपि बचन शुभ अप्रिय सुनि लङ्केश ॥
नेत्र नचाय सकोप दिय तावध हेतु निदेश २ । ४५

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५१ ॥

तिन महात्मा बानर हनुमान्जीके बचन सुन मारे क्रोधके मूर्च्छित रावण ने तिनके मारडालनेको आज्ञादी १ जब दुष्टात्मा रावण ने हनु-

मानूजीके बधके लिये आज्ञादी तो दूतधर्म्म में टिके हनुमानूजीके बध करनेको बिभीषणजीने इच्छा न की २ रावणको क्रोध किये व दूतबध करनेमें उपस्थित जान उचितकृत्यकरने बतानेके लिये नियत बिभीषण जी जो अपनाको कर्त्तव्य था उसकी उसकी चिन्तना करनेलगे ३ जब शत्रुओंके जीतनेवाले बिभीषणजीने बनाय निश्चय करलिया तो साम- उपायसे अपनेभाई रावणसे अति हित व अर्थयुक्त बचन बड़ी चतुरता से बोले ४ हे राक्षसेन्द्र क्षमाकरो व रोषछोड़ो प्रसन्न हो व हमाराबचन सुनो सब पूर्व्व परकी बातें जाननेवाले सज्जन राजाधिराज लोग दूत को नहींमारते ५ हे राजन् इस बानरका बध धर्म्मसे बिरुद्ध व लोका- चारमें भी निन्दित व तुम्हारा अयश करनेवाला व तुम्हारे अयोग्य है ६ क्योंकि तुम बड़े धर्म्मज्ञ कृतज्ञ राजधर्म्म जाननेमें चतुर प्राणियों के ऊँचनीच जाननेवाले व परमार्त्थ जाननेवाले हो ७ जो तुम्हारेसे पंडित लोग भी रोषसे जलउठें तो शास्त्र जाननेमें जो श्रम कियागया वह मि- थ्या ठहरा ८ तिससे हे शत्रुनाशक राक्षसेन्द्र व दुःख से प्राप्त होनेके योग्य योग्य अयोग्य बिचार दूतको दण्ड दीजिये ९ बिभीषण के बचन सुन राक्षसोंका स्वामी रावण बड़ाकोपकर उत्तर देनेलगा १० हे शत्रुओं के नाशक पापियोंके मारनेसे पाप नहींहोता तिससे इस पापकारी बा- नरको मारही डालेंगे ११ अधर्म्मका मूल बहुत दोषयुक्त व अनरपन भरा रावणका बचनसुन बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ बिभीषणजी परमार्त्थ निश्चित बचन बोले १२ हे लंकेश्वर व राक्षसेन्द्र प्रसन्न हूजिये धर्म्मार्त्थ युक्त हमारा बचन सुनो किसी समयमें भी दूत मारडालनेके योग्य नहींहोता यहसब पण्डितलोग कहते हैं १३ इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि इस मनस्वीने आपको बड़े अप्रिय बचन कहे १४ तथापि नाक काटडालने आदिसे बिरूप करडालना लोह शलाका आदिसे पीटना भौंह शिखा आदि मुंड़ा डालना व पैसाआदि दगधाय माथादि दागदेना बस दूतको येही दण्ड देने शास्त्रमें लिखेहैं परन्तु प्राणोंसे दूतको मारडालना तो हमने कभी सुनाभी नहीं फिर देखनेको कौनकहे १५ फिर धर्म्म अर्त्थसे शिक्षित बुद्धि यहां वहांकी सब बातोंके जाननेमें निश्चितार्त्थ आपसरीखे लोग कोपमें टिकें यहबात अच्छी नहीं क्योंकि महानुभाव लोग को-

नहीं करते १६ हे बीर नतो कोई धर्म्मवादमें न लोकके वृत्तमें व न शास्त्र बुद्धिग्रहण में तुम्हारी तुल्य है क्योंकि तुम सुरासुरों से उत्तम हो १७ क्योंकि पराक्रम व उत्साह होनेसे मनस्वी देवता दैत्योंसे तुम बड़े दुःख से जीते जानेके योग्यहो क्योंकि तुम्हारे अपरमित बल पराक्रमादि हैं इसीसे समरोंमें देवताओंके समूह व राजाओंके झुण्डकेझुण्ड तुमने जीते १८ शूरबीर व अजित व देवता दैत्योंके शत्रु इसतरहके तुमने जिनका सबधन लेलिया व प्राणभी अधनिकले करदिया उन बीरोंने भी तुम्हारा ऐसा अपराध कभी नहींकिया १९ इस कपिके मारडालनेमें हमतो कोई गुण नहीं देखते इससे हमारी जान जिनका भेजाहुआ यहहै तिन्हींको यह बधरूप दण्ड दियाजाय २० इस बेचारेकी कौन लगाय है क्योंकि शत्रुओंका भेजा यहां आयाहै जैसा सन्देश उन्होंनेकहा इसने कहदिया पराधीन तो हैहीहै इससे चाहे साधु हो व असाधु पर दूत मारडालने योग्य नहींहोता २१ इसके सिवाय इसके मारजाने पर ऐसा और कोई दूत भी तो दिखाई नहींदेता जो आकाशमार्ग्ग में उड़ताहुआ यहांतक आसके वा यहांहीं से वहां चलाजाय इससे बड़े शत्रुओंके जीतनेवाले आप इसबिषयमें यत्न न करें बरन इंद्रादि देवताओंके नाशमें यत्नकीजिये २२ इसदूतके मरजानेपर हम दूसरे दूतको नहींदेखते जो युद्धमें दुर्ज्जय व सुशिक्षित उनदोनों महाराज कुमारोंको जोकि आपसे बिरुद्धहैं फिर युद्ध करनेके लिये तैयारकरे २३ इससे इसको मार पराक्रम व उत्साह होनेसे मनस्वी देवता व दैत्यांसे भी दुर्ज्जय तुमको युद्धके लिये तैयार राक्षसोंका मन न तोड़ना चाहिये २४ किन्तु हित शूर एकाग्रचित्त व महागुणयुक्त कुलोंमें उत्पन्न मनस्वी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अच्छी तरह तुम्हारे यहांसे पाले पोषे गये किड़ोरों नागहैं २५ उनमें सेनाका कोई भाग तुम्हारी आज्ञासे चलाजा स्त्रीके बियोगसे मूढ़ उन राजपुत्रोंके पास जाय तुम्हारा प्रभाव जनाय पकड़लावे २६ छोटे भाई बिभीषण जी का उत्तम व हित बचन सुन देवताओं का शत्रु महाबलवान् राक्षस राजों के राजाओं में मुख्य निशाचरों के स्वामी रावणने चित्त से बचन ग्रहण करलिया २७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्विपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५२॥

भाईके देशकालके हित बचन सुन रावण बोला १ कि आपने अच्छा कहा दूतका बध करना तो निन्दितही है तिससे अवश्य बधको छोड़ और कोई दण्ड इसको दियाजाय २ हम जानते हैं कि बानरोंका भूषण व हित पूंछ होतीहै तिससे शीघ्र इसकी पूंछ फूंकदो जिसमें यह जली पूंछले यहांसे जाय ३ व बिना पूंछ होनेसे बिरूपताके मारेदुर्ब्बल इसको इसके मित्र बांधव सुहृद व जातिवालेलोग देखें ४ यह कह फिर रावण ने आज्ञादी कि इसकी पूंछमें आग लगाय सब राक्षस लङ्का की छोटी बड़ी सब गलियोंमें घुमावें जिसमें जिनके भाई बन्धु राक्षसों को इसने माराहै वे राक्षसियां देखदेख खुशीहों ५ तिसके ऐसे बचनसुन महाक्रोधी राक्षसोंने फटे पुराने वस्त्र लाय लाय तिसकी पूंछमें लपेट दिया ६ जब बहुतसे कपड़े पूंछमें लपेटेगये तो हनुमान्जी और बहुत बाढ़गये जैसे सूखाईंधन पाय बनमें आग बढ़तीहै ७ फिर कपड़े लपेटनेके पीछे बहुत से तेलसे भिगोय दुष्टराक्षसोंने आगलगादी जब पूंछ बरनेलगी तो मारे रोष व क्रोधके ब्याकुल व प्रातःकालके सूर्य्यके समान मुखकर हनुमान् जीने उसी बरती पूंछसे सैकरों राक्षसों को मारडाला ८ तिसके पीछे तमाशा देखनेके लिये और स्त्री बाल वृद्ध बटुरगये व देखदेख आनन्दित होनेलगे ९ जब उन सबोंने पीछा न छोड़ा तब बँधेहुये हनुमान्जी ने उस समयके अनुसार अपनी मतिकी १० कि देखो हम बँधुआ भी हैं पर राक्षस हमारे निकट मारे डरके नहीं आते इससे हम चाहैं तो सब बन्धन तोड़ कूदकर इन सब राक्षसों को मारडालें ११ व हमने अपने स्वामीका कार्य्य करने के लिये जितना इन सबोंको मारा पीटा है इन दुष्टोंने अपने स्वामीकी आज्ञासे हमको बांधाभी है पर उस अकार्य्यका बदला नहीं लेसके १२ व हमको क्या हमतो संग्राममें अकेले सब राक्षसोंको मारसक्ते हैं परन्तु रामचन्द्रजीकी प्रीतिकेलिये ऐसा दुःखसहते हैं १३ क्योंकि रामचन्द्रजीकी आज्ञा है कि रावण जहां रहता हो सब देखआना परन्तु हम रात्रिको लङ्कामें घूमेहैं इससे दुर्ग्गम होनेके कारण अच्छी तरह सायद सबस्थान देख न चुकेहों तिससे अब फिर ऐसी दशामें लङ्काभरमें घूमेंगे तो सब देखलेंगे १४ अवश्य दिनकोहमें लङ्का देखनी है इससे जितना चाहैं ये दुष्ट हमको बांधें व पूंछमें और भी

अग्नि लगावें १५ व हमको पीड़ितकरें हमारे मनको कुछभी श्रमनहीं है यह हनुमान्‌जी अपने मनमें शोचतेरहे कि महासत्ववान् व महाबानर हनुमान्‌जीको १६ पकड़ सब राक्षस आगेको लेचले व शङ्ख नगारे तुरुही आदि पीछेपीछे बजानेलगे १७ इसतरह बड़े क्रूरकर्म्म करनेवाले राक्षसपुरी भरमें घुमानेलगे व आगे पीछे राक्षसोंके चलनेसे शत्रुओंको मारनेवाले हनुमान्‌जी सुखसे चलेजातेथे १८ जब राक्षसोंकी महापुरी में हनुमान्‌जीको राक्षसों ने घुमाया तब उन्होंने अति विचित्र बिमान देखे १९ व तरहतरहके बनेबनाये भूमिभाग देखे उनमें द्वारोंपर बड़ेबड़े मणियों से जड़े चबूतरे देखे व बहुतसे चौराहे व गझिन बसे बहुत घर व बहुतसी चौकें २० व बड़ी बड़ी सड़कें व छोटी छोटी सँकरघटियां व दो घरोंके बीचकी भूमियां देखीं इसतरह उन सब राजमार्ग्गादि स्थानों में हनुमान्‌जी घूमे २१ जिस जिसमार्ग्गहो ये निकलतेथे राक्षस आगे आगे पुकारते चलेजाते कि वह दूत यही बानरहै देखलो इस तरह जब हनुमान्‌जीकी पूंछबरनेलगी तो २२ सब राक्षसियां जानकीजीसे यह अप्रिय बचन कहनेलगीं कि हे सीताजी जो लाल मुखवाला वानर तुमसे वार्त्ता करताथा २३ देखो पूंछ बार वह घुमायाजाता है अपने प्राण नाशके समान क्रूर बचन सुन २४ शोकके मारे सन्तप्तहो जानकीजी मनसे अग्निकी प्रार्त्थना करनेलगीं व तिन महा कपि के लिये मंग करनेमें तैयारहुईं २५ व पवित्र हो अग्निजी का बारबार ध्यान करतीहुई बोलीं कि हमने जो अपने पतिकी सेवाकी है व जो कुछ तप कियाहै २६ व जो हमने एक रामचन्द्रजीही को पति समझा हो तो हेपावक तुम हनुमान्‌के लिये शीतल होजाव इस प्रार्त्थनाके पीछे तीक्ष्ण ज्वालावान् व दक्षिणावर्त्त शिखा घुमाता अग्नि २७ जानकीजीके आगे आयपहुँचा वह दक्षिणावर्त्त होनेसे जानों हनुमान्‌जी का कल्याणही बतारहाथा व उससमय हनुमान्‌जी का पिता पवनभी २८ हिमालय पर्व्वतके निकट बहनेवाले पवनके समान शीतलहो जानकीजीकी स्वास्थ्य करनेके लिये बहनेलगा इसतरह जब पूंछमें लपेटे तेल सभोरे कपड़े बरनेलगे तब हनुमान्‌जी चिन्ता करनेलगे २९ कि यह अग्नि धधाकार बररहाहै फिर हमको सबओरसे भस्म क्यों नहींकरता

व ज्वाला बहुतबड़ी देखपड़ती पर हमको कुछभी गरमी नहीं जानपड़ती ३० हमारी पूंछके आगे यहो जानपड़ता है कि जानों शिशिर ऋतुहै मारे जाड़के कुछ ओढ़ना चाहिये अथवा यह वैसी बातहो जैसे कि जब हम समुद्र के ऊपर ऊपर चलेआतेथे व रामचन्द्रजी के प्रभावसे हमको समुद्रमें पर्व्वतरूप आश्चर्य देखपड़ाथा ३१ जो रामचन्द्रजी के अर्थ धीमान् समुद्र व मैनाकको इसतरह हमारे कर्म्मका अनादरहुआ तो क्या अग्नि आदर न करेगा ३२ अथवा सीताजीके सौम्यस्वभावसे व रामचन्द्रजीके तेजसे व हमारे पिता पवनके मित्रतासे यह पावक हमको नहीं जारता ३३ फिर कुछ देरमें हनुमान्जी चिन्तवन करनेलगे कि हम ऐसे रामदास को अधम राक्षसोंने कैसे बांधलिया ३४ इससे अब हम अपने पराक्रम का प्रभाव दिखावें तो बने यह कह महा बलवान् हनुमान्जीने सब बन्धन रत्ती रत्ती तोड़डाले ३५ व बड़ेवेगसे उछले व बड़ा किलकिला शब्दकिया व उसी स्थान पर पर्व्वताकार ऊँच फाटक था ३६ कि जिसपर बहुतसे राक्षस खड़े थे श्री पवनकुमार भी कूद उसी पर चढ़गये व क्षणमात्र में पर्व्वताकार होगये ३७ फिर बहुत छोटे होगये इससे सब बन्धन ढीले पड़गये कि आपसे आप छूटपड़े जब सबबन्धन छूटगये तो फिर पर्व्वताकार होगये ३८ व चारों ओर निहारा तो उसफाटक में एक बड़ाभारी लोहका सरदरधरा था उसको झट खींचलिया व उसीसे उसफाटक के रखवारों व अपने सबरखवारों को पवनतनयने मारडाला ३९ रणमें बड़ाप्रचण्ड विक्रम दिखानेवाले हनुमान्जी तिनसबोंको मार फिर लंकादेख व कूद अपनी जलती पूंछघुमाया उससमय दुपहरी के सूर्य्यके समान शोभितहुये ४० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रिपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५३ ॥

इसतरह लंकापुरी देखते व अपना मनोरथ सिद्ध समझते व वीररसको बढ़ाते हनुमान्जी बाकी कार्य्य करनेकी चिन्ताकरनेलगे १ कि हमने औरतो सबकार्य्यकिया परन्तु इनराक्षसोंको चलतेचलाते फिरभी कुछ सन्ताप उत्पन्न करानेवाला उपाय करना चाहिये यहोबाकी रहाहै २ प्रथम तो बन विध्वंस किया फिर कुछ प्रबल रासक्षों को भी मारा

सेनाकाभी चतुर्थांश वधकिया किलाभी दोएकतोड़े व गिराये ३ पर अब जो सबकिले गिरावें तो हमको बड़ा परिश्रम पड़ेगा वह कार्य्य थोड़ेहीसे यत्नसे सफल होसक्ताहै ४ वहयहहै कि जो अग्निहमारी पूंछ में बरताहै उसकी तृप्ति इन उत्तम उत्तम गृहोंसे करनी चाहिये ५ यह बिचारकर बरती पूंछके हनुमानूजी बिजुली सहित बादरकेसमान चमकतेहुये लंकाके मन्दिरोंपर बिचरनेलगे ६ राक्षसोंके इसघरसेकूद उस घरपर व इस फुलवाड़ी से उसफुलवाड़ी में इधर उधर देखते निर्भय हो सब अच्छेभवनों पर विचरनेलगे ७ सबसे पहिले कूद प्रहस्त नाम राक्षस के गृहपर चढ़ व उसमें चारोंओर से अग्नि लगाय पवन सम बेगवान् व बली हनुमानूजी ८ वहांसेकूद महापार्श्व के गृहपरचढ़ वहां भी कालाग्नि के समान अग्नि लगादिया ९ वहां से वज्रदंष्ट्र के घरपर गये व अग्निलगाया फिर शुकनाम के घरपर फिर सारणके घरपर चढ़ चौफेरसे फूंकदिया १० तिसीतरह मेघनादका भवन जारा तिसकेपीछे जम्बुमालि व सुमालि के गृहजारे ११ फिर रश्मिकेतु व सूर्य्य शत्रुका भवन फिर ह्रस्वकर्ण ह्रस्वदंष्ट्र व रोमश राक्षस का गृहजारा १२ फिर युद्धोन्मत्त मत्तध्वजग्रीव विद्युज्जिह्व व हस्तिमुख के गृहजारे १३ फिर कराल विशाल शोणिताक्ष कुम्भकर्ण व मकराक्षके भवन भस्मकिये १४ फिर नरान्तक कुम्भनिकुम्भ यज्ञशत्रु व ब्रह्मशत्रुके गृहजारे १५ परन्तु युक्तिपूर्व्वक कूद हनुमानूजीने बिभीषणका मन्दिर बचादिया १६ फिर इन बड़ेगृहोंमें जो नानाप्रकार के उत्तम उत्तम पदार्थ धरेथे ढूंढ़ भीतरों में घुसघुस हनुमानूजीने सब भस्म करदिये १७ सब बड़ेबड़े मन्दिर जार महा वीर्य्यवान् व शोभावान् हनुमान् जी सबसे उत्तम रावणके मन्दिरपर चढ़े १८ व तिस नानारत्नोंसे विभूषित मेरु व मन्दराचलके समान व नानामंगल वस्तुओंसेशोभित रावण भवनमें १९ अपनीपूंछमें बरतीहुई आगलगादी व युगान्तके मेघके समानगर्ज्जे २० व उसी समय अतिवेगसे वायुबहा जिससे कालाग्निही के समान अग्नि प्रज्वलितहुआ २१ उसबरते अग्निको पवन और भी प्रचण्ड करताजाता था व एकसे दूसरेगृह को पहुँचाता था ऐसा अग्नि का प्रचारहुआ कि वे सब सुवर्णसेबने व मणिजटित २२ बड़ेबड़े गृह फाटफूट व जरभस्म

होगये व वे सब विमान जलतेहुये टूटटूट पृथ्वी में गिरपड़े २३ जैसे पुण्यक्षीण होनेकेपीछे स्वर्गसे सिद्धलोगों के भवन गिरतेहैं उस समय इधर उधर दौड़ते राक्षसों का बड़ाभारी शब्दहुआ २४ क्योंकि अपने अपने घरकीरक्षा करनेमें सबका उत्साह टूटगया था यही बकते थे कि हा अरे वानरका रूप धारणकर यहअग्निही आयाहै २५ व कोईकोई राक्षसियां अग्निसे जलतीहुई अपने अपने लड़के लिये बाल छोड़े बड़े बड़े मन्दिरोंके ऊपरसे २६ कूदतीहुई आकाशसे गिरतीहुई विजुलीके समान शोभितहुई व हीरा मूंगा वैदूर्य्यमणि मोती चांदी सहित २७ गृहोंसे बहते नानाप्रकार के धातु हनुमान्‌जी ने देखे जैसे अग्निकाष्ठों के भस्मकरने से नहीं अघाता तसेही २८ हनुमान्‌जी राक्षसों के बध करनेमें कुछ भी तृप्त न हुये यही चाहतेथे कि सबको मारहीडालें व न हनुमान्‌जीके मारेहुये राक्षसोंको धारण करनेसे पृथ्वी तृप्तहुई क्योंकि वहभी यही चाहतीथी कि सब राक्षस मर हमारे ऊपरपड़ें तो अच्छाहै क्योंकि इनदुष्टों ने हमारी कन्या सीताजीको पतिसे वियोग करादिया है २९ बेगवान् महात्मा हनुमान्‌जी ने लङ्कापुर ऐसा भस्मकिया जैसे महादेवजीने त्रिपुर भस्मकिया था ३० तिसकेपीछे लङ्कापुरी के पर्ब्बत पर अति भयङ्कर अग्निउठा वह हनुमानजीके छोड़ने स बड़ीभारी शि-खापसार करनेलगा ३१ व राक्षसों के गृहों में लगा व निशाचरों के शरीरोंको घृतपाय प्रज्वलित होनेसे निर्द्धूम व पवनसहित युगान्तकाल के पावक के तुल्यरूप अग्नि आकाश को छूताहुआ बाढ़ा ३२ व कोटि सूर्य्य सम प्रकाशित अति तेजस्वी अग्नि लङ्का को आठोओर से घेरे अनेक प्रचण्ड शब्दोंसे ब्रह्माण्ड को भेदन करताहुआ प्रलयके अग्निके समान शोभितहुआ ३३ तिस समय आकाश को प्राप्तहो अतिरूखा व टेसूके फलके समान शिखावानअग्नि बहुतहीबढ़ा व सबकहीं पसरेहुये धुआंकी घनी पाँतियां नीलकमल के समान आकाशको प्रकाशित करने लगीं ३४ तब सब राक्षस आपस में कहनेलगे कि यह वानर साक्षात् कालहै नतो देवताओंका स्वामीइन्द्रहै न यम न वरुण न पवन न रौद्र नअग्नि न सूर्य्य न कुवेर व न चन्द्रमाहै ३५ क्यासबके पितामह लोक के धारण करनेवाले चार मुख के ब्रह्माजीका रूप धारणकर कोपों तो

राक्षसों का संहार करनेके लिये यहां नहीं आया ३६ अथवा वानरका रूप धारणकर अचिन्त्य सबका कारणरूप अनन्त विष्णुजी का सुन्दरतेज तो अपनीमाया से इससमय तो नहींप्राप्तहुआ ३७ इस तरह सबप्राणी व सबछोटे बड़ेमन्दिरों सहित लङ्कापुरी जरीबरी देख सबराक्षस परस्पर इकट्ठे हो हो कहतेथे ३८ तिसकेपीछे राक्षस घोड़े हाथी रथ पशु पक्षी मृगगण वृक्षसहित लङ्काजलजाने के कारण हाहाकारकर रोदनकरनेलगी ३६ हा तात हा पुत्र हा कान्त हा मित्र हा राक्षसोंका पुण्य व भोग सबहतहोगया इसतरह राक्षसोंने जो घोरशब्द किया उसेसुन भयहोतीथी ४० अग्निकीज्वाला से संयुक्त वीरमरीहुई व योधोंसे ऊबीहुई हनुमानजी के अनादरसे लङ्कापुरी शापयुक्तही मानोंहोगई ४१ व मारेभयके व्याकुल राक्षसोंसेयुक्त व अग्निकीज्वालाओं से चिन्हित लङ्काको हनुमानजी ने महादेवजी के कोपसे प्रलयसमयमें भस्म अग्नि पृथिवीके समानदेखा ४२ व वृक्षसहित बनतोड़ व समरमें राक्षसोंकोमार व रत्न समूहसेबनी लङ्कापुरीकोजार हनुमानजी खड़ेहुये ४३ व बहुत राक्षसोंकोमार व सहितवृक्ष बनउजाड़ व राक्षसोंके भवनोंमें अग्निलगाय महात्मा हनुमानजी मनसे रामचन्द्रजीके निकटपहुँचे ४४ तब महाबल मारुततुल्यवेग महामति पवनसुत वबानरोंमेंमुख्य हनुमानजीकी सबदेवतालोग स्तुतिकरनेलगे ४५ व सबदेवतासबमुनिश्रेष्ठ गन्धर्व विद्याधर नाग व सबप्राणी अतुल्य प्रीति को प्राप्तहुये ४६ बन विध्वंसकर समरमें राक्षसोंकोमार व लङ्कापुरीकोजार महातेजस्वी हनुमानजी शोभितहुये ४७ गृहश्रेष्ठोंके प्रासादोंकीभूमिमें टिके वानरराजों के सिंह हनुमानजी पूंछजलने से किरणसहित सूर्य्य के समान शोभित हुये ४८ सबलङ्काजार राक्षसोंको पीडितकर हनुमानजी ने अपनी पूंछकीआग समुद्रमें बुझाडाली ४६ तब सबदेवता गन्धर्व सिद्ध व परमर्षिलोग लङ्काको भस्मदेख बड़ीविस्मयको प्राप्तहुये ५० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचतुःपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५४ ॥

जलती विध्वंसित व भयभीत राक्षससमुक्त लङ्कापुरीदेख हनुमानजी चिन्ताकरनेलगे १ जिसमें तिसको बड़ाउद्वेगहुआ व अपनी निन्दाभी

आपहीसे उत्पन्नहोआई कि लङ्काभस्म करतेहुये हमने यहक्याकिया २ वे महात्मालोग धन्यहैं जो उठेहुये कोपकोज्ञान फिर रोंकलेतेहैं जैसे बरते अग्निको महात्मालोग जलसे शान्तकरदेतेहैं ३ क्रुद्धहो मनुष्य कौन पाप नहींकरता व क्रुद्धपुरुष गुरु मातापिताआदि अपने बड़ोंकोभी मारडालताहै व क्रुद्धपुरुष साधुलोगोंकोभी कठोर बचनकह दुतुकारता है ४ क्रोधीपुरुष यह नहींजानता कि क्या कहनेके योग्य है व क्याअयोग्य व क्रोधयुक्त पुरुषकुछभी अच्छाकर्म्मनहींकरसक्ता व न वहकोईबातअयोग्य समझता ५ जो पुरुषउठेकोपको क्षमासेही दूरकरदेता जैसे सर्प्पपुरानी केंचुल छोड़देताहै पुरुषवही कहाताहै ६ महादुर्बुद्धि निर्लज्ज व अत्यन्त पापी मुझको धिक्कारहै जिसने यह न शोचाकि जानकीजीभी इसी लङ्का मेंबैठीहैं फिर में कैसे जारिडालताहूंमुझसेअधिक स्वामीघातक कोईनहीं है ७ जो इस सब लङ्कापुरीके जरजानेमें हमारीबड़ी श्रीजानकीजीभी जर गईहों तो हमने अनरपन से अपनेस्वामीका कार्य्यही नाशकरदिया ८ हाय ! तिस कार्यके लिये यह सब प्रारम्भ कियागया हमने वह कार्यही नष्ट करदिया क्योंकि लंका भस्मकरने के समय हमने जानकीजी की रक्षा नकी ९ हा ! यह लंका दाहादि कार्य हमारा बहुत थोड़ा कार्य होगया क्योंकि क्रोध के मारे अंधहो हमने श्रीरामचन्द्रजीके कार्यका नाश हो करदिया १० इसमें कुछ सन्देह नहीं जानकीजीभी भस्म होहीगईं क्योंकि लंकामें ऐसा कोईभी स्थान नहीं दिखाईदेता जो जरा न हो क्योंकि हमने सब पुरी फूंकदी ११ जो बुद्धिकी विपरीततासे हमने ऐसाही कर्म्म कियाहोगा जानकीजी भी जरगई होंगी तो हमभी अपने प्राण यहीं छोड़ेंगे यही हमको अच्छा लगता है १२ कि हम अग्नि में गिरपड़ें अथवा बड़वानल में गिरें वा समुद्रमें रहनेवालेजीवों को अपने शरीरके खण्ड खण्डकर देडालें १३ क्योंकि इस कार्यका सर्व्व धन बिनाशकर हम सुग्रीव व उनदोनों भाइयों को कैसे देखसक्के हैं १४ हा ! जो कि तीनोंलोक में प्रसिद्ध है कि बानरके स्वभाव का कुछ ठीक नहीं हमने मारे रोषके दोषसे वह सत्य सत्य करके दिखादिया १५ तिस रजोगुणके कारण हमने सीताजीकी रक्षा न की यद्यपि रक्षा करनेमें समर्थभी थे तिस अव्यवस्थित असमर्थ रजोगुणको धिक्कार है

१६ क्योंकि सीताजी के मरजानेपर वे दोनों भाई भी मृतक होजायँगे व तिनको ऐसादेख सहित बंधु सुग्रीवजी भी न जीते रहेंगे १७ व यह सुन धर्म्मात्मा भ्रातृवत्सल भरतजी भी शत्रुघ्नसहित कैसेजीसकेंगे १८ फिर जब इक्ष्वाकुवंशियों के नाथ भरतजी न रहेंगे तो सब पृथ्वीभरकी प्रजापीड़ितहोजायगी १६ तिससेहम भाग्यहीन धर्म्मअर्थ के लोपकरनेवाले व रोषके दोषमेंपड़ अवश्य लोकनाशक ठहरे २० ऐसी चिन्ता करतेहुये हनुमान्जीको पूर्व्वसमय के सिद्धकारण प्राप्तहुये तो फिर वे चिन्तना करनेलगे २१ कि अथवा मनोहरसर्व्वाङ्गी सीताजी तो अपने तेजहीसे सदारक्षित हैं फिर वे कल्याणी कैसेनाशको प्राप्तहोंगी क्योंकि अग्नि अग्निको नहींजारसक्ता २२ इससे धर्म्मात्मा व अमित तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी की भार्य्याको जो कि अपने पातिव्रत धर्म्महीसे सदा रक्षितरहतीहैं अग्नि स्पर्शही नहींकरसक्ता २३ देखो श्रीरामचन्द्रजीके अव्याहत प्रभाव व जानकीजीके पुण्यसे अग्निने हमको नहींजारा फिर जानकीजीको कैसेजाराहोगा २४ फिर भरत लक्ष्मण व शत्रुघ्न इनतीनों भाइयोंकी देवता व श्रीरामचन्द्रजीकी प्राणप्यारी जानकीजी कैसेनष्टहो जायँगी २५ यद्वा जो कहो कि अग्निका कर्म्मही यहीहै कि जो सामने पड़े उसे जारहीडाले तो हमारी पूंछको तो जारताहीनहीं फिर श्रीजनककुमारीजीका नाश कैसेकरसके २६ फिर हनुमान्जी ने समुद्रकेबीचमें रामचन्द्रजी के प्रभावसे मैनाक पर्व्वत के दर्शनकी सुधिकी कि जबपर्व्वतादि श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञाके वशीभूतहैं तो अग्निकैसे जारसक्ता है २७ तपस्या व सत्य बोलने व पातिव्रत धर्म्म से जानकी जी अग्नि को जारसक्तीहैं व अग्नि तिनको नहींजारसक्ता २८ इसतरह वैदेहीजी के धर्म्माचरणकी चिन्तना हनुमान्जी करीरहेथे कि चारणलोगोंकेवचनसुने २६ जो कहतेथे कि भाई लङ्काजारतेहनुमान्जीने बड़ाकामकियाजिसने राक्षसोंके ऊपर अग्नि छोड़नकेसमय ३० राक्षसियों व बालवृद्धोंसेयुक्त व जनोंके शब्दसेभरी शब्दयुक्त पर्व्वतकी गुहाकेसमानशब्दायमान ३१ व सब अँटारी धवरहर सहित लङ्कापुरी को जारा परन्तु जानकीजीको न जारा इसबिषय में हमलोगों का बड़ा विस्मय है ३२ ऐसासुन हनुमान्जी के मनमें बड़ाहर्ष हुआ ३३ बड़े कारणों व निमित्तोंसे व ऋषि

लोगोंके वचनसुन हनुमानूजी बहुत हर्षितहुये ३४ इसतरह से उत्तम सिद्ध मनोहर युक्त राजकुमारी सीताजी को घावरहित जान प्रत्यक्ष में जानकीजीके निकटजा देख हर्षितहुये ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चपञ्चाशत्तमस्सर्गः ५५ ॥

वहां पहुँच शिंशुपाके नीचे बैठी जानकीजी को देख प्रणामकर हनुमानूजी बोले कि बड़े भाग्य की बातहै जो तुमको अच्छी तरह से यहां बैठी हम देखतेहैं १ यहकह हनुमानूजीने चलनेकी तैयारीकी तब बार बार उनकी ओरदेख अपने पतिके स्नेहयुक्त वचन जानकी बोलीं २ हे तात जो तुम्हारे मनमें यहबात आवे तो कहीं गुप्तस्थानमें आजकादिन रहजाव सुस्ताकर प्रातःकाल चलेजाना ३ व तुम्हारे निकट रहनेसे अल्प भाग्यवाली हमारा अप्रमाण शोक एक मुहूर्त भर न रहेगा ४ हे कपिशार्दूल तुम्हारे चलेजाने पर यह विश्वास नहीं कि जबतक तुम आवोगे तबतक हमारे प्राणरहेंगे वा नहीं ५ हेबीर दुःखसे दुःखतरको प्राप्त व मारेशोक के व्याकुल हमको तुम्हारा न देखना भी विदारित करेगा ६ हेबीर इनबड़े सहायक ऋक्षवानरों में हमको यह बड़ा भारी सन्देहहै ७ कि इस दुष्पार समुद्रको वानर ऋक्षों की सेना व वे दोनों महाराजकुमार कैसे पारउतरेंगे ८ क्योंकि इस समुद्रके नांघनेमें गरुड़ पवन व तुम इन्हीं तीन प्राणियों की शक्तिहै ९ सो इस कार्य्य में तुम क्या समाधान देखतेहो तुमतो कार्य्यकरनेमें बड़ेचतुरहो बतावोतो १० यद्यपि इसकार्य्य के सिद्धकरने में तुम अकेलेही समर्थ हो क्योंकि तुम्हारे बलकाउदय सबबीरोंको नाशकरनेसे यशस्वीहै ११ तथापि जो रामचन्द्रजी बड़ीभारी सेनाले लंकामेंआवें व सबको समरमेंजीत हमको लेजायँ तो उनके योग्य यह बात हो १२ तिससे समरशूर श्रीरामचन्द्र जी जैसा करने व कहनेसे यहां आनेकेलिये अधिक विक्रान्त दिखावें तुम वैसाही कहना व करना १३ जानकीजीके ऐसे बचन सुन हनुमानू जी सहेतुक उत्तर देनेलगे १४ हेदेवि वानर व ऋक्षोंकी सेनाओंके अधिपति सुग्रीव जी बड़े पराक्रमी हैं उन्होंने तुमको वहां पहुँचानेकेलिये निश्चयकियाहै १५ हेवैदेहि वेसुग्रीव कोटियों व अर्ब्बोंवानरोंके स्वामी

हैं जैसे तुमको यहांजानेंगे तुरन्त यहां आवेंगे १६ व वे दोनोंवीर राम-
चन्द्र व लक्ष्मणजी लंकामेंआय बाणोंसे इसपुरीको विध्वंस डालेंगे १७
व सबपरिवार रावणको समरमेंमार तुमको अपनीपुरीको लेजायँगे १८
अब विश्वास मानों कुछदिन समय परखो बहुतहांशीघ्र समरमें रामचन्द्र
से मारेहुये रावणको देखोगी १६ जब स्त्री पुत्र मन्त्र्यादि सहित रावण
मारजायगा तो तुम श्रीरामचन्द्रजीके साथ ऐसी शोभित होवोगी जैसे
चन्द्रमाके साथ रोहिणी शोभित होतीहै २० ऋक्ष व वानरोंको सङ्गले
रामचन्द्रजी शीघ्रही यहांआवेंगे जोकि युद्धमें राक्षसों को जीत तुम्हारा
शोक दूरकरेंगे २१ इसतरह जानकीजी को समुझाय पवनके पुत्र हनु-
मानूजी उनके प्रणामकर चलनेको तैयारहुये २२ जो हनुमानू राक्षस-
श्रेष्ठोंको मार व अपना नाम सबको सुनाय व जानकीजीको समुझाय व
अपना बड़ाभारी बलदिखाय २३ व लंकापुरीको व्याकुलकर व रावण
को धोखादे व अतिघोरबल दिखाय व सीताजीके प्रणामकर २४ फिर
समुद्रके ऊपर ऊपर हो चलने का विचार किया व स्वामी के दर्शन की
इच्छासे २५ अरिष्ट नाम पर्व्वतपर जायचढ़े जो पर्व्वत ऊँची व श्याम
बन पंक्तियोंसे शोभित २६ होनेसे मानों समुद्र को अपना वस्त्रही बना
रहाथा व जानोंउसको सूर्यकेकिरण जगारहेथे २७ धातुओंके मारेजानों
आँधाने नेत्र खोलता मूंदताथा व जलके शब्दसे मानों कुछ पढ़रहा था
२८ व नानाप्रकार के झरनोंके शब्दहोनेसे मानों कुछ गानकर रहाथा
व बड़बड़े देवदारु वृक्षोंकेलगनेसे मानोंऊपरको हाथउठायेखड़ाथा व बड़े
बड़े ऊँचस्थानोंसे जलगिरनेके कारण जानोंकोईउसको पुकाररहेथे२६
व शरदऋतु में उत्पन्न मेघ सदृश शतावरीआदि वृक्षोंके कँपनेसे मानों
मारेजाड़े के काँपरहाथा ३० व जानों छेदवाले बाँशोंमें पवन लगने के
कारण शब्दही कररहा था व विषधर सर्प्पों के साँसलेने से मानों ऊर्द्ध
श्वासही लेरहाथा ३१ व बड़े अँधेरे खोहों के होनेसे मानों ध्यानहीं
कररहाथा व सबओर से मेघोंके समान किनारे किनारे वाले पर्व्वतोंसे
दबायाहुआ था ३२ व बड़े बड़े शिखरोंके होनेसे मानों जँभोई लेताथा
व बहुतसी कन्दरा व छोटेछोटे पत्थरोंसे शोभित था ३३ व साँखू तार
आदि वृक्षों से घिराहुआ था व नानाप्रकार की लता ऊपर ऊपर छाई

थीं ३४ व नानाप्रकार के पक्षियोंसे पूर्णथा व ठौर ठौर धातु चूरहेथे व बहुतसे झरने झरतेथे व शिलाओंके चट्टानके चट्टानपड़े थे ३५ व ऋषि यक्ष गन्धर्व्व किन्नर नागोंसे सेवित लता व वृक्षबहुत घनेलगेथे कन्दराओंमें सिंहबैठे गर्जतेथे ३६ व्याग्घ्रादि जन्तुभरे थे व स्वादुकंदमूल फलादि विद्यमानथे ऐसे पर्व्वतपर पवनसुत जायचढ़े ३७ रामचन्द्रजी के देखनेकेलिये वे बहुत हर्षितथे इससे ऐसे जोरसे पादधरा कि जिससे सब शिला चूर्णहोगई ३८ तिस पर्व्वत पर चढ़ महाकपि हनुमान् जी बाढ़े ३९ क्योंकि क्षार समुद्रके दक्षिणतीर से उनको उत्तर के तीरपर आनाथा इससे उसपर्व्वत पर चढ़ पवनतनयजी ४० भयंकर सर्प्पादि युक्त समुद्र देखनेलगे व पवनकेसमान वेगवान् महान् हनुमान् दक्षिण से उत्तरदिशा को चल आकाश को उड़े ४१ कूदनेके समय ऐसेजोर से उसपर्व्वत पर चरणमारा कि उसपर के सब प्राणी चिघड़ उठे ४२ व वह पर्व्वतोसम पृथ्वीमें पैठगया पैठनेके समय उसके ऊपर के सबवृक्ष कँपउठे शिखर खरभराय गिरपड़े ४३ व तिन हनुमान्जीके बड़ेवेगसे उन्मथित हो सबवृक्षों के फूलफल गिरपड़े व वेभी उखड़ उखड़ धरणीमें टूटटूट गिरपड़े मानों वज्रके मारे थे ४४ व उसकी कन्दराओं में जो बड़े भारी व भयंकर व महापराक्रमी सिंहथे उनकाशब्द आकाशतक सुनपड़ा ४५ व उसपरकी सब विद्याधरोंकी स्त्रियां विवस्त्रहो व भूषण रहितहो आय पृथिवीपरगिरीं ४६ व बड़े बड़े भारी महाविषधर सर्प्प पत्थर की चोट लगनेसे कुण्डली भूतहो गिरगिर पड़े उनमें किसी के शिरकचरगये किसीकागल किसीका सर्व्वाङ्ग ४७ व पीड़ित उसपर्व्वत को छोड़ किन्नर नाग गन्धर्व्व यक्ष व विद्याधर अन्यत्र भाग गये ४८ व तिन महाबली हनुमान्जी से पीड़ित वह पर्व्वत सहितवृक्ष पाताल को बनाय चलागया ४९ यह पर्व्वत चालीसकोशके तो फैलावमें था व एकसौ बीसकोशकाऊँचा वह पृथिवीमें ऐसा चलागया कि वहांकी भी भूमिसमानहोगई ५० लीलापूर्व्वक क्षारसमुद्रके नाँघनेकीइच्छासे बड़ी बड़ी लहरें आतेहुये समुद्रके ऊपर आकाशको हनुमान्जी उछले ५१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेषट्पञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५६ ॥

जब उसपर्व्वत परसे आकाश को महावेगवान् हनुमान् जी उछले तो नाग यक्षगन्धर्व्वही प्रफुल्लित कमल जिसमें १ व चन्द्रही कुमुदरूप जिसमें व सूर्य्यही जलमुर्ग जिसमें व पुष्य श्रवण नक्षत्रही कलहंस रूप जिसमें व बादरही घास व स्यवार जिसमें २ व पुनर्व्वसू महा मीन जिसमें व मङ्गलही महाग्राह जिसमें व ऐरावत नाम नक्षत्र महाद्वीप जिसमें व स्वातीही हंस जिसमें तिससे शोभित ३ व पवन समूहही लहरें जिसमें व चन्द्रमाके किरणही शिशिरकाल का शीतलजल जिसमें ऐसे समुद्र रूप आकाशमें बिना थके हनुमान् जी पैरनेलगे ४ उस समय जानों अन्तरिक्षको लीलतेही थे व चन्द्रमा को जानों उल्लिखितही करते व नक्षत्र सूर्य्य सहित आकाशको जानों हरेहीलेते थे ५ व मेघोंके समूहोंको जानों खींचेहीलेते थे महावेगवान् हनुमान्जी इसतरह बिना थकेथकाये समुद्रको नाँघनेलगे ६ उस समय उजले लाल नीले मँजीठीरङ्ग के हरे व अरुणरङ्ग के बड़ेबड़े बादर शोभित होतेथे ७ उन बादरोंमें कहीं तो पैठजाते व कहीं फिर निकलआते इससे कभी प्रकाशित कभी अप्रकाशित चन्द्रमाकेसमान हनुमान्जी दिखाईदेतेथे८ व बिबिध प्रकार के बादरों को श्वेतवस्त्र बनाय हनुमान्जी आकाश में चन्द्रमा के तुल्य दिखाई देते थे ६ मेघोंके समूहोंको चीरते फाड़ते व उनमेंसे फिर निकलआने से हनुमान् जी आकाश में गरुड़ के समान शोभितहुये १० मेघोंके गर्ज्जनेकेसमान गर्ज्जते हनुमान् बड़ानादकरते हुये लंकामें बहुत प्रसिद्ध प्रसिद्ध राक्षसोंको मार व अपनानाम अच्छीतरह सबको सुनाय ११ व लंकापुरी को व्याकुलकर व रावणको व्यथितकर व बड़ेबड़े बीरों को मार पीट व जानकीजी के प्रणामकर १२ महातेजस्वी हनुमान्जी फिर सागरको बीचमें डार नाँघआये व महाबीर्य्यवान् वे सुनाभनाम पर्व्वतको छूकर १३ प्रत्यञ्चासे छूटेहुये बाण के समान हनुमान्जी बड़ेवेगसे आगये जब थोड़ीदूर महेन्द्राचल बाकी रहा जहां सब वानरों को बैठागये थे तो उस महापर्व्वत को देख १४ हनुमान्जीने बड़ाऊँचा नाद किया कि जिससे दशोदिशा पूर्णहोगईं १५ इसतरह बड़ेनाद से गर्ज्जतेहुये अपने साथियों के देखने की इच्छासे वहीं आय पहुँचगये १६ व पहुँचतेही बड़ानाद करनेलगे व पूंछ ऊपर

को उठाय कँपानेलगे गरुड़के चलनेके मार्ग्ग आकाशमें बड़ेजोरसे नाद करते हनुमान्जी के १७ शब्दसे मानों सूर्य्य मण्डल सहित आकाश फटजाया चाहताथा व जो महाबलवान् वानरलोग यहां समुद्रके उत्तर किनारेपर बैठेथे १८ व हनुमान्जीके देखनेकी इच्छाकररहेथे तिन्होंने प्रचण्ड पवनसे प्रेरित बड़भारी बादरके गर्ज्जनेके समान हनुमान्जीका बड़ वेगसे गर्ज्जना सुना १६ व बेचारे वानर बहुत उदासीन बैठेथे एकाएकी उन्होंने बादरके गर्ज्जने के समान हनुमान्जी का शब्दसुना २० नाद करतेहुये पवनसुत का नादसुन सब वानर अपने सुहृदय के देखने की इच्छा तो करीरहे थे देखनेकेलिये चटपटाने लगे २१ तब वानरोंमें श्रेष्ठ जाम्बुवान्जी प्रीतिसे हर्षितमनहो सब वानरोंको सुनाय बोले २२ कि सबतरह से हनुमान् कार्य्यकर आये इसमें कुछभी संदेह नहींहै क्योंकि जो कार्य्य न करआते तो इनकानाद ऐसा न होता २३ तिन महात्मा हनुमान्जी की बाहोंका बड़ावेग व शब्दसुन सब वानर लोग हर्षितहो जहांतहां से कूदकूद इकट्ठ होनेलगे २४ पर्व्वत के इस कँगूरापरसे उसकँगूरा पर जाय व इसवृक्षसे उसवृक्ष पर जाय सबके सब हनुमान्जीके देखनेकी इच्छासे अति हर्षितहुये २५ बड़ीप्रीति से वृक्षोंकी शाखा पकड़ पकड़ लटकनेलगे व ऐसा उछरने हिसनेलगे कि उनकेवस्त्र सब हिलनेलगे २६ जैसे पर्व्वतकी गुहाके भीतरजाय पवन गर्ज्जता है तैसेही बलवान् हनुमान्जी वहां आय गर्ज्जे २७ मेघाकार तिन महाकपि को आकाश से नीचेआते देख सब वानर हाथजोर जोर खड़ेहुये २८ तिसकेपीछे पर्व्वताकार अति वेगवान् हनुमान्जी अतिष्ट नाम पर्व्वतपर से कूदआय बहुत वृक्ष लगेहुये इसपार महेन्द्राचल के शृङ्गपर कूदपड़े २६ व हर्षकेमारे पूर्ण पर्व्वताकार पवनतनय अतिरमणीय पर्व्वतके झरना झरनेके स्थानपर पङ्ख कटेहुये पर्व्वतके समान आकाश से गिरे ३० तब सब वानरश्रेष्ठ प्रसन्न मन हो महात्मा हनुमान्जीको सब ओरसे घेर खड़ेहोगये ३१ व इनको घेर बड़ीप्रीतिको प्राप्त हुये इससे प्रसन्न मुखहो सब बनाय निकट आगये ३२ व फलफूल मूलादि भेंटकी चीजें लायलाय सबोंने वानरश्रेष्ठ पवनतनयको दीं ३३ कोईकोई वानर तो हर्षितहो शब्द करनेलगे व कोईकोई किलकिलाने

लगे व कोई कोई हर्षितहो बैठनेकेलिये वृक्षकी डालें तोड़लाये ३४ व महाकपि हनुमानूजी ने जाम्बवान् आदि वृद्धवानरों व अङ्गदकुमार के बन्दनाकी ३५ तब उनदोनोंजनोंने इनकी अच्छीतरह पूजाकी व और सब वानरोंने हाथजोर इनको प्रसन्न किया तब उन्होंने संक्षेपरीति से कहदिया कि हम जानकी देवी को देखआये ३६ व अङ्गदजी का हाथ पकड़ उस महेन्द्राचलके रमणीय बनमें बैठगये ३७ तब सब वानरोंने वहांकाहाल पूंछा सो सुन व बोले कि हमने अशोकवनिका में बैठी जनकनन्दिनी को देखा ३८ उनकी रक्षा अतिघोर राक्षसियां करतीहैं व बारोंकी एकही वेणी धारणकिये रामचन्द्रजीके दर्शनकी अभिलाष कर रहीहैं ३९ मारे उपवासोंसे बनाय थकगईहैं व मलिनवस्त्र धारणकिये बनाय दुर्व्वल होगईहैं तहांहमने जानकीजीको देखा यह अमृत समान बचन सुन ४० सबवानर बहुत आनन्दितहुये इससे हास्य करनेलगे व कोई कोई गर्ज्जनेलगे व कोई ऐसेही शब्द करनेलगे ४१ कोई कोई किलकिलानेलगे व कोई औरोंका बोलसुन खौंखियानेलगे कोई वानरकुञ्जर अपनीपूंछ ऊपरको उठाय नचानेलगे ४२ व कोई तिरछी कोई सूधीपूंछ करनेलगे व कोईकोई उलरउलर पर्व्वतके शृङ्गपरबैठे श्रीमान हनुमानजीको छूनेलगे ४३ जब हनुमानूजी यहकह चुके तो सब वानरोंके बीचमें अङ्गदजी उत्तम बचन बोले ४४ कि जिससे तुम समुद्रनांघ फिर यहां आये इससे सत्व व वीर्य्यमें तुम्हारे समान और कोई नहींहै ४५ हे वानरोत्तम हमलोगों के जीवन देनेवाले तुम्हीं अकेलेठहरे ४६ अब तुम्हारे प्रसाद से सब जनजाय श्रीरामचन्द्रजी से फिर मिलेंगे स्वामी में तुम्हारी अहोभक्ति है व तुम्हारे वीर्य्य व धारणको धन्यवाद है ४७ व बड़े भाग्यकी बातहै जो परम यशस्विनी श्रीरामचन्द्रजी की पत्नी तुम देखआये व बड़े भाग्यकी बातहै कि सीताजी के वियोग से उत्पन्न शोक श्रीरामचंद्रजी छोड़देंगे ४८ यह वार्त्ता होतीहीथी कि सब वानर अंगद व हनुमान् व जाम्बवान्की चारोंओर से घेर बैठनेकेलिये विविध प्रकार की शिलालाये ४९ व पर्व्वतकी उन बड़ीबड़ी शिलाओं पर समुद्र नाँघनेके समाचार सुननेकेलिये सबवानर इनतीनों जनोंको घेरघेर बैठे ५० व लंका का देखना व रावण का देखना व सीताजीका

देखना इनबातों के सुनने की इच्छा से हनुमान्‌जी के मुखकी ओर मुख करकर सबबैठ ५१ व बहुत वानरोंके बीचमें वहींजानो अंगदजी बैठेही थे जैसे स्वर्गमें देवताओं के बीचमें इंद्रजी बैठतेहैं ५२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेसप्तपंचाशत्तमस्सर्गः ५७ ॥

तिसके पीछे तिसमहेन्द्राचलके शृङ्गपर बैठ महाबली हनुमानादि वानर अतिप्रसन्न हुये १ जब प्रीतिमान हो सब महात्मा वानर अच्छी तरहसे बैठे तो प्रसन्न चित्तहो २ जाम्बवान्‌जी ने तिन महाकपि हनुमान्‌जीसे कार्य्यका वृतान्त पूंछा कि पवनसुत तुमने जानकी देवी को कैसेदेखा व वे वहां किसतरह से रहती हैं ३ व क्रूर कर्म्मकारी अविचारी रावण उनके साथ कौन रीतिसे चलताहै ये सबबातें तुम निश्चय कर हमलोगोंसे कहो ४ तुमने देवी सीताजीको कैसेढूंढ़ा व उन्होंने तुमसे क्याकहा ये सबबातें जो हमलोग भी सुनलें तो फिर कार्यकरनेका उपाय विचारें ५ व जो बात रामचन्द्रजीके समीपजाय हमलोगोंके कहने योग्यहो व जो कहने योग्यनहो सब आपकहिये ६ जब जाम्बवान् ने ऐसाकहा तो सीतादेवी के प्रणाम करतेहुये हनुमान् जी बोले ७ कि आपलोगों के सामनेही समुद्र के दक्षिण के पारको जानेकी इच्छासे महेन्द्राचलके ऊपरसे हम आकाशको उछले थे ८ जबथोड़ीदूर समुद्रके ऊपर ऊपरगये तो हमको एकबड़ा विघ्नरूप दिखाईदिया वह एकसुवर्ण के मनोहर कँगूरोंवाला पर्व्वत दिखाई दिया ९ व हमारा मार्गरोंक टिका इसको हमने अपना विघ्नमाना तब उस सुवर्णके पर्व्वतके समीप जाय १० मनमें बिचारा कि हम इसकोकुछ भयदिखावें इसलिये हमने पूंछजोर से उसमहा पर्व्वतके शृंगपर मारी ११ कि उसका सूर्य्य सम प्रकाशित एकशिखर सौटुकड़ेहोगया हमारा ऐसाबिचार जान वह महा पर्व्वत मनुष्यरूपहो १२ हेपुत्र ऐसाकह हमकोप्रसन्न करताहुआ बोला कि हमपवन के मित्रहैं इससे हमको अपना चचा समझो १३ मैनाक हमारा नामहै व समुद्रके भीतर रहते हैं सागरके भीतर रहनेका प्रयोजन यहहै कि अगाड़ी सब पर्व्वतों के पक्षथे १४ इससे वे प्रजाओं को दबातेहुये अपने मनसे पृथिवीमें घूमाकरतेथे पर्व्वतोंका ऐसा चरितसुन

इन्द्रजीने १५ वज्रसेसब पर्व्वतोंकेपङ्ख काटडाले तबहमको तुम्हारे पिता महात्मा पवनने छुड़ालिया १६ व यहां समुद्र में ढकेलदिया इससे हम रामचन्द्रजीकी सहायता किया चाहतेहैं १७ क्योंकि इन्द्रसम पराक्रमी श्रीरामचन्द्रजी धर्म्मधारियों में श्रेष्ठहैं तिसमहात्मा मैनाकका यहबचन सुन १८ हमने अपना कार्य्य बताया कि बिना इसेकिये कहीं थँभनहीं सक्ते तब उसमहात्माकी आज्ञासेहम आगेबढ़े १९ व वह पर्व्वतभी मनुष्यकारूप तो धारण कियेहीथा अपने शृङ्गपै खड़ाहो अन्तर्द्धान होगया व सहित शरीर समुद्रमें पैठगया २० व हम उत्तमवेग से वाकी मार्ग्ग तैकरनेलगे व बड़ी देरतक बड़े वेगके साथ चलेगये २१ फिर हमने सुरसा नाम सर्प्पों की माता देखी वह बीच समुद्रमें हमारा मार्ग्गरोंक बोली २२ हे वानरसत्तम देवताओं ने हमारे भोजन के लिये तुमको यहां भेजा है तिससे हम तुमको भक्षण करजायँगी क्योंकि देवोंकी यही आज्ञा है २३ जब सुरसा ने ऐसा कहा तो हाथजोर प्रणामकर हम उदासीन मुखहो उससे बोले २४ कि श्रीरामचन्द्र जी अपने भाई लक्ष्मणजीको व अपनीभार्य्या सीताजीको ले दण्डकारण्यको आये २५ तिनकी सीताजी को दुष्टात्मा रावण हरलेगया हम तिन्हीं को ढूंढ़नेके लिये रामचन्द्रजी की आज्ञासे दूत बन सीताजी के निकट जातेहैं २६ इससे तुमभी रामचन्द्रजी की सहायताकरो क्योंकि उनके राज्य में तुम भी बसतीहो अथवा हम जानकीजीको देख फिर रामचन्द्रजीसे सन्देश कह २७ फिर तुम्हारे मुखमें पैठेंगे यह सत्यही कहतेहैं जबहमने ऐसा कहा तो कामरूपिणी सुरसा २८ बोली कि हमको वरदानहै कि बिना तुम्हारे मुखमें पैठे कोई न जासकेगा यह कह सुरसा ने दशयोजन का मुख फैलाया २९ तब हम पाँचयोजन के होगये तब सुरसा ने हमारे प्रमाणसे अधिक मुंह फैलाया ३० तिसको बड़ा मुंहफैलाये देख हमने अपना रूप छोटाकरलिया व फिर अँगूठाके समान छोटेहो ३१ तिसके मुंहमें पैठ बाहर निकल खड़ेहुये तब फिर अपने रूपसे सुरसा देवी हमसे बोली ३२ किहे सौम्य अर्त्थ सिद्ध करनेकेलिये सुखपूर्व्वक चलेजाव व जानकीजीको लाय रामचन्द्रजी से मिलावो ३३ व सुखीहोवो हे वानर हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं तब सब प्राणियों ने हमारी

बड़ीस्तुतिकी ३४ तबहम फिर बड़े भारी आकाशमें गरुड़केसमानचले कि इतनेमें किसी ने हमारी पछाहीं पकड़ली पर हमको देख कोईन पड़ा ३५ तब हमवेगरहित हो दशोदिशाओं को देखने लगे पर वहन देखपड़ा जिसने हमारी चाल पकड़ीथी ३६ तब हमने अपने मनमें बिचारा कि हमारेचलनेमें यहकौनसा विघ्नउत्पन्नहुआहै पर रूपउसका नहीं दिखाईदेता ३७ इसतरह बिचारते बिचारते हमारी दृष्टि नीचेको गई तो जलके भीतर एकराक्षसी हमको देखपड़ी ३८ वह हँसकर हमसे बड़ा खराब बचन बोली जिससे हमकुछ भयभीत हुये ३९ कि हे महाकाय कहां जावगे तुमतो भूंखी हमको भोजन रूप प्राप्तहुये हो तिससे बहुतदिनोंसे भूंख हमारे देहको तृप्तकरावो ४० तब हमनेकहा बहुत अच्छा मुंहबावो तो हम तुम्हारे मुखमें घुंसें तो उसने मुंह बाया हमने उसकेमुखसेबड़ेहो साँसेंनिकलना बन्द करदिया ४१ पर उसका मुखहमारेभक्षण करनेकेलिये बढ़नेलगा परउसनेनतो हमारीसामर्थ्यही जानी न बढ़ेहुये हमारे रूपही को जाना ४२ तब हम अपना बड़ारूप छोटाकर उसके मुखमें हो बाहर निकलगये व उसके प्राण भी सङ्गही लेतेगये ४३ तबवह महाविकराल बाहें फैलाय समुद्रमें गिरपड़ी क्योंकि हमने तो उसके प्राण निकालहीलिये थे ४४ तब आकाशमें प्राप्त सिद्ध लोगोंके बचन हमनेसुने कि सिंहिकानाम राक्षसी हनुमान्‌ने मारी ४५ तिसको मार हम फिर अपने कार्य्य का स्मरण करतेचले व बहुतदूर जाय पर्व्वतयुक्त ४६ समुद्र का दक्षिण किनारा देखा जहां लङ्का नाम पुरीहै सूर्य्यास्त होनेके समय हम राक्षसों के रहनेकी पुरीमें ४७ पैठे पर भीमविक्रम राक्षसलोग हमको नहींजानते थे पर तहांभी पैठतेहुये भी हमारे सामने प्रलय समयके मेघकेसमान ४८ रूप बनाये ठट्ठाकर हँसतीहुई कोई राक्षसी उठ खड़ीहुई व हमको मारनेको तैयारहुई तब हम अग्नि के समान लालबाल वाली उसको ४९ मूंकामार पराजित कर सन्ध्या समय पुरीमें पैठे तब डरकर उसने हमसे कहा कि ५० हे बीर हम लंकापुरी हैं व जिससे तुमने बड़े बिक्रम से हमको जीतलिया तिससे सब राक्षसों को जीतोगे ५१ तबहम रात्रिभर रावण के जनाने स्थानमें जानकीजी के ढूंढ़नेकेलिये घूमे परन्तु सीताजीको न देखा ५२

तब रावणके स्थानमें सीताजीको न देख अपार शोकसागर में बूड़ेउत-
राये ५३ शोककरते करते हमने बड़ेभारी खावँके बीचमें सुवर्णही से
बना एक उपवनदेखा ५४ तबकूद उसकी छहरदीवारी परचढ़देखा तो
उसमें नानाप्रकार के वृक्षलगेथे व एक बड़ाभारी शिंशुपाका वृक्ष दि-
खाईदिया ५५ उसपर चढ़ जो हमने देखा तो एक समीपही केलाका
बन देखपड़ा व उस शिंशुपा वृक्षके निकटही जानकीजी देखपड़ीं ५६
उनकी सोलहवर्ष के लगभग तो अवस्था है व कमलदल समान नयन
व उपवास करते करते मुख सूखगया है एकही मलिन सारी पहिने हैं
बार मलिन होगयेहैं ५७ व शोक सन्ताप से बहुत दुःखित हैं व अपने
पतिकेहितमेंही लगीहैं व चारोंओरसे भयंकर राक्षसियां घेररहीहैं ५८
जैसे मांस शोणित खानेपीनेवाली व्याघ्रियों से हरिणी घेरी जातीहै
वैसेही व राक्षसियोंसे व वे बारबार डरवारहीं हैं ५९ उनके बीचमें
बैठी बारोंकी एकही लटकिये अपने स्वामीकी चिन्तामें परायण भूमिमें
बैठी शीतकाल की कमलिनी के समान सूखी ६० रावणकी ओरसे ब-
नाय निवृत्त मरनेपर उतारू इसतरहकी मृगशावाक्षी सीताजीके निकट
हम किसीतरह से पहुँचे ६१ श्रीरामचन्द्रजी की परम यशस्विनी पत्नी
सीताजीको तिसतरह की देख हम उसी शिंशुपावृक्ष के ऊपर बैठे ६२
तिसकेपीछे रावणके गृहमें क्षुद्रघण्टिका व घुंघुरूआदि भूषणोंका बड़ा
भारी शब्द हमने सुना ६३ व बहुत ऊबकर अपना शरीर और भी
छोटाकर उस शिंशुपा पर जहांबहुत घने पल्लव थे पक्षीकी तरह उनमें
लुककर बैठे ६४ तिसकेपीछे रावणकी स्त्रियां व रावण जहां जानकीजी
बैठीथीं तहां आये ६५ तिस रावण को देख सीताजी सिकुरकर अपने
स्तनों के ऊपर हाथधर थरथराने लगीं ६६ तब इधर उधर देखती व
डरती अपना रक्षक किसीको न देखती व बहुत काँपती ६७ परम दुः
खित तिन सीताजीसे नीचे मुखकर रावण बोला कि हमको तुम बहुत
मानो ६८ जो तुममारे घमण्डके हमको न प्रसन्न करोगी तो दोमासके
पीछे हम तुम्हारा रुधिर पानकरेंगे ६९ दुष्टात्मा रावणका यह वचन
सुन बड़ा क्रोधकर सीताजी॰उत्तम बचन बोलीं ७० हे राक्षसाधमे
अमिततेजस्वी व इक्ष्वाकुबंशके नाथ श्रीरामचन्द्रजी की भार्य्या व महा-

राजाधिराज दशरथजीकी पुत्रबधू को ७१ अवाच्य कहतेहुये तेरीजीभ क्यों नहीं गिरपड़ी हे दुष्ट तुझमें कुछभी बल नहींहै इसीसे तू रामचंद्र जीके निकटसे हमको नहींहरसका ७२ जब वे महात्मा वहांसे चलेगये तो सूनेहीमें तू हमको हरलाया है तू रामचन्द्रजी के तुल्य नहींहै बरन उनके दास होनेकेभी योग्य नहींहै ७३ क्योंकि श्रीरामचन्द्र जी अजेय सत्यवक्ता शूर वरणमें प्रशंसा करने के योग्य हैं जब जानकीजीने ऐसा कठोर वचन रावणसे कहा तो ७४ वहदुष्ट मारेकोपके चिताके अग्निके समान जरबर उठा व कड़ी आँखेंकर दहिना मूका उठाय ७५ जानकी जीके मारने पर उतारूहुआ तो उसकी स्त्रियोंने हाहाकार मचाया व तिस दुष्टात्माकी स्त्रियोंके बीचसेउठ उसकीभार्य्या ७६ जो सबसे बड़ी मन्दोदरी नामहै तिसनेरोंका व उस कामातुरसे उसने कहा भी ७७ कि हे इन्द्रसम विक्रम रावण सीता से तुम्हारा कौन कार्य्य है हमारे साथ विहारकरो जानकी हमसे अधिक सुन्दरी नहीं हैं ७८ हे स्वामिन् तुम देवता गन्धर्व्व व यक्षोंकी कन्याओंके साथ विहारकरो सीताकोले क्या करोगे ७९ तिसकेपीछे सब स्त्रियां समझाय बुझाय रावण को अपने भवन को लेगईं ८० रावण के चलेजाने पर अतिविकरालमुखी राक्षसियां क्रूरवचन कह कह सीताजीको डरवाने लगीं ८१ तिनका कहना जानकीजीने तृणके समान समझा व तिनका गर्जनाभी सीताजीको पाय निरर्थक होगया ८२ मांसभक्षणकरनेवाली राक्षसियोंका जब गर्जनाभी वृथाहोगया तोउदासहो सबोंनेजाय सीताजीका बिचाररावणसेकहा८३ तिसकेपीछे निराश व निरुद्यम हो बड़ा क्लेशकर सोयगईं८४ तिनके सोय जानेपर अपनेपतिके हितमेंलगी सीताजी करुणापूर्व्वक बहुतबिलापकर मारे दुःखके शोक करनेलगीं ८५तब तिनके बीचसे उठ त्रिजटानाम राक्षसी बोली कि री राक्षसियो तुमअपना अपनाको खाव श्यामनयनी सीता जीको न खाव ८६ क्योंकि ये पतिव्रता जनकमहाराजकी तो कन्याहैं व महाराजाधिराज दशरथजीकी पुत्रवधू व इसकेसिवायहमने एक स्वप्नभी अभी अति दारुण देखाहै जिसका स्मरण करनेसे रोम खड़ेहोते हैं ८७ उससे राक्षसोंका नाश पायाजाताहै व इनके पतिकी जय इससे ऐसा न करो अब इमसे यही प्रार्थनाकरो कि श्रीरामचन्द्रजी हमलोग राक्षसियों

की रक्षा करें यह कार्य्य करानेमें ये समर्थहैं ८८ जो इनके दुःखितहोने परही ऐसा स्वप्न दिखाई देताहै ८९ तो ये विविधप्रकारके दुःखोंसे छूट उत्तम सुखपावेंगी हेराक्षसियो जो प्रणाम करनेसे जानकीजी प्रसन्नहो-जायँ ९० तो बड़ेभारी भयसेभी सबकी रक्षा करनेमें समर्थहैं तब अपने पतिकी विजयसे हर्षितहो ९१ सीताजीबोलीं कि जो तुम्हारा वचनसत्य होगा रामचन्द्रजीकी विजयहोगी तो हम तुमलोगोंके प्राणोंकी रक्षाकरें-गी सीता जी की ऐसी दारुणदशा हम देख ९२ चिन्तना करनेलगे पर हमारा मन जानकीजीसे वार्त्ता करनेमें लगा कि हम कैसे इनसे वार्त्ता करें ९३ विचारतेविचारते हमने इक्ष्वाकुकुलके बंशकीस्तुति करनाविचारा व करनेभी लगे तब उस कुलके महाराजोंके गुणों से भूषित स्तुति सुन ९४ अँशुआय जानकी देवी हमसे बोलीं कि हे बानरपुङ्गव तुम कौन हो व तुमको किसने यहां भेजा है व यहां कैसे आये ९५ व रामचन्द्र जीसे तुमसे कौन प्रीति है हमसे सब कहो तिनके बचनसुन हमभी बोले ९६ हे देवि तुम्हारे स्वामीके बड़े बिक्रमी बानरोंके राजा सुग्रीवजी स-हायक हुये हैं ९७ हमको तुम तिन्हीं सुग्रीवके सेवक समझो हनुमान् हमारा नामहै व तुम्हारे स्वामी के व अपने स्वामी के भेजे यहां आये हैं ९८ व श्रीमान् महाराज श्रीरामचन्द्रजी ने यह अपनी अँगूठी तुम्हारे चीन्हनेके लिये दीहै हे यशस्विनि ९९ तिससे हम तुम्हारी आज्ञाचाहते हैं कौन कार्य्यकरें क्या तुमको रामचन्द्र व लक्ष्मणके पास लेचलें १०० यहसुन वह हमको ठीक ठीक रामचन्द्रजीका दूत जान सीताजीने कहा किश्रीरामचन्द्र जी यहांआय रावणका नाशकर हमकोयहांसेलेजायँ१०१ तब हमने शिरझुकाय सीताजीके प्रणामकर रामचन्द्रजीके चीन्हनेकेलिये सीताजीसे कुछ बस्तु मांगी १०२ तब सीताजीने कहा कि यह उत्तम मणिलो जिसको देख आजानुबाहु श्रीरामचन्द्रजी तुमको बहुत मानेंगे १०३ यह कह उन श्रीमती भगवतीजानकीजीने मणियोंमें श्रेष्ठ व उत्तम मणि हमको दिया व बहुत उद्विग्न हो हमको लौटनेकी आज्ञा दी १०४ तब हमने तिन सीतादेवीके एकाग्रचित्त हो प्रणाम व प्रदक्षिणाकर यहांके चलने को मन किया १०५ तब फिर जानकी जी बोलीं कि हे हनुमन् रामचन्द्रजीसे हमारा सन्देश ऐसी युक्तिसे कहना १०६ कि जिसे सुन-

तेही श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मण सुग्रीवजीके साथ तुरन्त यहां आवें १०७ जो दोमासके भीतर श्रीरामचन्द्रजी यहां न आये तो हम अनाथके समान मरजायँगी रामचन्द्र हमको न देखेंगे १०८ यहसुन हमको रावण के ऊपर बड़ा क्रोधआया तिससे हमने बिचारा कि थोड़ाकार्य्य और बाकी है करतेजायँ १०९ तब युद्धकरनेकी इच्छासे हमारा शरीर पर्वताकार बढ़ा कि हमने उसका बन विध्वंसडाला ११० जब वह बन बिलकुल नष्टभ्रष्ट होगया व मृग पक्षी सब व्याकुलहो इधर उधर भागगये तो राक्षसियां मुंह बायबाय व नेत्रफैलाय देखनेलगीं १११ जब आयआय सबोंने पर्वताकार हमको खड़े देखा तो उनमेंसे बहुतोंने जाय सब वृत्तान्त रावण से कहा ११२ हे राजन् तुम्हारे बलको न जान एकदुष्ट वानरने सब बन उखाड़डाला ११३ हे राजन् तिसवानर की बड़ी दुष्ट बुद्धिहै इससे तुम्हारा अमंगल चाहनेवाले इसके मारनेही की आज्ञा दीजिये जिसमेंयह फिरयहां न आवे ११४ यहसुन रावणने बड़े दुर्जय व अपने मनके किंकरनाम अशीहजार राक्षसभेजे ११५ शूलपट्टा आदि धारण किये तिन अशीसहस्रों को हमने एक लोह के दण्डसे मारडाला ११६ तिनमें जो दशपाँच भागभूग बचगये उन्होंने हमारी मारी सेना का हाल रावणसे जायबताया ११७ तब हमारे मनमें आया कि लंकाका अलंकाररूप वहांकी अधिष्ठात्री देवीका बड़ाभारी मन्दिर गिरादें इससे तिसके रखवारे हजारों राक्षस हमने एक खम्भा से मारडाले ११८ व वह मन्दिर भी मटियामेट करदिया तिसकेपीछे प्रहस्तकेपुत्र जम्बुमाली नाम राक्षसको बड़ीभारी सेनालेभेजा ११९ हमने सेना सहित उसबड़े बलवान् व रणमें चतुर १२० राक्षस को एकलोह के दण्डसे मारडाला यहसुन रावणने महाबलवान् अपने मन्त्रीके पुत्रोंको १२१ बड़ीसेनाले हमारेपास भेजा तिनकोभी हमने परिघसे यमपुरको भेजदिया १२२ मंत्री के पुत्रोंको मारेसुन रावणने पाँच और सेनापति भेजे १२३ तिन सबको सेनासहित हमने मारडाला तब फिर रावणने महा बलवान् अपने पुत्र अक्षकुमार को १२४ बहुत राक्षसोंके साथभेजा परन्तु समरमें बड़ेचतुर मन्दोदरी के पुत्र अक्षको १२५ जो अन्तरिक्ष में उड़ता हुआ आया हमने उसके दोनों पाद पकड़ बड़ेजोर से घुमाय फेंकदिया १२६ तब

अक्षको आये व मारेहुये सुन रावणने अपने दूसरे पुत्र मेघनादको भेजा १२७ यह मेघनाद बड़ाभारी रणदुर्म्मद व बड़ा बलवान्है परन्तु उसके संग जितनी सेनाआई हमने १२८ सब नष्ट करदी व उसकाभी पराक्रम संग्राममें नष्ट करदिया यह कार्य्यकर अपने मनमें बहुत हर्षितहुये इसमहाबाहु व महाबलीको रावणने बड़े विश्वाससे भेजाथा १२९ इसकेसाथ और भी बड़ेबड़े वीर आयेथे जब हमने सबोंको ध्वस्तकरदिया व सब सेना मारडाली व हमको वह कुछ न करसका तो जाना कि अब किसी तरह इसको नहीं जीतसक्ते तो १३० उसने ब्रह्मपाशसे झटपट हमको बंधुआ करलिया उसके पीछे फिर राक्षसोंने हमको रस्सियोंसे भी बांधा १३१ व हमको ले रावणके पासगये व हमको देख दुष्टात्मा रावणबोला १३२ कि तुम लङ्कामें क्यों आये व राक्षसोंको तुमने क्यों मारा तब हमने बतादिया कि सीताजीके देखनेको आये वहां तुम्हारे लोगोंको भी उसीनिमित्त मारा १३३ हमारा प्रयोजन जानकीजीको देखनाहीथा व हम वायुके औरसपुत्रहैं हनुमान् हमारा नामहै व जाति वानरकीहै १३४ हमको रामचन्द्रके दूत व सुग्रीवके सचिवजानो हम दूत ताके हेतु तुम्हारेपास आयेहैं १३५ हेराक्षसेश वानरोंके स्वामी सुग्रीवजीने जो आज्ञादीहै तुमसे कहतेहैं एकाग्र चित्तहो सुनो १३६ हे महाभाग प्रथम तो सुग्रीवजीने अपनी कुशल कहीहै व तुम्हारी पूंछीहै व फिर धर्म्मार्थ सहित व हित व पथ्य बचन भी कहाहै १३७ कि बहुत वृक्षलगे इस ऋष्यमूक पर्व्वतपर बसेहुये हमसे रणमें बड़े बिक्रमी श्रीरामचन्द्रजीसे मित्रताहुईहै १३८ तिन्होंने हमसे कहाकि हमारी भार्य्या राक्षस हरलेगया इस विषयमें तुम हमारी सहायता करो व हमसे तुमसे कुछप्रतिज्ञा होजाय १३९ यहकह रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीसे सुग्रीवसे प्रतिज्ञाहुई क्योंकि बालिने उनका राज्य व स्त्री हरलिया १४० तिन श्रीरामचन्द्रजीने समरमें एकही बाणसे महाबली बालीको मार सुग्रीवको वानरोंका राजा बनादिया १४१ तिनकी सहायता हम लोगोंको सबतरहसे करनीहै इससे तिन्हींके भेजनेसे हमतुम्हारे समीप यहां आयेहैं १४२ अब जब तक वानरबीर तुम्हारी सेना मारा चाहैं तबतक शीघ्रही सीताजीको लाय श्रीराघवजीको देदो १४३ क्योंकि

जिन वानरों को अपने शत्रुओंके मारनेकेलिये देवता लोग स्वर्ग को बुलालेजातेहैं तिनवानरोंका प्रभाव ऐसाकौनहै जो न जानताहो १४४ सुग्रीवजीने यह आज्ञा आपकोदीहै सो हमने कहदी यहसुन नेत्रोंसे हमको भस्म करतेहीहुये रावणने देखा १४५ व उस भयानक कर्म्म-कारी राक्षसने आज्ञादीकि इसको मारडालो क्योंकि उसने हमाराबल नहींजाना था १४६ तब महा बुद्धिमान् तिसकेभाई बिभीषणने हमारे लिये उससे बड़ी प्रार्थना की १४७ कि हे राक्षसशार्दूल यह निश्चय छोड़दो क्योंकि दूतका वधकरना राजनीति के विरुद्धहै व धर्म्मशास्त्रसे भी विरुद्ध है १४८ कहीं भी राजनीति में हमने नहीं देखा कि दूतका वधकरना लिखाहो दूतका कार्य्य यहीहै कि जैसी उसके मालिक की आज्ञाहो वैसा सन्देशजाय निर्भयहो कहदे १४९ हे अतुलविक्रम जब दूत बड़ाभारी कोई अपराध भी करडाले तोभी उसका हाथ नाक कान आदि काटकर विरूप करना लिखाहै व साक्षात् वधकरना तो शास्त्रमें कहीं नहीं लिखाहै १५० जब बिभीषण ने ऐसा कहा तो रावणने रा-क्षसोंको आज्ञादी कि अच्छा इस वानरकी पूंछमें अग्नि लगादो १५१ तिसके ऐसे वचन सुन राक्षसोंने हमारी पूंछमें सन बकला वस्त्र आदि लपेटा १५२ सबकवच बखतरआदि धारणकिये बड़ेबड़े अस्त्र शस्त्रलिये राक्षसों ने हमको डण्डों व मूकोंसे मार पूंछमें अग्नि लगादिया १५३ यद्यपि राक्षसोंने तरह तरहकी फाँशियोंसे बाँधा व सबतरहसे यन्त्रित किया पर हमको तो दिनमेंलंका देखनेकी इच्छाथी इससे कुछभी पीड़ा न जानपड़ी १५४ तब उनराक्षस शूरोंने हमकोबाँध नगरभरमें पुकारा कि देखो यह दूतवानर जलता है १५५ तब हमने अपना रूप छोटाकरलिया इससे सबबन्धन ढीले पड़गये उनको छुड़ाय फिर अपने पूर्वरूपके समान होगये १५६ व लोहका एक बड़ा भारी परिघले उन सब राक्षसों को मार लंका के फाटक पर चढ़गये १५७ व अपनी पूंछमेंलगे अग्निसे सबपुरी एकक्षणमें फूंकदी जैसे युगान्त का अग्नि प्रजाओंको जारताहै १५८ जब सबपुरी जरगई व हमनेदेखा कि ऐसा कोईभी स्थाननहीं जो भस्महो राख न होगयाहो तो शोचा कि जानकी जी भी अवश्यही मृतक होगई होंगी १५९ देखो लंका भस्म करनेमें

हमने सीताकोभी जारडाला यह रामचन्द्रजीका बड़ाभारी कार्य्यविफल करदिया १६० इसतरह जब हम शोकयुक्तहुये तो चारणलोगों का वचन सुनाईदिया १६१ कि इसवानर ने बड़ा कार्य्यकिया जो सबलंका पुरी भस्म करडाली पर जानकी नहींजलीं तब हमने उनकी वाणीसुन व औरभी १६२ बहुत निमित्तोंसेजाना कि जानकीजी नहींजलीं क्योंकि यद्यपि पूंछके ऊपरका सब वस्त्रजलगया पर अग्निने हमको नहींजारा १६३ व हमारा हृदय हर्षित बनाहै शीतल पवन चलताहै इन सब निमित्तों से व औरभी महागुणों से १६४ व सिद्धचारणों के वचनोंसे जानकीजी को जीतीजान प्रसन्नचित्तहो फिर जाय सीताजी को देखा व उनसे विदाहुये १६५ व आय अरिष्ट नाम पर्व्वतपर चढ़ तुमलोगों के दर्शनकी इच्छासे फिर समुद्रको तड़कने लगे १६६ व वायु चन्द्र सूर्य्य गन्धर्व्वादिसेवित आकाश मार्ग्गहो यहां आय आपलोगों के आगे खड़े हुये १६७ हमने यह सबकार्य्य श्रीरामचन्द्रजीके प्रसाद से व आपलोगों के तेजसे व सुग्रीवके कार्य्यके अर्थकिया १६८ यहसब तो हमने किया अब जोहमने न कियाहो इससे बाकीरहाहो वहसब आपलोगकरें १६९॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टपञ्चाशत्तमस्सर्गः॥ ५८॥

पवनतनय हनुमान् जी इसतरह सब वृत्तान्तकह फिर और कुछ कहनेलगे १ सीताजीका शीलपाय हमारा मन बहुत तुष्टहुआ व रामचन्द्रजी का उद्योग भी सफलहुआ व सुग्रीवजीने जो रामचन्द्रजी का आदरकिया वहभी सफलहुआ २ हेवानरो अतिश्रेष्ठ श्रीमती सीताजीके समान जिसस्त्रीके शीलहो वह अपनी तपस्यासे तीनोंलोक धारण कर सक्तीहै व क्रोधयुक्त होनेपर तीनोंलोकों को भस्म भी करसक्तीहै ३ व राक्षसों का स्वामी रावण तो भाई सबतरह से बड़ा प्रतापी ठहरा जो सीताजीको हरण समय में हाथसे छूकरभी तिनके तपोबल से नष्ट नहींहोगया बड़ेआश्चर्य्यकी बातहै ४ क्योंकि जो कार्यक्रोधयुक्त होनेसे जनकनन्दिनी करसकें वहहाथसे छूनेपर भी अग्निकी शिखानहीं करसक्ती परन्तु जानकीजी ने अधिक कोपही नहीं किया नहीं तो रावण अवश्य भस्म होजाता ५ अब यह बात आपलोगों से कह इसकार्य्य में हमचाहतेहैं कि जाम्बवान् आदि महावानरोंको आज्ञाले जानकीजीको

लाय रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी को मिलायदें ६ जो कहिये कि बिना रामचन्द्र व सुग्रीव के लंकाको गये यह कैसे होसक्ताहै तो हम अकेले राक्षसोंकी पुरीलंका व सबराक्षस सहित रावणको एकाएकी मारसक्तेहैं दूसरेकी कुछभी आवश्यकता नहींहै ७ फिर जो बलवान् वीर सबअस्त्र शस्त्र चलानेमें प्रवीण सबकुछ करनेमें समर्थ परमज्ञानी व जयकी आकांक्षा किये आपलोगों के संग लंकाकोचलें तो क्याकहना ८ हमयुद्धमें सैन्य सेनापति मन्त्री दीवानादि सहित व पुत्र भाई सहित रावण को मारडालेंगे ९ जो मेघनाद ब्रह्मास्त्र रौद्रास्त्र वायव्यास्त्र व वरुणास्त्र भी छोड़ेगा तो १० जोकि संग्राममें बड़े दुर्न्निरीक्ष्य अस्त्रशस्त्रहैं तथापि तिन सबको हम नाशकरदेंगे व राक्षसोंकोभी नाशसक्तेहैं ११ क्योंकि हमारा विक्रम आप लोगों की आज्ञा पाय तिसरावण को पीड़ित करसक्ता है क्योंकि हमारी छोड़ीहुई लगातार पर्व्वतकीवृष्टि १२ समरमें देवताओं कोभी मारसक्ती फिर इनबेचारे राक्षसोंकी कौन गिनतीहै जो कहो कि फिर रावणको मारेक्यों न आये तो आपलोगों की बिना आज्ञापाये हमारे विक्रमने हमको रोंकदिया नहींतो मारहीतोडालते १३ चाहेसमुद्र अपनी मर्य्यादा को नाँघजाय व चाहे मन्दराचल पर्व्वतचले परन्तु शत्रु की सेना जाम्बवान्को नहीं कँपासक्ती १४ व सब राक्षस समूहोंमें जो बड़ेबड़ेहैं उनको महाबली अंगदजी अकेले मारसक्ते हैं १५ व महात्मा नीलके बड़े भारी वेगसे मन्दराचल भी फूटकर चूर्ण होसक्ताहै तो इन वेचारे राक्षसों की कौन गिनती है १६ देवता दैत्य यक्ष गन्धर्व्व नाग पक्षियोंमें भला मैन्द व द्विविदके संग लड़नेवाला किसीको बतावो तो हमारी जानतो कोईनहींहै १७ व जो ये दोनों वानरोत्तम अश्विनीकुमार के पुत्रहैं इनकेसंग युद्धकरनेवाला किसी राक्षसको हम नहींदेखते १८ व हमनेभी लंकामें बहुतराक्षस मारडाले व सबपुरी जारकर क्षारकरदी व सब राजमार्ग्गों में पुकार पुकार अपना नाम सबको सुनाया १९ ॥

चौ० अमल अतिबल राघव रणधीरा । जयति महाबल लक्ष्मण वीरा ॥ राघव पालित जय सुग्रीवा । वानरराज महाबल सीवा १ । २० पवन तनय हम दास रामके । सब बिधि पावन पूर्ण कामके ॥ हनूमान अस नाम हमारा । कह सुनाय सब नगर पुकारा २ । २१ ॥

तिसके पीछे दुष्टात्मा रावणकी अशोकवनिकामें शिंशुपाके नीचे बैठी करुणापूर्व्वक रोदनकरती २२ राक्षसियों के मध्यमें बैठी शोकके मारे दुर्व्वल मेघकी रेखासे घिरी चन्द्ररेखाके समान प्रभाहीन २३ व बलसे दर्प्पित रावणको तृण समान समझती पतिव्रता सुन्दर पयोधरवाली २४ व रामचन्द्रजी में सब तरहसे अनुरक्त रामचन्द्रको छोड़ और की चिन्ता न करनेवाली जैसे इन्द्र में इन्द्राणी बर्त्ताव कर्त्ती हैं उसी तरहका भाव रघुनन्दनमें रखनेवाली २५ एक वस्त्र धारण किये सो भी धूलि लगनेसे मलिन राक्षसियोंके बीचमें बैठी व बारबार उनसे डरती हुई २६ एक वेणी धारण किये दीनमुखी पतिकी चिन्ता में लगी २७ भूमिमें शयन करती हुई विवर्णाङ्ग युक्त हिम ऋतु बीतनेपर कमलिनी के समान प्रभाहीन रावणकी ओर से निवृत्त इससे मरनेमें निश्चयकिये २८ ऐसी जानकीजीको हमने देखा किसी तरहसे तिन मृगशावाक्षी को हम विश्वासमें लाये व फिर उनको सब अर्थ कहकर समझाया २९ तब श्रीरामचन्द्र व सुग्रीवकी मित्रताजान बहुतहर्षित हुईं जानकीजीका नियताचार व पति में उत्तम भक्ति देख ३० जो रावण न मरगया तो भाई वह बड़ा महात्मा है सो कबतक वह मृतकही धरा है उस मारनेमें रामचन्द्रजी केवल निमित्त मात्रहीहैं ३१॥

दो० प्रकृतिहि सों तन्वङ्गि सिय राम विरह अति क्षीन॥
प्रति पद पाठीकी यथा विद्या तिमि सो क्षीन १।३२
इमि सो राजकुमारि सिय शोक परायण ताहिं॥
जो कर्त्तव्य बिचारहु करहु तौन सब याहिं २।३३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकोनषष्टितमस्सर्गः ५९॥

हनुमानजीके वचन सुन अङ्गदजी बोले कि अश्विनीकुमारके पुत्र ये दोनों वानर बड़ेवेगवान् बड़ेबलवानहैं १ ब्रह्माजीके वरदानसे अतिवीर्य्य युक्तहैं अश्विनीकुमारके मानके लिये सब लोकके पितामह ब्रह्माजीने २ इन दोनों वानरोंको बरदान दिया कि तुमको कोई न मारसके इसलिये बरपाय उन्मत्तहो देवताओंकी बड़ी सेनाका मथनकर ३ इन्होंने अमृतपान करलियाथा इससे ये बड़ेबलवानहैं जब क्रोधकरेंगे तो घोड़े

हाथी रथ सहित ४ लङ्कापुरीका नाशकरसक्तेहैं तुम सब वानरो बैठो व नहीं तो हम अकेलेही राक्षस सहित लङ्कापुरी का ५ व महाबलवान् रावणको मारसक्तेहैं व फिर इन सब शस्त्रास्त्रचलानेमें चतुर ६ व सब कुछ करनेमें समर्थ आप लोग महावीर बानरोंके सङ्गहोनेपर क्याहै फिर तो जानों सब लङ्का निवासियों का विध्वंसही करदेंगे व हमने सुनाकि वायु सुनुके बलसे लङ्कापुरी भस्म करडालीगई ७ व उन्होंने जानकीजीको देखा परन्तु अपने साथ लेतेनहीं आये यह बात रामचन्द्र जीके निकट जाय महापौरुषी आप लोग कहनेके योग्य नहींहैं ८ क्योंकि हेबानरसत्तमो तीनों लोकोंमें देवता व दैत्योंमें भी कोई ऐसा नहीं जो आप लोगोंके तुल्य लड़कने में वा पराक्रममें हो ९ इससे सबको राक्षस समूह सहित लङ्का जीत व रणमें रावणको मार सीताजीको ले कार्य्य सिद्धकर प्रसन्न मनहो चले आवें १० इसके सिवाय हनुमानके मारनेसे बचेबचाये राक्षसोंमें अब और क्या करनाहै बस चलो जो बाकीहैं उनको मार जानकीजीको लेकर चलेआवें ११ व रामचन्द्र व लक्ष्मणजीके बीचमें बैठादें थोड़ेसे कामके लिये रामचन्द्रादि अप्रिय बचन बानरश्रेष्ठों को क्यों कहें १२ हमीं लोग समर में तिन राक्षस श्रेष्ठों को मार राघव लक्ष्मण सहित सुग्रीवको देखसक्तेहैं १३ ऐसा सङ्कल्पकिये अङ्गदजीसे बड़े अर्थ जानने वाले बानरसत्तम जाम्ववानजी बोले १४ हेमहाबुद्ध हेमहाबानर जो तुम कहतेहो इसका बुद्धिनाम नहींहैं क्योंकि हमलोग केवल दक्षिण दिशा ढूंढनेहीके भेजेगयेहैं १५ व जानकीजीको सङ्गले आनेकेलिये बुद्धिमान् रामचन्द्रजी व सुग्रीवजीने नहीं भेजा इससे जो हम रावणको जीत सीताजीको लेजायँ व रामचन्द्रजी इस बातको न प्रसन्नकरें १६ तो कैसेबनेगा क्योंकि श्रीराघव महाराज शार्दूलहैं अपने कुलको अपनेही वीर्य्यसे रक्षित रखतेहैं फिर सब बानरोंके आगे उन्होंने प्रतिज्ञाकीहै कि सीताकी विजय हमीं करेंगे १७ उसे वे कैसे मिथ्या करेंगे फिर जो उनकी सन्तुष्टता न हुई तो कियाहुआ कर्म्म विफलहीहोजायगा १८ व जो वीर्य्य तुम लोग दिखावोगे वह भी विफल होगा तिससे जहां राम लक्ष्मण व सुग्रीवजी हैं वहां कार्य्य निवेदन करनेके लिये हम सब चलें १९॥

कुण्डलिका ॥

नृपसुत अङ्गद कहत तुम जो वह हमहुँ सुहात ॥
पर जो भावे राम कहँ सोइ करहु अब तात ॥
सोइ करहु अब तात राम कहँ जो अनुकूला ॥
कार्य्य सिद्धिसो गुनहुँ तासु नहिंहो प्रतिकूला ॥
तासुकार्य्यंत्यहि केरि लीनचाही मति गुणयुत ॥
करिये सोइ उपाय सुखी ज्यहि होहिं राजसुत १ । २ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेषष्टितमस्सर्गः ६० ॥

तब सब अङ्गदादि वानर व महाकपि हनुमान्जीने जाम्बवान् के वचन ग्रहणकिये १ व सब वानर प्रीतियुक्तहो महेन्द्राचलके शिखर से उछल आगेको कूदे २ सब बानर सुमेरु व मन्दराचल सम प्रकाशित हनुमान्जीको आगेलिये मतवाले महागजोंके समान महाबलवान् व महाकाय आकाशको मूंदतेहुये चले ३ व सबकेसब सब प्राणियोंसे बड़ाई कियेगये आत्मज्ञानी महाबली व महाबेग हनुमान्जीको ऐसा देखते थे मानों उनकी [illegible] दृष्टिपर [illegible] चलेजाते ४ व सब [illegible] कार्य्य सिद्धि [illegible] व [illegible] कार्य्य सिद्धि करनेमें उत्साह[illegible] हो चले ५ सब वानर प्रियबाणी कहनेको तैयार व सब युद्ध करनेकेलिये प्रसन्न व सब रामचन्द्रकेलिये रावणके मारने को मन कियेथे ६ आकाश मार्ग्गहो जातेजाते सब बानर नन्दनबनके समान लाखों वृक्षसहित एक बनमें पहुँचे ७ इस बनका मधुबन नामथा व सुग्रीवकी ओरसे रखाया जाताथा इसमें कोई जीव नहीं जानेपातेथे व सबका मन हरताथा ८ इसकी रक्षा महाबलवान् व महाबीर सुग्रीवजीका मामा दधिमुख नाम वानर करताथा ९ वानरोंके इन्द्र सुग्रीवजीके बनमें पहुँच सब वानर बहुत हर्षितहुये १० व मधुयुक्त अति सुंदर बन देख सब वानर बहुत प्रसन्नहो उस बनके मधुर फल व मधु खानेके लिये अङ्गदजीसे पूंछा ११ तब जाम्बवान् आदि वानर श्रेष्ठोंके बचन मान उनका आदर कर मधुबनके मधु खानेकेलिये सबको आज्ञादी १२ [illegible] अङ्गदजी को आज्ञापाय सब वानर भ्रमर मन्नातेहुये वृक्षोंपर [illegible] १३ व मधु-

गन्धित फल फूल मूल भक्षण करतेहुये सब बहुत हर्षित व मतवालेहुये १४ तिसके पीछे सब सम्मतकर आनन्दितमन नाचनेलगे १५ कोईकोई गानेलगे कोईकोई हँसने व कोई नाचने व कोई प्रणामकरने कोई गिरने कोई दौड़ने कोई कूदने कोई अनर्थ बचन कहनेलगे १६ कोई परस्पर एक दूसरेको लपटाने लगे कोईकोई परस्पर जोरसे बोलनेलगे कोईकोई इस वृक्षसे उस वृक्षपर कूदने कोई वृक्षपरसे पृथ्वीपर कूदने लगे १७ व कोईकोई बड़े बेगवाले वानर पृथ्वीपरसे कूदकूद वृक्षोंकी फुनगी पर चढ़नेलगे कोई गाने कोई हँसने व कोई रोनेलगे १८ कोई कोई किसी किसीको व्यथित करनेलगे कोईकोई बड़ा नाद करने इसतरह वह वानरों की सेना समाकुल हुई इनमें कोई अमत्त न हुआ न कोई अनहङ्कारी हुआ १९ तब बनभरके फलखाये व वृक्षोंको फल पुष्परहित देख कोप युक्तहो दधिमुख वानर ने इन वानरोंको रोंका २० परन्तु सब वानरों ने उस बनरक्षक को बनाय भला बुरा कहा पर उस महातेजस्वी ने वानरोंका कहा न मान तिनसे फिर बनकी रक्षा करनेलगा २१ किसी किसी वानरोंको तो कठोर बचनकह डांटा व औरोंको लातोंसे मारा व किसीकिसीके निकटजाय खई करनेलगा व किसीकिसीको समझा बुझा दिया २२ परन्तु उन मदान्ध वानरोंने उसका रोंका न माना व न इस बातकी शङ्कामानी कि यह रक्षकहै इसके मारने पीटनेसे राजाके यहांसे दण्डहोगा इसलिये सब इकट्ठे पूंछ आदि अङ्ग पकड़पकड़ दधिमुख को इधर उधर घसीटने लगे २३ ॥

कुण्डलिका ॥

दारत नख सों द्रुमन कों काटत फटकत घाव ॥
करत अथा बाधा परत कम्पित सो सकमाल ॥
कम्पित सो सब गात कपिन मारेउ रखहि नीके ॥
फल दल मूल बिहीन कीनबन सबबिधि ठीके ॥
इमिब्याकुलकरिकपिहि कीशसब बहुबिधिमारत ॥
दधिमुखके सब गात सकल हरि फिर फिर दारत १ । २४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेएकषष्टितमस्सर्गः ६१ ॥

तब वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमानूजी सब वानरोंसे बोले हे वानरो तुम सब सावधानीसे मधुपानकरो १ जो तुमलोगोंको रोकेंगे उनको हमरोकेंगे हनुमानूजी के बचन सुन वानरों में श्रेष्ठ अंगदजी २ प्रसन्नहो बोले हे वानरो मधुपानकरो क्योंकि कार्य्य कियेहुये हनुमानूजीके बचन ३ जो करनेके अयोग्यभीहों तो हमको अवश्य करने चाहिये फिर इसतरहके बचनोंको क्याकहें येतो योग्यहीहैं अंगद के मुखसे यह बचन सुन सब वानरश्रेष्ठ ४ बहुतअच्छा बहुतअच्छाकह बड़ाई करनेलगे व सबहर्षित हुये व वानरोंमें श्रेष्ठ अंगदकी पूजाकर ५ नदीवेगके समान मधुबनको गये व मधुबनमेंपैठ रक्षकोंको पकड़ ६ जानकीजीको देखेसुनेवानरलोग अंगदकी आज्ञासे मधु पी मधुर मधुर फल खानेलगे ७ तिस समय जो रक्षकआये तिनको कूदकूद सबोंने मारापीटा यहांतक कि सैंकरों इधर उधर पिटपुट भगे ८ अंजुलियों में लेले हर्षित हो वानरों ने बहुत मधु पानकिया ६ व सबके सब एकही संग रक्षकों को मारने लगते व फिर कूदकूद फल खाने लगते व कोई कोई मधुपानकर लड़ने लगते १० कोई कोई मधुकेछातोंसे आपस में मारतेथे व बहुतसे वृक्षोंके नीचे डालें पकड़े झूलतेथे ११ व फिर सबके सब अति मंदमत्तहो मारे मदवेगसे हर्षितहो वृक्षोंके पल्लव बिछाय बिछाय सोनेलगे १२ फिर उठ आपस में एकदूसरेको लपटने झपटनेलगे फिर कोई इधर गिरता कोई उधर कोई कोई मतवालपना करते कोई कोई हर्षितहो पक्षियोंकासा शब्द करते १३ व कोई कोई मधुमत्तहो महीतल में पड़ सोगये कोई ऐसेढीठे थे कि बार बार हँसतेथे व कोई औरही कुछ करते १४ कोई कुछ करते कोई कुछ समझते कोई कुछमानते कोई कुछही जानते व जो दधिमुखके नौकर चाकर बनके रक्षकथे १५ व सब रखवारे जब इसतरह मारेगये तो वानरोंने उठाय उठाय आकाशको फेंकदिया इससे सब गिरते पड़ते दशों दिशाओं को भागगये १६ व दधिमुख के पासजाय परम उद्विग्न हो बोले कि हनुमानके कहनेसे वानरोंने मधुबन विध्वंस करदिया १७ व हमलोगों को उठाय उठाय आकाश को फेंकदिया १८ तब मधुबन उजड़ा पजड़ादेख दधिमुख क्रोधकर तहांजाय वानरोंको समझानेलगा १९ व क्रोधकर फिर बोला हेवानरो यहांआवो हमभी आयेहैं अबफल

खाते तुमलोगोंको रोंकतेहैं देखें तो कैसेखातेहो २० दधिमुखके ऐसेबचन सुन सबबीरतिसके साथ फिर मधुबनको आये २१ व दधिमुख बड़ाभारी पेड़ उखाड़ दौड़ा व सब रखवारे वानरभी दौड़े २२ व शिला वृक्ष पाषाणादि लेले क्रोधकर जहां ये सब वानर थे वहां आये २३ व जबरदस्ती सब वानरोंको दुर्व्वाद कहकह चबूरी बाँध बाँध क्रोधकर कर निवारण करनेलगे २४ तब दधिमुख को फिर कोपकिये आये देख हनुमानादि वानरश्रेष्ठ दौड़े २५ व वृक्ष दोनोंहाथोंमें लिये दधिमुखको दौड़ेआतेदेख अंगदने क्रोधकर दौड़कर पकड़लिया २६ मदान्ध तो थेही यह न बिचाराकि ये हमारे पिताजीके मामाहैं इससे हमारे बड़ेहैं बसपकड़ पृथिवीमें जोरसे पटकदिया २७ कि दधिमुख का मुंह हाथ बाहु जाँघें सब टूटगईं व विह्वल होगये रुधिर ठौर ठौरसे बहने लगा वानरोंमें हाथीरूप दधिमुखके मुहूर्त्त भर तक मूर्च्छा आगई २८ जब दैवदैव कर दधिमुख की मूर्च्छा जागी व वानरोंसे प्राणबचे तो चुप्पे उठ एकान्त में जाय अपने सेवक मधुबन रक्षक वानरों से बोले २९ कि तुम सब चलो व हमभी वहांचलें जहां हम सब लोगोंके भर्त्ता सुग्रीवजी श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणके साथ बैठे टिकेहैं वहां चलें ३० व राजासे अंगदके सब दोषकहैं तब सुग्रीव असहनशील तो हैंहीहैं इन सब वानरों को मारडालेंगे ३१ क्योंकि यह मधुबन महात्मा सुग्रीवजी को बहुत प्रियहै क्योंकि उनके बापदादा परदादाका रक्षित यह बनहै व देवतालोगभी बड़ी कठिनतासे इसमेंआसक्त हैं ३२ इससे वे सुग्रीव मधुके लोभी व मौत नगिचानेहुये इनराक्षसोंको इनके इष्टमित्रों सहित मारडालेंगे ३३ राजाज्ञाको न माननेवाले ये दुष्टात्मा वानर मारेही डालेजानेके योग्यहैं जो इससमयहम गमखागये तो हमारी यह सबूरी सफलहोजायगी ३४ बनपालोंसे ऐसा कह महाबल दधिमुख बनपालोंको साथले झटपट सुग्रीवके पासगये ३५ व जहां सूर्य्यकेपुत्र सुग्रीवथे वहांसब वानररखवालोंको संगले दधिमुख पहुँचा ३६ व रामलक्ष्मण सुग्रीवको देख ऊपरसे पृथिवी में उतरे ३७ पालकोंका परमेश्वर महाबीर दधिमुख सबबीर वानरोंकेसाथ ३८ उदास हो शिरपरहाथजोड़े अञ्जलि किये जायसुग्रीवके चरणोंपर गिरा ३९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेद्विषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६२ ॥

दधिमुख को हाथजोर शिरपरधरे चरणोंपर गिरते देख वानरों में श्रेष्ठ सुग्रीवजी बहुत ऊब यहबोले १ कि उठोउठो हमारे मामाहो उलटे हमारे चरणोंपर तुम कैसेगिरे तुमको हमअभयदान देतेहैं बताओ तो २ किसलिये तुम यहां आये सब कहो तो हे वानर हम मधुबन की स्वस्ति सुना चाहतेहैं वहहै वा नहीं ३ जब इसतरह सुग्रीवने आगत स्वागत किया तो महाप्राज्ञ दधिमुख उठ यहबोला ४ हेराजन् जोवन ऋक्षराजने अच्छीतरह नहींभोगा न तुमने न वालिने वहबन वानरोंने उजाड़डाला ५ इन बनचारियों के संग हमने भलभल तिनवानरों को रोंका पर हमको उन्होंने कुछ न समझ सब फलखालिये व सब मधु पीलिया ६ इनबनपालों ने भलभल रोंका व मारापीटा भी व हमनेभी सबतरह से रोंका पर उन्होंने कुछ नहीं माना अबभी वहां मनमाना खातेपीतेहैं ७ बहुतसे फल तोड़डालतेहैं जो खाया सो खाया बाकीसब फेंकदेतेहैं व जो रोंकेजातेहैं तो टेढ़ीभौहँ दिखातेहैं ८ इनलोगोंने क्रोधकर बहुतकुछ कहा तो उन वानरश्रेष्ठोंने इनकोपकड़ पीटपीट उसबन से बाहर करदिया ९ व पीछेसे क्रोधकर कर इन बेचारोंको फिर मार झिझकोर खेददिया व बड़ेलाल लाल नयनदिखाये १० बहुतोंको चटकनोंसे मारडाला व बहुतोंको जाँघोंसे व बहुतोंको उठाय उठाय ऊपर को फेंकदिया ११ तुम स्वामी बनेहीहो व ये शूरलोग मारडाले गये व हमारा सब बन वे वानर मनमाना खापोरहेहैं १२ इसतरह सुग्रीवसे दधिमुख कहतेहीथे कि शत्रुओंके मारनेवाले लक्ष्मणजी सुग्रीवसे पूंछने लगे १३ हेराजन् क्या यह वानर किसी बनका रखवारहै जो आयाहै व क्या प्रयोजन कह दुःखितहो बोलता है १४ इसतरह जब महात्मा लक्ष्मणजीने सुग्रीवजीसे पूंछा तो बोलनेमें बड़े चतुर सुग्रीव जी बोले १५ हे श्रेष्ठ लक्ष्मण यहबीर दधिमुख कपि कहताहै कि अंगदादि बीर वानरोंने मधुबनके फलखाडाले व मधुपीलिया १६ इससे ऐसा बिदित होताहै कि उनलोगोंने कार्य्यसिद्ध करलिया क्योंकि जो कार्य्य न कर आते तो ऐसा व्यतिक्रम न करते कार्य्यकरनेही से बनके फल मधुखापीलिये १७ ये रक्षक भलभल रोंकतेरहे पर इनकोटाँगे पकड़ पकड़ बनसे बाहर फेंकदिया तिसीतरह महाबली इन दधिमुख वानरको भी

कुछनहीं माना १८ ये हमारे व हमारे बनके भी स्वामीहैं व हमलोगों ने इनको वहां स्थापित कियाहै इसमें कुछ सन्देह नहीं सीताजी को ज़रूर देखआये सोभी और किसीने न देखाहोगा हनुमानहीने देखा होगा १६ क्योंकि इसकर्म्मके साधन करनेमें हनुमान्के सिवाय और कारण नहींहोसक्ता क्योंकि हनुमान्में कार्य्यकीसिद्धि व बुद्धिभीहै २० व्यवसाय वीर्य्य पाण्डित्य सब चीजें पवनतनयमेंही हैं व फिर जिस समाजके प्रेरक जाम्बवान् व अंगदहैं २१ व हनुमान् अधिष्ठाताहैं तहां कार्य्य मिथ्या नहींहोसक्ता इसीसे अंगदादि बीरोंने मारेखुशीके मधुबन उजारडाला २२ देखो वानरोंने सबकासब बन उजारदिया व सब फलादि खापीलिये व बनपालों को लातोंसे मारडाला २३ इसीसे मधुर बचन बोलनेवाले ये यहां कहनेको आयेहैं इनका दधिमुख नामहै व वानरोंमें इनका विक्रम प्रख्यातहै २४ हे लक्ष्मणजी बस आपनिश्चय जानिये कि ये लोग सीताको देखआये इसीसेआय सब वानर मधुपीने लगेहैं २५ क्योंकि बिना जानकीजीको देखे ये वानर रक्षित व बरदान दिया मधुबन न उजारते २६ सुग्रीवके मुखसे ऐसे बचन सुन धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी बहुत २७ हर्षित हुये व फिरफिर प्रसन्न चित्त हुये व दधिमुखके बचनसुन हर्षितहो सुग्रीव २८ दधिमुख बनपाल से फिर बोले कि हम बहुत प्रसन्न हुये क्योंकि इतना बड़ा भारी कर्म्म कर उन्होंने फलखालिये व बन उजारडाला २६ इस समय कार्य्य कियेहुये वानरोंका यह उजारना मारनापीटना खानापीना सब क्षमाकरनेकेयोग्य है तुमभी नाहक उनसे बोले अबतुम शीघ्रही मधुबनको जाव व रक्षा करो व हनुमानादि तिनसब वानरोंको शीघ्रहीभेजो ३० ॥

कुण्डलिका ॥

देखा चहत बनाय हम अनिल सुतादिक कीश ।
सिंह सरिस विक्रम सकल समर प्रचण्ड कपीश ॥
समर प्रचण्ड कपीश राम लक्ष्मण के साथा ।
तिनकहँ देखा चहत कहत यासों यह गाथा ॥
सकल कृतारथ रूप कपिन जिमि जानकि पेखा ।
सो सब सुनब बिचारि पवनसुत जिमि त्यहिदेखा १ । ३१

दो० राम लषन कहँ प्रीति युत हर्षित सुखित निहारि ।
नेत्रबाहु दक्षिणाचलत लखिसुकण्ठ मुदकारि १ । ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेत्रिषष्टितमस्सर्गः ॥ ६३ ॥

इसतरह सुग्रीवके बचनसुन हर्षितहो दधिमुख वानर रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी व सुग्रीवके प्रणामकर १ शूरबीर वानरोंके साथ आकाश को उछला २ यह जिसतरह तुरन्तही आयाथा उसी तरह फिर आया व आकाशसे उतर फिर मधुबनमें पैठा ३ व पैठतेही उसने सबवानरों को मदरहित उद्धत व मधुयुक्त बनमें मूत्रपुरीष करतेदेखा ४ व तिनसब वानरोंके निकटजाय हाथजोर अंजलि बाँध शिरपर धर अंगदजीसे मधुरबचन बोला५हेसौम्य जो इनरखवारोंने अज्ञान व क्रोधसेआपलोगों को रोंका उससे कोप न कीजिये ६ बहुतदूर से चलेआने के कारण थक गयेहोगे इससे अपनामधु व फलपिओ खाव हे युवराजमहाबलतुम इस बनके स्वामीही हो ७ हमने मूर्खतासे पहिले रोष कियाथा सो आप क्षमाकरें जिस तरह आगे तुम्हारे पिताजी बानरोंके राजाथे ८ तैसे तुम व सुग्रीव हो और कोई नहींहै हे पापरहित हमने जाय तुम्हारे चचासे कहा ९ कि मधुबनमें सब अङ्गदादि आगये सो इन सब बानरोंके साथ आपका आगमन सुन १० सुग्रीव बहुत प्रसन्न हुये व बन बिध्वंस सुन उन्होंने कुछ क्रोध नहींकिया वरन हर्षितहो तुम्हारे चचा सुग्रीवजीने हमसे कहा ११ कि तिन सब बानरोंको शीघ्र यहां भेजो दधिमुखका मधुर व साफ वचन सुन अङ्गदजी १२ तिन बानरोंसे बोले क्योंकि बोलनेमें बड़े चतुर थे हे बानर यूथपो यह वृत्तान्त रामचन्द्रजी सुनचुके इससे हम शङ्का करतेहैं १३ क्योंकि यह दधिमुख बड़े हर्षसे कहता है तिसी हेतुसे हम कहतेहैं तिससे अब अकार्य्यकर हम लोगोंको यहां न रहना चाहिये १४ अब तो मधुपान करचुके व इन बानरोंके सङ्ग बिक्रम भी दिखाचुके अब जहां सुग्रीवहैं तहांके जानेमें क्या बाकीहै १५ अब आप सबलोग बानरश्रेष्ठ मिलकर जो कुछ सम्मतकरें हम वही करें क्योंकि हमतो आप लोगोंके अधीन हैं १६ यद्यपि हम युवराजहैं परन्तु आपलोगोंको आज्ञा नहींदेसक्ते क्योंकि आप सब ऐक्यकिये आते

तेहो इस समय कोई बात जबरदस्ती कहना बहुत अयोग्यहै १७ ऐसा कहतेहुये अङ्गदजीके बचन सुन हर्षित मनहो सब बानर बोले १८ हे बानरश्रेष्ठ हेराजन् प्रभुहोकर ऐसा दीनबचन कौन कहैगाक्योंकि ऐश्वर्य्यके मदसे मत्तहो सब यही कहताहै कि हमी सबकुछहैं १६ यह बचन तुम्हारेही कहने के योग्यहै अन्य किसीके कहनेके योग्य नहीं व यह नम्रता होनेवाली तुम्हारी शुभयोग्यता को कहतीहै २० हम सब लोग भी जहां बानरों के स्वामी सुग्रीवहैं वहां जानेकेलिये तैयारहैं व जितनी देर यहां लगतीहै अकुलातेहीहैं २१ हेबानरश्रेष्ठ बिनातुम्हारी आज्ञा कहीं जानेको बानरलोग अपने स्थानसे एक पदभी नहीं उठा सक्के यह हम तुमसे सत्यही कहतेहैं २२ जब बानरोंने ऐसा कहा तो अङ्गदजी बोले कि बहुत अच्छा अब हमलोग यहांसे चले यहकह महाबलवान् सब बानर वहांसे आकाशकोउछलगये २३ अङ्गदादिकोंको आकाशको कूदते देख बाकी बानर यूथपआकाशको अवकाश रहितकर कलसे फेंके पत्थरोंके समान उनकेपीछे उछलगये २४ व अङ्गद वहनुमानूको आगेकर सब बानर आकाशमार्ग्गहो बड़ेवेगसे चले २५ प्रचण्ड पवनसे प्रेरित बादरोंकी तरह महाशब्द करतेजाय किष्किन्धाके निकट पहुंचे अङ्गदको आतेदेख सुग्रीवजी २६ शोकसे सन्तप्तकमललोचन श्रीरामचन्द्रजीसेबोले कि आपका कल्याणहो व प्रसन्नहूजिये देवीजानकीजीकोबानर देखआये इसमें कुछभी सन्देहनहीं २७ क्योंकिसमयबिताय बिना जानकीको देखे बानर यहां नहीं आसक्तेथे व अङ्गदके बहुतहर्षित होनेसे भी हम जानतेहैं २८ क्योंकि कार्य्य नाशकर युवराज महाबाहु बानरोंमें श्रेष्ठ हमारे समीप कभी न आसक्ता२६यद्यपिबिना कार्य्यकिये भी लोग लौट सक्तेहैं तथापि जो वैसा होता तो अङ्गद बहुतउदास व भ्रान्तचित्तहोते पर उसकेबिपरीत प्रसन्नचित्तहैं तो जरूर देखआये ३० इसके सिवाय बिना जानकी जीको देखे पिता पितामहादिकों का यह हमारा मधुबनकोई न उजारता न उनके फल खाता ३१ हे रामचन्द्र जी कौशल्या सुप्रजा हुई आप प्रसन्न हों जानकी देवी देखीगईं सोभी हनुमानूही ने देखा अन्य किसीने नहीं ३२ क्यों इस कर्म्म के साधन करने में इनके समान दूसरा कोई नहीं है क्योंकि हनुमानमेंही मतिव

इस विषय की सिद्धिहै ३३ व व्यवसाय शूरता पाण्डित्य सब उनमें टिकेहैं व जहां जाम्बवान् व अङ्गद प्रेरक ३४ व हनुमान्जी अधिष्ठाता तिस कार्य के होने में सन्देह नहीं इससे हे अमित बिक्रम चिन्ता युक्त न हूजिये ३५ जब ये सब बानर बड़े घमण्ड के साथ एक संग चलेआते हैं तो बिनाकार्य किये इसतरह का आना नहीं होसक्ता ३६ फिर हम बन उजारने व मधुपान करने से जानतेहैं इतनेमें आकाश में सब बानरों का किलकिला शब्द सुनाईदिया ३७ व हनुमान्जी के कर्म्म करनेसे घमण्डयुक्त बानरोंका मनथा व जिन्होंने किष्किन्धामें आयमानों सिद्धही कहतेथे ३८ तिसके पीछे कपियोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवजीने बानरोंका किलकिला शब्द सुन प्रसन्न मनहो अपनी पूंछबढ़ाय घुमाई ३९ इतने में रामचन्द्रजीके दर्शनको अभिलाषा से अङ्गद व हनुमान्जी को आगे कर ४० सब बानर सुग्रीव व रामचन्द्र जी के समीप आकाश से उतरे ४१ व सबके आगे हो रामचन्द्रजीके प्रणामकर महाबाहु हनुमान्जीने कहा कि महाराज हम सीताजी को देख आये ४२ जानकी देवी को हमने देखा यह अमृतसमान् बचन हनुमान् जी के मुखसे सुन रामचंद्र जी व लक्ष्मणजी बहुत हर्षित हुये ४३ तब पवनतनय में निश्चितार्थ सुग्रीवको जान लक्ष्मण जी प्रीतिमान् हो बड़े मानसे देखनेलगे ४४ व शत्रुओंके मारनेवाले श्रीरामचन्द्रजी परम प्रीति से बड़े मानपूर्व्वक हनुमान्जीको देखनेलगे ४५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेचतुष्षष्टितमस्सर्गः ॥ ६४ ॥

तब चित्र विचित्र युक्त प्रस्रवण पर्वतपर जाय रामचन्द्र व लक्ष्मण जी के शिर से प्रणामकर १ अंगद को आगेकर सुग्रीव के प्रणाम कर हनुमानादि बानर सीताजीके समाचार कहनेलगे २ उसमें जिसतरह रावणके जनाने मकानमें सीताजी रोंकीरहीं व राक्षसियां डरवातीरहीं व जिसतह रामचंद्रजीमें अनुराग व जिसतरह सीताजी नियम करती थीं ३ बानरों ने यह सब रामचंद्रजी के निकट कहा तब जानकीजी को जीती जान श्रीरामचंद्र जी बोले ४ हे बानरो सीता इससमय कहांहै व उनका हममें कैसा भावहै यह सब हमसे वैदेहीजीके विषयमें कहो ५

रामचंद्रजीके बचनसुन बानरलोग श्रीरघुनाथजी के निकट सीताजी के वृत्तांत जाननेमें कुशल हनुमान्जीको खींचनेलगे ६ तिनलोगोंके बचन सुन मारुतसुत हनुमान्जी दक्षिणदिशाकीओर सीताजीके मनसे प्रणाम कर ७ जिसतरह सीताजी को देखा व जिसतरह वह कंचनका दिव्य मणि पाया व जिसतरह अपने तेजसे लङ्काको गये ८ रामचंद्रजी को मणिदे हाथजोर बोले कि सौयोजन का समुद्र नांघ हम ९ जानकीजी को ढूंढ़ते ढूंढ़ते गये तहांदुष्टात्मा रावणकी लङ्कानाम नगरी है १० वह दक्षिण समुद्रके दक्षिणतीरपर बसतीहै तहां हमने रावणके अंतःपुर में सीताजीको देखा११हे राम तुममें अपना मनोरथ लगाये जीरही हैं व हमनेराक्षसियों के मध्यमें बैठी बहुत तर्ज्जित देखा १२ हे बीर तुम्हारे साथ सुख पाने के योग्य सीता बिरूप राक्षसियों से रक्षित हो किसी तरह से जीती हैं व नाना प्रकार के दुःख भोगती हैं १३ रावण के अन्तःपुरमें राक्षसियोंसे रक्षितहैं व एक बेणी धारणकिये नित्य तुम्हारे ध्यानमें परायण रहतीहैं १४ भूमिमें सोतीहैं इससे औरभी बिवर्णाङ्गी होगईहैं जैसे शिशिरऋतुमें कमलिनी बिवर्ण होजातीहै रावणकी ओर से बिलकुल मन खींचे मरने पर उतारू बैठी हैं १५ हे श्रीरामचन्द्रजी इसतरह किसीप्रकारसे जानकीजीको हमने ढूंढ़पाया तब इक्ष्वाकुबंशियें। का कीर्त्तनकिया १६ हे नरशार्दूल तब हम किसीतरहसे विश्वासमें लाये व फिर देवी सीताजीसे बार्त्ताहुई सब यहांके समाचार उनसे कहे १७ रामचन्द्र व सुग्रीवकी मैत्री सुन बहुत हर्षितहुईं उनका आचार बहुत नियतहै व इनकी भक्ति आपमें सदा रहतीहै १८ हे महाभाग इसतरह हमने जनकनन्दिनीको देखा जो तुम्हारी भक्तिसे उग्रतपस्या कररहीहैं १९ व एक और पता हमसे बतायाहै जैसे चित्रकूटमें तुम्हारे सङ्ग बैठी थीं तब एक काक आयाथा २० हे वायुसुत जिसतरह हमको देखे जाते हो श्रीरामचन्द्रजीसे बनाय ब्योरावार कहना यह हमसे जानकीजी ने कहा २१ व यहभी कि इसमणिकी रक्षा हमयत्नसे करतीरहीं सो राम-चन्द्रजीको देदेना इसतरहके बचन सुग्रीवके सुनते में रामचन्द्रजी से हनुमान्जीने कहा २२ कि यह चूड़ामणि हमने यत्नसे रखायाहै व आप मैनशिरके तिलक का स्मरण कीजिये यह उन्होंने हमसे कहा है २३

जलसे उत्पन्न यहमणि तुम्हारेपास भेजतीहैं जब हमको बड़ाकष्ट होता था तब इसीको आपके समान देख अपनादुःख मिटाती थीं २४ हे दशरथसुत एकमहीना हम और प्राण रखतीहैं महीना भरके ऊपर राक्षसों के बीचमें पड़ी हम न जीवेंगी २५ धर्म्मचारिणी व दुर्बलगात सीताजीने यह हमसे कहाहै जोकि रावणके अन्तःपुरमें मृगीके समान व्याकुल नयनरक्षित हैं २६ हे राघव हमने बिधिपूर्व्वक सब वृत्तान्त कहा अब आप समुद्र उतरनेका प्रयत्न कीजिये २७ तिन राजपुत्रोंको प्रसन्न जान बायुतनयने सीताजीका दिया चूड़ामणि श्रीरामचन्द्रजीको दिया व जो कुछ जानकीदेवीने कहाथा वहसब क्रमपूर्व्वक कहा २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चषष्टितमस्सर्गः ६५ ॥

महाराजाधिराज दशरथजीकेपुत्र श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणसहित उस मणिको हृदयमें लगाय रोदनकरनेलगे १ व वह मणिश्रेष्ठ देख शोकसे कृशितहो रामचन्द्रजी दोनों नेत्रोंमें आँशुभर सुग्रीव से यहबोले २ कि बछवाके ऊपर प्रसन्न गायका हृदय जैसे चूने लगताहै वैसेही मणिदेख हमारा हृदय कांपताहै ३ क्योंकि यह मणिरत्न हमारेश्वशुर जनकजीने बिवाहके समय जानकीजीको दियाथा इसीसे वे अपने शिरपर बहुधा धरेरहती हैं ४ व यह परमपूजित मणि समुद्रसे उत्पन्न हुआथा यज्ञमें सन्तुष्टहो बुद्धिमानइंद्रने हमारेश्वशुरको दियाथा५यह मणिदेख हमको पिताजीका स्मरण आया व राजा जनकजीको भी स्मरण आगया ६ यहमणि तिनहमारी प्राणप्यारीके जूड़ामें शोभित होताथा इससे इसके देखनेसे जानों हम अपनी प्राणप्रियाको आईहुई समझतेहैं ७ हेसौम्य फिरफिर सीताके वृतान्तकहो मृतक मनुष्य के ऊपर बचन रूप अमृत सींचतीहुई वैदेहीने क्या कहाहै ८ हे लक्ष्मण बिना वैदेहीके आये इस मणिको देखतेहैं तो इससेअधिक कौनदुःख होगा ९ जो मासभर प्राण धारण करेंगी तो वैदेही बहुत दिनोंतक जीवेंगी हे बीर परन्तु बिना तिसके हम क्षणभर भी नहींजीसक्ते १० जहांहमारी प्रियादेखीहै तहांही हमकोभी पहुँचावो क्योंकि समाचार पाय क्षणभर भी हम यहांनहीं टिकसक्ते ११ भला डरभुतों में डरभुत व पतिब्रता शिरोमणि हमारी

प्राणप्रिया भय करानेवाले राक्षसोंके बीचमें कैसे रहतीहोंगी १२ तिनका मुख बादरोंसे बाहर निकला अन्धकाररहित शरदऋतुके चन्द्रमाके समान अब न शोभित होताहोगा १३ हे हनुमन् सीताने क्या कहाहै निश्चय निश्चय बतावो हम दुःखसे जीवेंगे जैसे औषध से रोगी बड़े दुःखसे जीताहै १४ ॥

चौ० मधुरालापिनि मधुर हमारी । प्राणप्रिया का कह्यहु बिचारी ॥ हमबिन दुखसे दुख तरपाई । जीवत किमि सो कहहु बुझाई ॥ १ । १५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेपञ्चषष्टितमस्सर्गः ६६ ॥

इसतरह जब महात्मा रामचन्द्रजीने हनुमानजीसे कहा तो वे सीताजीने जोजो कहाथा कहनेलगे १ हे पुरुषर्षभ जानकीजीने पूर्वसमय का यही वृत्तान्त चिह्न बतायाहै कि हम चित्रकूट पर २ तुम्हारे साथ सुखसे सोय पहिले उठीथीं तब एक काकने उड़कर हमारे स्तनोंकेबीचमें घाव करदियाथा ३ परन्तु हे रामचन्द्रजी आपतो फिर जानकीजी की गोदमें सोगयेथे तब उसने फिर आय स्तनोंके बीचमें टोंट मारी ४ जब उसने फिर घावकिया तो तुम तिन जानकीजीका रुधिर लगने से जाग उठे ५ सोभी आपतो निधड़क सोगयेथे जब उस काकने बारबार सीता जीको पीड़ितकिया तो देवी सीताजीने जगाया ६ हे महाबाहो तिनको स्तनोंके बीचमें घावलगी देख आप सर्पके समान श्वासले क्रोधसे यह बोले ७ कि हे प्रिय तुम्हारे स्तनोंके बीचमें किसने पञ्जामारा वहकौन है जो पँचमुहां सर्पके साथ खेल करता है ८ यहकह आपने चारोंओर निहारा तो नखोंमें रुधिर लगाये सीताजीकी ओर मुखकिये उसबायस को देखा ९ वह पवनके समान चलनेवाला बायस इन्द्रजीका पुत्र था अपने मतलबके लिये भूतलमें आयाथा १० हे महाबाहो तब आपने कोपके मारे नेत्र टेढ़ेकर तिस काकके बिषयमें बड़ी क्रूरमति की ११ कि अपने कुशासनमेंसे एक कुशनिकाल उसे ब्रह्मास्त्रसे संयुक्तकर चलाया वह बरते अग्निके समान उस काकके सामनेचला १२ वह कौआ के ऊपर चलायाहुआ कुश बरताहुआ उसके पीछे पीछे चला १३ व वह कौआ सबदेवताओंके पास अपनी रक्षाके लिये गया परन्तु मारे डरके

सब देवताओंने उसे जवाबदिया इसतरह वह तीनोंलोकोंमें घूमा पर उसको रक्षक कोई न मिला १४ तब वह फिर आपके निकट आया उसे आपने शरणागत आये पृथिवीमें पड़ादेख १५ यद्यपि वह मारहीडालने के योग्यथा तथापि कृपासे आपने उसकी रक्षाकी परन्तु आपका सफल अस्त्र मिथ्या तो होही नहींसक्ताथा १६ तिससे तिस काकका दहिना नेत्र फोड़डाला तब वह बायस तुम्हारे नमस्कार कर व राजा दशरथजीके भी प्रणामकर १७ तुम्हारी आज्ञासे फिर अपने स्थानको चलागया सो इसतरह आप अस्त्र जाननेवालोंमें श्रेष्ठ व सत्त्ववान् व शीलवान् भी आप १८ राक्षसोंके ऊपर क्यों नहीं अस्त्र छोड़ते हे रामचन्द्र रणमें न तो देवता न दानव न गन्धर्व न दैत्य न पवन १९ तुम्हारे सामने खड़े होसक्तेहैं न तुमको लौटासक्तेहैं जो बीर्य्यवान् तुम्हारे हमारे बिषय में आदरहो तो २० तीक्ष्णबाणोंसे समरमें रावणको मारडालिये फिरभाई की आज्ञाले शत्रुओंको तपानेवाले लक्ष्मणजी २१ हमारीरक्षा क्योंनहीं करते क्योंकि वायु व अग्निके समान तेजस्वी वे दोनों पुरुष व्याघ्र २२ जोकि देवताओंसे भी दुर्द्धर्ष हैं हमारी क्यों उपेक्षा करतेहैं हम जानती हैं कि हमाराही कुछ पापहै इसमें कुछ सन्देह नहीं २३ क्योंकि ऐसे समर्थ व शत्रुओंको सन्तप्त करनेवाले दोनोंभाई हमारीरक्षा नहींकरते बैदेहीजीके ऐसे करुणाबचन सुन २४ फिर हम राजराजेश्वरी से यह बचन बोले कि हे देवि रामचन्द्रजी तुमको नहीं जानते कि यहांहो यह हम सत्यही कहतेहैं २५ व रामचन्द्रजीके शोकसे लक्ष्मणजी परितप्त होतेहैं अब आप किसीतरहसे देखपड़ीहो यहकाल शोचकरनेका नहींहै २६ हे भामिनि इस मुहूर्त्तको दुःखोंका अन्त समझोगी वेपरन्तप दोनों राजपुत्र २७ तुमको देखनेके लिये लङ्काको भस्म करडालेंगे व समर में सपरिवार रावणको मारडालेंगे २८ हे अनिन्दिते जो तुम्हारा पता पावेंगे तो रामचन्द्रजी अपनी पुरीको तुमको अवश्य लेजायँगे २९ अब कोईऐसा पदार्थदीजिये जिसकेदेखनेसे रामचन्द्रजी प्रसन्नहों व विश्वास मानें तब सबओर निहार जूराखोल ३० बस्त्रसे छोर हमको यह मणि उन्होंने दिया तब हम दोनोंहाथोंसे मणिले तुम्हारेलिये पीढ़े अपनेपास कर ३१ शिर झुकाय मणि व सीताजीके प्रणामकर चलनेको तैयारहुये

हमको चलनेको तैयारदेख सीताजी ३२ बढ़तेहुये हमसे रोदन करती गद्गदबाणीसे बोलीं ३३ क्योंकि हमको उछलते देख सम्भ्रान्तचित्त होगईथीं कहा कि हेमहावीर तुम बड़े भाग्यवाले हो ३४ जोमहाबाहु कमलनयन रामचन्द्रजीको देखतेहो व महायशस्वी हमारे देवर लक्ष्मण को देखतेहो ३५ जब सीताजीने हमसे ऐसाकहा तो हमभी मैथिलीजी से बोले कि हे जनकनन्दिनि शीघ्र हमारी पीठपर चढ़ो ३६ कि जब तक हम तुमको सुग्रीव लक्ष्मणसहित तुम्हारे भर्त्ता रामचन्द्रजीको दिखावें ३७ तब हमसे वे बोलीं कि पतिव्रता हमारा यहधर्म्म नहीं जो आपनेआप तुम्हारी पीठ छुएं ३८ व जो हरणके समय हमको रावणने छूलिया सो उस समय हम परवश थीं क्याकरतीं ३९ हे कपिशार्दूल जहां वे दोनों राजकुमारहैं वहां जाव यहकह व फिर सन्देशकहनेलगीं ४० हे पवनसुत सिंह समान प्रतापी राम लक्ष्मणसे व मंत्रियों सहित सुग्रीवसे कुशल कहदेना ४१ व जिससे इस महादुःखसागरमें डूबती हमको श्रीरामचन्द्रजी पारउतारें तुम तैसा उनसे कहना ४२ हे वानर प्रवीर तुम्हारा मार्ग्ग कल्याणकारीहो यह हमारा बड़ा कठोर शोक बेग व इन राक्षसोंका अपकारपूर्व्वक बोलना रामचन्द्रजीके समीप जाय कहना ४३ हे राजन् इन्द्रियों को अपनी बशकिये सीताजीने बिषाद सहित कहा सो यह जान हमारे कहनेमें विश्वास करो व सीताजीको कुशलजानो ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेसुन्दरकाण्डसप्तषष्टितमस्सर्ग्गः ६७ ॥

हे नरब्याघ्र तुम्हारे स्नेह व सौहार्द्द से अनुमानकर वैदेहीजी ने बड़े आदरसे हमसे फिर कहा १ कि इसतरह श्रीरामचन्द्रजी से बहुत बहुत तरहसे कहना जिसमें समर में रावण को मार शीघ्र हमको प्राप्त हों २ हे वीर यदि वा हमारे बचन जो मानो तो किसी गुप्तस्थान में आजका दिन रह सुस्ताय प्रातःकाल चलेजाना ३ ऐसाकरनेसे अल्प भाग्यवाली हमारे शोककी मुहूर्त्तभर जानो तुम्हारे निकट रहनेसे कमी होजायगी ४ व तुम्हारे चलेजानेपर जबतक फिर यहांआवोगे तबतक हमारे प्राणों के रहनेमें सन्देह है इसमें कुछ संशय नहींहै ५ क्योंकि

तुमको न देखनेसे भी जो भयहोगा वह दुःखसे दुःखतर को प्राप्त दुःख में परी व दुःख भागिनी हमको परितापित करैगा ६ हे बीर हमको यहभी बड़ा भारी सन्देह तुम्हारे सहायक बानरों व ऋक्षोंमें है ७ कि वह ऋक्ष बानरों की सेना व वे दोनों महाराजाधिराज कुमार इस दुष्पार सागरको कैसे उतरैंगे ८ क्योंकि इस समुद्रके उतरनेकी शक्ति तीनही प्राणियोंको है एक गरुड़को दूसरे पवनको व तीसरे तुमको हे पापरहित ९ व हे बीर हे वाक्य जाननेवालोंमें श्रेष्ठ तिससे इसकठिन काय्र्यके करनेमें तुमक्या समाधानदेखतेहो कहोतो १० यद्यपिइसकाय्र्य के करनेमें तुमअकेलेही समर्त्थहो क्योंकि तुम्हारे बलका उदय अन्य बीरोंके बलका नाशकहै इसीसे महायशस्वीहै ११ जो सबसेना सहित श्रीरामचन्द्रजी यहां आय समरमें रावणको मार हमको यहांसे अपनी पुरीकोलेचलैं तो उनका यशहो १२ रामचन्द्रजी को ऐसाकाय्र्य करना चाहिये कि जिसमें इसदुष्ट रावणकी हरी हम यहीं न मृतक होजायँ १३ व श्रीरामचन्द्र जी जो लंकापुरीको अपनीसेनासे व्याकुल कर हमको अपनीपुरी को लेजायँ तो उनके योग्य कर्म्महो १४ तिससे रणमें शूर व महात्मा तिन रामचन्द्रजी के विक्रान्त के अनुरूप कर्म्म जैसाकरनेसेहो तैसा तुमउपायकरो १५ नम्रतायुक्त व हेतुसहित अर्त्थ संयुक्त तिनके ऐसे बचन सुन हमने उत्तरदिया १६ हे देवि वानर व ऋक्षोंकी सेनाके स्वामी सत्यप्रतिज्ञ सुग्रीवजी ने तुम्हारेलिये निश्चय करदियाहै १७ व तिनके बड़ेविक्रमी बड़े सत्वसम्पन्न महाबली व मन के संकल्प के तुल्य काम करनेवाले आज्ञाकारी बहुतसे वानर हैं १८ कि जिन वानरोंकी गति न ऊपर जानेमें रुकतीहै न नीचे जानेमें न तिरछाजानेमें व न वे बड़ेभारी कर्म्मोंकेभी करनेमें कभी व्याकुलहोतेहैं क्योंकि अमित तेजस्वी हैं १९ व तिनमहा भाग्यवाले व बल संयुत वानरोंने बहुतवार बायुवेग से भूमिकी प्रदक्षिणाकीहै २० ॥

चौ० हमसे अधिकरु हमहिं समाना। हैं तहँवानर अतिबलवाना॥ हमसे लघुवानर कोइ नाहीं। है सुग्रीव निकट तिन माहीं १। २१ जो हम आये बिनहिँ प्रयासा। तो तिनकहँ काकही खुलासा॥ नहिं शिषजन प्रेरणयोगू। पठयेजात सदा लघु लोगू २। २२ तासोंदे

न करु परितापा । क्रोध तुम्हार मिटै गतदापा ॥ ते बर वानर एक उ-
छाला । लंकहिऐहैं सुनलेहाला ३ । २३ धरु ममपीठि उपर चढ़दोऊ ।
चन्द्र सूर्य्य सम उद्यत सोऊ ॥ पुरुष सिंह ऐहैं तव पासा । महा भाग्य
वति पुरिहिआशा ४ । २४ सिंहसमान शत्रुगण नाशी । रामहि लषि-
हहु विश्व प्रकाशी ॥ धरु धनुपाणि लषणकहँ देगी । लंका महँ लषुदेर
न होगी ५ । २५ नख दंष्ट्रायुध अति बलवन्ता । सिंह व्याग्घ्र विक्रम
गुणवन्ता ॥ वानरेन्द्र सम वानर आये । शीघ्रहि लषिहहु अति मन
भाये ६ । २६ शैल मेघसम लंककँगूरन । चढ़े कपिनके बचन सुपूरन॥
वेगहि सुनिहहु श्रुति सुखदाई । सत्यकहत नहिँ करत झुंठाई ७ । २७
गत बनबास रामकहँ भामिनि । निजसँग अवध माहिँ गजगामिनि ॥
राजसिँहासनपर सुठिसोहत । बेगहिलषिहहु सबसुखजोहत ८ । २८

हरिगीतिका ॥

त्यहि समय तुम्हरे शोक पीड़ित जनकराज कुमारिका ।
मम सकल ईप्सित बचन प्रार्त्थित भई शोक विदारिका ॥
गतशोक लहि तब शान्ति हर्षित बचन कह्यहु बनायकै ।
हमचले त्यहि समझाय बहु तिन चरण पर शिरनायकै ९ । २९

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेसुन्दरकाण्डेऽष्टषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६८ ॥

समाप्तोऽयंसुन्दरकाण्डःपञ्चमः ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	**राग**	गोपीचंद भरतरी	स्वयम्बोध
योगवाशिष्ठ	रागप्रकाश	कथाश्रीगंगाजी	ज्ञानचालीसी
आनंदामृतवर्षिणी	लावनी	अवधयात्रा	दोहावली
सांख्यतत्वकौमुदी	**क़िस्सा वग़ैरह**	भरतरीगीत	बालाबोध
काव्य	नानार्थनामसंग्रहावली	दानलीलावनागलीला	विद्यार्थीकी प्रथम पुस्तक
सूरसागर	ब्रह्मसार	दोहावलीरत्नावली	किताबजंत्री
कृष्णसागर	शिवसिंहसरोज	गोकर्णमाहात्म्य	गणितकामधेनु
विश्रामसागर	भक्तमाल	श्रीगोपालसहस्रनाम	लीलावती
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायण स०	पटवारियोंकी पुस्तक ४ भा०
ब्रजविलास बड़ा व छोटा	विक्रमविलास	हनूनाटक	**वैद्यकभाषा**
कृष्णप्रिया	बैतालपच्चीसी	हनुमानबाहुक	निघण्ट
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी	अमरविनोद
अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	हरिहरसगुणनिर्गुणप०	वैद्यजीवन
छन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	दानावली	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
रसराज	बकावलीसुमन	वनयात्रा	अमृतसागर बड़ा व छोटा
सतसई मूल व सटीक	चहारदरवेश	कायस्थवर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव
सभाविलास	क़िस्सा हातमताई	विहारवृंदावन	रसायन प्रकाश
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	अपूर्वकथा	समरविहारवृंदावन	दूलाजुल गुर्ब्बा
भजनावली	क़िस्सा गुलसनोबर	कल्पभाष्य	दिललगन
प्रेमरत्न	सहस्ररजनीचरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	**ज्योतिषभाषा**
युगुलविलास	राबिन्सनकाइतिहास	उपदेशचन्द्रिका	जातकचन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	सीताहरण	मंगलविनोद	जातकालंकार
बारहमासा बलदेवप्रसाद	सतीविलास	विजयचन्द्रिका	दैवज्ञाभरण
मनोहरलहरी	क़िस्सा मर्द औरत	सिद्धांतसंग्रह	ज्ञानस्वरोदय
गंगालहरी	संगीतप्रह्लाद	नवीनसंग्रह	रमलसार
यमुनालहरी	**मुतफ़र्क़ात**	रामविनयशतक	रमलनौरत्न
जगद्विनोद	शनिश्चरकी कथा	**दरसी**	इन्द्रजाल
शृंगारबत्तीसी	ज्ञानमाला	अक्षरावली	लीलावती संस्कृत

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दू कैथी महाजनी	व शिमाली २८ सन् १८७३ ई०
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकट के लाइसन्स का	तरमीम मजमूआ ज़ाबिता
सिद्धान्त चन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऐक्ट ५ सन् १८७४ ई०	फ़ौजदारी ११ सन् १८७४ ई०
भाषातत्त्व प्रकाश	महिम्नस्तोत्र	नागरी	तक़ावी के क़ायदे
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐक्ट लगान मग़रबी व	सवाल व जवाब पुलिस
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्य स्मृति	शिमाली १० सन् १८५९ ई०	अवध रुहेलखण्ड रेलवे
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषा टी०	इंडियन पिनल कोर्ट मज-	का दस्तूरुल् अमल
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष तीनों काण्ड	मूआ ज़ाबिता फौजदारी	ताज़ीरात हिन्द
भगवद्गीता पञ्चरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	महाभारत सबलसिंह कृ-
दुर्गापाठ मूल व सटीक	संध्यापद्धति	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्	१- आदिपर्व्व
विष्णुभागवत	व्रतार्क	१८६६ ई०	२- सभापर्व्व
कथायमद्वितीया	भगवद्गीता टीका ह-	ऐक्ट स्टाम्प १ सन् १८६२ ई०	३- विराट् पर्व्व
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीता टीका आ-	ऐक्ट स्टाम्प अदालत २६	४- उद्योगपर्व्व
कायस्थकुलभास्कर	गीतगोविंद	सन् १८६७ ई०	५- भीष्मपर्व्व
कायस्थधर्म्मनिरूपण	कथा सत्यनारायण स-	मजमूआ ऐक्ट अवध ल-	६- द्रोणपर्व्व
तथाच्छोटा	टीक	गान १९ सन् १८६८ ई०	७- कर्णपर्व्व
मथुरासभा	शार्ङ्गधर संहिता	पुरक़ादारी २६ सन् १८६६	८- शल्यपर्व्व
ज्योतिष	पाराशरी सटीक	ई० वग़ैरह	९- गदापर्व्व
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोध सटीक	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात	१०- स्त्रीपर्व्व
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	लघुजातक	१८ सन् १८६९ ई०	११- स्वर्गारोहण
मुहूर्त्तचिन्तामणि स-	परमार्थसार	ऐक्ट ताल्लुक़दारान मक़-	किताबें जो छप रही हैं
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	रूज़ अवध २४ सन्	उनके नाम नीचे लिखे हैं
बृहज्जातक सटीक	गरुड़पुराण	१८७० ई०	मदनपारिजात
जातकालंकार	रामविवाहोत्सव	ऐक्ट चौपायों का मदाख-	मार्कण्डेयपुराण उर्दूटी-
जातकाभरण	अपरोक्षानुभव	लत बेजा १ सन् १८७१ ई०	का सहित
होरामकरन्द	लग्नचन्द्रिका	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता-	ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	क़ानून कैथी	फौजदारी १० सन् १८७२ ई०	दीवानी
षट्पञ्चाशिका	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट मालगुज़ारी मग़रबी	